Bhrigusamhita - Paddhati

1949

श्रीगणेशाय नमः

# भृगुसंहिता–पद्धतिः

## मेषलग्नान्तरसूर्यफलम्

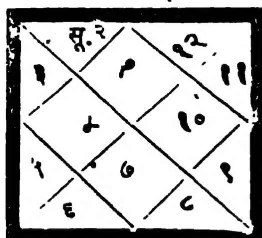
नं० १

१२
२ सू. १ ११
१०

जिस व्यक्ति को मेष का सूर्य लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य महान् विद्वत्ता रखने वाला और विद्या की आदर्श शक्ति पाने वाला तथा आत्मज्ञान की महानता पाने वाला और लम्बा कद पाने वाला संतान शक्ति की महानता पाने वाला बड़ा भारी मान पाने वाला तथा बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और दिमाग व देह के अंदर बड़ी तेजी रखने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ कमी पाने वाला तथा स्त्री को कुछ मामूली चीज समझने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक में कुछ कमी व कुछ छिपाव शक्ति पाने वाला और रोजगार की परवाह न करने वाला एवं दैनिक रोजगार को कुछ मामूली चीज समझने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान में

न० २




हो तो वहे मनुष्य विद्या का संग्रह करने में कुछ दिक्कतें महसूस करने वाला और बुद्धि व दिमाग के अंदर कुछ परेशानी पाने वाला तथा कुछ विद्या के वंधनयुक्त कर्म से धन प्राप्त करनेवाला और सतान पक्ष में कुछ कमी या रुकावट का याग पान वाला तथा संतान पक्ष के संबंध में कुछ बंधन के कारण से कुछ फिकर का योग पाने वाला और धन के स्थान में धन की कुछ कमजोरी तथा विद्या का प्रकाश रूपी धन प्राप्त करने वाला और अपने से छोटे व्यक्तियों का कुछ कुटुम्ब पाने वाला जीवन की दिनचर्या में व पुरातत्त्व के संबध में आनन्द अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

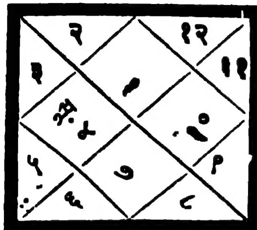
नं० ३




में हो तो वह मनुष्य बुद्धि बल की शक्ति के द्वारा बड़ा प्रताप पाने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला संतान की बड़ी शक्ति पाने वाला और वाणी की शक्ति का बड़ा प्रभाव रखने वाला भुजाओं का बल रखने वाला और दिमाग को ताकतसे उन्नति के मार्ग में बड़ी दौड़धूप करके उन्नति को प्राप्त करने वाला तथा भाई की शक्तिपाने वाला और भाग्य की उन्नति करने वाला तथा धर्मको मानने वाला और ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा महान हिम्मत वाला तथा बोल चाल के अंदर वीरत्व रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से चौथे स्थान में

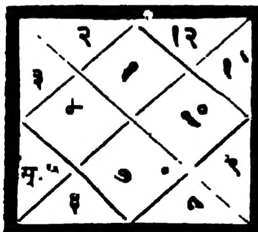
नं० ४



हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने वाला व सुख पूर्वक विद्या अध्ययन करने वाला और विद्या से सुख प्राप्त करने वाला संतान का सुख प्राप्त करने वाला मीठा और प्रभावशाली बोलने वाला माता के गुणों और सुख को प्राप्त करने वाला तथा विद्या बुद्धि के योग से कुछ भूमि के सुख में वृद्धि पाने वाला पिता स्थान में कुछ अरुचि रखने वाला तथा उन्नति के मार्ग में बुद्धि के द्वारा कुछ शिथिलता पाने वाला और राज समाज के संबंध में कुछ वैमनस्यता का भाव रखने वाला तथा घर के अंदर बुद्धि के कारण प्रकाश रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान में

न० ५



हो तो वह मनुष्य महान् विद्या को प्राप्त करने वाला बड़ा प्रभावशाली बोलने वाला और बुद्धि के अंदर बड़ा भारी प्रताप पाने वाला तथा बड़ा दूरदेश का विचार रखने वाला संतान पक्ष की शक्ति पाने वाला तथा संतानपक्ष से बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ कमी व आमदनी के मार्ग में कुछ अरुचि रखने वाला और अपनी वाणी की ताकत से दूसरों को दबाव पहुचाने वाला और आमदनी की वृद्धि करने के लिये बुद्धि की विशेष शक्ति का प्रयोगकरने वाला और अपने दिमाग की शक्तिके सामने सब की दिमाग शक्तिको छोटा समझनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य छठे स्थान में हो तो

न० ६

वह मनुष्य विद्या में कुछ कमी पाने वाला तथा बुद्धि में कुछ परेशानी पाने वाला और विद्या तथा बुद्धि के जरिये से वड़ा भारी प्रभाव कायम करनेवाला और शत्रुओं के स्थान में विजय पाने वाला तथा बड़ी से बड़ी दिक्कतें व मुसीवतों को नष्ट करने वाला एवं दिक्कतों को नष्ट करने की बुद्धि द्वारा महान् प्रकाश देने वाला और संतान पक्ष में कुछ दिक्कतें व वैमनस्यता का योग पाने वाला ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव का योग अनुभव करने वाला तथा खर्च अधिक करने वाला और दिमाग की ताकत से अन्य दूसरे स्थान का मित्र सम्बन्ध पाकर लाभ पाने वाला होता है।

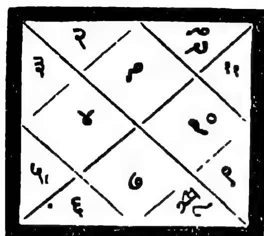
जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

न० ७

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में बड़ा क्लेश अनुभव करने वाला तथा संतान-पक्ष मे कष्ट अनुभव करने वाला और विद्या स्थान में कमी पाने वाला तथा बुद्धि में कमजोरी व परेशानी पानेवाला गृहस्थी में बड़ा संटक अनुभव करने वाला रोजगार स्थान में वड़ी परेशानी सह २ कर के काम चलाने वाला तथा रोजगार की लाइन में सत्य असत्य से काम निकालने वाला तथा देह से लम्बा कद और इन्द्रिय भोगादिक की कमी पानेवाला, गुप्त मंतव्य वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से आठवें स्थान

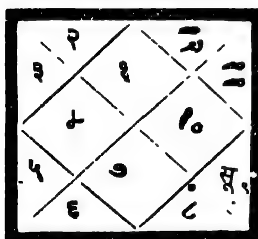
न० ८



में हो तो वह मनुष्य संतानपक्ष में कष्ट सहने वाला विद्या स्थान में कमी पाने वाला दिमाग के अंदर कुछ परेशानियां पानेवाला और गूढ ज्ञान के सम्बन्ध में बड़ी प्रकाश शक्ति रखने वाला और बड़ी गहराई व छिपाव की शक्ति से बातें करनेवाला और जीवन व दिनचर्या के संबंध में प्रभाव पानेवाला तथा धन स्थान पर शत्रु दृष्टि रखनेवाला और कुटुम्ब स्थान में वैमनस्यता का भाव संबंध रखनेवाला और अपनी बुद्धि के द्वारा कुछ टेढी चाल चलनेवाला तथा कुछ कड़वा बोलनेवाला गुस्सेबाज होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से नवम स्थान में

न० ९



हो तो वह मनुष्य अपने अन्दर विद्या शक्ति की महानता से बड़ा सुन्दर प्रकाश पानेवाला तथा बुद्धि के द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा प्रभाव पानेवाला और प्रभावशाली यश प्राप्त करने वाला और धर्म के संबंध में अच्छा ज्ञान व श्रद्धा पानेवाला और संतान संबंध में उत्तम पुत्र का सुख प्राप्त करनेवाला, तथा दूरदर्शिता की शक्ति रखने वाला, भाई बहन का सुख प्राप्त करनेवाला और पुरुषार्थ बल की शक्ति पानेवाला, तथा दैवी सहायता की शक्ति प्राप्त करने वाला, और न्यायोक्त प्रभावशाली बोलने वाला, विद्वान् होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से दसवें स्थान

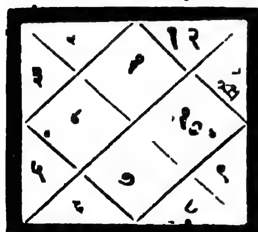
नं० १०



में हो तो वह मनुष्य संतान स्वभाव की कुछ अनुचित शक्ति व संकट अनुभव करने वाला अर्थात् सन्तानपक्ष से कुछ वैमनस्यता व बराबरी का संबंध पानेवाला तथा संतान और बुद्धि के कारण से पिता स्थान में कुछ वैमनस्य व अरुचि पानेवाला और कारोबार की उन्नति में कुछ रुकावटें पानेवाला, राज समाज के कार्यों में कुछ विरोध व दिक्कतें समझनेवाला, विद्या व बुद्धि के स्थान में बड़प्पन के साथ साथ कुछ खूब सूरती में कमी पानेवाला और माता की इज्जत करनेवाला तथा मकान जायदाद व सुख प्राप्ति के संबंध में तरक्की करनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से ग्यारहवें

नं० ११



स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने में कुछ अरुचि का योग पानेवाला (अर्थात् थोड़ा लिखा पढ़ा) और सन्तान पक्ष का लाभ पाते हुए भी संतान पक्ष से कुछ असंतोष पानेवाला और बुद्धि के द्वारा आमदनी का जरिया निकालनेवाला तथा आमदनी के स्थान में बुद्धि को कुछ थकान पाने का योग पानेवाला और स्वार्थ के संबंध में कुछ कड़वा बोलकर काम निकालनेवाला और दिमाग के अन्दर बड़ी तेजी रखनेवाला और अधिक लाभ पाने का बराबर चिंतन साधन करने वाला तथा विद्या के प्रभाव से बहुत प्रकार के मतलब सिद्ध करनेवाला, तथा सदैव स्वार्थ में तत्पर रहनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से बारहवें
नं०१२ स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या स्थान में कमी पाने वाला तथा नेत्र शक्ति में कुछ कमजोरी पानेवाला और बुद्धि के द्वारा अन्य स्थान का बड़ा :प्रभावशाली चिंतन करने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला और संतानपक्ष में कुछ कमी व कमजोरी पानेवाला और बोल-चाल के अन्दर सदैव हेर फेर की व घुमाव फिराव की बातें करनेवाला और बुद्धि में कुछ परेशान रहनवाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव कायम रखनेवाला और दिक्कतों व परेशानियों पर काबू पा सकनेवाला बाहर के लोगों से अच्छा सम्पर्क रखनेवाला तथा खर्च स्थान में प्रभाव से काम लेनेवाला होता है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | | १२ सू | |
| ३ | १ | | ११ |
| ४ | | १० | |
| ५ | ७ | | ९ |
| ६ | | ८ | |

## मेषलग्नान्तरचन्द्रफलम्

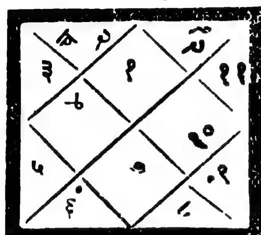
जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान
नं० १३ मे हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी (अत्यन्त) सुख व आनन्द का अनुभव करने वाला और सुख के साधन प्राप्त करने वाला, माता का सुख प्राप्त करनेवाला तथा मातृ स्थान का व भूमि का सुख प्राप्त करनेवाला, और देह में सुन्दरता पानेवाला तथा स्त्री का सुख प्राप्त करनेंवाला और भोग विलास प्राप्त करनेवाला, रोजगार का सुख प्राप्त करने

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | | १२ | |
| ३ | १ चं | | ११ |
| ४ | | १० | |
| ५ | ७ | | ९ |
| ६ | | ८ | |

वाला तथा मान प्राप्त करनेवाला और मनोयोग की शक्ति के द्वारा लौकिक संबंध में व गृहस्थी में बड़ी सफलता पानेवाला और सुन्दर सहयोगियों का सुन्दर सम्पर्क पानेवाला आराम तलब होता है

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक विशेष धन पानेवाला, मकान जायदाद की संचित शक्ति पानेवाला और कुटुम्ब की वृद्धि पानेवाला और सुख प्राप्ति के लिये एकत्रित महान् धन शक्ति के भंडार का योग पानेवाला किन्तु उस भंडार के मुताबिक सुख न प्राप्त कर सकनेवाला और धनकी शक्ति से मन मे मगन रहनेवाला किन्तु मन पर कुछ बंधन महसस करनेवाला और मनोयोग की ताकतसे धन की वृद्धि सलभता से पानेवाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी व कुछ अशांति का योग पानेवला और माता पक्ष में कुछ बंधन व कुछ वृद्धि पानेवाला होता है।

नं० १४



जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहन भाई का सुख उठाने वाला, मातृ स्थान की शक्ति पानेवाला और पुरुषार्थ से मनोयोग द्वारा सुख की वृद्धि पानेवाला तथा सुख पूर्वक मनोयोग की शक्ति से पुरुषार्थ की वृद्धि करनेवाला तथा यश प्राप्त करनेवाला और ईश्वर में निष्ठा रखनेवाला और

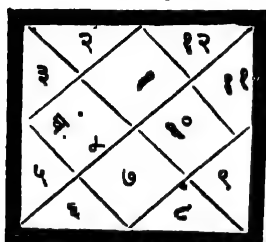
नं० १५



धर्म को चाहनेवाला तथा भूमि जायदाद. की शक्ति से मन के अन्दर बड़ी प्रफुल्लता का योग पानेवाला और मन के सुखद कारणों से बड़ी भारी हिम्मत महसूस करनेवाला, तथा भाई से परवरिश का योग प्राप्त करनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान

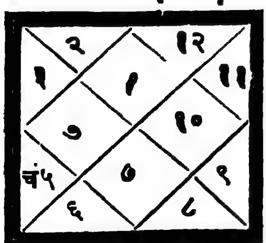
न० १६



में हो तो वह मनुष्य माता का परम सुख उठानेवाला, मकान जायदाद की शक्तिका सुन्दर सुख उठानेवाला और मनोयोग की ताकत से बड़ा भारी सुख प्राप्त करनेवाला, मन में मग्न रह कर बड़ी वेफिक्री मानने वाला, माता की सहायक शक्ति के सामने पिता की परवाह न करनेवाला, और उन्नति के मार्ग में व प्रतिष्ठा के स्थान में शान्त भाव से उद्योग करने वाला तथा व्यापार आदि राज समाज के कार्यों में मनोयोग की शीतल शक्ति से काम लेने तथा अपने सुख और आराम का बड़ा ख्याल रखनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान में

नं० १७



हो तो वह मनुष्य बुद्धि योग के द्वारा महान सुख का अनुभव करनेवाला तथा विद्या प्राप्त करनेवाला और सन्तान सुख प्राप्त करनेवाला तथा विद्या बुद्धि की योग्यतासे जमीन जायदाद की शक्ति पानेवाला तथा सुखदायक बुद्धि योग से वाणी के द्वारा सुख देनेवाला और अपने स्थान व बुद्धि योग से लाभ व आमदनी पानेवाला और शांति से बोलनेवाला

और हमेशा आराम के संबंध की सुखदायक बातें सोचनेंवाला तथा माता के गुणों की व माता की इज्जत व प्रशंसा माननेवाला तथा बड़ी गहरी बातें सोचनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के सुख संबंध में बाधा पानेवाला तथा घर के सुखों में कमी पानेवाला और मकान जायदाद की भी कमी पानेवाला तथा मनके ऊपर कुछ घिराव व कुछ अशांति अनुभव करनेवाला तथा शत्रु स्थान में कुछ शान्ति पूर्वक काम निकालने के कारण सुख का अनुभव करनेवाला तथा परेशानियों को दूर करके सुख पैदा करने का साधन बनानेवाला और अधिक खर्च करनेवाला तथा अन्य दूसरे स्थान में मित्रता का संबंध पानेवाला तथा ननसाल से सुख उठानेवाला तथा मनोयोग के बल से बुराइयों में भी अच्छाई निकालनेवाला शीतलयुक्त सज्जन होता है।

न० १८

जिस व्यक्ति का तुला का चंद्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने घर गृहस्थी का बड़ा भारी सुख उठानेवाला और स्त्री के अन्दर शीलशांति सुन्दरता का योग पाकर मन में मग्न होनेवाला तथा दैनिक रोजगार का सुख प्राप्त करनेवाला तथा माता की सहायकसेवा प्राप्त करने वाला और मकानादि का सुख प्राप्त करनेवाला तथा मातृ स्थान की ताकत से मान प्राप्त करनेवाला और देह के अन्दर सुख व सुन्दरता पानेवाला और भोगादिक की शक्ति से

नं० १९

सुख का आनन्द प्राप्त करनेवाला तथा लौकिक व गृहस्थी के सम्बन्ध में बड़ी प्रवीणता व कार्य कुशलता की शक्ति मनोबल से प्राप्त करने वाला, चतुर एवं रसिक होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य, माता की हानि पानेवाला तथा मातृ स्थान की तरफ से अशांति पानेवाला, तथा मकानादि भूमि की हानि पानेवाला और सुख व आराम के कारणों में महान् घाटा पानेवाला व मन के अन्दर घोर अशांति अनुभव करनेवाला तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ी संकीर्णता का योग पानेवाला और कुछ उदर विकार के कारण से अशांति अनुभव करनेवाला तथा आयु के स्थान में कई२ दफा हानियों की संभावना पानेवाला और धन की वृद्धि करने के लिये, बड़ी भारी मजबूती के साथ तकलीफ बरदास्त करनेवाला तथा पुरातत्त्व लाभ में कुछ कमी पानेवाला होता है।

नं० २०

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य, मातृस्थान से भाग्यवानी पानेवाला, जमीन मकानादि का सुख प्राप्त करनेवाला और भाग्य की ताकत से बहुत सुख प्राप्त करनेवाला और मन में मगन रहनेवाला तथा सुख पूर्वक मनोयोग की शक्ति से भाग्य की वृद्धि पानेवाला और धर्म में बड़ी रुचि रख कर धर्म का पालन करनेवाला तथा धार्मिक संबंध में सुख का अनुभव

नं० २१

करनेवाला तथा बहन भाई के स्थान में सुख का योगपाने वाला तथा बाहुबल और पुरुषार्थ के स्थान में भी सुख का योग पानेवाला और परमार्थ का पालन करनेवाला और दैव बल की सहायता से बड़ २ सुखों की प्राप्ति के साधन स्वयं प्राप्तकरनेवाला होता है।

जिस व्यवित का मकर का चन्द्र लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य माता की शक्ति प्राप्त करनेवाला और पिता स्थान से सुख प्राप्त करनेवाला तथा जमीन जायदाद की शक्ति पानेवाला व राज समाज से सुख उठानेवाला और मनोयोग की ताकत से सुख की व मान की वृद्धि पाने वाला तथा व्यापार आदि बड़े कर्म स्थान से सफलता पाने वाला और मान प्रतिष्ठा की उन्नति में ही सुख का अनुभव करनेवाला तथा सुन्दर और सुखद कर्म का कार्य, मनोबल से करनेवाला, तथा सुन्दर वेषभूषा व गौरव से रहनेवाला और रहने के स्थान में शोभा व सुन्दरता का ध्यान रखनेवाला तथा हमेशा लौकिक संबंधि ऊची बातें सोचने व करने वाला स्वाभिमानी होता है।

नं० २२

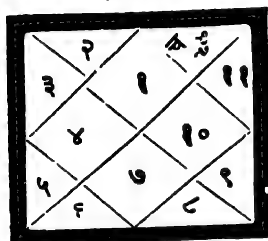
जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह आमदनी के स्थान में सुख प्राप्त करनेवाला तथा कुछ अड़चनों के साथ सुख से लाभ प्राप्त करनेवाला और मकान जायदाद से लाभ पानेवाला तथा मातृ स्थान के लाभ में कुछ थोडी सी कमी के साथ फायदा पानेवाला तथा

नं० २३

विद्या स्थान से सुख प्राप्त करनेवाला और सुखपूर्वक विद्याग्रहण करनेवाला और संतान पक्ष से सुख उठानेवाला तथा बोलचाल के अन्दर मिठास से काम लेने वाला और मनोयोग की ताकत से बुद्धि की गहराई में पहुंचनेवाला और मनोयोग की शक्ति से ही बहुत २ प्रकार क सुख व लाभ प्राप्त करनेवाला, संतोषी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से बारवें स्थान मे हो तो वह मनुष्य सुख प्राप्ति के लिये बहुत खर्च करनेवाला तथा खर्च के स्थान में ही सुख का अनुभव करने वाला और माता की हानि या मातृ-वियोग पाने वाला और स्थानीय स्वस्थान में सुख की हानि पानेवाला तथा अन्य दूसरे स्थान में सुख प्राप्त करनेवाला और ज़मीन जायदाद के सम्बन्ध में कमजोरी पानेवाला और शत्रु स्थान में वड़ी शांति से काम निकालने वाला तथा विपत्तियों के अन्दर मनोयोग की ताकत से सुख का अनुभव करनेवाला तथा सुख पूर्वक खर्च संचालन कर सकने वाला तथा मन में कुछ अशांति युक्त रहने वाला होता है।

नं० २४



# मेषलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न में ही पहिले

नं० २५

स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में महानता पानेवाला तथा महान् प्रसिद्धता पानेवाला और तमोगुणी प्रचण्ड शक्ति रखनेवाला तथा आत्मशवित की विशेष ताकत रखनेवाला और अन्तर आत्माओं के विशेष सम्बन्ध को जाननेवाला तथा माता के सम्बन्ध में बहुत कमी का योग महसूस करनेवाला और मातृ स्थान अर्थात् जन्मभूमि में भी कमी देखनेवाला तथा पुरातत्त्व का महान् आदर्श लाभ पानेवाला और आयु की महान् शक्ति पानेवाला और गूढ़ युक्तियों के बल से तथा असहयोग द्वारा देह कष्ट सहने के बल से बड़ा भारी गौरव, और चमत्कार पानेवाला तथा स्त्री पक्ष में व गृहस्थ सुख में कमी पानेवाला कुछ अशान्तियुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल, लग्न से दूसरे स्थान

नं० २६

में हो तो वह मनुष्य हमेशा धन कमाने में लगा रहनेवाला किन्तु धन की वृद्धि के वजाय धन की हानि करनेवाला और पुरातत्त्व धन का फायदा उठानेवाला तथा धन की वृद्धि के लिये अधिक परिश्रम व गूढ़ युक्तियों से काम लेनेवाला तथा कुछ छिपाव शक्ति से नाजायज [illegible] भी उठानेवाला और आयु में वृद्धि पानेवाला और

जीवन की दिनचर्या में कुछ बंधन पानेवाला तथा संतान पक्ष में कुछ हानि पानेवाला और बुद्धि के अन्दर युक्ति बल व आत्मबल की ताकत से कुछ रूखा बोल कर काम निकालने वाला और धर्म को कुछ हानि पहुंचा कर भाग्य की वृद्धि करनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से तीसरे स्थान

नं० २७

में हो तो वह मनुष्य महान् पुरुषार्थ करनेवाला तथा भाई के स्थान में हानि पानेवाला और आयु की वृद्धि पाने वाला, राज समाज में प्रभुत्व पानेवाला और अपनी भरपूर शक्ति के बल से उन्नति का मार्ग बनानेवाला बड़ा कारो-बार करनेवाला और कठिन से कठिन कष्टसाध्य कर्म को खुशी से उत्साह पूर्वक करनेवाला तथा शत्रु का दमन करने वाला और दिक्कतों व परेशानियों पर विजय पानेवाला और उन्नति के प्राप्त करने के हेतु महान् कूट नीति व महान् परिश्रम से कार्य करनेवाला और पिता स्थान से व पुरातत्त्व से मस्ती का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से चौथे स्थान

न० २८

में हो तो वह मनुष्य देह में लघुता पानेवाला तथा मातृ स्थान में हानि पानेवाला और जीवन में कुछ अशांति अनुभव करनेवाला, आयु स्थान में कुछ सामान्य तथा अच्छा सुख प्राप्त करनेवाला और मकान, जमीन की कुछ कमी व कुछ हानि पानेवाला और पितास्थान में कुछ

वृद्धि का व बड़प्पन का योग समझनेवाला और मान प्रतिष्ठा व उन्नति के लिये बड़ी भारी कोशिश करनेवाला और स्त्री स्थान मे कुछ हानि व कुछ क्लेश पानेवाला और दैनिक रोजगार में बड़ा भारी परिश्रम करनेवाला तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि पाने वाला और लाभ युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

नं० २६

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के अंदर पुरातत्त्व की महान् शक्ति पानेवाला तथा आयु में वृद्धि पानेवाला और दिमाग के अन्दर व बोलचाल के अन्दर बड़ी भारी तेजी व गुस्सा रखनेवाला और छिपाव शक्ति से गहरी युक्तियों के द्वारा बड़ा भारी मतलब निकालने वाला तथा छिपाव की ही बातें करनेवाला और संतान पक्ष में कुछ हानि पाने वाला तथा कुछ गौरव पानेवाला और जीवनकी दिनचर्या में बड़ा भारी प्रभाव पानेवाला तथा अन्य दूसरे स्थानों का विशेष सम्पर्क रख कर जीवन का महत्त्व प्राप्त करनेवाला और अपनी जीवन शक्ति के बल से खूब खर्च करनेवाला तथा लाभ पानेवाला, उमंग युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से छठे स्थान

न० ३०

में हो तो वह मनुष्य महान् प्रभाव की शक्ति को प्राप्त करनेवाला, आत्मबल की शक्ति से तथा परिश्रम से ख्याति व नामवरी पानेवाला और शत्रु स्थान में विजयी होनेवाला तथा कुछ प्रभाव-शाली परतंत्रता का योग पानेवाला

और जीवन में गौरव प्राप्त करने वाला, आयु स्थान में शक्ति पाने वाला और देह में कुछ रोग या दिक्कत महसूस करने वाला तथा रोग और दिक्कतों पर हावी रहने वाला और किसी किस्म की परेशानियों से न घबड़ाने वाला और मर्म स्थान का ख्याल रख कर भी पूरा पालन ठीक तौर से न कर सकने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा भाग्य वृद्धि के लिये बड़ा प्रयत्नशील रहने वाला, बहादुर छिपाव शक्ति वाला स्वार्थयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी परेशानियों के द्वारा रोजगार करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ हानि या क्लेश पाने वाला और बड़े कारबार के अन्दर तरक्की का साधन पैदा करने वाला और खज व समाज में मान पाने वाला तथा अपने आत्म गौरव का बड़ा ख्याल रखने वाला, जीवन की दिनचर्या का आनन्द लेने वाला और आयु की शक्ति पाने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिये विशेष प्रयत्न करते रहने पर भी कुछ कमी पाने वाला और पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ उठाने वाला और गूढ़ युक्तियों से व आत्म बल से गृहस्थी व लौकिक कार्य करने वाला तथा भोगादिक में कुछ कमी पाने वाला उग्र कर्मेष्ठी होता है।

नं० ३१

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से आठवें

नं० ३२

स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ हलका कद व सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला, गूढ़ से गूढ़ तत्त्व की खोज करने वाला तथा अपने जीवन में मस्ती मानने वाला किन्तु हृदय में कुछ अशांति अनुभव करने वाला और आयु में शक्ति पाने वाला तथा अपनी हस्ती को मिटाकर या परेशानी सह कर दूसरों को अहंकार के साथ जीवन की शक्ति देकर खूब लाभ पाने वाला और अपने से संबंधित किसी बुजुर्ग के स्थान की पूर्ति करने वाला और थोड़ी ही उम्र में बुजुर्गी का ढंग तथा बुजुर्गी के लक्षण और सफेद बालों का योग पाने वाला भाई के स्थान में कुछ कमी पाने वाला प्रसिद्ध होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० ३३

में हो तो वह मनुष्य भाग्यवानी से अपने जीवन के समय को व्यतीत करने वाला और भाग्य स्थान की उन्नति के लिये जी जान से प्रयत्न करने वाला किन्तु फिर भी भाग्य की उन्नति में रुकावटें पाने वाला और पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला तथा धर्म के स्थान में धर्म को चाहते हुये भी धर्म की वृद्धि न कर सकने वाला और आयु का आनन्द पाने वाला तथा दूसरे और दूर के संबंध से फायदा उठाने वाला तथा खर्च अधिक करने वाला और मातृ स्थान

की हानि पाने वाला और सुखशांति व मकान भूमि आदि की कमी या लापरवाही महसूस करने वाला, भाई से कमी पाने वाला, आडम्बरी धर्म वाला होता है।

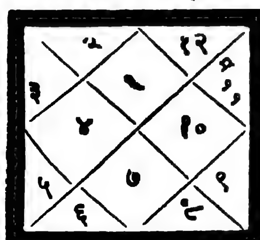
जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह शक्ति के बल से महान् प्रभाव पाने वाला तथा आयु और जीवन की दिनचर्या में महान् गौरव व प्रभुत्व प्राप्त करने वाला और पैतृक पुरातत्त्व की महान् शक्ति पाने वाला तथा स्वाभिमान और अहंकार की महानता पाने वाला और राज, समाज में नाम व इज्जत पाने वाला तथा महान् कर्म करने वाला और प्रभावशाली देह वाला तथा स्वेच्छा, व स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी हुकूमत से काम लेने वाला और मातृ स्थान व सुख शांति की लापरवाही रखने वाला और विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी गूढ़ युक्तियों व आत्मबल की शक्ति से काम लेने वाला तथा माता पिता की परवाह न रखने वाला संतान चाहने वाला क्रोधी होता है।

नं० ३४




जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के परिश्रम से खूब लाभ पाने वाला तथा लाभ के संबंध में बड़ी कूट नीति से काम लेने वाला और आयु का लाभ पाने वाला तथा पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला और धन स्थान में कुछ हानि

नं० ३५



पाने वाला तथा कुटुम्ब में कुछ हानि व क्लेश का योग पाने वाला तथा संतान पक्ष में भी कुछ कमी पाने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला तथा दिक्कतों और मुशीवतों की परवाह न करने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ परेशानी का योग पाने वाला और कुछ नाजा-यज फायदा भी उठाने वाला और विद्या बुद्धि के अन्दर कुछ छिपाव शक्ति से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह और आत्मा में बड़ी अशांति अनुभव करने वाला तथा जीवन का मजा किरकिरा समझने वाला तथा विदेश आदि अन्य स्थान की ताकत से शांति अनुभव करने वाला तथा भाई के स्थान में हानि का था क्लेश का योग पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा पुरातत्त्व की हानि पाने वाला और स्त्री स्थान में भी कुछ हानि पाने वाला तथा दैनिक रोजगार में कष्ट का अनुभव व परिश्रम और परेशानी का अनुभव करने वाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला तथा हेर फेर के काम करने वाला, भोगादिक व गृहस्थ सुख की कमी का योग पाने वाला दुर्बल होता है।

नं० ३६

# मेषलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न के पहिले स्थान में

नं० ३७

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | | १२ | |
| ३ | बु. १ | | ११ |
| ४ | | १० | |
| ५ | ७ | | ९ |
| ६ | | ८ | |

हो तो वह मनुष्य देह और विवेक शक्ति के बल से, महान् पुरुषार्थ करके, इज्जत प्राप्त करने वाला तथा बहन भाई की शक्ति का गौरव प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष की शक्ति का भी सुन्दर योग पाने वाला तथा शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला और हर एक किस्म की दिक्कतें व मुशीवतों को सहने व हटाने की शक्ति रखने वाला और बड़ी हिम्मत व चतुराई और पेचीदा तरकीबों से काम निकालने वाला तथा गृहस्थ व स्त्री स्थान में कुछ मामूली झंझटों के साथ २ अच्छाई मजबूती और शक्ति प्राप्त करने वाला तथा कुछ परिश्रम और युक्तियों के द्वारा रोजगार में तरक्की करने वाला प्रभावशाली मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३८

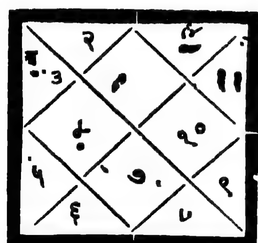
| | | | |
|---|---|---|---|
| बु. | | ३ | |
| २ | १ | | १२ |
| ४ | | १० | |
| ५ | ७ | | ९ |
| ६ | | ८ | |

हो तो वह मनुष्य अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से विवेक शक्ति के द्वारा धन कमाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बहुत भारी गूढ़ युक्तियों का प्रयोग करने वाला तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ थोड़े से वैमनस्य के साथ सम्पर्क शक्ति रखने वाला और पुरातत्त्व स्थान से फायदा

प्राप्त कर सकने वाला और बहन भाई स्थान में सुख की कमी व कुछ बंधन योग प्राप्त करने वाला और धन के स्थान से प्रभाव पाने वाला तथा पुरुषार्थ बल के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और अपनी शक्ति के एकत्रित बल से बहुत गहरी चाल चलने वाला तथा सदैव अपनी शक्ति का प्रयोग धन की वृद्धि में ही लगाये रखने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से तीसरे स्थान

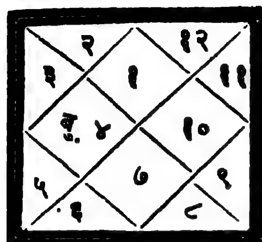
नं० ३९



में हो तो वह मनुष्य विवेक शक्ति के परिश्रम व पुरुषार्थ के द्वारा, महान् कार्य करने वाला और बहन भाइयों की शक्ति का सुख कुछ थोड़ी सी दिक्कतों के साथ प्राप्त करने वाला तथा अपनी शक्ति के कारण से भारी हिम्मत और उल्लास प्राप्त करने वाला तथा अपनी मेहनत और दौड़ धूप की शक्ति से भाग्य की वृद्धि करने वाला तथा ननसाल पक्ष से किसी भी प्रकार की और कभी भी उन्नति के मार्ग में सहायक शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धर्म के पालन करने के लिये कुछ प्रयत्न करने वाला और अपने अन्दर अपनी शक्ति का गौरव सुख प्राप्त करने वाला तथा शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से चौथे स्थान में

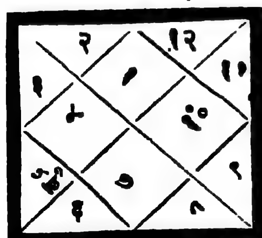
नं० ४०




हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ व परिश्रम की शक्ति से सुख प्राप्त करने वाला तथा भाई बहन की शक्ति का, कुछ मामूली दिक्कतों के बाद सुख प्राप्त करने वाला तथा ननसाल पक्ष से सुख प्राप्त करने वाला और माता से कुछ थोड़ी सी वैमनस्यतां का योग पाने वाला और मातृ स्थान भूमि स्थान के संबंध में कुछ २ अड़चने सहने वाला तथा आराम में कुछ खलल पाने वाला और शत्रु स्थान से निर्भय रहकर काम निकालने वाला तथा कारोबार से फायदा उठाने वाला और राज समाज से मान प्राप्त करने वाला तथा पिता स्थान से शक्ति प्राप्त करने वाला और विवेक शक्ति से उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से पांचवें स्थान

नं० ४१




में हो तो वह मनुष्य बुद्धि स्थान में बड़ी भारी गुप्त विवेक शक्ति के बल से काम लेने वाला और महान् चतुराइयों से बात चीत करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता के साथ शक्ति पाने वाला और विद्या स्थान में बड़े भारी परिश्रम के द्वारा शक्ति प्राप्त करने वाला तथा शत्रु स्थान में बुद्धि की योग्यता व चतुराइयों से कामयाबी हासिल करने वाला तथा बुद्धिकी परिश्रम शक्ति के द्वारा धन स्थान की आमदनी का खूब लाभ पाने वाला और

दिमाग की शक्ति से बहुत काम लेने वाला तथा बहन भाई के स्थान में बड़प्पन पाने वाला होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी पराक्रम शक्ति के बल से विवेक द्वारा बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला तथा भाई के पक्ष में वैमनस्यता या विरोध पाने वाला और ननसाल पक्ष में उन्नति का दिग्दर्शन पाने वाला और शत्रु स्थान में विवेक शक्ति से तथा पुरुषार्थ के जरिये गौरव प्राप्त करने वाला और बाहरी अन्य स्थान की परिस्थिति के संबंध में बड़ी लापरवाही रखने वाला तथा खर्च के संबंध में कुछ कमजोरी होने पर भी लापरवाही से काम लेने वाला और पेचीदा विवेक की महान् शक्ति से महानता पाने वाला और कुछ प्रभाव युक्त परतंत्रता का योग पाने वाला तथा महान् परिश्रमी, हिम्मत वाला बहादुर होता है।

नं० ४२

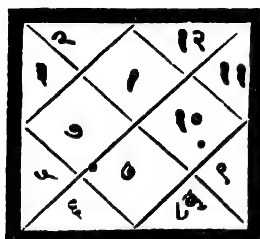
जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़े भारी परिश्रम से, विवेक शक्ति के द्वारा, रोजगार करने वाला और कुछ बहन भाई की शक्ति पाने वाला, तथा रोजगार की लाइन में कुछ दिक्कतें व रुकावटें सहने वाला और रोजगार में शक्ति भी प्राप्त करने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता के साथ, शक्ति और प्रभाव का फायदा उठाने वाला तथा

नं० ४३.

इन्द्रियादिक भोग की शक्ति प्राप्त करने वाला और शत्रु व गृहस्थिक और लौकिक कार्यों में कुछ पेचीदा विवेक की युक्ति और शक्ति से तरक्की करने वाला तथा देह सन्मान प्राप्त करने वाला तथा ननसाल पक्ष की कुछ अच्छाई पाने वाला होता है।

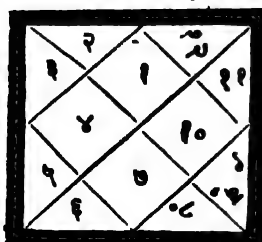
जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से आठवे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला तथा बहन भाई के सुख की कमी पाने वाला तथा ननसाल पक्ष की कुछ कमजोरी पाने वाला और महान् गूढ़ युक्तियों की चतुराइयों से काम निकालने वाला तथा छिपाव शक्ति के बल का भरोसा रखने वाला और पुरातत्व स्थान से कुछ कठिनाइयों के साथ विवेक द्वारा, शक्ति प्राप्त करने वाला और धन की वृद्धि के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला और कुछ मामूली उदर विकार की शिकायत पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या और शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी पानेवाला, गुप्त हिम्मत वाला होता है।

नं० ४४



जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ और परिश्रम से सफलता पाने वाला और कुछ विवेक के पेचीदा आदर्श मार्ग के द्वारा यश और शक्ति प्राप्त करने वाला तथा भाग्य की उन्नति में कुछ रुकावटें व दिक्कतें सहने वाला और धर्म के

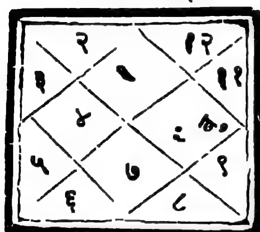
नं० ४५



स्थान में अंदरूनी कमजोरी और बाहरी शक्ति प्राप्त करने वाला तथा शत्रु पक्ष के संबंध में भाग्य की प्रभुता व पुरुषार्थ शक्ति से ही सुगम सफलता प्राप्त करने वाला तथा अपनी भाग्योन्नति के लिये धर्म अधर्म का पूरा ख्याल न कर सकने वाला बड़ा गुप्त चतुर हिम्मत वाला होता है।

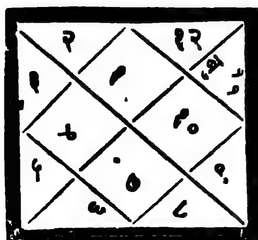
जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी पुरुषार्थ शक्ति और परिश्रम के जरिये विवेक शक्ति के द्वारा उन्नति प्राप्त करने वाला तथा बहन भाइयों की शक्ति प्राप्त करने वाला और पिता स्थान से शक्ति प्राप्त करने वाला और अपनी मेहनत के कठिन परिश्रम से राज समाज में मान और प्रभाव प्राप्त करने वाला तथा परिश्रम के परिणाम से सुख की शक्ति प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ सहायक शक्ति प्राप्त करने वाला तथा पिता के संपर्क में कुछ वैमनस्य पाने वाला और कुछ पेचीदा युक्तियों के काम से तरक्की करने वाला तथा मातृ स्थान को कुछ वैमनस्यता से देखने वाला होता है।

नं० ४६




जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहन भाइयों का लाभ पाने वाला तथा अपने पुरुषार्थ से धन कमाने वाला तथा परिश्रम और पेचीदा युक्तियों से लाभ पाने वाला और शत्रु तथा झंझट तलब मामलों से फायदा उठाने वाला तथा आमदनी

न० ४७



और अनेक प्रकार के लाभ की वृद्धि के लिये बड़ी दौड़ धूप और विवेक शक्ति से काम लेने वाला और विद्या प्राप्ति के लिये बड़ा परिश्रम करने वाला और बुद्धि के अंदर बड़ी पेचीदा विवेक शक्ति से काम लेनें और बोलने वाला तथ संतान पक्ष में कुछ शक्ति और वैमनस्यता का योग पाने वाला प्रभाव शक्ति और योग्यता रखने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से बारहवें स्थान

नं०४८

में हो तो वह मनुष्य बहन भाइयों की हानि व कमी पाने वाला और बल पुरुषार्थ में बड़ी भारी कमजोरी पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला और बड़ी २ मुश्किलों के जरिये से खर्च चलाने वाला और बड़ा संकीर्ण परिश्रम करने वाला और शत्रु पक्ष से बड़ा भय और अशांति के द्वारा काम निकालने वाला तथा बड़ी भारी छिपी हुई संकीर्ण शक्ति का भरोसा रखने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के संपर्क में अशांति का योग पाने वाला और खर्च की संचालन शक्ति में कुछ परतंत्रता व कुछ परेशानी का योग पाने वाला और कुछ कंजूसी से काम लेने वाला तथा कुछ परेशानियां सह कर परेशानियों को हटा सकने वाला होता है।

## मेषलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न के पहिले स्थान में

नं० ४६

हो तो वह मनुष्य बड़ा सुन्दर, भाग्यशाली, तथा मान प्राप्त करने वाला और अन्य स्थानों से भाग्योन्नति के कारण तथा प्रभाव पाने वाला और शानदार खर्च करने वाला तथा देह की शक्ति से खर्च संचालन की शक्ति प्राप्त करने वाला और धर्म के संबंध में कुछ अंदरूनी कमजोरी और बाहरी शक्ति प्राप्त करने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला तथा विद्या प्राप्त करने वाला और गृहस्थ के संबंध में कुछ कमजोरी के साथ सुख प्राप्त करने वाला तथा रोजगार की लाइन में दौड़ धूप करके सफलता पाने वाला और हृदय के सुन्दर गौरव व दूरदर्शिता की शक्ति रखने वला सज्जन होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ५०

हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् तथा अन्य स्थान के सम्पर्क से और भाग्य की ताकत से धन पैदा करने वाला और धन की वृद्धि के लिये हृदय की शक्ति व कुछ देव बल का सहारा लेने वाला और धन संग्रह के स्थान में कुछ हानियों का भी योग पाने वाला और खर्च को रोकने की भरपूर कोशिश करने वाला तथा कभी कभी बहुत खर्च करने वाला और धन के मुकाबले में धर्म को छोटा समझने वाला तथा शत्रु पक्ष में बड़ी दानाई से काम लेने वाला और पिता स्थान

की कम परवाह करने वाला और मान प्रतिष्ठा आदि की भी कम परवाह करने वाला और पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में आनन्द अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान समझा जाने वाला तथा हृदय और पुरुषार्थ बल के द्वारा अन्य स्थान के सम्पर्क से फायदा उठाने वाला तथा भाग्य की उन्नति करने वाला, और अपनी पुरुषार्थ शक्ति से खर्च चलाने वाला बहन भाइयों का सुन्दर सम्पर्क पाने पर भी कुछ कमजोरी या कमी महसूस करने वाला तथा यश कमाने वाला और उत्साह पूर्वक कार्य करने वाला तथा रोजगार की लाइन में कुछ बड़प्पन और भाग्य की ताकत से सफलता पाने वाला और धर्म का यथाशक्ति पालन करने वाला और गृहस्थ का आनन्द देखने वाला और पुरुषार्थ से बहुत लाभ पाने वाला होता है।

न० ५१

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८ (गु)

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य दूसरे अन्य स्थान की महान् शक्ति का सुख प्राप्त करने वाला और भाग्य की शक्ति से भूमि का खूब लाभ पाने वाला और भूमि की व मान स्थान की ताकत से खूब खर्च सुख पूर्वक करने वाला तथा मातृ पक्ष में व सुख

नं० ५२

२ १२ ३ १ ११ ४ गु १० ५ ७ ९ ६ ८

प्राप्ति के साधनों में कुछ अन्दरूनी कमजोरी पाने वाला और पिता के स्थान की कुछ लापरवाही करने वाला पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला और धर्म का खूब दिखाव करने वाला और सुख की अधिकता प्राप्त करने के कारणों से उन्नति के कर्म की परवाह न करने वाला और अधिक खर्च करके सुख की वृद्धि करने वाला भाग्यवान् होता है।

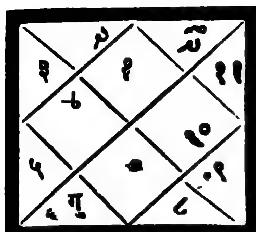
जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत भाग्यवान् बुद्धिमान् तथा उत्तम विद्या प्राप्त करने वाला और हृदय तथा विद्या की शक्ति से बहुत दूर २ तक की बातें लौकिक व अलौकिक कहने तथा समझने वाला किन्तु विद्या की शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी का योग अनुभव करने वाला और विद्या स्थान से ही बुद्धि के द्वारा भाग्योदय की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धर्मशास्त्र पर अधिकार रखने वाला और वाणी के द्वारा बड़प्पन तथा यश प्राप्त करने वाला और सन्तान शक्ति से भी फायदा पाने वाला तथा भाग्य की शक्ति के बल से बड़ा मान प्राप्त करने वाला और बुद्धि तथा भाग्य शक्ति से खर्च चलाने वाला तथा दूसरे अन्य स्थानों के सम्पर्क से सुन्दर फायदा उठाने वाला होता है।

नं० ५३



जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से छठे स्थान में

नं० ५४



हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में कुछ कमजोरी पाने वाला और यश में कमी पाने वाला तथा धर्म के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और खर्च की संचालन शक्ति में कुछ परतंत्रता या बंधन पाने वाला और भाग्योदय के सबध में बड़ी २ परेशानियों के द्वारा व बहुत सी रुकावटों के बाद उन्नति का मार्ग अन्य स्थानों के सम्पर्क से प्राप्त करने वाला और पिता के स्थान के संबंध में लापरवाही रखने वाला तथा राज समाज की भी परवाह न करने वाला और धन जोड़ने की चेष्टा हृदय की शक्ति से, व भाग्य की शक्ति से, और खर्च रोकने की शक्ति से करने वाला तथा शत्रु स्थान में दानाई से काम लेने वाला कुछ पेचीदा चालों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से सातवें स्थान में

नं० ५५



हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति से और अन्य स्थानों के बाहरी सम्पर्क से दैनिक रोजगार की लाइन में सफलता पाने वाला तथा गृहस्थी के आनन्द की प्राप्ति में कुछ कमी के साथ तरक्की पाने वाला और स्त्री के अन्दर कुछ बड़प्पन तथा धार्मिक भावनायें पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में हृदय बल की शक्ति से खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा दैवी गुणों की कला से भी फायदा पाने वाला और ईश्वर तथा भाग्य पर विश्वास

रखने वाला और लौकिक कार्यों में सफलता तथा मान प्राप्त करने वाला और उन्नति के लिये बड़ा पुरुषार्थ करने वाल और रोजगार की लाइन में धर्म पालन का भी हृदय मं ध्यान रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से अष्टम स्थान

नं० ५६

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की लाइन में कमजोरी पाने वाला तथा यश मं कमी पाने वाला और विदेश आदि मं मान और भाग्य की योजना पाने वाल तथा बड़प्पन व परिश्रम की शक्ति से खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और धर्म के मार्ग का ठीक पालन न कर सकने वाला और सुख की अधिक प्राप्ति के लिये महान् साधन पाने वाला तथा हृदय के अन्दर मातृ स्थान की बड़ी भारी चाहना व इज्जत पाने वाला और पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला तथा जीवन की निर्वाहक शक्ति का अच्छा साधन पाने वाला और आयु में कुछ वृद्धि पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये भाग्य का कुछ सहारा पाने वाला किन्तु भाग्य की तरफ से कुछ दुःख मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से नवम स्थान म

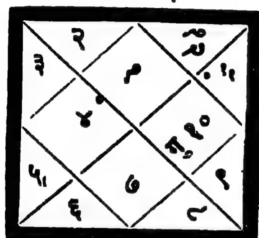
न० ५७

हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली होते हुये भी भाग्य में कुछ कमजोरी पाने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के संबंध में स्वयं सफलता के साधन पाने वाला तथा दैवी सहायता के योग से मान प्राप्त करने वाला विद्या और बुद्धि में

सफलता व चमत्कार पाने वाला एवं सन्तान सुख प्राप्त करने वाला तथा अपने हृदय में गौरव और धर्म की मर्यादा का पालन करने वाला किन्तु धर्म स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला एवं पुरुषार्थ से सफलता पाने वाला भाई बहन का कुछ सहयोग पाने वाला तथा भाग्य को बड़ा मानने वाला सुमार्गी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से दसवें स्थान में

न० ५८



हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि व कमी पाने वाला और हृदय योग से संबंधित किसी छोटे व्यवसाय कर भाग्य की शक्ति पाने वाला तथा राज समाज से कोई खास महत्त्व न प्राप्त कर सकने वाला एवं मामूली तौर से खर्च करके अपनी इज्जत आबरू को रखने वाला तथा मातृ स्थान व सुख शांति के वातावरण को प्राप्त करने में हृदय की पूरी शक्ति लगाने वाला धन की वृद्धि करने के लिये भी कुछ सहयोग भाग्य एवं अन्य स्थानों की शक्ति से प्राप्त करने वाला तथा शत्रु स्थान में कुछ दानाई से काम लेने वाला और कुछ भाग्य स्थान में परिश्रम का योग पाने वाला तथा कुछ पेचीदा चालों से बड़ा फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से और अन्य स्थानों के सम्पर्क से लाभ पाने वाला तथा लाभ के स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और धर्म के संबंध का लाभ

नं० ५६



पाने वाला तथा पुरुषार्थ से कुछ लाभ पाने वाला और बहन भाई का कुछ सहयोग पाने वाला और गृहस्थी का कुछ आनन्द प्राप्त करने वाला तथा दैनिक रोजगार के दायरे से फायदा पाने वाला और खर्च शक्ति का लाभ प्राप्त करने वाला तथा भोगादिक की शक्ति प्राप्त करने में खर्च भी करने वाला और हृदय की शक्ति से काम लेने वाला तथा कुछ सन्तान शक्ति का लाभ पाने वाला तथा बोल चाल और विद्या के अन्दर सफलता का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहरी स्थानों के सम्पर्क से भाग्य की शक्ति का साधन प्राप्त करने वाला तथा भाग्य के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला तथा भाग्य की शक्ति से खर्च संचालन की शक्ति सदैव प्राप्त करने वाला और भाग्योन्नति के लिये हृदय की शक्ति व बड़प्पन के ढंग से देरी और हानियों के बाद सफलता पाने वाला और सुख शांति को प्राप्त करने के लिये बहुत खर्च शक्ति तथा हृदय शक्ति से बहुत तरक्की पाने वाला और धार्मिक कार्यों में भी खर्च करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ गौरव प्राप्त करने वाला तथा शत्रु स्थान में कुछ बड़प्पन से काम लेने वाला होता है।

नं० ६०



## मेषलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न के पहिले स्थान में

नं ६१

हो तो वह मनुष्य बहुत शानदार रोजगार करने वाला तथा धन कमाने वाला और सुन्दर देह वाला तथा सुन्दर स्त्री वाला और भोग विलास की शक्ति का सुन्दर आनन्द प्राप्त करने वाला तथा महान् चतुराइयों से व कलाओं से काम लेने वाला और बहुत मान प्राप्त करने वाला और धन व कुटुम्ब का आनन्द पाने वाला तथा लौकिक कार्यों में बड़ी योग्यता व कुशलता रखने वाला और स्त्री के अन्दर बहुत बड़प्पन व योग्यता पाने वाला और गृहस्थ का उत्तम आनंद प्राप्त करने वाला और धनवान् समझा जाने वाला तथा इन्द्रियादिक सुखों को बड़ा महत्त्व देने वाला बड़ा कार्य कुशल इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ६२

हो तो वह मनुष्य बहुत धन प्राप्त करने वाला तथा बहुत कुटुम्ब वाला और बहुत रोजगार करने वाला तथा रोजगार की लाइन से व चतुराइयों से धन संग्रह करने की शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान के सुख संबंध में बंधन का योग पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के संबंध में बहुत से साधन एकत्रित रखने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में

अमीरी के प्रभाव से आनन्द मानने वाला और पुरातत्त्व संबंध से धन का फायदा पाने वाला तथा मान व इज्जत प्राप्त करने वाला और गूढ़ व गुप्त चालों की युक्तियों से भी फायदा उठाने वाला तथा कुछ जीवन में बंधन सा महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ६३

में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ की चतुराइयों के कार्य से बहुत धन पैदा करने वाला तथा रोजगार करने की बड़ी शक्ति रखने वाला और भाई बहन का सुन्दर योग पाने वाला तथा स्त्री के अन्दर प्रभाव वाला तथा सुन्दरता और धार्मिकता का योग पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धर्म और कर्तव्य का भी ध्यान रखने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये बहुत प्रकार से प्रयास करने वाला तथा इज्जतदार समझा जाने वाला और सुन्दरता व प्रभाव रखने वाला तथा लौकिक व कौटुम्बिक शक्ति का आनन्द पाने वाला चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से चौथे स्थान में

नं० ६४

हो तो वह मनुष्य धन का सुख प्राप्त करने वाला और स्त्री का सुखप्राप्त करने वाला तथा स्त्री के अन्दर सुन्दरता सुघड़ता तथा मान अमीरी और शांति का योग पाने वाला तथा गृहस्थी व माता का सुन्दर सम्पर्क पाने वाला तथा.

मकान जायदाद की शक्ति पाने वाला और कुटुम्ब का सुख प्राप्त करने वाला तथा रोजगार का सुख प्राप्त करने वाला और धन व रोजगार की शक्ति से राज समाज में मान पाने वाला तथा तरक्की करने वाला और पिता स्थान की सहायक शक्ति प्राप्त करने वाला और शांति पूर्वक गहरी चतुराइयों के योग से लौकिक सुखों की शक्ति का आनन्द लेने वाला होता है।

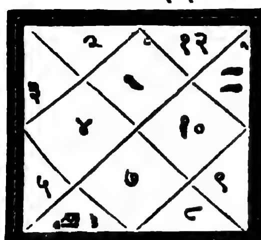
जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान में

नं० ६५

हो तो वह मनुष्य बुद्धि की चतुराइयों के द्वारा किसी प्रकार की कला से रोजगार करने वाला और बुद्धि बल की मेहनत से धन पैदा करने वाला तथा गृहस्थी व स्त्री के सुख की कुछ कमी महसूस करने वाला और इंन्द्रिय भोगादिक का बहुत चितन करने वाला तथा दिमाग की शक्ति से बहुत लाभ पाने वाला किन्तु दिमाग में परेशानी पाने तथा सन्तान पक्ष में कुछ बंधन महसूस करने वाला एवं बातों की चतुराइयों से काम निकालने वाला और बहुत प्रकार से बहुत लाभ पाने के लिये बुद्धि पर बहुत जोर देने वाला और कुटुम्ब की तरफ से कुछ रंज मानने वाला विद्या युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की तरफ से बड़ी चिन्ता मानने वाला तथा कुटुम्ब की हानि पाने वाला एवं स्त्री की तरफ से बड़ी अशांति पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की बहुत कमी

न० ६६



पाने वाला किन्तु भोगादिक कुछ अनुचित लाभ पाभे वाला और रोजगार की लाइन में बहुत कमजोरी तथा बहुत परिश्रम और परेशानियों के द्वारा काम चलाने वाला किन्तु रोजगार के संबध में गुप्त पेचीदा तरकीबों से काम लेने वाला तथा ननसाल पक्ष की कमजोरी पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला और अन्य स्थानों का विशेष सम्पर्क रखने वाला तथा शत्रु स्थान में नरभाई तथा गुप्त युक्तियों से काभ निकालने वाला और रोगादिक झंझटों में धन का कुछ संकीर्ण संबंध से लेन देन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ६७



में हो तो वह मनुष्य कुटुम्ब और रोजगार की लाईन से बहुत धन पैदा करने वाला और धन की शक्ति से रोजगार में तरक्की पाने वाला तथा सुन्दर स्त्री एवं मालदार ससुराल पाने वाला और स्त्री ध गृहस्थी की सुन्दर शक्ति के अन्दर भी एक प्रकार का थोड़ा बंधन सा पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की शक्ति के अन्दर कुछ बंधन और कुछ वृद्धि का योग पाने वाला तथा रोजगार की लाइन में बड़ी भारी शक्ति कला और चतुराइयों से काम लेने वाला तथा बहुत इज्जत व मान प्राप्त करने वाला और लौकिक कार्यों में बड़ी सामर्थ्य का परिचय देने वाला तथा देह में शोभा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की शक्ति की बहुत कमजोरी पाने वाला तथा पुरातत्त्व धन का फायदा पाने वाला और मौजूदा धन में अक्सर हानियां पाने वाला और गूढ़ व गुप्त और परिश्रम की युक्तियों के द्वारा रोजगार की लाइन से धन कमाने वाला और विदेश आदि के योग संबंध से सफ़लता पाने वाला और स्त्री स्थान की हानि पाने वाला तथा गृहस्थ के अन्दर बड़ी परेशानी तथा बंधन का योग पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की बड़ी कमी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अमीरी का ढंग और गहरी चतुराइयों की कला का पाने वाला गुप्त भोगी होता है।

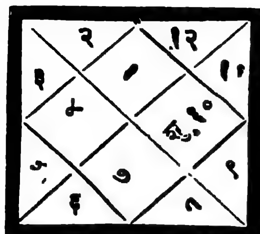
नं० ६८

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति और रोजगार की लाइन से धन की प्राप्ति पाने वाला और भाग्य तथा धन की ताकत से रोजगार में तरक्की पाने वाला एवं स्त्री की सुन्दर शक्ति का योग भाग्यवानी से पाने वाला और स्त्री के अन्दर धार्मिक व लौकिक भावनाओं का संमिश्रण पाने वाला तथा स्वयं भाग्यवान् समझा जाने वाला और उन्नति की प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ करने वाला तथा बहन भाई का योग पाने वाला और गृहस्थी व लौकिक कार्यों में धर्माचरण करने वाला तथा कुछ इन्द्रिय संयम से फायदा उठानेवाला बड़ा चतुर मानयुक्त इज्जतदार होता है।

नं० ६९

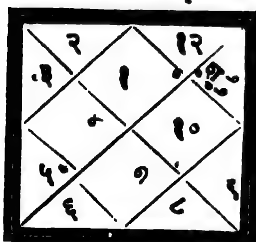
जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ऊँचे दर्जे का रोजगार करने वाला तथा बहुत मान के साथ चतुराइयों से धन कमाने वाला और पिता स्थान में बड़ी मदद पाने वाला तथा राज समाज में इज्जत पाने वाला और स्त्री स्थान का बड़ा गौरव पाने वाला तथा भोग विलास की महानता पाने वाला और लौकिक कार्यों में बड़ी भारी प्रवीणता व दक्षता रखने वाला और गृहस्थी सुख का बड़ा सुन्दर आनन्द पाने वाला और धन की शक्ति से व नित्य प्रति की मेहनत से बहुत उन्नति करने वाला तथा भूमि आदि मकानादि का सुख प्राप्त करने वाला और कौटुम्बिक शक्ति की महानता पाने वाला तथा मातृ सुख प्राप्त करने वाला बड़ा चतुर होता है।

नं० ७०




जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन में बडी चतुराइयों के द्वारा बहुत आमदनी पाने वाला तथा धन की ताकत से और नित्य के कार्यक्रम की मेहनत से धन की वृद्धि करने वाला और स्त्री स्थान का बड़ा सुन्दर लाभ पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक पदार्थों की महत्ता का लाभ पाने वाला तथा अनेक प्रकार के कीमती व सौन्दर्ययुक्त पदार्थों का भी लाभ पाने वाला और गृहस्थी का अपूर्व लाभ तथा आनन्द पाने वाला एवं लौकिक कार्यों की निपुणता और चतु-

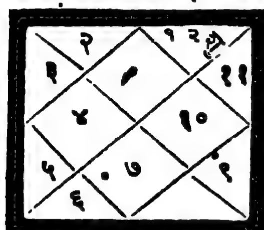
नं० ७१



रता से बहुत लाभ पानेवाला तथा संतान भाव में गृहस्थ सुख के ख्याल से कुछ कमी का योग महसूस करने वाला तथा विद्या में भी कुछ कमी का योग या अरुचि का योग पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान

न० ७२



में हो तो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करने वाला तथा धन स्थान की बड़ी हानि पाने वाला और गृहस्थ व कुटुम्ब की भी हानि पाने वाला स्त्री स्थान में भी हानि या अशांति पाने वाला तथा अन्य स्थानों के संयोग (संपर्क) से गृहस्थी की व स्त्री की शक्ति पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से ही रोजगार की लाइन में तरक्की पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के संबंध में अधिक खर्च करने वाला और बाहरी स्थानों के संबंध में कार्य कुशलता की विशेष शक्ति रखने वाला और शत्रु पक्ष व झगड़े आदि के संबंध में व ननसाल पक्ष में कमजोरी के योग से काम निकालने वाला होता है ।

# मेषलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न के पहिले स्थान में

नं० ७३

हो तो वह मनुष्य देह की सुन्दरता में व कद में कुछ कमी पाने वाला तथा पिता स्थान की तरफ से कमी का योग पाने वाला और आमदनी के सम्बन्ध मार्ग में कुछ परतन्त्रता का योग पाने वाला तथा कुछ बन्धन युक्त कर्म करने वाला और उन्नति पर पहुँचने के लिये बहुत २ प्रयत्न करते रहने पर भी विशेषता प्राप्त न कर सकने वाला और राज समाज का साधारण सुख प्राप्त करने वाला और दैनिक रोजगार की उन्नति में बहुत प्रयत्न करने वाला तथा मेहनत या पुरुषार्थ करने वाला भाई बहन के स्थान की कुछ पूर्ति पाने वाला तथा इज्जत के लिये कुछ गुप्त कर्म व गुप्त चिन्ता का योग पाने वाला तथा स्त्री को विशेष महत्त्व देने वाला कुछ आलसी सा होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से दूसरे स्थान

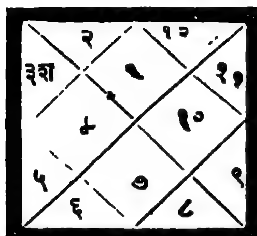
नं० ७४

में हो तो वह मनुष्य अपने कर्म और लाभ की शक्ति से बहुत धन कमाने वाला तथा धन व इज्जत की शक्ति से बहुत मोटी आमदनी मुस्तकिल तौर से प्राप्त करने वाला तथा पिता स्थान की व कुटुम्ब की भी शक्ति प्राप्त करने वाला तथा राज समाज से बहुत लाभ पाने वाला और

मातृ स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों को धन की शक्ति से एकत्रित करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अशान्ति का योग पाने वाला तथा धन और इज्जत की स्थिर शक्ति पाने वाला तथा धन की वृद्धि के लिये महान् कर्म बन्धन की शक्ति से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से तीसरे स्थान

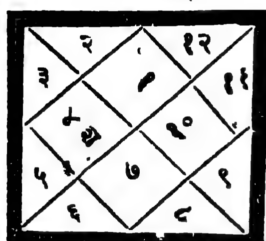
न० ७५




में हो तो वह मनुष्य महान् पराक्रम और पुरुषार्थ से उन्नति प्राप्त करने वाला तथा पिता की शक्ति का बहुत सहयोग लाभ पाने वाला और भाई बहन का योग प्राप्त करने वाला तथा राज समाज में मान प्राप्त करने वाला और अधिक खर्च के कारणों से कुछ खर्च सम्बन्धी अशान्ति का योग पाने वाला और संतान पक्ष के स्थान में कुछ अशांति का वातावरण पाने वाला तथा उन्नति को प्राप्त करने के लिये बुद्धि में कुछ परेशानी प्राप्त करने वाला तथा मान प्राप्ति के ख्याल से अन्य बाहरी स्थानों में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा धर्म पालन में कुछ नीरसता रखने वाला अहंभावी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता से सुख उठाने वाला तथा अपने स्थान से कारबार करने वाला तथा सरलता से शान्ति पूर्वक लाभ पाने वाला और राज समाज से सुख उठाने वाला तथा मान व इज्जत का साधन रखने वाला और मातृ

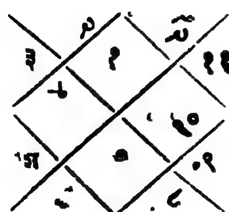
नं० ७६



स्थान में कुछ अशान्ति युक्त वातावरण से गौरव लाभ करने वाला और शत्रु स्थान में बड़े प्रभाव से काम लेने वाला तथा दिक्कत और मुसीबतों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति रखनेवाला और देह के स्थान में कुछ कमी व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला और दुनियादारी के कारणों से आत्मा के अन्दर कुछ अशान्ति पाने वाला तथा कुछ परिश्रमी कर्म करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कुछ कमी का योग महसूस करने वाला तथा पिता स्थान के सम्बन्ध से कुछ

नं० ७७



लाभ प्राप्ति का साधन पाने वाला और बुद्धि विद्या के स्थान से भी लाभ प्राप्त करने वाला तथा रोजगार की लाइन में बहुत उन्नति के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक की प्राप्ति के लिये बहुत उत्साह से काम लेने वाला और स्त्री स्थान को विशष महत्त्व देने वाला तथा लौकिक व सामाजिक कार्यों के सम्बन्ध मार्ग में खूब मेहनत करने वाला और धन की वृद्धि के लिये खूब कर्म करनें वाला तथा संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० ७८

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा कुछ प्रभावशाली व कुछ परतंत्रता युक्त कर्म करने वाला और दिनचर्या में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला तथा दिक्कतों व मुसीबतों पर विजय पाने वाला और आमदनी के स्थान मार्ग से कुछ घिराव सा महसूस करने वाला और खर्च के स्थान में मजबूरियों के कारणों से अधिक खर्च करने वाला तथा अन्य स्थानों के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा अपने बल पुरुषार्थ की शक्ति से महान् कर्म करने वाला तथा बहन भाई से कुछ शक्ति का सम्पर्क रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० ७९

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की शक्ति का बड़ा सहारा पाने वाला और बड़े ज़ोर ज़ोर से कार वार करने वाला तथा दैनिक रोजगार की लाइन में महान् परिश्रम करने वाला तथा देह और आत्मा में कुछ अशांति का कारण महसूस करने वाला और भोग विलास के महान् साधन प्राप्त करने वाला तथा रोजगार की लाइन से बहुत फायदा पाने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये बहुत २ प्रयत्न करने वाला तथा धर्म के वास्तविक रूप का पालन

करके बाहरी धर्म का पालन करने वाला और अपने उग्र कर्मों के कारण माता से कुछ अशान्ति के साथ लाभ का सम्बन्ध पाने वाला कुछ गुमानी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान से परेशानी का योग पाने वाला और उन्नति का स्थान प्राप्त करने के लिये महान् परिश्रम व कूट नीतियों से काम लेने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने और लाभ प्राप्ति के लिये बहुत कठिन कर्म करने वाला और विदेश का सम्बन्ध पाकर कुछ तरक्की करने वाला और महान् हठ योग्यता से काम लेने वाला और अपनी सुन्दर गहरी व गुप्त शक्ति व युक्तियों का बड़ा भरोसा रखने वाला तथा कामयाबी पाने वाला किन्तु राज समाज में मान सम्मान के अन्दर कुछ कमी के साथ वृद्धि पाने वाला और बुद्धि के अन्दर कुछ परेशानी पाने वाला तथा विद्या और संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता पाने वाला हेकड़ी रखने वाला होता है।

नं० ८०

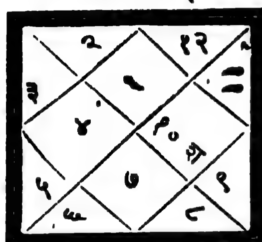
जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य और कर्म की शक्ति से बहुत लाभ पाने वाला और बँधी हुई आमदनी पाने का अधिकारी तथा बड़ा भाग्यशाली समझा जाने वाला और बहुत प्रकार से धर्म पालन करके धर्म की शक्ति को दिखाने वाला तथा पिता स्थान से सम्बन्धित लाभ पाने वाला तथा

नं० ८१

राज समाज की शक्ति का फायदा भाग्य की ताकत से प्राप्त करने वाला तथा शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव जमाने वाला और दिक्कतों व झंझटों पर विजय पाने वाला तथा महान् पुरुषार्थ व परिश्रम से लाभ पाने वाला तथा दैव या भगवती की कृपा से व कुछ परिश्रम से प्रभाव की वृद्धि पाने वाला तथा कुदरती सफलता का अधिकारी होता है।

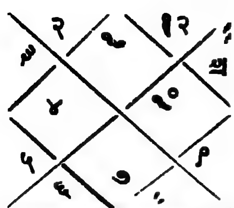
जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी कारवार करने वाला और बड़ी शान गुमान के साथ आमदनी पाने वाला पिता स्थान की शक्ति का बड़ा लाभ और फायदा उठाने वाला तथा राज समाज के सम्बन्ध से बहुत लाभ व इज्जत पाने वाला और बहुत प्रकार से राजसी खर्च करने वाला तथा बहुत प्रकार से अन्य स्थानों का अधिक संबंध रखने वाला और मातृ स्थान के सम्पर्क में कुछ अरुचि रखने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में बड़ी जोरदारी से नगाड़े की आवाज की तरह मैदान में सफलता पाने वाला और भोग विलास के सम्बन्ध में महान् साधन प्राप्त करने वाला और उन्नति पर पहुँचने के लिये महान् कर्म करने वाला बड़ा स्वाभिमानी होता है।

न० ८२




जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत मजबूत आमदनी पाने वाला तथा इज्जत के कर्म से उन्नति पाने वाला तथा पिता स्थान के सम्बन्ध से भी फायदे का योग प्राप्त करने वाला

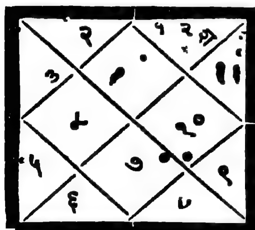
नं० ८३



और राज समाज से सम्बन्धित फायदा उठाने की स्वयं शक्ति प्राप्त कर लेने वाला और उन्नति के साधन मार्ग में अपनी देह की भी परवाह न करने वाला तथा देह व आत्मा में किसी प्रकार की कमी का योग पाने वाला और बुद्धि में कुछ परेशानी व चिड़चिड़ाहट का योग पाने वाला और संतान पक्ष से कुछ असंतोष पाने वाला तथा दिनचर्या के अन्दर कुछ परेशानी महसूस करने वाला तथा पुरातत्त्व शक्ति की तरफ से कुछ असंतोष पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की तरफ से हानि का योग पाने वाला और बहु प्रकार से बहुत खर्च करने वाला और अन्य बाहरी स्थानों के सम्पर्क से कार

नं० ८४



व्यवसाय व आमदनी की शक्ति पाने वाला किन्तु मान प्रतिष्ठा के निज स्थान में कमी के कारणों का योग पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बहुत भारी प्रयत्न करते रहने वाला और कुटुम्ब स्थान से कुछ मान प्रतिष्ठा का संबंध रखने वाला तथा बाहरी स्थानों की सम्पर्क शक्ति के कर्मबल से भाग्यवान् समझा जाने वाला तथा धर्म के पालन के लिये कुछ अनेक प्रकार क थोड़े २ कर्म करते रहने वाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला होता है।

## मेषलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न के पहिले स्थान में

नं० ८५

हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कष्ट सहने वाला और देह में किसी प्रकार की कुछ कमी का योग पाने से दुःख मानने वाला तथा महा गुप्त हिम्मत रखने वाला और अपनी स्थाई उन्नति की शक्ति पाने के लिये तथा अमर नाम करने के लिये महान् से महान् जोखम उठा सकने वाला तथा अनधिकार प्रयत्न भी करने वाला और छिपाव शक्ति के कर्मबल से प्रतिष्ठा की उन्नति पाने वाला और हृदय में व दिमाग में घबड़ाहट के कारण पाने वाला और बड़े २ मार्मिक आघात व संकट सहने वाला किन्तु उन्नति के पथ पर डटा रहने वाला तथा युक्ति की शक्ति का भरोसा रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ८६

हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा कुटुम्ब में कुछ विग्रह पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये महान् से महान् चतुराइयों से काम लेने वाला तथा धन की चिरस्थाई शक्ति पाने के लिये कुछ अनधिकार प्रयत्न गुप्त रीति से करते रहने वाला और धन के स्थान में कभी २ गहरे संकटों का सामना पाने वाला तथा धन के

संबंध में कभी २ दूसरों का सहारा लेने वाला और धन संग्रह करने के लिये दिमाग की परेशानी तथा बुद्धि की व युक्ति की बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला और बड़ा धनी मालूम पड़ने वाला कुछ गुप्त अशांति युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर बड़ी भारी हिम्मत रखने वाला और दिमाग की शक्ति से व गुप्त युक्तियों की चालों से बड़े से बड़े महान् और मुश्किल कार्यों को पूरा करने की ताकत व हिम्मत रख कर आगे बढ़ने वाला और महान् धैर्य और परिश्रम से काम करने वाला और बहन भाइयों पर अपना प्रभुत्व रखने वाला और दूसरों को दबाव पहुंचाने में प्रसन्न रहने वाला और किसी प्रकार का भय न मानने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि करने में कभी न चूकने वाला बड़ा प्रभावशाली होता है।

नं० ८७

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ स्थान में व माता के पक्ष में बहुत हानि पाने वाला तथा सुख शांति के संबंध की बहुत हानि पाने वाला और मकान तथा भूमि आदि की हानि व कमी पानेवाला तथा सुख स्थान की बहुत मजबूती प्राप्त करने के लिये बहुत मानसिक कष्ट संहन करने वाला तथा बहुत गुप्त व

नं० ८८

गहरी चाल चलन वाला और बहुत दिक्कतें सहने के बाद अंत में सुख की मजबूती के साधन पाने वाला और सुख के संबंध में किसी प्रकार की कोई विशेष बात इस प्रकार की पाने वाला जिसके कारण से दूसरों को चकित कर देने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से पांचवे स्थान में

न० ८९

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ रा ७ ९

हो तो वह मनुष्य विद्या स्थान में कमी व परेशानियों का योग पाने वाला और संतान पक्ष में हानियों का व क्लेश का योग पाने वाला और दिमाग के अन्दर परेशानी पाने वाला क्रोध से बातें करने वाला और बातचीत बोलचाल के अंदर ठीक तौर से दूसरों को न समझा सकने वाला तथा शब्दों के अन्दर कुछ छिपाव शक्ति से काम लेने वाला और बुद्धि के अन्दर कुछ अनुचित तेजी तथा कुछ चिड़चिड़ाहट रखने वाला तथा दूसरों की बुद्धि में कमजोरी समझने वाला और कभी कभी अधाधुंद बोलने वाला तथा कुछ कटु शब्द बोलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से छठे स्थान

न ९०

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ रा ८

में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में बड़ी भारी प्रभावयुक्त विजयी रहने वाला और हरेक प्रकार की दिक्कतों व मुसीबतों पर हावी रहने वाला और महान् कूट नीति से काम लेने वाला तथा जबरदस्त पेचीदा चालों से बड़े २ मत-

लब सिद्ध करने वाला और अपने स्वार्थ सिद्धि के स्थान में बड़ी भारी होशियारी व मुस्तैदी से काम लेने वाला और अपनी प्रभाव वृद्धि के लिये रात दिन बड़ी २ तरकीबें सोचने वाला तथा उन्नति की मजबूती का कोई न कोई मजबूत साधन पाने वाला तथा ननसाल में कुछ दिक्कतें पाने वाला सावधान होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ परेशानियों का योग पाने वाला तथा गृहस्थी में कुछ बड़े झंझटों का योग प्राप्त करके दैनिक कार्य संचालन करने वाला और रोजगार की लाईन में बड़ी २ दिक्कतें सह २ करके काम निकालने वाला तथा दैनिक रोजगार की लाइन में कभी २ मार्मिक आघात सहने वाला और बड़ी भारी युक्तियों से व गुप्त तरकीबों से रोजगार की लाईन में सफलता पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के स्थान संबंध में बड़ी भारी रुचि रखकर युक्तियों से काम निकालने वाला और लौकिक विषय के हरएक दायरे में कुछ अनधिकार फायदा उठाने वाला चतुर होता है।

नं० ९१

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में वहुत परेशानियों का योग पाने वाला और जीवन के निर्वाहक शक्ति में व पुरातत्त्व संबंध में कुछ हानि का योग पाने वाला और पेट के निचले हिस्से में अन्दर की तरफ कुछ विकार

नं० ९२

पाने वाला और बहुत गहरी तरकीबों की चालें चलने वाला तथा छिपाव शक्ति का इस्तेमाल बड़ी हेकड़ी के साथ करने वाला और जीवन के निर्वाहक शक्ति में स्थिरता व मजबूती पाने के लिये बड़े बड़े निराशा जनक घोर संकटों को सहने के बाद किसी स्थाई लाईन से मजबूती प्राप्त कर लेने वाला तथा महान् कूट नीति वाला होता है।

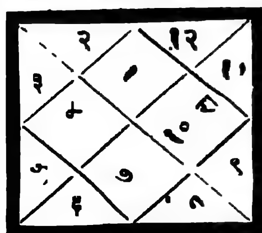
जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में बड़ा भारी अफसोस मानने वाला तथा भाग्य की उन्नति के संबंध में महान् निराशाओं का व चिन्ताओं का सामना पाने वाला तथा भाग्य की वृद्धि के लिये बहुत कुछ अनुचित योजनाओं के योग से गुप्त रूप से काम लेने वाला और धर्म के स्थान संबंध में बहुत हानि का योग पाने वाला तथा धर्म अधर्म का ठीक ध्यान न करके किसी बहुत छोटे तत्त्व को धर्म मानने वाला और वास्तविक धर्म को नुकसान पहुंचा कर फायदा उठाने की कोशिश करने वाला तथा कुछ अपयश प्राप्त करने वाला अशांत युक्त होता है।

नं० ९३



जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा पिता स्थान के संबन्ध में कुछ युक्तियों से काम निकालने वाला और कार व्योपार की उन्नति के मार्ग में बड़ी २ दिक्कतें सहने वाला तथा पन्दोन्नति के संबंध में

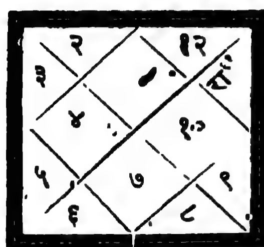
न० ९४



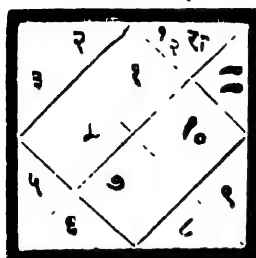
बड़ी भारी स्थिर युक्तियों से व परिश्रम से व छिपाव शक्तियों से काम लेने वाला और राज समाज के संबंध में उन्नति के लिये कुछ कमी व दिक्कतें सह २ कर के भी बड़ी मेहनत व होशियारियों से सफलता शक्ति को प्राप्त करने वाला और मान व प्रभाव के स्थान में कभी २ महान् संकटों को सहन करने वाला किन्तु पेचीदा तरकीबों से व महान् हिम्मत से स्थिरता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला तथा आमदनी के स्थान में कुछ मुफत का धन लाभ करने वाला और बहुत लाभ प्राप्ति के लिये बहुत प्रकार की तरकीबों से व गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला और लाभ प्राप्ति के मार्ग में कभी २ बड़े भारी संकट का मुकाबला पा जाने वाला किन्तु चाहे जैसे संकटों का समय होने पर भी किसी न किसी प्रकार अपनी सफलता शक्ति को व जरूरतों की पूर्ती को प्राप्त कर लेने वाला तथा लाभ की प्राप्ति के संबंध में बड़ी भारी हिम्मत व होशियारी और कुछ अनधिकार फायदा उठाने की शक्ति से काम लेने वाला होता है।

नं० ९५



जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से बारहवें स्थान
नं० ९६




में हो, तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने के कारण दुःख अनुभव करने वाला तथा खर्च के स्थान में किसी भी प्रकार से कोई ऐसे कारण पाने वाला जिससे अशांति प्राप्त हो और विद्वत्ता की पेचीदा युक्तियों से खर्च संचालन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा अन्य बाहरी स्थानों के सम्पर्क मार्ग में कुछ कठिनाइयां व कुछ परेशानियां अनुभव करने वाला किन्तु बड़प्पन की तह में छिपी हुई युक्तियों से बहुत काम निकालने वाला और बाहरी संबंध के मनुष्यों से कुछ वैमनस्यता के कारण पा लेने वाला और कभी कभी खर्च के स्थान में भयानक कठिनाइयों का सामना भी पा लेने पर हताश न होने वाला तथा अंत में कुछ खर्च की मजबूती पा लेने वाला होता है।

# मेषलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य देह के स्थान में कुछ अशांति व कमी का योग पाने वाला और देह के संबंध में कभी २ महान् सांघातिक चोट या वेदना का योग पाने तथा हृदय के अन्दर बड़ी भारी मजबूती और गुप्त धैर्य की महान् शक्ति रखने वाला और दूसरों के सामने दब कर रहने की बात बिलकुल न चाहने वाला किन्तु इसके विपरीत अधाधुंधी के साथ हेकड़ी व हठधर्मी से काम लेने वाला और गुप्त युक्तियों के बल से तथा महान् कठिनाइयों की सहन शक्ति के बल से किसी प्रकार की ख्याति प्राप्त करने की शक्ति पा लेने वाला और अपने अन्दर की किसी खास कमी का दुःख अनुभव करने वाला होता है।

नं० ९७

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन के स्थान में कभी २ बड़ी हानि पाने वाला और धन की कमी के कारण से भी कष्ट का अनुभव करने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिये बड़ी चतुराई के साधनों का पालन गुप्त हिम्मत के बल से करने वाला और धन के हर एक संबंध में बड़े धैर्य से काम लेने वाला और धन के पक्ष में कभी २ घोर संकट का सामना

नं० ९८

पाने वाला तथा अंत में किसी धन के संबंध की गुप्त शक्ति का साधन पा लेने से संतोष पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में बहुत हानियों व क्लेश का साधन पाने वाला तथा धन के लिये अधाधुंध शक्ति एवं युक्ति का प्रयोग करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई बहन के स्थान में हानि व क्लेश का योग पाने वाला और अपने पुरुषार्थ बल में कुछ कमजोरी पाने वाला किन्तु अपने शक्ति के अंदर बहुत गुप्त हिम्मत का बहुत भरोसा रखने वाला तथा छिपी हुई शक्ति से बहुत काम लेने वाला और कुछ अनुचित रीति से अपनी बहादुरी का परिचय देने वाला और अपने बल पुरुषार्थ व हिम्मत के ऊपर कभी २ बड़े भीषण प्रहार सहने वाला और बड़ी से बड़ी मुशीबत के अंदर भी आन्तरिक धैर्य को न छोड़ने वाला और छिपे तौर से हमेशा अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा रहने वाला होता है।

नं० ९९

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के पक्ष में हानि पाने वाला और मातृ स्थान से कुछ अलहदगी पाने वाला और मकान भूमि आदि के संबध में कुछ हानि व कमी का योग पाने वाला और सुख व आराम के स्थान में बहुत प्रकार से कमी व अशांति

नं० १००

का योग पाने वाला और सुख प्राप्ति के स्थान में मजबूती पाने के लिये महान् परिश्रम व कठिनाइयां सहने वाला और अपने निज स्थान में कभी २ असहनीय दारुण विपत्ति का सामना पाने वाला और अंत में किसी सुख संबंध की मजबूती को पा लेने वाला तथा सुख प्राप्ति के लिये अधाधुंद शक्ति का प्रयोग करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से पांचवें स्थान में

नं० १०१

हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में कष्ट सहन करने वाला तथा संतान की हानि पाने वाला और विद्या की कमी पाने वाला तथा विद्या ग्रहण करने में बड़ी २ गहरी परेशानियां सहने वाला और विद्या स्थान व बुद्धि स्थान में और सतान स्थान में कभी कभी असहनीय दारुण संकट का योग पाने वाला और दिमाग के अन्दर अधिक गर्मी होने के कारण से अपने शब्दों के भाव दूसरों को न समझा सकने वाला और अपने बुद्धि की कमी को दूर करने के संबंध में महान् से महान् परिश्रम अंध विश्वास के साथ बराबर करते रहने वाला तथा कुछ छिपाव की बातों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से छठे स्थान में

नं० १०२

हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में महान् पुरुषार्थ शक्ति का परिचय देने वाला तथा शत्रु को परास्त करने वाला और महान् से महान् कठिनाइयों व दिक्कतों की जरा भी परवाह न करने वाला और अपनी प्रभाव की बहुत उन्नति

करने के लिये अंधाधुंद शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी पाने वाला और शत्रु स्थान में कभी २ अचानक भीषण मुशीबत की आशंकायें पाने वाला किन्तु वास्तव में हमेशा जीत में रहने वाला और बड़ी बहादुरी का दावा रखने वाला और पाप दोष की परवाह न करके स्वार्थ सिद्धि का पूरा ध्यान रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ हानि और कुछ अशांति पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की शक्ति के संबध में विशेष अधिकार रखने वाला और रोजगार की लाइन में बहुत परिश्रम करके गुप्त युक्ति व शक्ति से काम निकालने वाला और रोजगार के दायरे में कभी २ महान् कठिनाई का भीषण सामना पाने वाला किन्तु महान् धैर्य से हिम्मत के साथ समय के कार्य को करते रहने वाला और रोजगार के संबंध में अंत तक किसी स्थिर मजबूती को प्राप्त कर लेने वाला और प्रत्येक लौकिक कार्यों में कुछ कमी के बावजूद भी बड़े साहस के साथ उन्नति को प्राप्त करने वाला होता है।

न० १०३

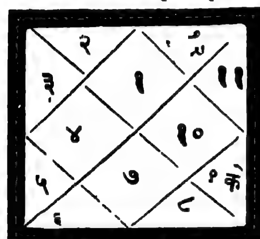
जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य पेट के अंदर निचले व पिछले हिस्से में कुछ शिकायतें पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बहुत अशांति अनुभव करने वाला और पुरातत्त्व की कुछ हानि पाने वाला तथा जीवन की आयु के संबंध में कभी २

न० १०४

सांघातिक हानिमां पाने वाला और अपने जीवन से संबंधित मार्ग में महान् हेकड़ी रखने वाला तथा तीक्ष्ण गुप्त युक्तियों के बल से निर्वाहक शक्ति में सहयोग पैदा करने वाला और महान् कठिन परिश्रम से जीवन का विकाश करने वाला और अंत तक जीवन में कुछ प्रसिद्धता पाने में सफल होने वाला व प्रभाव वाला होता है।

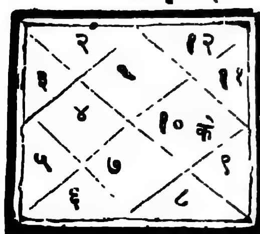
जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की उन्नति के लिये अधिक से अधिक परिश्रम करने वाला तथा भाग्य के स्थान में बड़े २ महान् झंझटों का योग पाने वाला तथा कुछ गुप्त शक्ति के महान् प्रयोगों के द्वारा उन्नति का साधन पाने वाला और धर्म पालने के स्थान में वास्तविक धर्म का पालन करने वाला और महान् तामसी धर्म का बड़े रूप से बहुत पालन करने वाला और वास्तविक सुयश न पाकर तमोगुण की लाईन से यश प्राप्त करने वाला और फिर भी भाग्य स्थान में कुछ कमी व अशांति अनुभव करने वाला तथा बहुत बड़े आडम्बर से भाग्य का चमत्कार पाने वाला शील रहित होता है।

नं० १०५




जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कुछ हानि व कुछ कमी व क्लेश का योग पाने वाला और कारोबार के अन्दर कुछ अधिक परिश्रम व परेशानी से काम करने वाला और उन्नति प्राप्त करने के लिये गुप्त शक्ति का प्रयोग

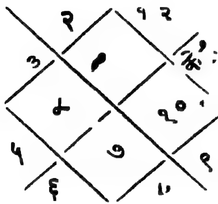
नं० १०६



बड़े धैर्य और साहस के साथ करने वाला और राज समाज के संबंध में बहुत दिक्कतों को सहने के बाद उन्नति व मान वृद्धि का साधन पाने वाला और मान प्रतिष्ठा के स्थान में कभी २ सांघातिक हानियों का योग पाने वाला और अपनी इज्जत की मजबूती में कुछ कमी का योग पाने पर भी बड़ी बहादुरी से काम लेने वाला होता है।

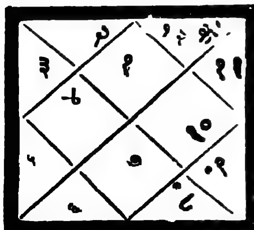
जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला तथा अधिक लाभ पाने के लिये अधिक प्रयत्न करने वाला और कुछ मुफ्त का सा लाभ सदैव प्राप्त करते रहने की सी योजनायें बनाने वाला और धन लाभ के स्थान में महान् धैर्य और कुछ गुप्त शक्तियों से काम लेने वाला तथा लाभ के स्थान में किसी भी प्रकार की कमी का योग महसूस करने वाला और शेष में आमदनी के संबंध में कोई स्थाई योजना प्राप्त करने वाला और कुछ अनुचित लाभ उठाने की शक्ति रखने वाला तथा महान् स्वार्थ युक्त होकर अधाधुंदी से काम लेने वाला होता है।

नं० १०७



जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च अधिक करने वाला और खर्च के कारणों से कुछ कष्ट प्राप्ति के योग प्राप्त करने वाला तथा खर्च के मार्ग में कुछ बड़प्पन व हेकड़ी और बड़ी दृढ़ता से काम लेने वाला तथा महान् धैर्य की शक्ति के

नं० १०८



गुप्त बल से खर्च संचालन करते रहने वाला और कभी २ खर्च के मार्ग में भीषण संकटों का भी सामना पाने वाला और बाहरी अन्य स्थानों के संपर्क में बड़ी कठिनाइयों तथा परेशानियों का योग पाने वाला और बाहरी संबंध में अपनी कमजोरी या कमी की परवाह न करके आन्तरिक शक्ति के द्वारा बड़े भारी परिश्रम से काम निकालने वाला तथा अन्त में खर्च संचालन की स्थिर शक्ति प्राप्त करने वाला होता है।

## वृषलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न के पहिले स्थान

नं० १०९

में हो तो वह मनुष्य माता की सहायक शक्ति को कुछ वैमनस्यता से प्राप्त करने वाला और कुछ वैमनस्थता के द्वारा ही देह का सुख सम्बन्धी साधन प्राप्त करने वाला व अपनी देह में शीतल आग अर्थात् शांत गर्मी रखने वाला और कुछ भूमि का लाभ पाने वाला तथा घरेलू साधनों की शक्ति से दैनिक रोजगार के मार्ग में खूब तरक्की व सुख प्राप्त करने वाला और स्त्री के स्थान से सुख सम्बन्धी प्रभाव पाने वाला तथा गृहस्थ के वातावरण में सुख का अनुभव करने वाला और इन्द्रिय भोगादिक का सुख प्राप्त करने में सहायता पाने वाला तथा देह में कुछ अलकसाहट व प्रभाव का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान

नं० ११०

में हो तो वह मनुष्य धन के स्थान संबंध से सुख उठाने व मानने वाला तथा सुख संबंधी कारणों में कुछ बंधन पाने वाला और जायदाद की व जमीन की शक्ति का प्रभाव पाने वाला और माता के संबंध में भी कुछ बंधन योग पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के संबंध में बहुत सी वस्तुयें

तथा बहुत से पदार्थ संग्रह करके प्रभाव शक्ति पाने वाला और कुटुम्ब के अन्दर घरेलू सुख का प्रताप पाने वाला और मकानादि से व सुख के दिखावटी प्रभाव से धन की शक्ति का योग प्राप्त करने वाला और जीवन की दिनचर्या में व आयु स्थान में सुख प्राप्त करने वाला और पुरातत्त्व स्थान से सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम से बहुत सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और बहन तथा भाई का प्रभावशाली सुखप्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की शक्ति प्राप्त करने वाला और शांति युक्त प्रभावशाली मेहनत से प्रभाव पाने वाला और माता की व मातस्थान की शक्ति का सहारा प्राप्त करने वाला और अपने कद के अन्दर सुन्दर प्रभाव व ऊँचाव पाने वाला और धर्म स्थान के संबंधमें कुछ नीरसता का योग पाने वाला और भाग्य की शक्ति को कुछ कम महत्त्व देने वाला और बहुत उत्साह व उमंग का योग पाने वाला होता है।

नं० १११

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुज्य बहुत जमीन जायदाद पाने वाला माता की बड़ी प्रभाव शक्ति का सुख उठाने वाला और मातृस्थान से महान् प्रभाव पाने वाला और सुख संबंधी मामलों में बड़ा गौरव और चमत्कार की शक्ति रखने वाला और

नं० ११२

भूमि स्थान में विशेष संबंध व स्थानाधिकार होने के कारण से सुख की वृद्धि का योग पाने वाला और पिता स्थान में कुछ विरोध व वैमनस्यता का योग पाने वाला और अधिक मेहनत से होने वाले कर्म में अरुचि रखने वाला और राज व समाज के संबंध में थोड़ा सम्पर्क रखने वाला तथा अपने स्थान में ही मस्ती मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने वाला तथा विद्यास्थान से सुख प्राप्त करने वाला और बुद्धि के स्थान में शान्ति युक्त प्रभाव की शक्ति से सुख उठाने वाला और संतान स्थान में सुख शक्ति व प्रभाव प्राप्त करने वाला और बुद्धि के अन्दर महान् गहरी और आदर्श प्रतिभा की शक्ति रखने वाला एवं बड़े लम्बे चौड़े और गहरे विचारों से काम लेने वाला और बुद्धि की शान्तमयी प्रखर शक्ति से भूमि का भी बहुत लाभ पाने वाला तथा लाभ प्राप्ति के स्थान में बहुत गहरे विचारों की शक्ति से बहुत तरक्की करने वाला और मातृस्थान के योग का फायदा पाने वाला कुछ नरम गरम बुद्धि वाला होता है।

नं० ११३




जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता से कुछ विरोध व कुछ वियोग व कुछ कमी का योग पाने वाला और जमीन जायदाद की कमी पाने वाला तथा जन्मभूमि से अलहदगी का योग पाने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों में बहुत कमी पावे

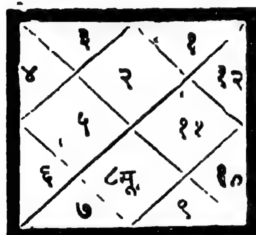
नं० ११४



वाला और ननसाल पक्ष में भी कमी का योग पाने वाला और शत्रु स्थान में कुछ अशान्ति का योग पाने वाला तथा कुछ श्रम की अधिकता का योग भी पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा अन्य स्थानों के सम्पर्क की शक्ति से सुख के साधन प्राप्त करने वाला और कुछ अशान्त प्रद वातावरण में रह कर प्रभाव पाने वाला छिपी हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्तिका वृश्चिक का सूर्य लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य माता से सेवा सुख प्राप्त करने वाला और गृहस्थी के अंदर प्रभावशाली आनन्द का योग पाने वाला और स्त्री स्थान से सुख संबंधी प्रभाव पाने वाला और लौकिक भोगादिक व सुखों की शक्ति पाने वाला और मकान आदि रहने के स्थान का भी प्रभाव पाने वाला और भूमि व्यवस्था के संबंध में दैनिक कार्य प्रणाली के अन्दर अच्छी योग्यता के द्वारा प्रभावयुक्त कार्य करने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में प्रभावशाली सुखद कर्म के द्वारा कर्म करके सुख उठाने वाला और गृहस्थी के सुखों की प्राप्ति के कारणों से देह में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला तथा देह की उज्ज्वलता में कुछ कमी पाने वाला होता है।

नं० ११५



जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी माता के संबंध में कष्ट व अशान्ति का योग पाने वाला और मातृभूमि से वियोग पाने वाला और विदेश स्थान में महान् प्रभावशाली सहायक हितू प्राप्त करने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव और सुख का योग पाने वाला और विदेश भूमि पर भूमि अधिकार व प्रभाव पाने वाला और आयु स्थान में महानता पाने वाला अर्थात् मृत्यु के पश्चात् भी स्थिर प्रभाव की शक्ति छोड़ जाने वाला और पुरातत्त्व के स्थान में किसी बहुत भारी स्थाई शक्ति का प्रभाव पाने वाला और महान् गहरी और गम्भीर युक्तियों के कर्म से सुख का अनुभव करने वाला और धन की वृद्धि के लिये पुरातत्त्व स्थान की शक्ति से फायदा उठाने वाला होता है।

नं० ११६

३ १
४ २ १२
५ ११
६ ८ १०
७ ९सू

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के सम्बन्ध में ऐसी अच्छाई का योग पाने वाला जिसके रस में मिठास की कमी हो और भूमि आदि मकानादि का सामान्यतया सुन्दर लाभ पाने वाला और भाग्य के स्थान में कुछ नीरसता युक्त सुखों की प्राप्ति पाने वाला और धर्म के संबंध में भी कुछ नीरसता से युक्त सुख की साधना पाने वाला और कुछ यश भी प्राप्त करने वाला और धर्म के संबंध में कुछ ज्ञान की गहराई का योग

नं० ११७

३ १
४ २ १२
५ ११
६ ८ १०सू
७ ९

भी पाने वाला और भाई बहन के स्थान से सुख का संबंध पाने वाला और पुरुषार्थ बल का भी सुख उठाने वाला तथा मेहनत के स्थान से प्रभाव पाने वाला भग्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से दसवें स्थान में

नं० ११८

हो तो वह मनुष्य माता की शक्ति का आनन्द कुछ नीरसता से प्राप्त करने वाला और पिता स्थान के सुख में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला और मकान भूमि आदि के सुख प्राप्त करने वाला और राज समाज क संबध में कुछ सामान्य सुख का योग पाने वाला और कार व्योपार में कुछ परिश्रम के साथ थोड़ा सुख उठाने वाला और मान प्राप्ति व उन्नति के मार्ग में कुछ अलकसाहट का योग पाने वाला और सुख प्राप्ति के स्थान की वृद्धि करने के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला और आलस्य के कारणो से कभी २ हानियों का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ११९

में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान से खूब लाभ पाने वाला तथा मकान भूमि आदि का बहुत प्रभावशाली फायदा पाने वाला और आमदनी के स्थान में बहुत ही सुख और प्रभाव के साथ फायदा उठाने वाला तथा विद्या के स्थान से

सुख लाभ पाने वाला और संतान पक्ष से सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और बुद्धि के अन्दर शांतियुक्त प्रभावशक्ति से काम लेकर बोलचाल करने वाला और विचारों के अन्दर बड़ी दूर तक की गहरी बातें सोचने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों की बहुत सी प्रभावशाली वस्तुओं का खूब लाभ पाने वाला बड़ा चतुर धैर्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला और खर्च के स्थान में बड़ा भारी प्रभाव और सुख प्राप्त करने वाला और मातृस्थान में कुछ हानि पानेवाला और मकान जायदाद की कुछ हानि करने वाला और अन्य स्थान की भूमियों पर सुख का प्रभावशाली संबंध पाने वाला और मातृ स्थान के संबंध से भी बहुत खर्च करने की शक्ति पाने वाला तथा ननसाल पक्ष के संबंध में सुख की कमी का योग पाने वाला और शत्रुस्थान में कुछ कमज़ोरी या लापर-वाही मानने वाला और अधिक खर्च के कारणोंसे कुछ अशांति का योग पाने वाला होता है।

नं० १२०

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ३ | सू० १ | १२ |
| | २ | ११ | |
| ५ | | | |
| ६ | ८ | | १० |
| | ७ | ९ | |

## वृषलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिंस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान

न० १२१

३ १ ४ चं२ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के अन्दर बड़ी प्रभाव की शक्ति रखने वाला और भाई बहन की शक्ति पाने वाला और अपने पुरुषार्थ से बहुत तरक्की व मान प्राप्त करने वाला और अपने मन की शक्ति से बहुत हिम्मत व उमंग और उन्नति के मार्ग की प्रोत्साहन शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ लापरवाही व कमी के योग से काम लेने वाला और दैनिक रोजगार की लाईन में कुछ कमी व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के स्थान के संबंध में कुछ मन के अन्दर कमी का योग पाने वाला और लौकिक व गृहस्थी के अन्दर कुछ शान्ति का अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान

न० १२२

३चं १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ की शक्ति से मनोयोग द्वारा धन की वृद्धि करने वाला और धन को संग्रह करने के लिये अपनी भरपूर शक्ति का प्रयोग करने वाला और भाई बहन के संबंध में कुछ बंधन का योग पाने वाला और कुटुम्ब की शक्ति का कुछ गौरव मानने वाला तथा अपने बाहुबल में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा पुरातत्त्व

स्थान मे शक्ति व लाभ पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ सुन्दर प्रभाव पाने वाला और अपने मनोयोग बल से कुछ गूढ़ व गहरी युक्तियों का इस्तेमाल करने में सफलता का आनन्द मानने वाला और बहुत कीमती मेहनत करने वाला होता हूं।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० १२३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली सुन्दर कर्म व उद्योग करके सफलता पाने वाला और बहन भाइयों का बड़ा उत्तम सहयोग प्राप्त करने वाला और अपनी मेहनत के द्वारा भाग्य की कुछ तरक्की करनेवाला और मनके अन्दर बड़ी भारी मजबूती और प्रसन्नता पाने वाला और मन की ताकत का बड़ा लाभ पाने वाला और बाहुबल की ताकत के स्थान में महान् शीतल शक्ति की स्थिरता से महानता पाने वाला और धर्म के स्थान में कुछ वैमनस्यता की शक्ति से काम लेने वाला तथा ईश्वर में थोड़ी निष्ठा करने वाला और पुरुषार्थ को हमेशा बहुत महत्त्व देने वाला, अपने कद में सुन्दरता पाने वाला और बड़ा उत्साही होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान में

न० १२४

हो तो वह मनुष्य बहन भाइयों का बड़ा सुख उठाने वाला और बहुत शान्ति पूर्वक मेहनत करके मनोयोग से सुख उठाने वाला और जमीन जायदाद की शक्ति प्राप्त करने वाला और माता की शक्ति का फायदा उठाने वाला तथा

घरेलू सुखप्राप्ति के साधनों की शक्ति अपने अन्दर रखने वाला और पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग महसूस करने वाला और उन्नति के मार्गस्थल में कुछ अरुचि के साथ प्रयत्न करने वाला और राज समाज के कार्यों में थोड़ी दिलचस्पी रखने वाला और स्वयं भूमि की इज्जत को महत्त्व देने वाला उत्साह युक्त मगन मन होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान में

नं० १२५

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ३ | १ | |
| ४ | २ | | १२ |
| | ५ | ११ | |
| चं ६ | ८ | | १० |
| | ७ | ९ | |

हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ बल की शक्ति से व मनोबल की शक्ति से विद्या की शक्ति प्राप्त करने वाला बहन भाई और संतान की शक्ति प्राप्त करनेवाला और दिमाग के अन्दर मनोबल की ताकत से एक अपूर्व शक्ति का अनुभव करने वाला और विद्या के स्थान से अपनी मेहनत की सफलता का ऐवजाना पाने वाला तथा संतान के अन्दर सुन्दरता व शक्ति बल का सचार पाने वाला तथा मनोबल की शक्ति से बहुत लाभ धन प्राप्त करने वाला तथा हाजिर जबाबी की ताकत रखने वाला तथा बातचीत बोलचाल के अन्दर बड़ी शक्ति व शांति से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चंद्र लग्न से छठे स्थान में हो

नं० १२६

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ३ | १ | |
| ४ | २ | | १२ |
| | ५ | ११ | |
| ६ | ८ | | १० |
| | ७ चं | ९ | |

तो वह मनुष्य अपने बहन भाइयों से मन मुटाव का योग पाने वाला तथा कुछ परतन्त्रता युक्त मनोबल के परिश्रम से काम करने वाला तथा अपने बल पुरुषार्थ की शक्ति में कुछ कमजोरी अनुभव करने वाला किन्तु मनोबल की

शक्ति से शत्रु स्थान में प्रभाव जमाने वाला, तथा ननसाल पक्ष के स्थान में कुछ शक्ति का अनुभव करने वाला तथा कुछ मानसिक घिराव के अन्दर रह कर कुछ पेचीदा युक्तियों से शक्ति का योग पाने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के संपर्क में सुन्दर शक्ति का योग पाने वाला तथा अधिक खर्च करने का योग पाने वाला तथा मन के अन्दर गुप्त शक्ति बल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चंद्र लग्न से सातवें स्थान

न० १२७




में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में अशांति व कमी का योग पाने वाला तथा भाई बहन के पक्ष की बड़ी कमजोरी पाने वाला तथा पुरुषार्थ बल की कमजोरी पाने वाला तथा रोजगार की लाइन में कमजोरी पाने वाला तथा रोजगार की लाइन में कुछ परतंत्रता का योग मनो योगद्वारा प्राप्त करने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक के स्थान की कुछ कमज़ोरी पाने वाला तथा दैनिक व लौकिक कार्यों में व परिश्रम करने के संबंध में कुछ कमज़ोरी पाने वाला तथा देह के अन्दर बड़प्पन का योग पाने वाला तथा मन में कमजोरी तथा हृदय में शक्ति अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ की कमजोरी पाने वाला तथा मन के अन्दर क्षोभ व गुप्त अशांति का योग पाने वाला तथा भाई बहन का वियोग पाने वाला तथा मनोयोग की शक्ति के द्वारा बहुत गूढ़ व गुप्त कर्म करने

नं० १२८




वाला और अपनी शक्ति को प्राप्त करने के लिये मन के थकान पाने वाले परिश्रम को करने वाला और अपने जीवन की दिनचर्या के अन्दर शक्ति का अनुभव करने वाला और धन की वृद्धि करने के लिय बहुत ध्यान व बहुत प्रयत्न करने वाला और विदेश से सम्बन्ध करने से शक्ति प्राप्त करने वाला और प्रकट हिम्मत में कमजोरी तथा गुप्त हिम्मत का बल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान के प्रभाव से शक्ति बल प्राप्त करने वाला और बहन भाई का सुन्दर योग पाने वाला और अपने पुरुषार्थ बल से मनोयोग द्वारा भाग्य की उन्नति

नं० १२९




पाने वाला, तथा मन और पुरुषार्थ से धर्म का पालन करने वाला तथा ईश्वर की शक्ति को मानने वाला और बहुत दूर तक की मजबूत बातों को सोचने वाला और लौकिक व पारलौकिक दोनों तरफ के संबंध का पालन करने वाला और मन के अन्दर बड़ी मजबूती और धैर्य से काम लेने वाला और अपनी मेहनत के प्रभाव से यश प्राप्त करने वाला और मगन मन होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ बल से उन्नति करने वाला तथा मनोयोग के महान् कार्य से उन्नति के मजबूत

नं० १३०

साधन पाने वाला और भाई बहन की शक्ति पाने वाला और पिता स्थान मे शक्ति पाने वाला और राज समाज के कार्यों में मनोबल से कार्य करके तरक्की पाने वाला और अपने बाहुबल की शक्ति से बड़ा मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला और अपने मन के अन्दर बड़ा गौरव मानने वाला किन्तु साथ ही साथ कुछ अड़चनों को भी महसूस करने वाला और मातृस्थान से सुख शक्ति प्राप्त करने वाला तथा सुन्दर रहन सहन वाला होता है।

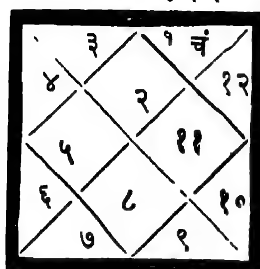
जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ से बहुत धन प्राप्त करने वाला और भाई बहन का लाभ पाने

नं० १३१

वाला और लाभ स्थान के अन्दर मनोबल की शक्ति से बहुत सहारा पाने वाला और अनेक प्रकार के सुन्दर २ लाभ प्राप्ति के साधनों से मन को बड़ी प्रफुल्लताई का योग प्राप्त करने वाला और विद्यास्थान में अपनी शक्ति के कारणों से वृद्धि पाने वाला और संतान स्थान मे भी सहारा प्राप्त करने वाला और मनोबल की ताकत से बुद्धि व वाणी में तरक्की प्राप्त करने वाला और अपने अन्दर पुरुषार्थ बल की वृद्धि का योग पाने वाला बड़ा चतुर बुद्धिमान् होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ शक्ति की कुछ हानि पाने वाला और भाई बहन की शक्ति का वियोग पाने वाला और बहुत अधिक खर्च करने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों की संबंध शक्ति का फायदा पाने वाला व खर्च स्थान में मन की विशेष उमंग रख कर काम करने वाला तथा शत्रु स्थान में शान्तियुक्त शक्ति से काम लेने वाला एवं मन के अन्दर कुछ कमजोरी व निराशाओं का योग अनुभव करने वाला तथा मनोयोग की शक्ति से बाहरी कम व दिक्कतों के अन्दर से अच्छाई और सुझाव पैदा करने वाला होता है

नं० १३२



## वृषलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कमजोरी व रक्त विकार पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन से खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान को बहुत महत्त्व देनेवाला किन्तु स्त्री के संबंध में कुछ कमी का योग पाने वाला और माता के स्थान में कुछ हानि पाने वाला और मकान भूमि आदि के सुख में कुछ कमी पाने वाला और अन्य स्थानों के संबंध में रहने तथा घूमने वाला और अन्य स्थानों के संबंध से देह के द्वारा रोजगार की शक्ति पाने वाला और पुरातत्त्व के स्थान में कुछ अच्छाई बुराई का मिश्रित योग पाने वाला और लौकिक कार्यों में बड़ी भारी दौड़ धूप करने वाला कुछ अशांत होता है।

नं १३३

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कुछ हानियां पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से रोजगार के द्वारा कुछ धन प्राप्त करने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ हानि पाने वाला और स्त्री स्थान के संबंध में कुछ बंधन व कुछ कमी पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की कुछ कमी पाने

नं० १३४

वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और विद्या स्थान में भी कुछ कमी पाने वाला और भाग्य स्थान में कुछ अन्यस्थान के सबंध से वृद्धि का योग पाने वाला और दैनिक कर्म की शक्ति से धर्म स्थान का कुछ विशेष पालन करने वाला और खर्च के संबंध में खर्च को रोकने पर भी कभी २ विशेष खर्च करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष में हानि व कष्ट अनुभव करने वाला और भाई के पक्ष मे वियोग पाने वाला और कुछ परतंत्रता युक्त परिश्रम की शक्ति से खर्च की शक्ति पाने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ कमजोरी व कुछ परेशानी का योग पाने वाला और गृहस्थी की परिस्थिति का दैनिक संचालन मार्ग में बडी कठिनाइयां सहकर कार्य करने वाला और गृहस्थ व रोजगार की लाइन के दायरे से भाग्यवान समझा जाने वाला और अपनी उन्नति प्राप्त करने के लिये अधिक परिश्रम करने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव जगाने के लिये बराबर प्रयत्न शील रहने वाला होता है।

न० १३५




जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के स्थान में हानि पाने वाला और जन्मभूमि का वियोग पाने वाला और रोजगार की दैनिक लाइन में अन्य स्थान के सम्पर्क से लाभ सुख उठाने वाला और अपने निज के स्थान में स्वतंत्र रोजगार के अन्दर

नं० १३६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ३ | १ | १२ |
| मं५ | २ | ११ | |
| ६ | ८ | | १० |
| | ७ | ९ | |

कुछ हानि पाने वाला और स्त्री के पक्ष में एक मजबूत सुख और कुछ कमी का योग पाने वाला और खूब मेहनत के कार्य को सुख पूर्वक करने वाला और आमदनी की वृद्धि करने के लिए विशेष प्रयत्न करने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के स्थान में कुछ कमी के साथ २ वृद्धि पाने वाला तथा राज समाज में कुछ मान पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के स्थान मे अन्य बाहरी शक्ति-संबंध द्वारा दैनिक रोजगार की शक्ति प्राप्त करने वाला और बहुत ज्यादा खर्च करने वाला तथा विद्या के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ हानि पाने वाला एवं रोजगार की लाइन में बुद्धि के बड़े घुमाव फिराव व हेर फेर से काम लेने वाला और दूसरों को बातों के चक्कर में डाल देनेवाला और स्वयं भी दिमाग के अन्दर चक्कर खाने वाले विचारों से काम लेने वाला और पुरातत्त्व के स्थान में कुछ कमजोर शक्ति पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की शक्ति का व लौकिक कार्यों का चिन्तन करने वाला होता है।

नं० १३७

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | | २ | १२ |
| | ५ | ११ | |
| मं६ | ८ | | १० |
| | ७ | ९ | |

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन में परेशानी व कमजोरियों का योग पाने वाला व अन्य स्थान के सम्पर्कों के

नं० १३८ द्वारा प्रभाव से दैनिक रोजगार का काम चलाने वाला और खर्च के मार्ग में कुछ रुकावटें व कुछ परतंत्रता के साथ प्रभाव पूर्ण खर्च करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ परेशानी पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की कुछ कमी पाने वाला तथा भाग्य के स्थान में प्रभाव शक्ति का योग पाने वाला तथा देह के स्थान में कमजोरी व प्रमेह आदि की शिकायत पाने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला तथा ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से सातवें

नं० १३९ स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य स्थानों के संबंधों से दैनिक रोजगार की मजबूती पाने वाला और रोजगार की शक्ति से खर्च संबंधी गृहस्थी में गौरव पाने वाला और गृहस्थी के गौरव के अन्दर कुछ कमजोरी पाने वाला तथा स्त्री स्थान में मजबती वं दृढ़ता के साथ २ कुछ कमी महसूस करने वाला और भोगेन्द्रियों की मजबूती व दृढ़ साधनाओं से भी कुछ कमजोरी पाने वाला तथा पिता के स्थान में कुछ वैमनस्यता व कुछ हानि का योग पानेवाला और देह के अन्दर कुछ कमजोरी पाने वाला और धन स्थान में कुछ हानि पाने वाला और विशेष उन्नति की प्राप्ति के लिये राज समाज में बहुत काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से आठवें स्थान में

न० १४०

| | | |
|---|---|---|
| ३ | १ | |
| ४ | २ | १२ |
| ५ | ११ | |
| ६ | ८ | १० |
| ७ | म | |

हो तो वह मनुष्य विदेश आदि अन्य स्थानों के योग से दैनिक रोजगार करने वाला और रोजगार की लाइन में परिश्रम कमजोरी व पुरातत्त्व से संबंधित गूढ़ युक्तियों के द्वारा कार्य करने वाला और रोजगार के संबंध मार्ग में बड़ी कठिनाइयां व परेशानियां सहने वाला और स्त्री स्थान में बड़ी हानि पाने वाला और गृहस्थी के संबंध में बड़ी मुश्किलें सहने वाला और खर्च स्थान में कमजोरी पाने वाला और बहन भाइयों के स्थान में हानि पाने वाला और लाभ स्थान की वृद्धि करने के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला तथा नाभी के नीचे पेट के अन्दर कुछ शिकायत पाने वाला और पूर्व संचित धरोहर की कुछ हानि पाने वाला और कुछ इन्द्रिय विकार पाने वाला कुछ न्यून आयु वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से नवम स्थान

न० १४१ में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य की

| | | |
|---|---|---|
| ३ | १ | |
| ४ | २ | १२ |
| ५ | ११ | |
| ६ | ८ | १० म |
| ७ | ९ | |

शक्ति बल से व दैनिक रोजगार की लाइन से बहुत खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और अन्य स्थानों के संबंध से व दैनिक कर्म योग से भाग्यवान् समझा जाने वाला तथा अन्य स्थानों के संबंधित धर्म का पालन करने वाला और यथार्थ धर्म के संबंध में कुछ हानि पाने वाला और बहन भाइयों के स्थान में कुछ कमी व लापरवाही का योग पाने वाला और माता

के स्थान में कुछ हानि पाने वाला और मकान भूमि आदि के सुख स्थान में कुछ हानि पाने वाला और भाग्य के अंदरूनी हिस्से में कुछ कमी महसूस करने वाला और स्त्री संबन्ध का प्रभाव पाने वाला और लौकिक कार्यों में कुछ विशेष कला रखने वाला तथा पुरुषार्थ स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य स्थानों के सम्पर्क से दैनिक रोजगार को कुछ बड़े ढंग से करने वाला और देह के अन्दर कुछ कमजोरी व खराबी पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला तथा विद्या स्थान में कुछ कमी व कुछ हानि का योग पाने वाला तथा राज समाज के स्थान संबंध में कुछ दौड़ धूप करने से मान पाने वाला तथा स्त्री पक्ष में कुछ कमी के साथ कुछ बड़प्पन का योग पाने वाला तथा मातृस्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला और इन्द्रिय संबंधी भोगादिक के कारण से कुछ महानता के साथ २ कमी और अशांति का योग पाने वाला होता है ।

नं० १४२

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की लाइन से व अन्य स्थान के सम्पर्क से धन कमाने वाला और धन संग्रह के स्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा संतान पक्ष में भी कुछ हानि पाने वाला और विद्या में कुछ कमी तथा चतुराई से

नं० १४३

कुछ वृद्धि पाने वाला और शत्रु में प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला तथा स्त्रीस्थान का लाभ पाने वाला किन्तु स्त्री स्थान में व भोगादिक पक्ष में कुछ कमी व कुछ अन्य स्थान के सबंध से खर्च शक्ति के द्वारा कुछ लाभ पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ हानि पाने वाला और खर्च को कुछ रोकने वाला तथा खूब खर्च भी करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान से कुछ हानि पाने वाला तथा अन्य स्थान के सबंध से कुछ भोगादिक शक्ति प्राप्त करने वाला और बहन भाइयों के स्थान में कुछ कमी व लापरवाही रखने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ अन्य स्थानों के सबध से तरक्की करने वाला और अधिक खर्च करने वाला और भोगेन्द्रियों के संबधकी कुछ कमजोरी पाने वाला और स्त्री के संबंध में कुछ प्रेम सम्पर्क की कमी के साथ मजबूत संबंध का योग पाने वाला और स्थानीय रोजगार में कुछ कमजोरी होने के कारणों से अपनी हिम्मत व बल पुरुषार्थ की शक्ति के कुछ कमजोरी पाने वाला तथा रोजगार की लाइन में बड़ी दौड़ धूप की ताकत से काम लेने वाला होता है।

नं० १४४

## वृषलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न के पहिले स्थान में

नं० १४५

हो तो वह मनुष्य विद्या बुद्धि की शक्ति प्राप्त करने वाला और विवेक की महान् कीमती ताकत से धन पैदा करने वाला और संतान पक्ष की योग्य शक्ति का आनन्द गौरव प्राप्त करने वाला और कुटुम्ब के गौरव में कुछ बड़प्पन का योग पाने वाला और देह में सुन्दरता व कोमलता और कुछ बंधन का योग पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ के अन्दर बुद्धि की योग्यता से इज्जत और बुद्धि का योग पाने वाला और रोजगार की दैनिक लाइन में अपनी योग्यता व विद्या विवेक शक्ति के द्वारा सफलता और उन्नति का मार्ग पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक की इच्छा रखने वाला अमीरी का ढंग पाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से दूसरे स्थान

नं० १४६

में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्या संग्रह करने वाला और बहुत धन संग्रह करने वाला और संतान पक्ष में कुछ बंधन पाने वाला और बहुत चतुराइयों की शक्ति से धन की वृद्धि पाने वाला और अपनी बुद्धि के अन्दर धन को बहुत महत्त्व देने वाला तथा कुटुम्ब की शक्ति रखने वाला और

जीवन की दिनचर्या में कुछ अमीरात का ढंग पाने वाला और पुरातत्त्व के स्थान से भी धन का फायदा पाने वाला और दिमाग के अन्दर बड़ी बड़ी कीमती योजनायें बनाने वाला किन्तु केवल धन की अधिक वृद्धि करने के लिये व संतान पक्ष के कारणों से दिमाग के अन्दर कुछ घुमाव सा महसूस करने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या की शक्ति पाने वाला और विद्या तथा पुरुषार्थ की शक्ति से धन प्राप्त करने वाला तथा संतान की शक्ति प्राप्त करने वाला एवं विवेक की शक्ति के बल से बड़ा उत्साह व हिम्मत प्राप्त करने वाला और अपनी योग्यता की शक्ति से भाग्य की वृद्धि करने वाला तथा भाग्यवान् समझा जाने वाला, अपनी शक्ति से धर्म का भी पालन करने वाला तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाला और सुन्दर कद वाला तथा यश प्राप्त करने वाला तथा बहन भाइयों की शक्ति पाने वाला और बोल चाल के अन्दर बड़ी कीमती और मजबूत बातें कहने वाला शीलयुक्त दृढ़ विचार वाला होता है ।

न० १४७




जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक विद्या ग्रहण करने वाला एवं संतान सुख प्राप्त करने वाला, धन स्थान का सुख प्राप्त करने वाला तथा मकान जायदाद संबंधी भूमि का सुख प्राप्त करने वाला और पिता माता के स्थान की शक्ति का

नं० १४८

फायदा पाने वाला और सुख व आराम के साधनों की सुन्दर २ वस्तुयें तथा सुन्दर २ विचारों की शक्ति प्राप्त करने वाला और विद्या व वाणी के द्वारा मनोरञ्जन के सुखद कार्य करने वाला और विद्या व विवेक तथा धन की ताकत के जरिये से राज समाज में मान व व्योपार में तरक्की पाने वाला चतुर कर्मठी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्या ग्रहण करने वाला और दिमाग की शक्ति से महान् कार्य करने के कारणों से धन प्राप्त करने वाला और महान् चतुराई व विवेक की शक्ति रखने वाला और खूब संतान सुख प्राप्त करने वाला और

नं० १४९

आमदनी व लाभ के स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और कभी २ लाभ के स्थान में लापरवाही भी करने एवं दिमाग के ऊपर कुछ बंधन का योग पाने वाला व बातचीत के अन्दर बड़ी योग्यता और बड़ी समझदारी से वजनदार बात कह कर दूसरों पर प्रभाव डालने वाला और कुटुम्ब में बड़प्पन पाने वाला तथा धन के लिये बहुत सोचने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या में कमी पाने वाला व संतान सुख में कमी पाने वाला और धन स्थान में कमी पाने वाला तथा

नं० १५०

कुटुम्बस्थान में कमी पाने वाला और बुद्धि में कुछ डर व कमजोरी सी महसूस करने वाला और बुद्धि के संबंध में कुछ बंधन व अधिक परिश्रम के कारणों से धन प्राप्त करने वाला और शत्रु स्थान में बुद्धि की शांतियुक्त युक्तियों से काम निकालने वाला तथा विचारों के अन्दर बहुत पेचीदा चतुराइयों को हल करके दिमाग में शांति का योग पाने वाला तथा बहुत खर्च करने वाला और धन प्राप्ति के संबंध में कुछ परतंत्रता व कुछ परेशानियों का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से सातवें स्थान

नं० १५१

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि विद्या के योग से रोजगार करने वाला और विवेक शक्ति व लौकिक अनुभव से धन कमाने वाला और धन की सहायता शक्तिसे रोजगार की लाइन में वृद्धि पाने वाला और संतान पक्ष की शक्ति का सहारा पाने वाला तथा स्त्री स्थान में बड़ी चतुराई व इज्जत का योग पाने वाला तथा भोगादिक की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा बुद्धि के कार्यक्रम की लाइन से बड़ा मान व इज्जत प्राप्त करने वाला तथा कुटुम्ब के संबंध में मान पाने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिये दैनिक कार्यक्रम को बड़ी सुन्दरता के साथ व कोमलता के साथ करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से आठवें स्थान में

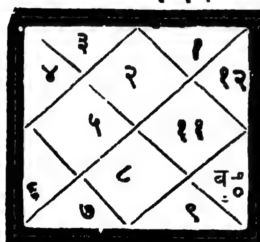
नं० १५२




हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में हानि का योग पाने वाला तथा विद्यास्थान में कमी पाने वाला तथा अन्य स्थान में हानि पाने वाला व कौटुम्बिक हानि पाने वाला एवं कुछ पुरातत्त्व धन का फायदा पाने वाला तथा दिमाग में कुछ परेशानी पाने वाला तथा बड़ी गहराई की बातें सोचने वाला तथा बोल चाल के अन्दर बड़ी छिपाव की गूढ़ युक्तियों से काम निकालने वाला तथा धन स्थान की वृद्धि करने के लिये बुद्धि का महान् परिश्रम करनेवाला तथा विदेश आदि के संबन्ध से धन प्राप्त करने में सहयोग पाने वाला तथा विवेक शक्ति के द्वारा किसी जटिल पुरातत्त्व का ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ रौनक का योग पाने वाला जटिल बुद्धि होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से नवम स्थान में

न० १५३




हो तो वह मनुष्य बहुत उत्तम विद्या ग्रहण करने वाला और भाग्य व बुद्धि योग से धन प्राप्त करने वाला तथा धन संतान के योग से भाग्यवान् समझा जाने वाला तथा महान् श्रेष्ठतम विवेक शक्ति प्राप्त करने वाला, धर्म का पालन व ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा लौकिक व पारलौकिक प्रणाली का संमिश्रित पालन करने वाला तथा कौटुम्बिक शक्ति का गौरव पाने वाला तथा

बहन भाइयों के योग में सुन्दरता पाने वाला तथा पुरुषार्थ स्थान मे लाभ पाने वाला और बल पुरुषार्थ में कुछ शक्ति पाने वाला और दिमाग के अन्दर शीलता व सज्जनता रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से दसवें स्थान में

नं० १५४

३ १ ४ २ १२ ५ ११बु ६ ८ १० ७ ९

हो तो वह मनुष्य राज सम्बन्धी ऊँची विद्या प्राप्त करने वाला और पिता स्थान की शक्ति का लाभ पाने वाला और संतान पक्ष में उन्नति का योग पाने वाला और कारबार के अन्दर विवेक की और धन की सहायता से बहुत धन कमाने वाला एवं राज समाज के संबंध से फायदा उठाने वाला और उन्नति के लिये स्थिर वजनदार कर्म करने वाला व मातृस्थान से फायदा पाने वाला और अपनी उन्नति के मार्ग द्वारा सुख का योग प्राप्त करने वाला, बुद्धि व कर्म की योग्यता से मान सम्मान प्राप्त करने वाला एवं भूमि मकान आदि का लाभ पाने वाला महान् चतुर कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० १५५

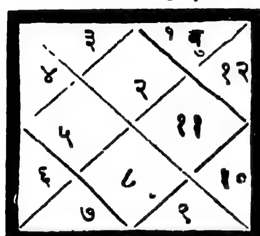
३ १ ४ २ १२बु ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

में हो तो वह मनुष्य धन प्राप्ति के स्थान में कमजोरी पानेवाला तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमजोरी के होते हुए भी विद्या की कुछ अधिक शक्ति का प्रयोग कर सकने वाला एवं संतान पक्ष में कुछ कमजोरी के साथ फायदा पाने वाला

तथा धन के कुछ अभाव के कारणों से बुद्धि में परेशानी पाने वाला और कुटुम्ब की कुछ कमजोरी पाने वाला व बातचीत के अन्दर अपनी बुद्धि की कमजोरी को दबाकर बाहरी दिखाने में बड़ी प्रभाव शक्ति के द्वारा बोलने वाला व आमदनी के स्थान में बुद्धि व विवेक की कुछ गुप्त योजनाओं से काम लेने वाला चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से बारहवें स्थान

नं० १५६




में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में हानि पाने वाला और धनस्थान में हानि पाने वाला व विद्या स्थान में कमी पानेवाला तथा दिमाग के अन्दर परेशानी पाने वाला एवं स्मरण शक्ति की कमजोरी पाने वाला, बहुत खर्च करने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से बुद्धि योग के द्वारा धन की प्राप्ति करने वाला एवं ननसाल पक्ष में कुछ सहयोग पाने वाला व शत्रु स्थान में कुछ शान्ति से काम लेने वाला तथा खर्च के स्थान में कुछ विवेक शक्ति से व विद्या की शक्ति से काम निकालने वाला और कुटुम्ब में हानि व कमजोरी पाने वाला होता है।

## वृषलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न क पहिले स्थान में

नं० १५७

| | | |
|---|---|---|
| ३ | | १ |
| ४ | २गु | १२ |
| ५ | | ११ |
| ६ | ८ | १० |
| ७ | | ९ |

हो तो वह मनुष्य बड़ी चतुराई और आयु प्राप्त करने वाला एवं देह के परिश्रम से लाभ पाने वाला तथा लाभ के संबंध में हृदय की गूढ़ युक्तियों के द्वारा मान सहित प्राप्ति पाने वाला और देह के अन्दर सुन्दरता व कुछ स्वास्थ्य में कमी पाने वाला एवं जीवन की दिनचर्या में कुछ बड़प्पन व महत्त्व पाने वाला एव विद्या स्थान में कुछ लाभ तथा योग्यता और गुप्त युक्तियों की शक्ति का योग भी रखने वाला और भाग्य स्थान में कुछ हानि व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला तथा धर्म स्थान में कुछ हानि व कुछ अरुचि का योग पाने वाला तथा गृहस्थी के स्थान में कुछ जीवन के लाभ का योग पाने वाला एवं दैनिक रोजगार का व पुरातत्त्व के सम्बन्ध का लाभ पाने वाला व कुछ संतान सम्बन्ध का सुख दुःख पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० १५८

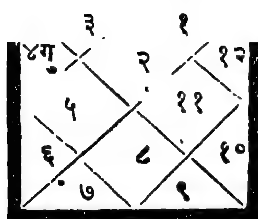
| | | |
|---|---|---|
| ३गु | | १ |
| ४ | २ | १२ |
| ५ | | ११ |
| ६ | ८ | १० |
| ७ | | ९ |

हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व धन का लाभ पाने वाला और आयु का लाभ पाने वाला एवं वर्तमान धन के स्थान में कभी कभी कुछ हानियों के योग पाने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये कुछ गूढ़ युक्तियों से व परिश्रम से

काम लेनेवाला तथा शत्रु स्थान में बड़ी युक्तियों से व प्रभाव से काम निकालने वाला, जीवन की दिनचर्या में कुछ अमीरता का ढंग पाने वाला और पिता के स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा राज समाज के संबंध में भी कुछ अरुचि व कुछ परेशानी का योग पाने वाला और मान प्राप्ति करने वाला तथा परेशानियों को हटाने के लिये परेशानियों वाले शस्त्र से ही लाभ लेनें वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला

नं० १५९




बड़ा पराक्रमी तथा बड़ा प्रभावशाली और आयु स्थान की वृद्धिपाने वाला तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पाने वाला व जीवन की दिनचर्या में बड़ा भारी गौरव मानने वाला और बहन भाई के स्थान में केवल प्रभुत्व रखने वाला व भाग्य स्थान को पुरुषार्थ के मुकाबले में कमजोर मानने वाला तथा धर्म स्थान को भी थोड़ा कम महत्त्व देने वाला और ईश्वर की निष्ठा में कुछ कमज़ोरी मानने वाला और अधिक लाभ पाने के लिये महान् रूप से गूढ़ युक्तियों का इस्तेमाल व महान् परिश्रम करनेवाला, हृदय तथा बाहु बल में बड़ी शक्ति का संचार पाने वाला और दैनिक रोजगार और गृहस्थी के संबंध में जीवन शक्ति का लाभ पाने के लिये महान् प्रयत्न करनें वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से चौथे स्थान में

नं० १६०




हो तो वह मनुष्य बहुत आयु पाने वाला तथा जीवन में प्रसिद्धता पाने वाला और पुरातत्त्व शक्ति का बहुत सुख लाभ पाने वाला तथा माता के स्थान में कुछ वियोग पाने वाला, गूढ़ तथा पेचीदा युक्तियों से बहुत ज्यादा काम लेने वाला व बहुत अधिक खर्च करने तथा विदेश आदि अन्य स्थानों के सम्पर्क का बड़ा भारी सुख सम्बन्ध पाने वाला और पिता स्थान में वैमनस्यता का व कुछ हानि का योग पाने वाला व आवश्यक पदार्थों का खूब लाभ पाने वाला और आमदनी के संबंध में सुख युक्त बहुत परिश्रम के योग से प्राप्ति पाने वाला तथा राज समाज में वैमनस्यता पाने वाला बड़ी गुप्त शक्ति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में

नं० १६१




हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में कुछ हानि व लाभ का योग पाने वाला और विद्या स्थान में भी कुछ कमी के साथ लाभ का योग पाने वाला तथा पुरातत्त्व से संबंधित बुद्धियोग द्वारा लाभ पाने वाला और धर्म स्थान में कुछ अश्रद्धा रखने वाला और भाग्यस्थान को कम महत्त्व देने वाला एवं ईश्वर में कम विश्वास रखने वाला तथा अपने व्यक्तित्व में कुछ बड़प्पन मानने वाला और लाभ प्राप्ति के

लिये बुद्धि से व हृदय से बहुत परिश्रम करने वाला और विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी गूढ़ युक्तियों से काम लेने वाला तथा बात चीतों के अन्दर बड़ी पेचीदा ढंग से छिपाव शक्ति का सहारा लेकर काम चलाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से छठे स्थान में

नं० १६२

हो तो वह मनुष्य कुछ प्रभाव व कुछ परतंत्रता युक्त कर्म द्वारा परेशानियां सह कर लाभ प्राप्ति करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ घुमाव सा हृदय में महसूस करने वाला तथा आयु के संबंध में कुछ कमजोरियों का अनुमान करने वाला और पिता के स्थान में वैमनस्यता का योग पाने वाला एवं राज समाज के अन्दर अरुचि का सा भाव रखने वाला व आमदनी में कमी महसूस करने वाला, खर्च अधिक करने वाला तथा अन्य स्थानों के सम्पर्क में जीवन का कुछ सुझाव लाभ पाने वाला तथा धन के संग्रह स्थान में कुछ हानि लाभ का योग पाने वाला तथा बड़ी पेचीदा युक्तियों से व कठिनाइयों से पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से सातवें स्थान

नं० २६३

में हो तो वह मनुष्य जीवन में शान गुमान रखने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ लाभ व कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा विदेश संबंध के योग से स्त्री पक्ष में कुछ महत्त्वदायक लाभ पाने वाला एवं दैनिक रोजगार की

लाइन में कुछ परिश्रम व हृदय की गूढ युक्तियों के बल से स्थाई लाभ पाने वाला और विदेश आदि के संबंधों से महत्त्वदायक फायदा उठाने वाला और अपने लाभ के स्थान में अनधिकार लाभ का फायदा भी उठाकर स्वार्थ सिद्धि करने में तत्पर रहने वाला तथा रोजगार व गृहस्थ की वास्तविक ठोस उन्नति व शांति के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला एवं आयु की वृद्धि पाने वाला और हृदय शक्ति के बल से रोजगार की लाइन में कुछ पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला और बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला बहन भाई वाला तथा लाभ प्राप्ति के लिये लौकिक कार्यों में कुछ कटुयुक्ति से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य लाभ व आमदनी के संबंध में विदेश आदि का योग पाने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने वाला एवं दैव बल से संबंधित पुरातत्त्व के महान् लाभ पाने वाला व खूब खर्च करने वाला तथा अन्य स्थानों का विशेष सम्बंध रखने वाला और लाभ प्राप्ति के मार्ग में बहुत परिश्रम तथा गूढ युक्तियों से काम लेने वाला और सुख प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये महान् प्रयत्न करने वाला तथा मातृस्थान में कुछ हानि लाभ का योग पाने वाला और धन संग्रह करने के लिये बड़ा प्रयत्नशील रहने वाला व जीवन की दिनचर्या में बड़ा गौरव व मस्ती का योग पाने वाला और अपने इस्तेमाली पदार्थों के संबंध में कुछ लाभ की कमी पाने वाला तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ हानि लाभ का योग पाने वाला होता है।

नं० १६४

| | | |
|---|---|---|
| ३ | | १ |
| ४ | २ | १२ |
| ५ | ११ | |
| ६ | ८ | १० |
| ७ | | ९ गु |

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में महान् हानि का योग पाने वाला और धर्म के स्थान में बहुत हानि पाने वाला व आयु स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा पुरातत्त्व लाभ की हानि पाने वाला और जीवन की दिन-चर्या में कुछ अशान्ति अनुभव करने वाला व लाभ प्राप्ति के लिये कुछ धर्म की हानि-करने वाला और आमदनी के स्थान में कमजोरी पाने वाला व ईश्वर की निष्ठा में बड़ी कमजोरी पाने वाला और अपने पुरुषार्थ को बड़ा मानने वाला और देह में बड़प्पन मानने वाला एवं विद्या स्थान में बड़ी भारी गूढ़ चतुराइयों से काम लेने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि-लाभ का योग पाने-वाला और बातचीत के अन्दर बड़ी सफाई का व दूरअन्देशी की बातें जंचाने वाला तथा कुछ बहन भाई का योग पाने वाला होता है।

नं० १६५

३ १
४ २ १२
५ ११
६ ८ १०गु
७ ९

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य कुछ विदेश का संबंध पाने वाला व पिता स्थान में कुछ हानि व कुछ वैमनस्यता और कुछ लाभ पाने वाला तथा आयु का कुछ लाभ पाने वाला और हृदय से संबंधित परिश्रमी कर्म और कष्ट साध्य युक्तियों से कारवार चलाकर लाभ पाने वाला तथा राज समाज के

नं० १६६

३ १
४ २ १२
५ ११गु
६ ८ १०
७ ९

स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और पुरातत्त्व का थोड़ा लाभ पाने वाला और दुनिया की परवाह न करके अपने तरीके से मानयुक्त रह कर जीवन की दिनचर्या व्यतीत करने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये तथा प्रभाव को वृद्धि करने के लिये हृदय बल की ताकत से साम दाम दण्ड भेद की नीति को बरतने वाला मातृस्थान के सुख की कमी को कुछ पैदा करके फिर कमी को दूर करने के लिये दिलचस्पी से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं १६७




में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला और पुरातत्त्व धन का स्वतः लाभ पाने वाला, लाभ व आमदनी के लिये हृदय का पूर्ण बल तथा विदेश का संबंध योग पाकर परिश्रम व युक्तियों के द्वारा सफलता पाने वाला तथा लाभ की शक्ति से पुरुषार्थ बल की अधिक वृद्धि करने का प्रयत्न करने वाला और दैनिक रोजगार में सफलता पाने के लिये महान् उत्साह व महान् परिश्रम की शक्ति से काम लेने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ कटुता युक्त संबंध योग पाने वाला और स्त्री भोगादिक के स्थान में कुछ अनधिकार लाभ पाने का प्रयत्न करने वाला तथा गुप्त शक्तियों के बल से अनेक लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अधिक खर्च करने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के योग द्वारा व पुरातत्त्व के स्थान संबंध से लाभ का योग पाने वाला और आयु के संबंध में कुछ कमजोरी

नं० १६८

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ३ / २ / १ गु | १२ |
| ५ | ८ | ११ |
| ६ | ७ / ९ | १० |

के साथ सफलता पाने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये बड़ी २ महान् कठिनाइयों के कर्म से व गूढ़ युक्तियों के योग से सफलता पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में खर्च की शक्ति का गौरव तथा अन्य स्थान की शक्ति का गौरव पाने वाला और बाहरी संबंध से सुख के साधनों की शक्ति बनाने वाला और मातृस्थान के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ वैमनस्य पाने वाला और इस्तेमाली पदार्थों में कुछ कमी पाने वाला होता है।

## वृषलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न के पहिले स्थान मे

नं० १६९

हो तो वह मनुष्य अपनी देह और आत्मा के अन्दर बहुत भारी शक्ति पाने वाला और बड़े भारी दाव पेच की चालों से व परिश्रम की शक्ति से अपने स्वाभिमान व देहाभिमान की रक्षा व वृद्धि करने वाला और कुछ छिपे हुये क्रोध की शक्ति को धारण करने वाला और स्त्री के स्थान म कुछ अनधिकार रूप से फायदा पाने वाला व शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला और अपने देहादिक परिश्रम के योग से दैनिक रोजगार में सफलता पाने वाला तथा देह के अन्दर कुछ रोग प्राप्त करने वाला तथा बहुत ऊँचे नीचे विचारों की शक्ति से व चतुराइयों से काम लेनें वाला तथा कुछ ख्याति प्राप्त करने वाला दृढ़ संकल्पी जिद्दी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान

न० १७०

में हो तो वह मनुष्य धन की वृद्धि के लिये प्राणपण से चेष्टा व प्रयत्न करने वाला और पेचीदा युक्तियों से व परिश्रम के द्वारा भी धन की वृद्धि करने वाला और देह में कुछ बंधन व घिराव सा पाने वाला एवं धन के लिये कुछ अनुचित चतुराइयों से भी फायदा उठाने वाला और धन का

शक्ति से शत्रु पक्ष में प्रभाव पाने वाला तथा धन स्थान से ही इज्जत प्राप्त करने वाला और देहादिक परिश्रम की ताकत से कुछ पुरातत्व के स्थान की कुछ शक्ति पाने वाला और धन व कुटुम्ब स्थान में कुछ थोड़ा सा कलेश या झझट का योग पाने वाला तथा कुछ रोग युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान में

नं १७१

हो तो वह मनुष्य बहुत परिश्रम व पुरुषार्थ करके उन्नति करने वाला तथा बहन भाई के स्थान में कुछ तरक्की व कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला एवं भाग्य स्थान की वृद्धि करने वाला बड़ी भारी हिम्मत रखने वाला तथा बड़ी भारी चतुराइयों से व पेचीदा युक्तियों से आत्मबल के योग द्वारा विजय शक्ति का विकाश पाने वाला तथा भाग्यवान् समझा जाने वाला एवं धर्मस्थान का पालन व ख्याल रखने वाला और अपने पुरुषार्थ का बड़ा भरोसा रखने वाला एवं शत्रुस्थान मे प्रभाव रखने वाला तथा ननसाल पक्ष से कुछ सहायता शक्ति पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से चौथे स्थान में

नं० १७२

हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में वैमनस्यता के साथ सम्पर्क योग पाने वाला व देहादिक सुखों में कुछ घाटा व कुछ रोगादिक झंझटों का योग पाने वाला तथा पिता के स्थान में कुछ थोड़ी सी असुविधा के साथ प्रेम और आत्मीयता

का उन्नति युक्त सम्पर्क पाने वाला एवं राज समाज के स्थान में उन्नति व मान पाने के लिये बड़ी दिलचस्पी के साथ भरपूर कोशिश करने वाला और मकान भूमि आदि की व्यवस्था में कुछ कमी महसूस करने वाला एवं कारबार की व प्रतिष्ठा की उन्नति के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला और शत्रु पक्ष से कुछ अशांति अनुभव करने वाला मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० १७३



में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में कष्ट सहन करने वाला और विद्यास्थान में कमजोरी पाने वाला और दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी का स्थाई योग पाने वाला और कुछ असत्य की ताकत से व पेचीदा छिपाव की युक्तियों से बातें करके फायदा उठाने वाला और हृदय व विचारों के अन्दर गुप्त शक्ति रखने वाला और लाभ की महान् शक्ति पाने के लिये दिमाग संबंधी महान् परिश्रम से काम लेने वाला और शत्रुपक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और देह में कमजोरी पाने वाला व बुद्धि की संकीर्णता के कारण से अपने मंतव्य को ठीक तौर से दूसरों को न समझा सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता युक्त प्रभावशाली कर्म करने वाला और आत्मबल की महान् धैर्यवान् शक्ति रखने वाला एवं पेचीदा चतुराइयों की कला का भंडार रखने वाला

नं० १७४.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | | १ | |
| ४ | · ? | | १२ |
| | ५ | ११ | |
| ६ | ८ | | १० |
| ७गु | | ९ | |

तथा देह में कुछ रोग पाने वाला व ननसाल पक्ष की बड़ी भारी शक्ति का योग पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से शक्ति प्राप्त करने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला एवं देह के द्वारा महान् परिश्रम करने वाला और झगड़े झंझटों में रह कर भी दिक्कतों से विजय पाने वाला बड़ा गुप्त चतुर होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य सुन्दर चंचलतायुक्त देह की प्राप्ति करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ अधिकार पाने वाला एवं इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में कुछ कमी व कुछ वृद्धि का योग पाने वाला तथा अपनी स्त्री के निज संबंध में कुछ कमी महसूस करनेवाला और अपने व्यक्तित्व को बहुत बड़ा मानने वाला व रोजगार की लाइन में बड़ी २ युक्तियों से व परिश्रम से काम करने वाला और भोग-विलास की शक्ति प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी पेचीदा युक्तियों से व आत्मबल की शक्ति से काम लेने वाला और लौकिक कार्यों के अन्दर महान् चतुराइयों से काम करने वाला होता है।

नं० १७५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | | १ | |
| ४ | २ | | १२ |
| | ५ | ·११ | |
| ६ | ८शु | | १० |
| ७ | | ९ | |

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य देह का कुछ कष्ट सहन करने वाला तथा ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला व हृदय में अशान्ति पाने वाला और गुप्त चालों के भंडार की शक्ति रखने

नं० १७६

वाला एवं महान् कष्ट, साध्य परिश्रम करने वाला और अपने प्रभाव में कमी पाने वाला तथा आत्मबल की शक्ति से व कुछ पेचीदा युक्तियों से संबंधित पुरातत्त्व का कुछ लाभ पाने वाला और धनस्थान की वृद्धि करने के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग प्राणप्रण से करने वाला और आय के स्थान में कुछ फिकरमन्दी के साथ शक्ति पाने वाला और शत्रुपक्ष से कुछ अशान्ति के द्वारा निवटेरा पाने वाला होता है।

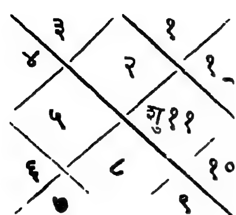
जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से नवम स्थान

नं० १७७

में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् समझा जाने वाला और देहादिक परिश्रम के योग मे भाग्य की उन्नति करने वाला और धर्म के स्थान में श्रद्धा विश्वास के होते हुये भी धर्म उन्नति का पालन न कर सकने वाला और धर्म के स्थान से कुछ अनुचित लाभ उठाने वाला और दैवी शक्ति का सहारा लेकर महान् पुरुषार्थ के द्वारा यश प्राप्त करने वाला और बहन भाई का कुछ योग पाने वाला और आत्मा के अन्दर कुछ दूरंदेशी की ताकत रखने वाला और बड़ा प्रभाव रखनें वाला एवं शत्रुस्थान में दैवयोग से सफलता पाने वाला महान् चतुर सज्जनतायुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से दशवें स्थान

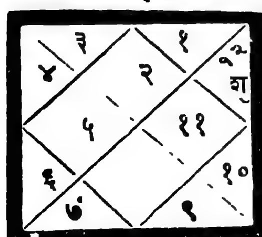
नं० १७८




में हो तो वह मनुष्य अपने देहादिक शक्ति के द्वारा महान् प्रभावशाली कर्म करने वाला और अपनी महान् चतुराइयों के बल से राज समाज में उन्नति पाने वाला और पिता के स्थान में कुछ थोड़ी सी वैमनस्यता के साथ उन्नति का बड़ा साधन पाने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और मातृस्थान में कुछ वैमनस्यता व कुछ अरुचि का योग पाने वाला और अपनी आदर्श पेचीदा चालों के द्वारा व्योपार आदि की उन्नति व मान प्राप्त करने वाला और अपनी आत्मा व देह के अन्दर बड़ा भारी गौरव मानने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों में कुछ कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० १७९

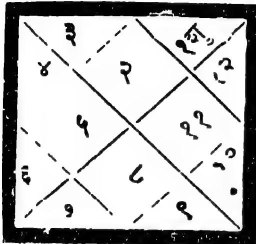



में हो तो वह मनुष्य देहादिक परिश्रम के योग से महान् लाभ पाने वाला और लाभ व आमदनी की वृद्धि करने के लिये महान् चतुराइयों से व पेचीदा चालों के योग से सफलता पावे वाला और विद्यास्थान में कमी व लापरवाही का योग पाने वाला और संतान पक्ष में भी कुछ कमी व कुछ अशांति का योग अनुभव करने वाला और देह में सुन्द-

रता का योग पाने वाला और आत्मा के अन्दर बल और देह में कुछ रोग या कुछ फिकर का योग पाने वाला और सुन्दर व रसादिक पदर्थों को बहुत चाहने वाला तथा धनोन्नति के लिये बड़ी दौड़ धूप करने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में रहने वाला और बहुत खर्च करने वाला और देहादिक परेशानियां व कुछ रोग का योग पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला. और बहुत भारी गुप्त चतुराइयों से काम लेने वाला और छिपी ताकत से शत्रु को नुकसान देने वाला और आत्मा के अन्दर कुछ स्थाई अशांति का योग पाने वाला और देह की सुन्दरता में कुछ कमी का योग पाने वाला और मान सम्मान की कुछ कमी का योग पाने वाला और प्रभाव के स्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला और कुछ अकेला पन महसूस करने वाला होता है।

न० १८०



## वृषलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न के पहिले स्थान

नं० १८१

में हो तो वह मनुष्य बड़े प्रभाव से रहने वाला और प्रभावशाली कर्म करने वाला और भाग्यवान् समझा जाने वाला और पिता व राज समाज की इज्जत प्राप्त करने वाला तथा राजनीति को बड़े ऊचे ढंग से बरतने वाला तथा अपनी उन्नति करने का महान् प्रयत्न करने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ अरुचि का योग पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता पाने वाला और दैनिक रोजगार में कुछ कठिनाइयों से काम निकालने वाला और भोगादिक पक्ष में कुछ न्यूनता व कुछ असंतोष पाने वाला और बड़ी मेहनत का काम करने वाला जिद्दी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से दूसरे स्थान

नं० १८२

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत व कर्म की ताकत से धन की वृद्धि पाने वाला और पिता स्थान के संबंध से भी धन प्राप्त करने वाला और राज समाज के संबंध में इज्जत पाने वाला तथा मातृस्थान में कुछ असंतोष पाने वाला और मकान भूमि आदि की व्यवस्था में कुछ कमी का योग पाने वाला और आमदनी व लाभोन्नति के स्थान में अधिक वृद्धि करने के लिये अधिक परिश्रम कर्म करने वाला

और पिता के स्थान में व राज समाज के स्थान में कुछ थोड़ा बंधन सा महसूस करने वाला और धर्मके संबंध में कुछ बधन पाने वाला कुछ अशांति युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम की शक्ति से महान् उन्नति करने वाला और राज समाज से मान और भाग्य की शक्ति से सफलता व यश प्राप्त करने वाला तथा बहन भाइयों की कुछ असंतोष जनक शक्ति व सहयोग प्राप्त करने वाला और विद्या के स्थान में वृद्धि व शक्ति प्राप्त करने वाला और बातचीतों के अन्दर कुछ दैवयोग से हाजिर जवाबी का माद्दा पाने वाला और खर्च स्थान के अन्दर कुछ कमजोरी व लापरवाही का योग पाने वाला व अन्य दूसरे स्थानों में असंतोष व कमी का योग पाने वाला तथा भाग्यवान् समझा जाने वाला और धर्म कर्म का पालन करने वाला बड़ा प्रभाव शाली हिम्मतवर मेहनती और पिता स्थान की शक्ति पाने वाला होता है।

न० १८३

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता पिता के स्थान सबंध में कुछ असंतोष के साथ वृद्धि पाने वाला और ननसाल की वृद्धि का योग पाने वाला और शत्रुस्थान में ऊंची शक्ति व प्रभाव का योग पाने वाला और देह में गौरव व भाग्यवानी

नं १८४

का योग पाने वाला और राज समाज के संबंध में कुछ अशान्तियुक्त कर्म के द्वारा मान व सुख प्राप्त करने वाला तथा सुख प्राप्ति के वातावरण में कुछ कमी व कुछ बड़प्पन पाने वाला और प्रभाव की बड़ी वृद्धि करने के लिये बहुत कोशिश करने वाला तथा बहुत भारी झंझटयुक्त कर्म को करके भाग्य वृद्धि का कारण योग पाने वाला एवं कुछ भूमि व धर्म का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता की शक्ति से फायदा उठाने वाला और राज समाज के संबध में विद्या बुद्धि से फायदा व मान प्राप्त करने वाला तथा धर्म कर्म का ज्ञान एवं विद्या का ज्ञान प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में कुछ उन्नति का कारण पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ असंतोष के साथ मान तथा भाग्य का संबंध पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ अधिक परिश्रम से उन्नति का योग पाने वाला और धन की वृद्धि करने में बड़ा भारी प्रयत्न तथा लालसा से काम करने वाला और स्थिरता के साथ गम्भीर बातें कहने वाला तत्त्वज्ञानी भाग्यवान् होता है।

न० १८५




जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान से बड़ी शक्ति प्राप्त करने वाला तथा महान् परिश्रम व प्रभावशाली कर्म के योग से व्यापार करने वाला तथा मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला एवं शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला तथा प्रभाव

न० १८६

की वृद्धि करने व रखने के लिये कठिन से कठिन कर्म करने को तत्पर रहने वाला और खर्च के स्थान में कुछ कमी व लापरवाही से काम लेने वाला एवं जीवन की दिनचर्या में प्रभाव वृद्धि के कारणों से कुछ अशांति का योग पाने वाला और जीवन को सहायता देनेवाली पहिली तथा गम्भीर वस्तुओं की तरफ से कुछ असंतोष मानने वाला और बहन भाइयों के स्थान में कुछ वैमनस्यता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं १८७

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की लाइन से परिश्रम के द्वारा भाग्यवानी की शक्ति प्राप्त करने वाला व भाग्यवान् समझा जाने वाला तथा गृहस्थ के अन्दर भाग्यवानी का योग होते हुये भी कुछ असंतोष व अलकसाहट का योग पानेवाला तथा धर्मकर्म का कुछ सामान्यतया पालन करने वाला एवं मातृस्थान में कुछ असंतोष पाने वाला और सुख प्राप्ति के स्थान में कमी महसूस करने वाला व पिता स्थान से कुछ अरुचि युक्त शक्ति पाने वाला तथा राज समाज की शक्ति का फायदा भाग्य की शक्ति के द्वारा लौकिक व दैनिक कर्म से प्राप्त करने वाला मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला और पितास्थान से कष्टयुक्त लाभ पाने वाला और भाग्य की उन्नति में बड़ी

नं० १८८

बड़ी बाधायें पाने वाला और यश में कमी पाने वाला विदेश के संबंध से परिश्रम के द्वारा उन्नति का योग पाने वाला और जीवन में सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला और गुप्त शक्ति का बल रखने वाला तथा राज समाज के संबंध में मान की कमी पाने वाला और विद्या के अन्दर फायदे की शक्ति प्राप्त करने की लाइन रखने वाला और धन संतान व मान प्राप्त करने में कुछ दैवयोग से कर्म का सहारा पाने वाला तथा धर्म की कुछ हानि करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से नवम स्थान

नं० १८९

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की महान् शक्ति प्राप्त करने वाला तथा पिता स्थान से उन्नति के साधन स्वतः प्राप्त करने वाला व राज समाज की शक्ति का लाभ भाग्य बल से ही प्राप्त करने वाला और अपने सुन्दर कर्म के बल से भाग्य की वृद्धि में सफलता पाने वाला एवं भाग्य बल से व कर्म बल से लाभ की वृद्धि पाने वाला तथा पितास्थान की शक्ति से व भाग्य और कर्म बल की शक्ति से शत्रु स्थान में व प्रभाव स्थान में महानता पाने वाला और बहन भाई के स्थान में नीरसता पाने वाला तथा पुरुषार्थ करने वाला और धर्म का पालन करने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से दशवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की शक्ति से भाग्य के विकाश का ऊंचा प्रभाव करने वाला तथा राज समाज के अन्दर बडा भारी मान प्राप्त करने वाला और बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में कमी व दिक्कत समझने वाला और खर्च की लाइन में कुछ लापरवाही व त्रुटियों का योग पाने वाला एवं मातृस्थान में कुछ अलकसाहट का योग पाने वाला व स्त्री स्थान में कुछ वैमनम्यता के साथ२ भाग्य वृद्धि का संबंध पाने वाला और कुछ धर्म का रजोगुणी पालन करने वाला और बहुत बडा कारोबार करने वाला तथा सुख संबंध में कुछ न्यूनता पाने वाला होता है।

नं० १८०

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ३ | | १ | |
| ४ | | २ | | १२ |
| | ५ | | ११श | |
| ६ | | ८ | | १० |
| | ७ | | ९ | |

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आमदनी व लाभ प्राप्ति की महान् वृद्धि करने वाला और पिता के स्थान से लाभ का योग पाने वाला तथा धर्म कर्म की शक्ति से भी लाभ प्राप्त करने वाला एव देह में इज्जत प्राप्ति का योग पाने वाला जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ कुछ अरुचि के साथ प्राप्त करने वाला व गहरी व गूढ चालों से भी उन्नति का साधन पाने वाला एवं लाभ के स्थान में कुछ असोमित या हद से ज्यादा फायदा

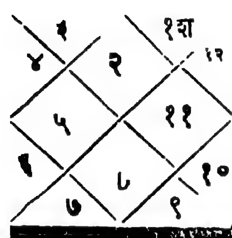
नं० १९०

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ३ | | १ | |
| ४ | | २ | | १२श |
| | ५ | | ११ | |
| ६ | | ८ | | १० |
| | ७ | | ९ | |

उठाने की कोशिश करने वाला और बुद्धि के स्थान में व संतान के स्थान में कुछ सफलता पाने वाला एवं बहुत मेहनत करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि पाने वाला व कुछ क्षुद्र व लघुकर्म करने का योग पाने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के संबध से कमजोरी के साथ भाग्य की उन्नति करने वाला और खर्च के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा शत्रु स्थान में कुछ प्रभाव की विशेष वृद्धि करने के लिये प्रयत्न करने वाला और बहुत परिश्रम से पेचीदा कर्मों की वृद्धि करने वाला तथा भाग्यवान् समझा जाने वाला एवं अन्दरूनी भाग्य में कमजोरी पाने वाला तथा धर्म के स्थान में कमजोरी पाने वाला और धन की वृद्धि करने में सहायता पाने वाला तथा राज समाज के संबंध में कुछ कमजोरी का योग पाने वाला होता है।

नं० १९२



## वृषलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न के पहिले स्थान में

नं० १९३

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ३ | | १ | |
| ४ | | २रा | | १२ |
| | ५ | | ११ | |
| ६ | | ८ | | १० |
| | ७ | | ९ | |

हो तो वह मनुष्य देह के स्थान में कुछ कमी अनुभव करने वाला तथा चितायें व कुछ परेशानियां पाने वाला और बड़ी भारी युक्तियों से काम निकालने वाला तथा छिपावशक्ति से व बड़ी ऊँची चतुराईयों से मतलब सिद्ध करने की महान् शक्ति रखने वाला और अपनी देह की प्रसिद्धता पाने के लिये महान् परिश्रम व कठिनाइयां सहने वाला और देह की स्थाई स्थिरता व शक्ति प्राप्त करने के लिये बड़ी पेचीदा तरकीबों से व कष्ट साध्य उपायों से काम लेने वाला एवं अपनी सज्जनता दरसा कर फायदा उठाने वाला तथा कभी कभी देह में महान् संकट सहने वाला हिम्मतवर होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० १९४

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ३रा | | १ | |
| ४ | | २ | | १२ |
| | ५ | | ११ | |
| ६ | | ८ | | १० |
| | ७ | | ९ | |

हो तो वह मनुष्य धन के स्थान में वृद्धि करने के लिये महान् परिश्रम की महान् युक्तियों से काम लेने वाला और धन के लिये बड़े भारी ऊँचे प्रपञ्च की रचना करने वाला तथा धन के लिये महान् बंधन कारक कठिन कर्म को करने वाला तथा धन की वृद्धि के दिखावे की पुष्टि करने

के लिये महान् आडम्बर के योग से काम लेने वाला और धन स्थान में कभी कभी गहरी मुशीबत का योग पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ दिखावटी वृद्धि का योग पाने वाला एवं धन के स्थान में बाहरी अमीरात के मुकाबले में अन्दरूनी व कुछ कमजोरी पाने वाला तथा धन स्थान की जड़ को स्थाई रूप से मजबूत करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ हानि या संबंध विच्छेद पाने वाला और प्रभाव उन्नति करने के लिये कठिन से कठिन कष्ट साध्य कर्म को करने में तत्पर रहने वाला और अपनी मेहनत व पुरुषार्थ शक्ति से किये हुये कर्मों पर कभी कभी सांघातिक बुरा असर सहने वाला और अपने बाहुबल के अन्दर कभी २ कमजोरियों का योग पाने वाला और बड़ा भारी युक्ति-पूर्ण प्रभावशाली कर्म करने वाला एवं गुप्त चतुराइयों के योग से महान् हिम्मत का कार्य करने वाला और अपना स्वार्थ सिद्ध करने के स्थान में तथा लक्ष्य सिद्धि के स्थान में, कटिबद्ध होकर काम करने वाला होता है।

नं० १६५

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में कुछ हानि पाने वाला और मकान भूमि आदि की भी कुछ कमी व हानि पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों में बड़ी २ कमियों के योग पाने वाला

नं० १९६

और अपने जन्म स्थान के संबंध में कुछ वियोग पाने वाला तथा महान् कष्ट साध्य कर्मों के योग से सुख प्राप्ति के साधन प्राप्त करने वाला एवं जीवन में बड़े २ दुखों को सहने वाला तथा दुःख सह सह कर सुख प्राप्ति की नीव मजबूत करने वाला और सुहृदय संबंधियों की कमी पाने वाला और सुख प्राप्ति के सबधों में कुछ गुप्त रीति से व भेदनीति से कुछ सफलता पाने वाला और सुख शांति के स्थान में कभी कभी सांघातिक गहरी वेदनाओं का योग पाने वाला कुछ अशांति युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या के स्थान में कुछ हानियों का योग पा पा करके विद्या की मजबूती पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि व कुछ कमी पाने वाला और विद्या व बुद्धि के स्थान में महान् चतुराइयों के योग से काम लेने वाला व वाणी की छिपाव शक्ति के द्वारा अपनी विद्वत्ता का महान् परिचय देने वाला और विद्या के स्थान में थोड़ी मेहनत व परिश्रम तथा दिमाग की थकान से काम लेने वाला एवं विद्या स्थान में कुछ अनधिकार रूप से भी सफलता का योग पाने वाला और विद्यास्थान मे कुछ कमजोरी होते हुये भी महान् धैर्य के साथ विचार शक्ति के द्वारा विद्या स्थान की तह की मजबूती को प्राप्त करने वाला गुप्त चतुर ता है।

नं० १९७

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से छठे स्थान में

नं ०११९८

हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में महान् प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला और रोगादिक विपत्तियों के ऊपर विजय पाने वाला और अपनी स्वार्थ की पूर्ति करने मे बड़ी भारी तत्परता से काम लेने वाला और अपनी उन्नति के लिये महान् गुप्त नीति से व महान् पेचीदा तरकीबों से काम निकाल कर बड़ा फायदा उठाने वाला और बड़े से बड़े संकटों के समय भी धैर्य और साहस को न छोड़ने वाला और प्रभाव की महान् शक्ति रखने वाला एवं शील व दया का उल्लंघन करने वाला तथा दिमाग की होशियारियों की ताकत से बड़ी दौड़धूप करने वाला बड़ा सावधान होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से सातवें स्थान

न० ११९९

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कष्ट सहन करने वाला और भोगादिक पक्ष में व इन्द्रिय पक्ष में कुछ कमी व कष्ट का योग पाने वाला और ससुराल पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में कष्ट साध्य कर्म के योग से काम चलाने वाला तथा बहुत परिश्रम करने वाला व कुछ छिपाव शक्ति के योग को मजबूती के साथ रोजगार की लाइन में इस्तेमाल करनेवाला और गृहस्थ के अन्दर दैनिक कार्यों में बहुत परेशानियां मानने वाला

और कुछ कटु युक्तियों से काम निकालने वाला तथा कुछ भोग प्राप्ति की विशेष इच्छा रखने वाला और स्वार्थ पूर्ति करने में लगा रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से आठवें स्थान में

नं० २००

हो तो वह मनुष्य आयु स्थान में बड़े २ संकट युक्त आघात सहने वाला और पेट के अन्दर कुछ उदर विकार का योग पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बडी भारी अशांति अनुभव करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पाहली व गम्भीर वस्तु की हानि पाने वाला तथा कुछ बहुत गुप्त व कुछ अनुचित रीति से महान् परेशानियों के द्वारा जीवन की कुछ सहायता शक्ति प्राप्त करने वाला और बड़ी गहरी पेचीदा चाल सोचने वाला और कभी २ जीवन को समाप्त कर देनें की बातें सोचनें वाला दुःखित होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से नवम स्थान में

नं० २०१

हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान में कुछ हानियों का योग पाने वाला और धर्म के स्थान में कुछ कमी व गलतियों का योग पाने वाला और भाग्य की उन्नति के लिए बड़ा परेशान रहने वाला और यश प्राप्ति के मार्ग में कमी पाने वाला तथा ईश्वर के विश्वास में कुछ कमी पाने वाला व भाग्योन्नति के लिये बड़ी गहरी युक्तियों को स्थिरता के साथ काम

में लाने वाला एवं भाग्य की वृद्धि के लिये महान् परिश्रम करके तथा धर्म अधर्म की परवाह न करके फिकर मन्दी के साथ उन्नति में लगा रहने वाला तथा दिखावटी सज्जनता के ढंग से फ़ायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पिता के स्थान में कुछ कमी या कुछ असंतोष का कारण पाने वाला और अपनी पदोन्नति के लिये महान् प्रयत्न व महान् परिश्रम करने वाला तथा राज समाज के कार्यों में बड़ी गहरी युक्तियों व चालों से काम निकालने वाला और कारबार के संबंध में गुप्त और मजबूत योजनाओं के द्वारा फिकरमन्दी के साथ कार्य करने वाला और कभी कभी मान प्रतिष्ठा के स्थान में गहरी घबराहट के योग भी प्राप्त करने वाला और अन्त में उन्नति की किसी मजबूत तह पर क़ाबू पाने वाला होता है।

नं० २०२

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य लाभ प्राप्ति के स्थान में बडी सफलता पाने वाला और कुछ सीमा से अधिक लाभ पाने के लिये अधिक प्रयत्न करने वाला और अधिक लाभ प्राप्त भी कर लेने वाला व बड़प्पन के साथ पेचीदा तरकीबों से फ़ायदा का ढंग पैदा करने वाला और फ़ायदे के स्थानमें कुछ अनधिकार रूप से भी काम लेने का प्रयत्न करने वाला और

नं० २०३

लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ परिश्रम व कुछ परेशानियों का योग पाने वाला और लाभ प्राप्ति के स्थान पर स्वार्थयुक्त हो कर ही काम करने वाला एवं लाभस्थान की जड़ को मजबूत बनाने वाला होशियार होता है।

न० २०४

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च स्थान में कुछ हानि पाने वाला और कुछ परेशानी पाने वाला और खर्च के स्थान में बड़ा भारी परिश्रम करने वाला तथा खर्च के लिये बड़ी बड़ी युक्तियों से काम निकालने वाला और कभी २ खर्च के संचालन स्थान में महान् संकटों का योग पाने वाला और बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में बडा कष्ट सहन करने वाला एवं बाहरी स्थानों के कुछ अरुचि व प्रलोभन का योग पाने वाला तथा बाहरी स्थानों के कुछ संबंध में अनुचित रीति का व्योहार भी करने वाला तथा दूसरों से कुछ कटु युक्तियों की छिपी शक्ति से काम लेने वाला होता है।

## वृषलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न के पहिले स्थान में

नं० २०५

हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कष्ट सहन करने वाला तथा देह में कुछ मस्तक की व किसी प्रकार कुछ और कमी पाने वाला व कुछ अशांति के साथ २ अन्द-रूनी हिम्मत का बड़ा भारी योग पाने वाला व बडी भारी पुरुषार्थ करने वाला और महान् दृढता के साथ अपने मार्ग में डटकर अन्ध विश्वास की शक्ति से काम लेने वाला और अपने गुप्त सिद्धान्तों के सामने संसार की परवाह न करने वाला व बहादुरी के ढंग से रह कर गुप्त युक्तियों के द्वारा मन्त्र सिद्ध करने वाला एवं बहुत सी मुशीबतें सहते रहने के बाद अन्त में किसी खास मजबूती को पाकर बेफिकर हो जाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से दूसरे स्थान

नं० २०६

में हो तो वह मनुष्य धन के स्थान में बड़ी २ हानियां पाने वाला और कुटुम्ब के अन्दर अपने बुजुर्गों की, व परिवरश करने वालों की, कमी व असंतोष पाने वाला और धन की कमी के कारणों से बड़ी २ अशांति व वेदना सहने वाला और धन की प्राप्ति के लिये अनुचित कर्म को भी करने

वाला और धन के लिये कष्ट साध्य महान् परिश्रम करने वाला और धन स्थान की वृद्धि के लिये महान् गुप्त व गहरी चालें चलने वाला व धन के सबंध में अत्यन्त आन्तरिक धैर्य से काम लेने वाला व धन स्थान की हानि के संबंध में कभी कभी मार्मिक गहरे आघात सहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य महान् पुरुषार्थ करने वाला और उन्नति के लिये बड़ी दौड़ धूप करने वाला व बहन भाइयों के स्थान में संबंध विच्छेद पाने वाला तथा आन्तरिक धारणा शक्ति के बल पर बड़े महान् कठिन कार्य करने वाला और बहुत थकान पाने वाला महान् परिश्रम को करने वाला एवं अपनी हिम्मत शक्ति के ऊपर महान् दुष्कर कठिन तथा सांघातिक प्रहार सहने वाला, किन्तु फिर भी हिम्मत न हारने वाला और उत्तरोत्तर वृद्धि व सफलता के लिये आगे बढ़ने वाला बड़ा चतुर बहादुर चिन्तित मेहनती होता है।

नं० २०७

३ १ ४ के २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ९

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के स्थान में कुछ हानि पाने वाला व जन्म भूमि से वियोग पाने वाला और मकान जायदाद की कुछ कमी व कुछ क्लेश पाने वाला और सुख प्राप्ति के संबंध में बहुत प्रकार की हानि या कमी पाने वाला

नं० २०८

३ १ ४ २ १२ के५ ११ ६ ८ १० ७ ९

और घरेलू वातावरण में कुछ अशांति के कारण पाने वाला और सुख संबंध में व मातृ संबंध में कभी २ बहुत गहरी मार्मिक वेदनाओं का योग प्राप्त करनेवाला और सुख प्राप्ति के लिये महान् से महान् कष्ट साध्य परिश्रम करने वाला और अन्त में बड़ी मुश्किलों के बाद सुख प्राप्ति के साधन प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से पांचवें स्थान में

नं० २०९

हो तो वह मनुष्य विद्या अध्ययन करने में बड़ी २ मुश्किलें महसूस करने वाला और विद्या की परिपूर्णता में कमी पाने वाला तथा सम्मुख बातचीत करने में दूसरों के सामने कुछ कमजोरी मानने वाला तथा वाणी द्वारा अपने मन्तव्य को पूर्ण रूपेण जाहिर न कर सकने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला तथा संतान संबंध में किसी प्रकार की कुछ कमियों को महसूस करने वाला और अपने दिमाग व बुद्धि के अन्दर बड़ी जबरदस्त अन्दरूनी हिम्मत व शक्ति रखने वाला एवं दिमाग की जिद्दबाजी व परेशानी व दृढ़ संकल्प से काम लेने वाला और सत्य असत्य की परवाह न करने वाला गुप्त विवेकी होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में बड़ी योग्यता के साथ बहादुरी का परिचय देने वाला और शत्रु तथा विपक्षियों पर बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला एवं रोग आदि बिमारियों की तथा मुसीबतों की परवाह न करने वाला और

नं २१० ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला तथा गुप्त धैर्य व गुप्त साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल से बड़े बड़ महान् कार्य करके उन्नति को प्राप्त करने वाला तथा अपने स्वार्थ सिद्धि के स्थान में बड़ी दृढ़ता व हठधर्मी से काम लेने वाला एवं शील व संतोष का उल्लंघन करनेवाला और अपने मार्ग की दिक्कतों को हटाने के लिये अंधाधुन्द शक्ति का प्रयोग करने वाला होता है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ३ | | १ |
| ४ | | २ | | १२ |
| | ५ | | ११ |
| ६ | | ८ | | १० |
| | के७ | | ९ |

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं २११ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ हानि पाने वाला और गृहस्थी की दैनिक व्यवस्था में बड़ा कष्ट अनुभव करने वाला और इन्द्रिय संबंधी भोगादिक पक्ष मे कुछ कष्ट व कुछ कमी का योग पाने वाला किन्तु भोगादिक पक्ष में कुछ गुप्त रूप से विषेश शक्ति का उपयोग करने वाला और रोजगार की दैनिक व्यवस्था में कुछ अधिक परिश्रम करने वाला और दैनिक रोजगार की कुछ हानियां पाने वाला और रोजगार के स्थान मे जबरदस्त हिम्मत व आंतरिक धैर्य से काम लेने वाला और रोजगार की लाइन में कभी२ बहुत भीषण आघात सहने के बाद मजबूती का योग पाने वाला होता है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ३ | | १ |
| ४ | | २ | | १२ |
| | ५ | | ११ |
| ६ | | ८के | | १० |
| | ७ | | ९ |

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह जीवन की दिनचर्या में गुप्त शक्ति व मस्ती का आनन्द प्राप्त करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ मुफ्त के ढंग से प्राप्त करने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला और जीवन को गहरा फायदा प्राप्त करने के लिये महान् आडम्बरयुक्त परेशानी के कर्म को करने वाला और विदेश आदि के सम्बन्ध में बड़ी भारी दौड़धूप करने वाला व जीवन में कभी २ महान् गहरी चिंताओं का योग पाने वाला और जीवन के महान् प्रभाव के अन्दर, कुछ कमी महसूस करने वाला तथा अन्दरूनी मजबूती का पाने वाला होता है।

नं० २१२

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य के स्थान में बड़ी २ परेशानियां सहन वाला और भाग्योदय के संबंध में बड़ा २ रुकावटें पाने वाला तथा धर्म के स्थान में कुछ हानि व कमजोरी पाने वाला एवं सुयश में कमी पाने वाला और ईश्वर के विश्वास में कमी पाने वाला तथा तामसी उग्र धर्म का पालन करने वाला और किसी प्रकार की सिद्धि करने के लिये महान् हठधर्मी से काम लेने वाला तथा 'शील संतोष का उल्लंघन करने वाला तथा भाग्य की वृद्धि करने के लिये

नं० २१३

घोर परिश्रम करने वाला और आन्तरिक गुप्त भाव की चेष्टाओं से अन्त में भाग्य की मजबूती का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ अशान्ति के कारण पाने वाला और पिता स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला तथा उन्नति के लिये महान् परिश्रम करने वाला एवं राज समाज के कार्यों में कुछ दिक्कतें अनुभव करने वाला और कारबार के अन्दर घोर परिश्रम करने वाला तथा मान उन्नति के लिये गुप्त शक्ति से व गुप्त धैर्य से बहुत काम निकालने वाला तथा कभी कभी मान प्रतिष्ठा के स्थान में महान् संकट का सामना पाने वाला और उग्र कर्म करने वाला तथा अपने कार्य क्रम में हठधर्मी से काम निकालने वाला और अन्त में उन्नति की मजबूती प्राप्त कर लेने वाला होता है।

नं० २१४

३ १ ४ २ १२ ५ के११ ६ ८ १० ७ ९

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला और लाभ स्थान में वृद्धि करने के लिये महान् प्रयत्न व महान् परिश्रम करने वाला और लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ बड़प्पन के ढंग से कुछ अनुचित व अनधिकार-युक्तियों से भी फायदा

नं० २१५

३ १ ४ २ १२के ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

उठाने वाला तथा लेन देन व व्यवहार के अन्दर अन्दरूनी अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही तत्पर रहने वाला और मुफ्त का सा लाभ पाने वाला व लाभ प्राप्ति के स्थान में एवं कभी २ लाभ स्थान में बड़ी परेशानी अनुभव करने वाला तथा सुन्दर वस्तुओं के लाभ की कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च के स्थान में बड़ी बड़ी परेशानियां पाने वाला और खर्च के मार्ग में बड़ा महान् परिश्रम करने वाला तथा खर्च के संबन्ध में कभी २ भीषण संकट सहने वाला और खर्च स्थान में बड़ी भारी गुप्त हिम्मत व गुप्त युक्तियों से काम निकालने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में बड़ा क्लेश अनुभव करने वाला और बाहरी संबंध में कुछ हानियों का योग पाने वाला और बाहरी संबंधों में बड़ी भारी गुप्त हिम्मत व गुप्त योजनाओंसे काम निकालने वाला तथा बाहरी संबंधों में हठधर्मी से व बहादुरी के साथ काम करने वाला होता है।

नं० २१६

| | | |
|---|---|---|
| ३ | | १ के |
| ४ | २ | १२ |
| ५ | | ११ |
| ६ | ८ | १० |
| ७ | | ९ |

# मिथुनलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न के पहिले स्थान

न० २१७

४ २ ५ सू३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला तथा बड़ा प्रभावशाली पुरुषार्थ करने वाला और बहन भाइयों की शक्ति रखने वाला तथा बल पुरुषार्थ की महान् आदर्श शक्ति रखने वाला एवं स्त्री स्थान में महान् शक्ति व प्रभाव के प्रयोग से काम लेने वाला और स्त्री स्थान में शक्ति का संचार पानेवाला और दैनिक रोजगार की लाइन में प्रभावशाली मेहनत के द्वारा बहुत तरक्की करने वाला दस्स देह में तेज प्राप्त करने वाला और बड़ी भारी हिम्मत का योग पाने वाला तथा अपनी पुरुषार्थ शक्ति के बल से इन्द्रिय भोगादिक की शक्ति में वृद्धि पाने वाला उत्साही होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान में

नं० २१८

सू४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य धन की वृद्धि करने के लिये बहुत मेहनत करने वाला और धन संबंध से ही बल पुरुषार्थ में बंधन का योग पाने वाला तथा भाई बहन के संबंध में बन्धन या कुछ अलहदगी का योग महसूस करने वाला और धन के संबंध में कुछ प्रभाव पाने वाला एवं अपनी शक्ति

के अनुसार अपने जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी व हलकापन महसूस करने वाला और जीवन में सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु की कुछ कमी महसूस करने वाला कुटुम्ब में कुछ प्रभाव पाने वाला तथा आर्थिक उन्नति में ही अपने बाहुबल की सफलता मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहुबल की महान् शक्ति रखने वाला और महान् पुरुषार्थ करने वाला महान् प्रभाव रखने वाला तथा बहन भाई के स्थान में गौरव प्राप्त करने वाला एवं अपने अन्दर प्रचड हिम्मत की शक्ति रखने वाला, धर्म स्थान को कम महत्त्व देने वाला और अपने पराक्रम शक्ति के मुकाबले में भाग्य शक्ति को ओछा समझने वाला व ईश्वर में कम विश्वास रखने वाला और बड़े से बडे कठिन कार्य को भी करने में निरुत्साह न होने वाला व बहुत उत्साह रखने वाला तथा सुयश की कुछ कमी पाने वाला बड़ा प्रतापी होता है।

नं० २१९

४ २ सू५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहन भाइयों का सुख प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की शक्ति प्राप्त करने वाला और सुख पूर्वक मेहनत करके उन्नति पाने वाला व मातृस्थान में प्रभाव पाने वाला तथा पिता स्थान की इज्जत करने वाला एवं

न० २२०

४ २ ५ ३ १ ६सू १२ ७ ९ ११ ८ १०

पिता स्थान से शक्ति पाने वाला और राज समाज के संबंध में मान व प्रभाव पाने वाला और व्योपार आदि के स्थान संबंध में बड़ी शक्ति व प्रभाव से काम करने वाला तथा महान् गम्भीर कर्म के प्रभाव से सुख शांति व गौरव की वृद्धि करने वाला तथा गम्भीर हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान में

नं० २२१

हो तो वह मनुष्य विद्या के स्थान में कमजोरी का योग पाने वाला और विद्या ग्रहण करते समय कुछ असमर्थता का योग पाने वाला और संतान संबंध में कुछ परेशानी का योग प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि पाने वाला तथा दिमाग के अन्दर कुछ कमजोरी व अशांति अनुभव करने वाला और लाभस्थान की वृद्धि करने के लिये दिमाग के ऊपर व वाणी के द्वारा अनुचित जोर लगाकर, बेजा काम लेने से बुद्धि में थकान पाने वाला, एवं बुद्धि की गुप्त शक्ति के द्वारा अधिक नफा व अधिक प्राप्ति करने वाला और भाई बहन के संबंध में तथा बल पुरुषार्थ के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से छठे स्थान में

नं० २२२

हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ के द्वारा महान् प्रभावशाली परिश्रम करने वाला व परिश्रम के योग से महान् शक्ति प्राप्त करने वाला और भाई बहन के स्थान से बड़ी प्रभाव तथा कुछ वैमनस्यता प्राप्त करने वाला और शत्रु

स्थान में बड़ा भारी प्रभाव व गौरव प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष में बड़ा प्रभाव रखने वाला एवं दिक्कतों व मुशीबतों को बहुत मामूली चीज समझने वाला तथा खर्च के स्थान में कुछ अलकसाहट महसूस करने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क में कुछ अरुचि मानने वाला व कुछ परतंत्रतायुक्त महान् कार्य करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और विवाह के बाद अपनी शक्ति का विकाश पाने वाला व दैनिक रोजगार की लाइन में महान् प्रभावशाली कर्म के द्वारा बड़ी उन्नति व प्रभाव पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक की महान् शक्ति प्राप्त करने वाला और बहन भाई की शक्ति प्राप्त करने वाला और लौकिक कार्यों में बड़ा भारी उत्साह व प्रभाव के साथ काम करने वाला और गृहस्थ संबंधी बहुत से कार्यों को अपनी बाहुबल की शक्ति के द्वारा सफल बना कर मगन होने वाला और लोगो में अपनी हिम्मत व मेहनत से मान व प्रभाव की शक्ति पाने वाला होता है।

नं० २२३

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी पुरुषार्थ शक्ति के बल में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और बहन भाई के स्थान में कुछ कमी व कुछ हानि पाने वाला और महान् परिश्रमी कष्ट साध्य कर्म को करने वाला और जीवन को सहायक

नं० २२४

होने वाली कुछ पहली व गम्भीर वस्तु की शक्ति का लाभ बड़ी अलकसाहट व दिक्कतों से प्राप्त करने वाला व धन-स्थान की वृद्धि करने के लिये महान् प्रयत्न, तथा गुप्त शक्ति से काम लेने वाला और उत्साह में कुछ कमजोरी पाने वाला व जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी व कुछ शक्ति पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न के नवम स्थान में

नं० २२५

हों तो वह मनुष्य भाग्य स्थान की कुछ शक्ति का सहारा लेकर पुरुषार्थोन्नति करने वाला तथा मेहनत की सफलता प्राप्ति के अन्दर कुछ कमी का योग महसूस करने वाला व बहन भाइयों की शक्ति प्राप्त करने वाला एवं भाग्य के स्वरूप में कुछ सुन्दरता की कमी पाने वाला तथा भाग्य और पुरुषार्थ की दोनों शक्तियों को मानने वाला व दैवी शक्तियों पर विश्वास करने वाला एवं बहुत हिम्मत रखने वाला तथा कुछ यश कमाने वाला और मेहनत की सफलता के कारणसे प्रभाव पानेवाला व कुछ हठधर्मी से काम लेनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से दसवें स्थान में

नं० २२६

हो तो वह मनुष्य अपनी पुरुषार्थ शक्ति के बल से बहुत जबरदस्त तरक्की करने वाला और पिता स्थान में शक्ति पाने वाला और भाई का सहयोग संबंध पाने वाला व राज समाज के स्थान में तरक्की व मान और प्रभाव पाने वाला

और अपनी मेंहनत की सफलता से गौरव व हिम्मत की शक्ति प्राप्त करने वाला एवं अपनी शक्ति व कार बार के बल से सुखस्थान में वृद्धि पाने वाला एवं कुछ भूमि आदि की शक्ति पाने वाला तथा अपनी इज्जत के स्थान में कुछ प्रभुत्व मानने वाला तथा बड़े लम्बे चौड़े कार्य करने वाला बड़ा साहसी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० २२७

में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ बल की शक्ति से महान् लाभ पाने वाला व धन पैदा करने वाला और बहन भाइयों का बहुत लाभ पाने वाला तथा बल पुरुषार्थ की बड़ी वृद्धि पाने वाला और महान् साहस की शक्ति का लाभ पाने वाला और विद्यास्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ कमी महसूस करने वाला और अपनी शक्ति के आधार से बातचीतों के अन्दर कुछ अनुचित या कड़वे शब्दों का प्रयोग करने वाला और अपनी मेहनत की सफलता का महान् लाभोत्साह प्राप्त करने वाला बड़ा लापरवाह मस्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान में

नं० २२८

हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ में हानि व कमजोरी पाने वाला तथा बहन भाइयों की कुछ हानि व कुछ वियोग पाने वाला व अधिक खर्च करने वाला एवं खर्च के कारणों से कुछ अशांति अनुभव करने वाला और अन्य स्थानों

के संबंध से कुछ अरुचि के साथ शक्ति प्राप्त करनें वाला व शत्रुस्थान में बड़ा प्रभाव रखने का प्रयत्न करते रहनें वाला एवं मेहनत करते समय आलस्य माननें वाला तथा अपनी मेहनत व पुरुषार्थ पर कम भरोसा रखने वाला और अन्य स्थानों के संबंध में प्रभाव जमाने वाला तथा रोगादिक झंझटों की परवाह न करनें वाला गुप्त हिम्मत वाला होता है।

# मिथुनलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान

नं० २२९

में हो तो वह मनुष्य देह के द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करने वाला और देह में सुन्दरता तथा कुछ बन्धन पाने वाला एवं कुटुम्ब स्थान की सुन्दर शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में धन की शक्ति के द्वारा सुन्दरता पाने वाला तथा धन की शक्ति के द्वारा दैनिक रोजगार की लाइन में सफलता पाने वाला एवं देह पर कुछ कीमती वस्तु धारण करने वाला व स्त्री भोगादिक पक्ष में कुछ अधिक मन रखने वाला और देह में मान तथा इज्जत पाने वाला एवं ससुराल में इज्जत पाने वाला तथा तन व मन में धन का ही चिन्तन करने वाला और अपनी अमीरात दरसाने वाला तथा स्थिर मन वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान में

नं० २३०

हों तो वह मनुष्य बहुत धन की शक्ति पाने वाला और धन स्थान में स्थिरता का योग पाने वाला तथा कुटुम्ब स्थान में वृद्धि का योग पाने वाला एवं धन की स्थाई ताकत की वृद्धि करने में ही बराबर मन लगाने वाला और जीवन की दिनचर्या में, धन की शक्ति में सुख के साथ कुछ नीरसता

का योग भी महसूस करने वाला एवं दिनचर्या में कुछ बंधन सा महसूस करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का लाभ कुछ अलकसाहट के साथ २ प्राप्त करने वाला और मालदार समझा जाने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान में

नं० २३१

४ २ ५चं ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य बड़ी कीमती मेहनत करने वाला और अपने बाहुबल से बहुत धन कमाने वाला तथा बहन भाईयों की रौनक के स्थान में कुछ रुकावट या कुछ बन्धन का योग भी पाने वाला व कुटुम्ब की तरफ से शोभा शक्ति प्राप्त करने वाला और धन कमाने के कारणों से कुछ बंधन युक्त रह कर बहुत परिश्रम करने वाला एवं भाग्य स्थान में कुछ वृद्धि करने वाला तथा धन से संबंधित कारणों से भाग्य में कुछ न्यूनता पाने वाला और धन की ताकत से धर्म का पालन थोड़ी अरुचि के साथ करने वाला और बड़ी उन्नति करने में मन रखने वाला तथा यश कमाने वाला साहसी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह करने वाला और भूमि की बहुत शक्ति पाने वाला एवं माता के स्थान में कुछ सुन्दरतायुक्त बंधन पाने वाला व धन की ताकत से सुन्दर सुख का अनुभव करने वाला और धन से ही मान प्रतिष्ठा प्राप्त

न० २३२

करने वाला और धन से ही व्योपार आदि में सफलता पाने वाला तथा राज समाज में मान व उन्नति करने तथा मन के अन्दर महान् धैर्य की शक्ति व शांति प्राप्त करने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों की व वस्तुओं की वृद्धि पाने वाला और कुटुम्ब स्थान से महान् सुख प्राप्त करने वाला और उन्नति के मार्ग में महान् शान्ति युक्त मनोयोग से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य मनोबल की गम्भीर शक्ति से विद्या ग्रहण करने वाला और संतान पक्ष में वृद्धि पाने वाला तथा महान् गहरी व कीमती बातें सोचने व कहने वाला तथा गहरा धन कमाने की बड़ी बड़ी तरकीबें निकालने

न० २३३

वाला और संतान पक्ष से भी धन का फायदा पाने वाला व धन की ताकत से भी धन लाभ पाने वाला और प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला व संतान पक्ष से कुटुम्ब की वृद्धि पाने वाला और दिमाग के अन्दर कुछ बन्धन सा तथा कुछ अमीरात का ढंग पाने व दरसाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की तरफ से महान् अशान्ति का योग पाने वाला और कुटुम्ब की हानि पाने वाला तथा

नं २३४

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ चं १०

ननसाल पक्ष की भी कमजोरी पाने वाला और शत्रु स्थान से परेशानी मानने वाला रोगादि और झगड़े झंझटों में एवं कुछ अनुचित मार्ग में धन की हानि पाने वाला और खूब ज्यादा खर्च करने वाला और कुछ परतंत्रता युक्त महान् परेशानी के परिश्रम से मनोयोग द्वारा धन कमाने वाला और अन्य बाहरी स्थानों के सम्पर्क में महानता पाने वाला और मन में सदैव खिन्न रहने वाला तथा गुप्त से गुप्त चालों के द्वारा फायदा उठाने वाला होता है।

• जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान में

नं० २३५

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ चं ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की लाइन में खूब धन पैदा करने वाला और रोजगार के अन्दर मनोयोग की सुन्दर वंदिश की शक्ति से बहुत सफलता पाने वाला एवं बहुत मान प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में बहुत महानता तथा कुछ वंदिश व सुन्दरता का योग पाने वाला और स्वयं भी कुछ देह में सुन्दरता पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक के संबध में, मन के अन्दर महान् इच्छा रखने वाला किन्तु कुछ वंदिश के साथ बहुत फल पाने वाला और गृहस्थ के अन्दर धन व कुटुम्ब का आनन्द पाने वाला और लौकिक कार्यों में महानता पाने वाला प्रसन्नचित्त होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान
नं० २३६
में हो तो वह मनुष्य धन की हानि व कमजोरी पाने वाला और मनोयोग के महान् कष्ट साध्य गूढ़ परिश्रम के द्वारा धन की शक्ति पाने वाला तथा कुटुम्ब की भी हानि पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग पाने वाला तथा बहुत गहरी व महान् गुप्त चालों से धन की इज्जत बनाने वाला और आयु स्थान में कुछ बंधन पा पा करके वृद्धि पाने वाला और मन के अन्दर अत्यन्त गहरे व लम्बे चौड़े विचारों से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से नवम स्थान
नं० २३७
में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से व किसी सुन्दर शुभ मार्ग की ताकत से धन की शक्ति प्राप्त करने वाला व धन की तरफ से संतोष में कुछ कमी पाने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और धर्म भी करने वाला तथा धन की वृद्धि के लिय कुछ धर्म संबधी देवी उपाय भी करने वाला और मन के अन्दर धर्म और धन दोनों की इच्छा करने वाला व भाई बहनों की इज्जत करने वाला तथा पुरुषार्थ की शक्ति का फायदा उठाने वाला एवं बड़ा भाग्यवान् समझा जाने वाला और ईश्वर में विश्वास करने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला कुटुम्ब वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से दसवें स्थान में

नं० २३८

हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान से धन की शक्ति प्राप्त करने वाला और बहुत बड़े कारोबार से मनोयोग के द्वारा बहुत धन कमाने वाला तथा राज समाज में बहुत भारी इज्जत पाने वाला और मन के अन्दर बहुत ऊँची उन्नति प्राप्त करने की महान् इच्छा रखने वाला तथा कुटुम्ब व धन की शक्ति का वैभव प्राप्त करने वाला और धन को ताकत से सुख के साधनों में बड़ा चमत्कार पाने वाला एवं कुछ भूमि आदि की शक्ति पाने वाला और मन में हुकूमत करने का ख्याल रखने वाला तथा बहुत बड़े २ कीमती कर्म करने वाला व उन्नति के मार्ग में कुछ बन्धन सा महसूस करने वाला होता है

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

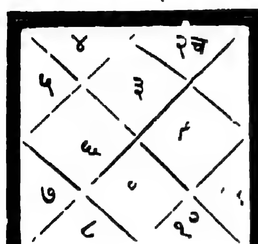
नं० २३९

में हो तो वह मनुष्य मनोबल की ताकत से बहुत धन पैदा करने वाला और बड़े २ कीमती लाभ व सुन्दर २ दिव्य पदार्थ प्राप्त करने वाला और मन के अन्दर सदैव केवल धन को विशेष महत्त्व देने वाला तथा विद्या में तरक्की करने वाला और बुद्धि में चमत्कार पाने वाला और मन के अन्दर बड़ी भारी उमंग रखने वाला तथा कौटुम्बिक लाभ पाने वाला तथा संतान लाभ पाने वाला व बोलचाल के अन्दर कभी २

बड़ी कीमती बातें कहने वाला और मोटी नफा खाने वाला व धन की ताक़त से भी धन की वृद्धि व प्राप्ति पाने वाला तथा लाभ के स्थान में शांत भाव से काम लेनेवाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करने वाला और अन्य स्थानों के बाहरी सम्पर्क से मनोयोग के द्वारा खूब धन प्राप्त करने वाला और कुटुम्ब स्थान में हानि पाने वाला और बड़े रूप का खर्च करने में मन को महानता मानने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी व कुछ लापरवाही रखने वाला, और ओछे मनुष्यों से और भी ओछी चाल चलने वाला और अन्य बाहरी स्थानों में मगन रहने वाला तथा बाहरी स्थानों में बड़ा मल रखने वाला और धन की कमजोरी में से जोरदारी बनाने वाला तथा खर्च स्थान पर कुछ रोक लगाने की चेष्टा करने वाला होता है।

न० २४०



# मिथुनलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न के पहिले स्थान

नं० २४१

में हो तो वह मनुष्य अपने दैहिक परिश्रम के द्वारा लाभ पाने वाला और महान् गहरी व पेचीदा चालों से बहुत भारी फायदा उठाने वाला एवं जीवन को सहायक होने वाली पहिली तथा गम्भीर वस्तु का बड़ा लाभ पाने वाला और आयु स्थान की वृद्धि पाने वाला व जीवन की दिनचर्या में मस्ती का योग पाने वाला तथा देह में कुछ रोग व क्षीणता पाने वाला एवं मातृ स्थान मे कुछ अशांति का योग पाने वाला तथा सुख शांति मे कुछ बाधा पाने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्य पाने वाला बड़ा होशियार व कुछ रूखा होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से दूसरे स्थान में

नं० २४२

हो तो वह मनुष्य धन स्थान की संग्रह शक्ति में बड़ी हानि पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में भी हानि पाने वाला तथा ननसाल पक्ष की बड़ी कमजोरी पाने वाला व धन प्राप्त करने के लिये बड़ा संकीर्ण एवं बंधन युक्त परिश्रम करने वाला और बड़ी पेचीदा चालों से कुछ गुप्त फायदा भी उठाने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ क्लेश सहने वाला

एवं धर्म के स्थान में कुछ हानि व कुछ वैमनस्यता रखने वाला और भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी व कुछ रुकावटें पाने वाला एवं शत्रु पक्ष से कुछ हानि पाने वाला तथा जीवन में अच्छाई पाने वाला कुछ रौनक युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ की ताकत से महान् शक्ति प्राप्त करने वाला तथा शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव जमाने वाला एवं ननसाल पक्ष की बड़ी भारी शक्ति पाने वाला और अपने महान् परिश्रम व प्रभाव से खूब लाभ पाने वाला तथा कुछ झगड़े झंझट आदि बीमारियों के स्थान से बड़ा लाभ पाने वाला और बड़ी भारी हेकड़ी से काम करने वाला व भाई के स्थान में कुछ वैमनस्य शक्ति का योगपाने वाला तथा राज समाज में बड़ा प्रभाव व लाभ पाने वाला एवं पिता स्थान से कुछ फायदा व कुछ वैमनस्य पाने वाला और महान् पेचीदा चालों की शक्ति रखने वाला बड़ा बहादुर हिम्मतवर तथा धर्म से कुछ वैमनस्य मानने वाला होता है।

नं० २४३

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ३ | २ |
| ५मं | | १ |
| ६ | | १२ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में कुछ हानि तथा कुछ लाभ का योग पाने वाला और ननसाल पक्ष से सुख लाभ पाने वाला तथा भूमि मकान आदि से भी लाभ पाने वाला एवं कुछ परिश्रम के साथ अपने स्थान से सुख पूर्वक

नं० २४४

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ३ | २ |
| ५ | | १ |
| ६ मं | | १२ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

लाभ प्राप्ति की मजबूती पाने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों में व भोगादिक पक्ष में कुछ विघ्न व कुछ लाभ पाने वाला और कुछ पेचीदा तरकीबों से सुख व लाभ पाने वाला और शत्रुस्थान की परवाह न करके, बल्कि शत्रस्थान से फायदा उठाने वाला और स्त्री स्थान से कुछ झंझट व लाभ पाने वाला और राज समाज व पिता स्थान में कुछ परिश्रम के साथ लाभ व प्रभाव पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि विद्या के परिश्रम से आमदनी पाने वाला और दिमाग के अन्दर बड़ी तेजी और गुस्सा रखने वाला तथा बड़ी छिपाव की मजबूत बातों से फायदा उठाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ कुछ परिश्रम से प्राप्त करने वाला और दिनचर्या में कुछ विशेष प्रभाव पाने वाला और कुछ मस्ती मानने वाला और दिमाग की ताकत से शत्रु को सहारा कर लाभ पाने वाला और अधिक खर्च के स्थान में कुछ झंझट महसूस करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ हटीले पुत्र पुत्री का योग पाने वाला तथा अन्य स्थानों के संबंध में कुछ प्रभाव रखने वाला कुछ फिकरमन्द होता है।

नं० २४५

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७मं ९ ११ ८ १०

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और ननसाल पक्ष में बड़ी शक्ति अनुभव करने वाला और लाभ प्राप्ति के संबंध में कुछ प्रभावशाली व कुछ परतंत्रता का योग

नं० २४६

पाने वाला और धर्म स्थान में कुछ कंटक मानने वाला तथा भाग्य स्थान में कुछ दिक्कतें सहने वाला एवं देह में कूछ रोग व कुछ फिकर का योग पाने वाला और शत्रुस्थान में बड़ी शक्ति रखने वाला तथा लाभ प्राप्ति के लिये बड़ प्रपञ्च प्रभाव से हेकड़ी के साथ काम निकालने वाला एवं ईश्वर के संबंध में कुछ असंतोष माननेवाला व आमदनी में कृछ कमी व खर्च में कुछ कष्ट महसूस करने वाला बड़ा हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की लाइन में खूब परिश्रम-शक्ति के द्वारा धन लाभ पाने वाला और हिम्मत व कर्म की शक्ति से मान उन्नति करने वाला तथा राज समाज से फायदा उठने वाला और पिता के स्थान से लाभ व प्रभाव एवं कुछ वैमनस्यता के योग पाने वाला तथा धन संग्रह के स्थान में कुछ कमजोरी का योग पाने वाला एव कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी व क्लेश का योग पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ रोग झगड़ा व प्रभाव एवं लाभ पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के सबंध में व देह में कुछ रोग व कुछ झंझट पाने वाला और लौकिक उन्नति के तमाम सबंधित कार्यों में बड़ी पेचीदा युक्तियों से मेहनत के साथ फायदा उठा कर शत्रुस्थान में प्रभाव पाने वाला होता है।

नं० २४७

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से आठवें स्थान

नं० २४८

में हो तो वह मनुष्य आयु स्थान में वृद्धि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव पाने वाला और शत्रु स्थान में महाकूट युक्तियों की शक्ति से लाभ पाने वाला और विदेश आदि के महान् परिश्रम योग से बड़ा स्थाई लाभ पाने वाला और धन संग्रह के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला व जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का बहुत लाभ पाने वाला तथा आमदनी की महान स्थिर शक्ति को कायम रखने के लिये महान् महरी चालों से, व बड़ी भारी पेचीदा युक्तियों से काम लेने वाला और कुटुम्ब की कमी को महसूस करने वाला तथा भाई स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० २४९

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से लाभ व प्रभाव पाने वाला और बड़े पेचीदा ढंग के उग्र धर्म का पालन करने वाला तथा वास्तविक धर्म के स्थान में कुछ कमी पाने वाला व भाग्य के स्थान में कुछ कमी पाने वाला एवं खर्च के स्थान में कुछ परेशानी व कुछ अधिकता पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से लाभ पाने का साधन पाने वाला और कुछ पेचीदा ढंग के उपायों से व हिम्मत से भाग्य की

उन्नति करनें वाला व शत्रु पक्ष से कुदरती फायदा पाने वाला तथा मातृ स्थान में कुछ परेशानी व कुछ लाभ पाने वाला और ईश्वर के विश्वास की कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से दसवें स्थान में

नं० २५०

हो तो वह मनुष्य महान् प्रभावशाली परिश्रमसाध्य कर्म करने वाला और राज समाज से फायदा उठाने वाला व मान-युक्त रीति से लाभ पाने वाला तथा शत्रु पक्ष में विजय एवं लाभ पाने वाला और देह में कुछ परेशानी पाने वाला तथा पिता के स्थान में कुछ दिक्कतें व लाभ पाने वाला और विद्या स्थान में बहुत परिश्रम के साथ सफलता पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ कठिनाइयों से लाभ पाने वाला और कारबार के अन्दर मेहनत और दृढ़ता से युक्तियों के द्वारा लाभ पाने वाला और ननसाल पक्ष की शक्ति का गौरव पाने वाला और मातृ सुख में कुछ न्यूनता व दिमाग में बड़ी तेजी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० २५१

में हो तो वह मनुष्य बहुत भारी लाभ व आमदनी पाने वाला तथा ननसाल पक्ष से भी बड़ा लाभ पाने वाला व शत्रु स्थान से बड़ा लाभ और प्रभाव की शक्ति पाने वाला तथा मेहनत व पेचीदा युक्तियों की शक्ति से बहुत लाभ पाने

वाला और दिक्कतों व मुशीबतों की जरा सी परवाह न करने वाला और धन संग्रह के स्थान में कुछ कमजोरी मानने वाला तथा धन स्थान के कोष संबंध में कुछ लापरवाही रखने वाला और बड़े भारी रुआब से फायदा उठाने वाला तथा दिमाग में तेजी रखने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ परेशानी मानने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आमदनी के स्थान में कमजोरी व परेशानी मानने वाला और अन्य स्थानों के संबंध से बड़े परिश्रम के द्वारा लाभ का साधन पाने वाला और प्रभाव व हिम्मत की छिपी शक्ति के द्वारा शत्रु स्थान में काम लेने वाला व ननसाल पक्ष की कमजोरी पाने वाला तथा बहन भाई के स्थान में कुछ झंझट पाने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ अशान्ति का योग पाने वाला और बाहरी वातावरण की शक्ति से दैनिक रोजगार में कुछ सहारा व कुछ अड़चनों का योग पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला व कुछ छिपी हुई पेचीदा चालों से फायदा उठाने वाला तथा कुछ इन्द्रिय विकार पाने वाला होता है ।

नं० २५२

| | | |
|---|---|---|
| ४ | २ मं | १ |
| ५ | ३ | १२ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | १० | |

# मिथुनलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न के पहिले स्थान

न० २५३



में हो तो वह मनुष्य बहुत सुन्दर सुडौल देह वाला और जमीन जायदाद की शक्ति रखने वाला तथा मातृ स्थान की आदर्श शक्ति पाने वाला एवं सुख प्राप्ति के उत्तम साधन पाने वाला व गहरे विवेक की महान्.शक्ति से दैनिक रोजगार के स्थान म बड़ी सहायता व सुख प्राप्त करने वाला और गहरे व ऊँचे विवेक की शक्ति से बड़ा भारी मान व आत्मज्ञान तथा परम शान्ति प्राप्त करने वाला एवं स्त्री स्थान में बड़ी शांति व सुख प्राप्त करने वाला और लौकिक कार्यों में बड़ा सुख मानने वाला तथा अपने देह की सुखों का पुरा ख्याल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से दूसरे स्थान में

न० २५४



हो तो वह मनुष्य बहुत धन संचय करने वाला और भूमि मकानादि की शक्ति पाने वाला तथा मातृसुख के स्थान में कुछ बंधन पाने वाला एवं देहिक सुखों को भी प्राप्त करने में असुविधा पाने वाला और धन व कुटुम्ब की वृद्धि करने में ही सुख का अनुभव करने वाला एवं जीवन की दिनचर्या में सुख अनुभव करने वाला तथा जीवन को सहा-क होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का सुख लाभ

करने वाला तथा आयु स्थान में वृद्धि पाने वाला एवं बड़ी इज्जत प्राप्त करने वाला और महान् गहरे व सामूहिक विवेक की शक्ति से सर्व प्रकार से सुख मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से तीसरे स्थान में

नं० २५५

हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ से सुख पूर्वक उन्नति करने वाला और बहिन भाइयों का सुख प्राप्त करने वाला तथा भूमि की सुख शक्ति प्राप्त करने वाला तथा मातृस्थान की शक्ति का प्रभाव पाने वाला एवं दैहिक बल से व महान् विवेक शक्ति के बल से भाग्य की उन्नति करने वाला एवं धर्म का ध्यान व मान करने वाला और यश प्राप्त करने वाला तथा बड़ा भारी दूरदेश की बातें सोचने वाला और ईश्वर में विश्वास व श्रद्धा रखने वाला तथा आत्मबल की ताकत से अपूर्व सुख का अनुभव करने वाला एवं हिम्मत व उत्साह की शक्ति पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से चौथे स्थान

नं० २५६

में हो तो वह मनुष्य महान् सुख से रहने वाला और सुन्दर सुसज्जित देह वाला तथा मातृस्थान में महानता पाने वाला एवं पिता स्थान में कमी व लापरवाही का योग पाने वाला और अपनी मस्ती के सामने राज समाज की परवाह न करने वाला तथा मकान जायदाद की खूब शक्ति पाने वाला

वं महान् गहरे विवेक की शक्ति एवं आत्मबल की ताकत से महान् आनन्द प्राप्त करने वाला और विशेष सुख की प्राप्ति के हेतु से ठोस उन्नति व मान प्रतिष्ठा आदि गौरव के स्थान में कमी पाने वाला और देह को मान व प्रभाव प्राप्त करने वाला तथा खेल तमाशे चाहने वाला बड़ा लापरवाह होता है।

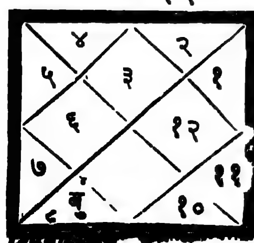
जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से पांचवें स्थान में हों तो वह मनुष्य गहरी विद्या ग्रहण करने वाला और बुद्धि के अन्दर महान् गहरे व संगीन विचारों से काम लेने वाला तथा बड़ी गम्भीरता पूर्वक चतुराइयों की विवेक युक्त बातें कहने वाला व संतान सुख प्राप्त करने वाला एवं दिमाग की ताकत से बहुत लाभ तथा सुख प्राप्त करने वाला तथा बुद्धि की ताकत से जायदाद खड़ी करने वाला और मातृ स्थान की शक्ति का सहारा पाने वाला व अपने आत्म गौरव का बड़ा ख्याल रखने वाला तथा दिमाग के अन्दर सुख शांति चाहने वाला और संतान को आत्म शक्ति द्वारा ऊंचा उठाने वाला ज्ञानी होता है।

नं० २५७




जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य देह की सुन्दरता में व सुख में कुछ कमी पाने वाला और कुछ परतन्त्रता का व कुछ परेशानी का सा अनुभव करने वाला तथा माता के सुख संबंध में कुछ विघ्न पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ सुख की

नं० २५८



तथा मकान भूमि आदि रहने की व्यवस्था में कुछ भी पाने वाला एवं शत्रु स्थान में बड़ी गम्भीरता तथा धैर्य व विवेक की शक्ति से काम निकालने व बड़ी पेचीदा युक्तियों को जानने वाला तथा शील व शांति के शस्त्र से काम निकालने वाला और बहुत खर्च करने वाला तथा अन्य स्थानों के सम्पर्कों में व खर्च में मिठास पाने वाला तथा दूसरों को कुछ सुख पहुंचाने वाला दाना दुश्मन होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से सातवें स्थान में

नं० २५६




हो तो वह मनुष्य अपनी देह के योग से सुख पूर्वक दैनिक रोजगार में तरक्की करने वाला और महान् गम्भीर विवेक शक्ति के कार्य से मान और सुख प्राप्त करनेवाला व स्त्री स्थान में सुख का गौरव व सुन्दरता प्राप्त करने वाला और गृहस्थी से संबंधित लौकिक कार्यों में बड़ी सफलता व सुख तथा महत्त्व प्राप्त करनेवाला व माता से बहुत काम निकालने वाला एवं देह में सुन्दरता पाने वाला तथा अपने अन्दर आत्मोन्नति करने की बड़ी इच्छा रखने वाला तथा कुछ नाम पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक का महान् सुख प्राप्त करने वाला व कुछ दैनिक कार्यों में हरवक्त लगा रहने वाला स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने दैहिक सुखों के संबंध में कुछ कमी महसूस करने वाला और मातृस्थान के सुख में कुछ कमी का योग पाने वाला एवं आयु-स्थान में कुछ वृद्धि पाने वाला व जीवन की दिनचर्या में कुछ रौनक और सुख प्राप्त करने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और महान् गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला एवं अपने अन्दर अत्यन्त गहरे विवेक की शक्ति से कुछ छिपे आनन्द का सुख प्राप्त करने वाला और धन संग्रह करने की महान् योजनायें बनाने वाला तथा भूमि आदि मकानादि की कुछ कमी का योग पाने वाला और विदेश आदि में सुख का अनुभव करने वाला व कुछ अशांति के वातावरण में रहने वाला शांति प्रिय होता है।

नं० २६०

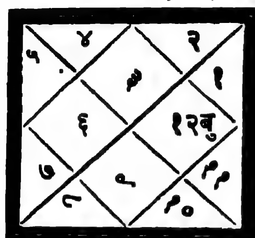
जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भाग्यवानी प्राप्त करने वाला और भाग्यवान् समझा जाने वाला और देह में सुन्दरता व सुख प्राप्त करने वाला और माता की तरफ से आमोद प्रमोद पाने वाला और जमीन जायदाद का लाभ पाने वाला व धर्म का बड़े प्रेम से पालन करने वाला और ईश्वर की निष्ठा में बड़े सुख का अनुभव करने वाला व शील संतोष दया आदि अहिंसा वाद का पालन करने वाला और अपने बल पुरुषार्थ की उन्नति करने वाला और भाई बहनों के स्थान

नं० २६१

से सुख प्राप्त करने वाला और महान् सात्विकी गहरे विवेक की शक्ति के द्वारा यश प्राप्त करने वाला और बड़ी हिम्मत प्राप्त करने वाला तत्त्वखोजी ज्ञानी और दूरदर्शी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से दसवें स्थान में

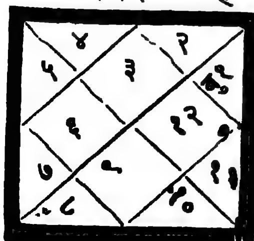
नं० २६२



हो तो वह मनुष्य अपने देह के महान् परेशानी के कर्म के द्वारा सुख प्राप्त करने वाला और पिता के स्थान में कमजोरी पाने वाला व कुछ लघु कर्म के योग से मान पाने वाला तथा देह की सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला और मान प्रतिष्ठा की वृद्धि करने के लिये कुछ गुप्त विवेक के कर्म बल से काम निकालने वाला और मातृस्थान की कुछ कमजोरी होते हुवे भी जोरदारी से काम लेने वाला और कुछ भूमि आदि की शक्ति प्राप्त करने वाला और राज समाज के अन्दर वातावरण में कुछ कमजोरी पाने वाला और कुछ अकर्मण्य आलसी समझा जाने वाला और सुख प्राप्ति का बहुत भारी ख्याल रखने के कारणों से उन्नति के मार्ग में बाधा पाने वाला गुप्त चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान में

नं० २६३



हो तो वह मनुष्य अपने दैहिक बल के प्रभाव से बहुत लाभ पाने वाला व बहुत सुख शक्ति प्राप्त करने तथा माता के संबंध से लाभ पाने वाला एवं अनेक प्रकार के सुखद पदार्थों का लाभ पाने वाला और लाभ प्राप्ति के योगों से बड़े सुख

का अनुभव करने वाला और मकान जायदाद के योगों का लाभ पाने वाला व देह में प्रभाव पाने वाला तथा संतान पक्ष से बड़ा सुख अनुभव करने वाला एवं विद्यास्थान में गहराई प्राप्त करके सुख मानने वाला और बोल चाल में वाणी के द्वारा बड़े तत्त्व की बातें कह कर प्रशंसा पाने वाला तथा बड़े भारी विवेक की शक्ति के द्वारा हर एक प्रकार का लाभ और मिठास प्राप्त करने वाला बड़ा भारी होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने दैहिक सुखों में घाटा पाने वाला व देह की सुन्दरता में कमजोरी पाने वाला तथा मातृस्थान के सुखों में कमी पाने वाला और अन्य स्थानों में जाते रहने वाला तथा अन्य स्थानों के सम्पर्क से ही सुख का योग पाने वाला और जन्म भूमि व मकानादि की कमजोरी पाने वाला व बहुत खर्च करने वाला तथा खर्चस्थान से ही सुख के साधन पाने वाला एवं शत्रुस्थान में बड़ी नरमाई से काम निकालने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से व बड़ी विवेक शक्ति तथा खर्च शक्ति के बल से हृदय को शांत्वना देने वाला और बाहरी स्थानों का ही चिंतन करने वाला भ्रमण कारी होता है।

नं० २६४

| | | |
|---|---|---|
| ४ | २ बु | १ |
| ५ | ३ | |
| ६ | | १२ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

# मिथुनलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न के पहिले स्थान

नं० २६५

में हो तो वह मनुष्य अपने स्त्री स्थान में बहुत विशेष महत्त्व प्राप्त करने वाला और विशेष महत्त्व दायक ही रोजगार व्यापार करने वाला और पिता स्थान से उत्थान की शक्ति का सहयोग प्राप्त करने वाला तथा बड़ा भारी मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला एवं राज व समाज से फायदा व मान प्राप्त करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला एवं विद्यास्थान से फायदा उठाने वाला तथा अपनी देह में सुन्दरता व गौरव प्राप्त करने वाला और कुछ अड़चनों के साथ भाग्य की वृद्धि करने वाला और कुछ धर्म का पालन करने वाला और अपनी उन्नति की महानता पाने के लिये हृदय से बराबर प्रयत्नशील रह कर काम करने वाला बड़ा योग्य होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० २६६

हो तो वह मनुष्य अपने विशेष प्रयत्न के कर्मबल से धन की महान् वृद्धि करने वाला और पिता स्थान से धन की बड़ी सहायता पाने वाला और धन की ताकत से मान प्रतिष्ठा आदि कारवार की वृद्धि पाने वाला और स्त्री के स्थान में कुछ बंधन व कुछ वृद्धि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या

में कुछ बंधन व कुछ परेशानी पाने वाला तथा शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला तथा राज समाज के संबंधों से धन का खूब फायदा उठाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली गम्भीर वस्तु की परवाह न करने वाला और लौकिक व सामाजिक संबंधों के प्रत्येक विषय में हृदय के अन्दर धन को ही विशेष महत्त्व देने वाला बड़ा धनवान् कुटुम्बी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से तीसरे स्थान में

नं० २६७

४ ५गु ३ २ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य अपने बाहुबल से महान् उपयोग करके दैनिक रोजगार की प्रभावशाली वृद्धि करने वाला और स्त्री स्थान में विशेष महत्त्व व शक्ति और सौन्दर्य पाने वाला और हृदय बल की शक्ति से व कर्मबल की शक्ति से बड़ा मान व उत्साह और हिम्मत प्राप्त करने वाला तथा राज समाज से संबंधित कार्यों में बड़ी नफा पैदा करने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की खूब शक्ति का आनन्द भोग प्राप्त करने वाला और धर्म व भाग्य के स्थान में कुछ न्यूनतायुक्त शक्ति पाने वाला और बहन भाइयों की शक्ति पाने वाला तथा अपने कार्य का बड़ा गौरव मानने वाला बड़ा पुरुषार्थी हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार व्यापार का सुख उठाने वाला और माता के स्थान से मान पाने वाला व पिता स्थान से सुख के साधन पाने वाला तथा दैनिक रोजगार को बड़े ढंग से बड़प्पन के साथ करने वाला एवं राज समाज से सुख

नं० २६८

उठाने वाला और अपने व्यापारिक उन्नति के योग से हृदय में बड़ा सुख अनुभव करने वाला तथा मकान भूमि आदि की शक्ति पाने वाला तथा विशेष खर्च होने के कारणों में कुछ असंतोष अनुभव करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी मानने वाला एवं स्त्री व गृहस्थ के लौकिक संबंधों में बड़ा सुख मानने वाला कर्मेष्ठी मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में

नं० २६९

हो तो वह मनुष्य खूब विद्या ग्रहण करने वाला और बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी कार्य कुशलता व होशियारी रखने वाला तथा संतान सुख प्राप्त करने वाला और पिता स्थान की शक्ति से लाभोन्नति पाने वाला और कार व्योपार का बड़ा भारी ज्ञान रखने वाला और स्त्री तथा भोगविलाशता की हृदय के अन्दर मान व दिमाग के अन्दर बड़ी इच्छा रखने वाला और दिमाग की शक्ति के द्वारा बहुत मान प्राप्त करने वाला तथा राज समाज से लाभ व मान प्राप्त करने वाला एवं कुछ वैमनस्ययुक्त धर्म का पालन करने वाला तथा लौकिक पद्धति से भाग्यवानी पाने वाला तथा दिमाग में हुकूमत रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता का सा रोजगार करके मान

नं० २७०

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ गु १०

उन्नति करने वाला और राज समाज में मान पाने वाला और पिता स्थान से कुछ वैमनस्ययुक्त वृद्धि का साधन पाने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव व मान पाने वाला तथा स्त्री स्थान से कुछ विरोध व मान का योग प्राप्त करने वाला एवं अपने दैनिक परिश्रम के कार्यों से धन स्थान की खूब वृद्धि करने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक के संबंध में वास्तविक कुछ कमी व प्रकट में प्रभाव पाने वाला तथा कुछ पेचीदा तरकीबों से हृदय बल के द्वारा लौकिक संबंधों में अधिकांश उन्नति करने वाला तथा कुछ गृहस्थि के झंझटों से युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से सातवें स्थान में

नं० २७१

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ गु ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य आम पवलिक के संबंधित कार्य का दैनिक रोजगार करने वाला और हृदयबल की शक्ति से कार व्यापार में बड़ी प्रतिष्ठा व उन्नति प्राप्त करने वाला तथा राज समाज से फायदा व मान प्राप्त करने वाला एवं पिता के स्थान की ताकत से बहुत लाभ व शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान से मान व प्रतिभा प्राप्त करने वाला तथा भाई बहन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा देह में मान व गौरव प्राप्त करने वाला तथा अपने दैनिक कार्य की शक्ति से अपने प्रभाव व बल की वृद्धि करने वाला भोग विलासी उत्साही तथा बड़ा पैदागीर होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से आठवें स्थान में

नं० २७२

हो तो वह मनुष्य स्त्री व पिता स्थान की हानि पाने वाला और रोजगार व्यापार के लिये महान् कष्टदायक कर्म करने वाला और विदेश आदि की महान् दिक्कतों के योगों से दैनिक कर्म के द्वारा कार्य चलाने वाला और राज समाज तथा लौकिक व्यवहार के संबंधों में बड़ी भारी कमजोरी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ी अशांति हृदय के अन्दर मानने वाला और गूढ़ातिगूढ़ कर्म करके धन की वृद्धि करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली पहिली व गम्भीर वस्तु की हानि पाने वाला और कुछ अप्रसन्नता के साथ अधिक खर्च करने वाला तथा कुछ मातृसुख प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से नवम स्थान

नं २७३

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान से व स्त्री स्थान से कुछ अच्छाई का योग पाने पर भी कुछ रस व मिठास की कमी पाने वाला और भाग्य की शक्ति के बल से दैनिक व स्थाई रोजगार की मजबूती पाने पर भी कुछ असंतोष मानने वाला तथा हृदय की शक्ति व कर्म की शक्ति से भाग्य के स्थान में कुछ ताकत पैदा करने वाला एवं देह में मान व प्रभाव पाने वाला और पुरुषार्थ से सफलता पाने वाला तथा संतान पक्ष से सहारा पाने वाला एवं

विद्या ग्रहण करने वाला तथा बुद्धि स्थान से तरक्की करने के साधन पाने वाला और सामान्य रूप से धर्म का पालन करने वाला बहन भाई का अच्छा सम्पर्क पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से दसवें स्थान में

नं० २७४

४ २ ५ ३ १ ६ १२गु ७ ९ ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य अपने हृदय के अन्दर बड़ी भारी प्रतिष्ठा व गौरव मानने वाला और व्योपार आदि के रोजगार संबंध में तरक्की करने वाला तथा पिता स्थान से सहायता शक्ति पाने वाला एवं राज समाज में मान प्राप्त करने वाला व बड़प्पन के साथ काम करने वाला और स्त्री स्थान का प्रभाव पाने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिये हृदय और कर्म बल की शक्ति का महान् प्रयोग करके उन्नति पाने वाला एवं माता के स्थान में कुछ रौनक पाने वाला तथा शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में इज्जत पाने वाला और प्रत्येक लौकिक विषयों पर बड़े प्रभुत्व से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान

न० २७५

४ २ ५ ३ १गु ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान से महान् लाभ गौरव और सौन्दर्य का योग प्राप्त करने वाला तथा दैनिक रोजगार के अन्दर बड़ी भारी इज्जत के साथ स्थाई लाभ के साधन पाने वाला एवं पिता स्थान से लाभ के अच्छे योग पाने वाला व राज समाज के संबंध से बड़ा फायदा व मान प्राप्त करने

वाला तथा बहन भाइयों के सुन्दर योग प्राप्त करने वाला और भोग विलास के परम सुन्दर साधन पाने वाला तथा कारबार की शक्ति के बल से पुरुषार्थ बल की व हिम्मत की महान् वृद्धि पाने वाला और हृदय के अन्दर बड़ी उमंग व उत्साह की योजनायें पाने वाला और धन संतान व विद्या का सुख प्राप्त करने वाला बड़ा चतुर होता है ।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में बहुत कमजोरी पाने वाला और स्त्री स्थान में हानि पाने वाला और राज समाज में मान पाने की कमजोरियां पाने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी २ कमजोरियां पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से रोजगार की लाइन में मदद लेने वाला और मातृस्थान या मकान भूमि के स्थान की कुछ शक्ति पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति अनुभव करने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के पक्ष में व गृहस्थिक पक्ष के आनन्द वैभव में, कुछ कमजोरी पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली पहिली और गम्भीर वस्तुओं की कुछ कमी पाने वाला निर्बल हृदय होता है ।

नं० २७६

| | | |
|---|---|---|
| ४ | २ गु० | १ |
| ५ | ३ | १२ |
| ६ | | |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

## मिथुनलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न के पहिले स्थान

नं० २७७

में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ दुर्बलता का योग पाने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के संबंधित विषय में बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी योग्यता रखने वाला तथा दिमाग की शक्ति के बल से बड़ा शानदार खर्च करने वाला एवं बुद्धि व वाणी की ऊलट फेर की महान् चतुराइयों के योग से बड़ा मान प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष की सुख शक्ति के अन्दर कुछ कमी सहसूस करने वाला तथा विद्या से अधिक, विद्या के स्थान में चतुराइयों से काम निकालने वाला और स्त्री व भोगादिक के पक्ष में भी खूब खर्च करने वाला व बाहरी संबंधों में कुछ आने जाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान में

नं० २७८

हो तो वह मनुष्य धन के कोष में कभी हानियों के योग पाने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के संपर्क से बुद्धि योग के द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला व संतान पक्ष में कुछ बंधन पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा जीवन की दिन-चर्या में कुछ खर्च और बुद्धि योग के प्रभाव का आनन्द पाने

वाला और खर्च को रोकने की भी योजना बनाने वाला और अधिक खर्च के भी योग पाने वाला व दिमाग के अन्दर केवल धन के कारणों से, व संतान के कारणों से, कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और कोष की वृद्धि करने के लिये उलट फेर की महान् चतुराइयों से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और भाई-बहन के स्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा अपने बल बुद्धि के योग से खर्च सचालन की शक्ति प्राप्त करने वाला व विद्या की शक्ति में कुछ कमी का योग प्राप्त करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ निरसतायुक्त शक्ति को प्राप्त करने वाला एवं कुछ बल बुद्धि के हेर फेर के संबंध से तथा बाहरी सम्पर्कों से शक्ति प्राप्त करने वाला और भाग्यस्थान की कुछ वृद्धि करने वाला व धर्म के संबंध में कुछ दिलचस्पी रखने वाला तथा खर्च के कारणों से बुद्धि में फिकरमान कर अपने अन्दर कमजोरी का योग पैदा करने वाला, बड़ा चतुर हिम्मतवर होता है।

नं० २७९

४ २
५शु ३ १
६ १२
७ ९ ११
८ १०

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के स्थान में कमी व हानि पाने वाला और मातृभूमि व जन्मभूमि के स्थान में वियोग व कमजोरी का साधन पाने वाला एवं अन्य स्थान की शक्ति से राज समाज में उन्नति के साधन पाने वाला और विद्यास्थान में

नं० २८०

कुछ कमजोरी पाने वाला व सन्तान सुख में कुछ कमी पाने वाला तथा खर्च की ताकत से बाहरी बड़ा ठाट बनाने वाला और अंदरूनी खर्च की कुछ कमजोरी पाने वाला और घरेलू सुखों के वातावरण में कुछ कमजोरी होने के कारणों से दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी मानने वाला एवं दुनियां के अन्दर विशेष उन्नति की इच्छा के कारणों से सुख शांति में बाधा प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० २८१

में हो तो वह मनुष्य विद्या के स्थान में कुछ कमी के साथ विद्या की संग्रह शक्ति प्राप्त करने वाला और अन्य बाहरी सम्पर्कों के संबंध का बुद्धि के अन्दर बड़ा भारी ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा दिमाग के अन्दर बड़ी भारी कला शक्ति रखने वाला एवं संतान सम्बन्ध के अन्दर कुछ कमजोरी व कुछ शक्ति प्राप्त करने वाला और बुद्धि बल की शक्ति के द्वारा खर्च व लाभ के साधन पाने वाला एवं बड़ी भारी चतुराइयों की बातें करने वाला तथा अपने इल्म की शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी के कारणों से बुद्धि में भी कुछ कमजोरी अनुभव करने वाला और बड़ी जबरदस्ती हेरफेर की विद्या शक्ति रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या की कमजोरी पाने वाला और संतानपक्ष से दुःख अनुभव करने वाला तथा खर्च के स्थान में कुछ दिक्कतें या कुछ परतन्त्रता का योग पाने वाला एवं दिमाग की बेहद उलट फेर की ताकत से बड़ी पेचीदा चालें चलने वाला तथा शत्रु पक्ष में कुछ परेशानियां सह कर तरकीबों से काम निकालने वाला और अन्य दूसरे स्थानों का कुछ बुद्धि के परिश्रम से संबंधित कार्य का योग प्राप्त करने वाला तथा खूब खर्च करने वाला व बुद्धि के अन्दर बड़ी परेशानियों का योग प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ कमजोरी महसूस करने वाला तथा छिपाव की शक्ति से बातें करने वाला होता है।

न० २८२

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | २ |
| ५ | ३ | १ |
| ६ | | १२ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ शु | | १० |

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य स्थानों के सम्पर्क से बुद्धि योग के द्वारा दैनिक रोजगार की शक्ति प्राप्त करने वाला और विद्या संग्रह के स्थान में कुछ कमी होते हुये भी रोजगारिक व व्यावहारिक लौकिक ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ २ कमजोरी लिये हुये शक्ति पाने वाला एवं स्त्री पक्ष में बड़ी चतुराइयों का योग तथा कुछ परेशानी पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में कई कई दफा बड़ी

न० २८३

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | २ |
| ५ | ३ | १ |
| ६ | | १२ |
| ७ | ९ शु | ११ |
| ८ | | १० |

कमजोरियों के व हानियों के साधन पाने वाला और बड़ी बड़ी चतुराइयों के योग से बहुत मतलब सिद्ध करने वाला तथा स्त्री व गृहस्थ के अन्दर खूब खर्च व भोग की शक्ति प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्यास्थान में कमजोरी पाने वाला तथा संतान पक्ष में हानि पाने वाला व बुद्धि के अन्दर महान् गहराई और चतुराई के योगों से बुद्धि के द्वारा बड़े २ काम निकालने वाला और दिमाग को परेशान करके धन की वृद्धि करने के लिये बड़े २ प्रयत्न करने वाला और खर्च के संचालन की शक्ति को प्राप्त करने के लिये विदेश आदि के सम्पर्क से काम निकालने वाला तथा जीवन की दिनचर्या के मिठास के अन्दर कुछ कमजोरी का योग पाने वाला और विद्या के स्थान में गूढ ज्ञान की शक्ति से काम चलाने वाला व खर्च की कुछ कमी पाने वाला होता है।

नं० २८४

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ शु १०

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने की सुन्दर शक्ति के होते हुये भी विद्या स्थान में कुछ न्यूनता पाने वाला तथा बुद्धि के अन्दर बड़ा ऊँचा भाग्य वृद्धि का ज्ञान पाने वाला किन्तु बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क से फायदा उठाने की शक्ति के मुकाबिले स्थानीय फायदे की कुछ कमी पाने वाला

नं० २८५

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ शु ११ ८ १०

और भाग्य वृद्धि के स्थान में कुछ बुद्धि की कला का चमत्कार पाकर सुन्दर चतुराई से तथा खर्च के योग से काम निकाल कर सफलता पाने वाला और भाग्य के स्थान में कभी कभी कुछ हानियों का या निराशाओं का योग पाने वाला और संतान पक्ष में सुन्दर लाभ पाने के साथ २ कुछ कमी भी महसूस करने वाला और धर्म के संबंध में बड़ी सुन्दर दिलचस्पी रखते हुए भी कुछ वास्तविकता में कमी पाने वाला और भाई बहनों के स्थान में कुछ अरुचि रखने वाला तत्त्वखोजी होता है।

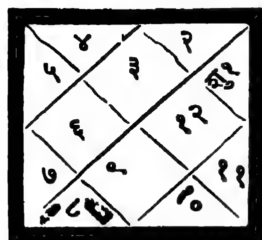
जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से दसवें स्थान में

नं० २८६

हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला व पिता स्थान की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा कारवार की शक्ति प्राप्त करने वाला किन्तु हर एक विषय के अन्दर कुछ कमजोरी पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला तथा अन्य बाहरी स्थानों का बड़ा भारी सम्पर्क रखने वाला और बुद्धि की बड़ी २ ऊँची तरकीबों से व आडम्बर के साथ बहुत लम्बा चौड़ा काम करने वाला किन्तु कभी २ उस बड़े काम के अन्दर हानियों के योग तथा अशांति के योग पाने वाला और मातृ स्थान में कुछ वैमनस्य व कुछ कमी का योग पाने वाला तथा उन्नति की महानता पाने के लिये सुख प्राप्ति की परवाह न करने वाला तथा दिमाग में तेजी व राज समाज में शान रखने वाला बड़ा चतुर प्रभावयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० २८७



में हो तो वह मनुष्य बहुविद्या ग्रहण का लाभ पाने वाला तथा विद्या की पूर्णता में कुछ कमी पाने वाला और संतान लाभ के अन्दर भी कुछ कमी महसूस करने वाला और विद्या बुद्धि से धनोपार्जन करने वाला और बड़ी २ चतुराइयों के योग से व अन्य स्थानों के सम्पर्क से लाभ प्राप्ति के अच्छे साधन पाने वाला और खर्च की ताकत से भी लाभ की वृद्धि करने वाला और स्थानीय लाभ के संबंध में कुछ हानि पाने वाला और बड़ी चतुराइयों की बातों से लाभ की वृद्धि के साधन पैदा करने वाला और हमेशा मतलब सिद्ध करने का उपाय ढूंढते रहने वाला कला प्रेमी बुद्धिमान् होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में

नं० २८८



हो तो वह मनुष्य विद्यास्थान में बहुत कमजोरी पाने वाला तथा संतान पक्ष में बहुत हानि का योग पाने वाला व बहुत ज्यादा खर्च करने वाला एवं बाहरी अन्य स्थानों की शक्ति को दिमाग की ताकत से भरपूर प्राप्त करने वाला और हमेसा दिमाग के अन्दर उलट फेर की ताकत से बातें करने

वाला और इसी प्रकार बुद्धि-बल के जरिये खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ कमज़ोरी का आभास पाने वाला और दिमाग के अन्दर परेशानियों का योग पाने वाला तथा खर्च के स्थान में बड़ी कला और चतुराइयों का योग पाने वाला तथा शत्रु स्थान में कुछ चतुराइयों से काम निकालने वाला कुछ भ्रमित बुद्धि होता है ।

# मिथुनलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न के पहिले स्थान नं २८९ में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् समझा जाने वाला और दैहिक परिश्रम से व भलमनसाहत की आड़ में छिपी हुई युक्तियों से उन्नति का मार्ग पकड़ने वाला तथा देह में कुछ रौनक एवं कुछ परेशानी. का योग पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहली और गम्भीर वस्तु का लाभ देह के द्वारा प्राप्त करने वाला और आयु स्थान की वृद्धि पाने वाला तथा भाई बहन के स्थान में कुछ परेशानी का योग पाने वाला और पिता के स्थान में वैमनस्यता का योग पाने वाला तथा स्त्री स्थान में नीरसता का योग पाने वाला व धर्मस्थान का स्वार्थयुक्त पालन करने वाला तथा लौकिक संबंध के प्रत्येक विषय की उन्नति करने के लिये महान् प्रयत्न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से दूसरे स्थान में नं० २९० हो तो वह मनुष्य कुछ पूर्ण संचित धन की शक्ति पाने और बिगाड़ने वाला तथा आयु की शक्ति पाने वाला एवं अमीरात के ढंग से दिनचर्या व्यतीत करने वाला और धर्मस्थान का पूर्णरूपेण स्वार्थयुक्त पालन करने वाला व बड़ी कूटनीति से धन की वृद्धि करने वाला तथा जीव

को सहायक होने वाली कुछ पहली और गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला तथा जीवन में आमदनी के संबंध से कुछ कमजोरी व लापरवाही का योग पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला व सुख स्थान में कुछ विघ्न पाने वाला तथा कुछ तामसी धर्म का पालन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी मेहनत करने वाला और अपनी उन्नति करने के लिये बड़ी ऊंची बुद्धि से भारी काम लेने वाला तथा बहन भाई के स्थान में नीरसता का योग पाने वाला एवं परिश्रम की ताकत से सफलता का योग पाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली गम्भीर वस्तु की शक्ति प्राप्त करने वाला एवं भाग्य तथा पुरुषार्थ दोनों को ही बड़ा मानने वाला और तमोगुणी धर्म का पालन करने वाला तथा भाग्य की उन्नति के लिये बड़ी २ दौड़ धूप करके सफलता का मार्ग पाने वाला व खूब खर्च करनेवाला होता है।

नं० २९१

४ २ ५श ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ स्नेह की लालसा में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा भाग्य की शक्ति का सुख प्राप्त करने वाला और जीवन को सहायक होनेवाली कुछ पहिली व गंम्भीर वस्त से सुख प्राप्त करने वाला एवं

नं० २९२

४ २ ५ ३ १ ६श १२ ७ ९ ११ ८ १०

धर्म के स्थान में कुछ सामान्य शक्ति का पालन करने वाला और आयु स्थान का सुख प्राप्त करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या का प्रभाव व सुख के योगों से व्यतीत करनें वाला एवं देह में कुछ परेशानी व कुछ भाग्यवानी का योग पाने वाला और सज्जनता के ढंग से व गूढ़ ज्ञान की शक्ति से सुख के साधनों की व मकानादि की वृद्धि करने में लगा रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से पांचवें स्थान

नं० २९३

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७श ९ ११ ८ १०

में हो तो वह मनुष्य बड़ी प्रबल बुद्धि रखने वाला और दूरदेशी का बड़ा जबरदस्त तजुर्बा रखने वाला व किसी गुप्त शक्ति का बड़ा आविष्कार करने वाला तथा दिमाग में बड़ी तेजी रखने वाला एवं बुद्धि के द्वारा भाग्योन्नति के कारण पैदा करने वाला तथा तामसी धर्म का पालन करने वाला और संतान शक्ति पाने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला एवं आमदनी के स्थान में कुछ लापरवाही व कुछ कमी का योग पाने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ अशांति का कारण पाने वाला और कोष धन की वृद्धि के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करनें वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहली गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला तथा दैनिक रोजगार में कुछ खुश्की पानें वाला मस्त जीवन होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० २९४

| ४ | ३ | २ |
|---|---|---|
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ श | | १० |

में हो तो वह मनुष्य जीवन में बड़ा प्रभाव रखने वाला तथा शानदार तरीके से कुछ घिराव में रह कर दिनचर्या व्यतीत करन वाला और जीवन का विकाश करने के लिये महान् पेचीदा व परिश्रम की गूढ़ युक्तियों से काम निकालने वाला और भाग्य की उन्नति करने के लिये तथा प्रभाव और प्रसिद्धता पाने के लिये धर्म और अधर्म की परवाह न करके स्वार्थ सिद्धि करने वाला तथा आयु स्थान की वृद्धि पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहली और गम्भीर वस्तु का स्थाई लाभ पाने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ वैमनस्यता पाने वाला व शत्रु स्थान में प्रभाव पाने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा ईश्वर के विश्वास में कुछ कमी पाने वाला कुछ नामवर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० २९५

| ४ | ३ | २ |
|---|---|---|
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ श | ११ |
| ८ | | १० |

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोज़गार की लाइन में परिश्रम की शक्ति से भाग्योन्नति करने वाला और शादी के बाद जीवन के आनन्द वृद्धि का साधन पाने वाला तथा रोजगार की वृद्धि व यश के साधन पाने वाला एवं महान् गूढ़ युक्तियों से दैनिक रोजगार की वृद्धि करते रहने पर भी कुछ धर्म का ख्याल रखने वाला और सुख तथा भोगादिक

की अधिक प्राप्ति करने के लिये अधिक प्रयत्न करके अधिक सफलता पाने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ भाग्य की ताकत से प्राप्त करने वाला तथा अच्छी आयु वाला भाग्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से आठवें स्थान

नं० २९६

में हो तो वह मनुष्य दीर्घ आयु पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का स्थाई लाभ पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति के स्थान में बड़ी भारी रुकावटें व परेशानियों के योग पाने वाला एवं विदेश आदि के योग से भाग्योन्नति के साधन पाने वाला और धर्म के स्थान में बड़ी भारी कमी के योग पाने वाला तथा दिनचर्या में बड़ी मस्ती व भाग्यवानी का योग पाने वाला तथा विद्या बुद्धि के स्थान में विशेष जोर लगाने वाला और संतानपक्ष में कुछ बड़प्पन का योग पाने वाला तथा पिता व राज समाज के स्थान में कुछ परेशानियां सह कर भी मान उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से नवम स्थान

नं० २९७

में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला और भाग्यवानी की जिन्दगी पाने वाला तथा भाग्य के स्थान में व उन्नति में कुछ दिक्कतें सह २ करके वृद्धि को प्राप्त होने वाला व यश प्राप्ति के मार्ग में कुछ कमी पाने वाला एवं धर्म पालन

के स्थान में भी आन्तरिक कमजोरी पाने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये सत्य की आड़ में असत्य से काम लेने वाला तथा उग्र कर्म का पालन करने वाला एवं आमदनी व प्राप्ति के स्थान में लापरवाही का योग पाने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला तथा बहन भाइयों के स्थान में कुछ नीरसता का योग पाने वाला और भाग्योदय के लिये विदेश का योग संबंध पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी पाने वाला होता है।

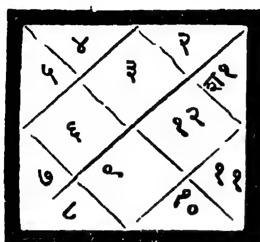
जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ थोड़ी हानि पाने वाला और पिता तुल्य कुछ अन्य व्यक्तियों का कुछ सहयोग भी किसी प्रकार पानें वाला तथा व्यापार आदि भाग्योन्नति के स्थान में बहुत २ प्रकार के कर्म की तबदीलियां कर कर के किसी विशेष कर्म की शक्ति को पाकर वृद्धि को प्राप्त करने वाला तथा फिर भाग्यवान समझा जाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला तथा राज समाज की इज्जत पाने के लिये बड़े २ कार्य करने वाला एवं मान उन्नति के मार्ग में परिश्रम परेशानी और अनेक प्रकार की गूढ़ युक्तियों का इस्तेमाल करके तथा धार्मिकता का पुट लगा कर मान वृद्धि को पाने वाला तथा दैनिक रोजगार में व अन्य स्थानों के संबंध में वृद्धि पैदा करनें वाला स्त्री व गृहस्थ में कुछ वैमनस्यता पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का व्यापार करने वाला प्रभाव शाली होता है।

नं० २९८

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ३ | २ |
| ५ | | १ |
| ६ | | १२ श |
| ७ | | ११ |
| ८ | ९ | १० |

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० २९९




में हो तो वह मनुष्य आमदनी के स्थान में कुछ कमजोरी व परिश्रम का योग पाने वाला और लाभ स्थान की वृद्धि करने के लिये बड़ी भारी गुप्त युक्तियों से व पेचीदा चालों से फायदा उठाने वाला और आयु स्थान की वृद्धि पाने वाला व जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का स्थाई लाभ पाने वाला तथा देह में कुछ परेशानी व कुछ भाग्यवानी का योग पाने वाला तथा बुद्धि विद्या के स्थान में विशेष शक्ति का प्रयोग करने वाला और संतान पक्ष में कुछ अच्छी सहायता पाने वाला व धर्म स्थान का ठीक तौर से पालन न कर सकने वाला एवं बहुत ज्यादा बातें बना कर प्रभाव डालने की हमेशा कोशिश करनें वाला और जीवन में कुछ चित्त से ज्यादा उमंग पाने की कोशिश करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से बारहवें स्थान

नं० ३००




में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में बहुत २ प्रकार की अशांतियाँ पाने के बाद कुछ अन्य बाहरी स्थानों से भाग्य की वृद्धि पाने वाला और धर्म के अन्द-रूनी हिस्से में कमजोरी पाने वाला तथा बाहरी हिस्से में न्याय का पालन

करके सज्जनता का दावा रखने वाला और भाग्यवान् समझा जाने वाला और स्वार्थ की सिद्धि करने के लिये धर्म की, हानि व नुकसान का परवाह न करने वाला और अधिक खर्च करने का योग पाने वाला और धन की वृद्धि करने का महान् प्रयत्न करने वाला तथा शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखने वाला और धन व कुटुम्ब में कभी २ हानि व क्लेश के साधन पाने वाला और बाहरी संबंधों की शक्ति रखने वाला तथा आयु स्थान में सामान्यतया अच्छी शक्ति पाने वाला तथा यश में कुछ कमी पाने वाला कुछ अशांत प्रद होता है ।

# मिथुनलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न के पहिले स्थान

नं० ३०१

में हो तो वह मनुष्य देह में लम्बाई पाने वाला और गहरी कूट नीति की शक्ति का हृदय में भंडार रखने वाला और अप्राप्त दुस्तर वस्तुओं की खोज करके कठिनाइयों के द्वारा स्थिर मजबूती को प्राप्त करने वाला और देह में कुछ कमी महसूस करने पर भी अपने में बड़ा स्वाभिमान रखनें वाला और अपने वित्त से ज्यादा नामवर होने में तथा अनधिकार बड़प्पन पाने में सफल होने वाला और अपनी दिमाग की शक्ति के मुकाबिले में औरों को छोटा समझने वाला व जरूरत से ज्यादा तथा सीमा से परे विचारों को दौड़ाने वाला एवं बड़ी लम्बी चौड़ी योजनायें बनाने वाला तथा आध्यात्मिक ज्ञान की शक्ति का दावा करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३०२

हो तो वह मनुष्य धन स्थान में अनेक बार हानियों का योग पाने वाला और धन की हानियों के कारणों से मन के ऊपर बड़ी बड़ी वेदनायें सहने वाला व कुटुम्ब स्थान में बड़े २ क्लेश की योजनायें पाने वाला तथा मनोयोग के बड़े २ कष्ट साध्य उपायों के द्वारा धन की वृद्धि करने की

गुप्त योजनायें बनाने वाला और कुछ मुफ्त का सा धन पाने की बड़ी २ बारीक सूझें निकालने वाला और धन की पूर्ती करने के लिये कभी २ दूसरों की मदद भी लेनें वाला तथा धन के संबंध से कुछ व्याज देने की भी ज़ोखम उठाने वाला और धन की दिक्कतों को दूर करने में हमेशा दिमाग की परेशानियाँ सहते रहने के बाद अन्त में किसी विशेष शक्ति को पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से तीसरे स्थान में

न० ३०३

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | २ |
| ५रा | ३ | १ |
| ६ | १२ | |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

हो तो वह मनुष्य बहन भाइयों की कुछ हानि व क्लेश का योग पाने वाला और पुरुषार्थ बल के अन्दर बड़ी २ कमजोरियां पाते रहने पर भी हिम्मत न हारने वाला तथा पुरुषार्थ की शक्ति के द्वारा बड़े २ असंभव कार्य भी करने वाला और दिमाग व बाहुबल की शक्ति से महान् परिश्रम करते रहने वाला तथा थकान व हैरान हो हो करके निराशाओं के अन्दर भी किसी अज्ञात शक्ति को प्राप्त करने की पक्की लगन में रहने वाला एवं किसी योजना शक्ति का कुछ अनधिकार लाभ पाने वाला और सदैव अपने स्वार्थ सिद्धि के सिद्धान्त पर डटा रहने वाला बड़ी २ लम्बी चौड़ी गुप्त योजनायें बनाने वाला बड़ा हिम्मतवर होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के सुख सबंध में कुछ कमी पाने वाला और भूमि मकान आदि के संबंध में भी कुछ सुख का घाटा पाने वाला तथा घरेलू सुख साधनों में भी कुछ

नं० ३०४

कमी पाने वाला एवं सुख प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये दिमाग की महान् गहरी शक्ति का प्रयोग करने वाला और कुछ गुप्त योजनाओं के बल से भी सुख स्थान की वृद्धि क नं वाला व सदैव सुख की वृद्धि करने की पेचीदा तरकीवों से व परिश्रम से काम लेने वाला और कभी २ सुख के स्थान में कोई गहरा आघात पाने वाला तथा अन्त में सुख के संबंध की किसी विशेष शक्ति को प्राप्त करने वाला बड़ा गम्भीर कूट युक्ति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ३०५

में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि के द्वारा बेहद दर्जे की चतुराइयों की बातें सोचने व कहने वाला किन्तु बुद्धि की वास्तविक प्रशंसा में कमी पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानियां व परेशानियां सहने वाला तथा छिपाव शक्ति की बातों से व हेर फेर की बातों से मतलब हल करने वाला और भांग तम्बाखू आदि किसी भी नशीली वस्तु का सेवन करने वाला व कुछ मुशीबतों के बाद संतान पक्ष में कुछ शक्ति का आभास पाने वाला और दिमाग शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी तथा कुछ जोरदारी का संमिश्रण का योग पाने वाला, युक्ति बाज होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और रोगादिक परेशानियों की परवाह न करने वाला तथा पाप दोष सम्बन्धी धर्म विरोधी भावनाओं से भी न डरने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि का पूरा २ ध्यान रखने वाला तथा विपत्तियों को सदैव नीचा दिखाने की तरकीबों और युक्तियों का संग्रह रखने वाला तथा शील संतोष दया आदि का उचित कर्तव्य पालन करने में अपने को असमर्थ समझने वाला और गुप्त चालों के द्वारा व हिम्मत के द्वारा बड़े बड़े महान् कार्य करने वाला बहादुर स्वभाव का होता है।

नं० ३०६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ३ | २ | |
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ | १० | ११ |
| ८ रा | | | |

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में बहुत अशांति का व हानि का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में दिमाग को थकान पाने वाले, महा परिश्रमी व परेशानी का कार्य करने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के स्थान में बहुत कमी व रञ्ज का योग पाने वाला तथा कुछ गुप्त व अनुचित रूप से भी भोगादिक की तृप्ति करने वाला और रोजगार की दैनिक प्रणाली के अन्दर भी कुछ गुप्त रूप से व पेचीदा होशियारियों से काम करने वाला तथा कुछ कार्य में आलस्य रखने वाला और कुछ संकीर्ण चाल चलने वाला तथा लौकिक प्रणाली में कमजोर होता है।

नं० ३०७

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ३ | २ | |
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ रा | १० | ११ |
| ८ | | | |

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से आठवें स्थान

नं० ३०८

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ परेशानी मानने वाला और महान् गूढ़ युक्तियों की शक्ति पाने वाला तथा जीवन रक्षा से संबंधित आयु स्थान में कभी २ सांघातिक व निराशा-जनक मुशीबतों का सामना पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली गम्भीर वस्तु की कुछ हानियां पाते रहने के बाद कुछ मजबूती को पाने वाला और आयुस्थान में कुछ मजबूती पाने वाला और बड़ी भारी गुप्त व गहरी तरकीबों को सोचने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी महसूस करने वाला तथा कुछ उदर विकार पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से नवम स्थान में

नं० ३०९

हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में कुछ कमजोरियां महसूस करने वाला और भाग्योन्नति के मार्ग में कभी २ भीषण दुःखद दुर्घटनाओं का योग पाने वाला और बड़ी गुप्त तरकीबों से भाग्य की उन्नति के साधन पाने वाला तथा धर्म के पालन करने में कुछ कमजोरियां पाने वाला व ईश्वर के विश्वास की यथार्थता में कुछ कमी पाने वाला और यश में कुछ कमी पाने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के

समय ठीक तौर से धर्म अधर्म का ध्यान न कर सकने वाला और दिखावटी भलमनसाहत से भी फायदा उठाने वाला और अन्त में भाग्य की किसी मजबूती को पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पिता के स्थान में कुछ हानि व परेशानी का योग पाने वाला और अपनी उन्नति के लिये बड़े २ कष्ट साध्य उपायों के द्वारा कर्म करने वाला और बड़ी २ पेचीदा तरकीबों से व गुप्त योजनाओं से मान वृद्धि के कारण बनाने वाला और राज समाज के स्थान संबंध में कुछ कमजोरी व कुछ परेशानियां सहने वाला और कभी २ मान सम्मान के स्थान में बड़ी २ कठिनाइयां व घबराहट के योग पाने वाला और कारवार के स्थान में बड़प्पन के साथ काम करने वाला और बड़ी हिम्मत के साथ अपनी स्थिति को संभालते रहने वाला तथा अन्त में तरक्की पाने वाला होता है ।

नं० ३१०

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत आमदनी पैदा करने वाला और बहुत लाभ पाने वाला व आमदनी के स्थान में बहुत २ प्रकार की युक्तियां लड़ा कर कुछ वित्त से अधिक लाभ पाने का प्रयत्न करने वाला और लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ अनुचित व गुप्त रूप से भी फायदा उठाने वाला और

नं० ३११



लेनदेन के स्थान में सदैव. महान् स्वार्थ सिद्धि का पूरा २ ध्यान रखने वाला और कभी २ आमदनी में कुछ कमी व कुछ असंतोष मानने वाला तथा कुछ मुफ्त का सा लाभ भी प्राप्त करने वाला व कभी २ लाभ के संबंध में कुछ हानि व कठिनाई का योग भी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अधिक खर्च होने के कारणों से कभी २ परेशानियां सहने वाला और कभी २ खर्च की शक्ति को प्राप्त करने के लिये परेशानियां पाने वाला और खर्च प्राप्ति के मार्ग में बड़ी बड़ी विचित्र युक्तियों से काम लेने वाला और कुछ नाजायज तौर से भी खर्च शक्ति का योग प्राप्त करने वाला और खर्च करने के स्थान में कभी २ अधिकता व कभी २ न्यूनता का योग पाने वाला तथा अन्य दूसरे स्थानों के सम्पर्क में कुछ बाधायें पाने वाला और दूसरे स्थानों के संबंध मार्ग में बड़ी २ गुप्त युक्तियों से व कुछ अनधिकार रीति से काम करने वाला तथा दूर की बातें सोचने वाला होता है।

नं० ३१२

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | २रा |
| ५ | ३ | १ |
| ६ | १२ | |
| ७ | ९ | ११ |
| ८ | | १० |

# मिथुनलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न के पहिले स्थान

नं० ३१३

में हो तो वह मनुष्य देह के स्थान में बडी कमजोरी व चिंताओं का योग पाने वाला और देह के कद में व रंग में हलकापन पाने वाला तथा सुन्दरता की कमी पाने वाला एवं देह में कभी २ सांघातिक चोटें या सांघातिक खतरे की योजनायें पाने वाला और देह में दुर्बलता मानने वाला तथा अत्यन्त गुप्त धैर्य की शक्ति रखने वाला और अत्यन्त गुप्त शक्ति व गुप्त युक्तियों से काम करने वाला और बहुत संकीर्ण योजनायें रखने वाला और मान प्रतिष्ठा आदि में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा गुप्त हठी जिद्दी होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ३ के० | २ | |
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ | ११ | |
| ८ | | १० | |

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३१४

हो तो वह मनुष्य धन के कोष स्थान में बड़ी २ हानियां व विफलतायें पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में बहुत कमजोरी व क्लेश का योग पाने वाला व धन स्थान की वृद्धि करने के लिये तन मन की महान् शक्ति का बड़ा भारी प्रयोग करने वाला और धन जन की वृद्धि करने के लिये महान् धैर्य व साहस से काम लेने वाला और धन की वृद्धि

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ के० | ३ | २ | |
| ५ | ६ | १२ | १ |
| ७ | ९ | ११ | |
| ८ | | १० | |

के मार्ग में अन्ध विश्वास के साथ अपने संकल्प में अटल रह कर गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा धन की कठिन और अनधिकार उन्नति के मार्ग में सफलता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई बहन के स्थान में बड़ी दिक्कतें व परेशानियां पाने वाला और मातृ स्नेह के सुख में घाटा पाने वाला और पुरुषार्थ बल की शक्ति में कुछ हानि व कमजोरी का भी कभी २ योग पाने वाला और महान् गम्भीर परिश्रम करने वाला तथा महान् हिम्मत के साथ उन्नति के मार्ग में अग्रसर होने वाला और अत्यन्त धैर्य की गुप्त शक्ति से बड़े २ कार्य करने वाला और उन्नति व कार्य सिद्धि के लिये अधाधुंध शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा हिम्मत व बहादुरी के स्थान में बड़ी कट्टरता व तत्परता से काम लेने वाला तथा बड़ी दौड़ धूप करने वाला होता है।

नं० ३१५

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ४ | | २ |
| ५ के | | ३ | १ |
| | ६ | | १२ |
| ७ | | ९ | ११ |
| | ८ | | १० |

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ संबंध में कुछ हानि व कुछ कमी महसूस करने वाला और भूमि व मकानादि के संबंध में कुछ अड़चने व कुछ कमी के योग पाते रहने पर भी, रहने के स्थान में कुछ आन्तरिक मजबूती व अच्छाई का स्थाई योग प्राप्त करने वाला और सुख के साधन में बहुत २ से

नं० ३१६

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ४ | | २ |
| ५ | | ३ | १ |
| | ६ के | | १२ |
| ७ | | ९ | ११ |
| | ८ | | १० |

विघ्न या दिक्कतें सहने के बाद किसी स्थिर शक्ति को प्राप्त करने वाला और घरेलू वातावरण के अन्दर किसी खास किस्म की कुछ कमी को महसूस करने वाला और सुख-स्थान की वृद्धि करने के लिये हर समय बड़ी मजबूती व आँतरिक तत्परता से काम लेने वाला धैर्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने में बड़ी २ कठिनाइयां पाने वाला और दिमाग के अन्दर कुछ परेशानियां सहने वाला एवं संतान पक्ष में कुछ हानियां पाने वाला तथा बोलचाल बात चीतों के अन्दर ठीक तौर से अपना मन्तव्य न समझा सकने वाला और बुद्धि विद्या के अन्दरूनी हिस्सों में मजबूती रखने वाला तथा विद्या व गुण को ग्रहण करने में महान् परिश्रम व दृढता से काम लेने वाला और दिमाग के अन्दर अन्ध विश्वास की धारणा शक्ति के विचार रखने वाला और कुछ कटु भाषण करने वाला तथा स्वार्थ सिद्धि से युक्त शील रहित होता है।

नं० ३१७

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला और दिक्कतों व परेशानियों पर विजय पाने के लिये महान् आन्तरिक दृढता व अंधाधुंध शक्ति से काम लेने वाला और गुप्त

नं० ३१८

धैर्य की पराकाष्ठा शक्ति को प्राप्त करने वाला और अपने परिश्रम व हिम्मत की विशाल शक्ति का प्रयोग करक विजय शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा शील का उल्लंघन करने वाला और अपने स्वार्थ की पूर्ती करने में बड़ी तत्परता से काम लेने वाला और उन्नति क मार्ग में सदैव निर्भयता से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से सातवें स्थान में

नं० ३१९

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ के ११ ८ १०

हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान मे कुछ क्रान्ति का योग पाने वाला तथा स्त्री के अन्दर कुछ विशेष शक्ति का योग पाने वाला और भोग विलास की कुछ अधिकता पाने वाला और दैनिक रोजगार के स्थान में महान् परिश्रम की शक्ति से महान् कार्य करने वाला और आन्तरिक दृढ भावनाओं के बल से रोजगार की असाधारण उन्नति के मार्ग में अग्रसर होने वाला और गृहस्थ की लौकिक उन्नति के लिये महान् प्रयत्न व गुप्त शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा गृहस्थ की व्यवस्था में कुछ शांति की कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से आठवें स्थान

नं० ३२०

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १० के

में हो तो वह मनुष्य जीवन की दिनचर्या में कुछ अशान्ति व परेशानियां सहने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ प्राप्त करने में, बड़ी २ कठिनाइयाँ व परिश्रम सहने वाला तथा

जीवन के निर्वाह करने की शक्ति को पाने के लिये, व मजबूत बनाने के लिये, आन्तरिक धैर्य की महान् शक्ति से काम लेने वाला और कुछ उदर विकार की शिकायत पाने वाला एवं गुप्त रूप से कठिन पुरुषार्थ व मेहनत करने में बड़ी भारी स्थिरता व तत्परता से काम करने वाला, गुप्त शक्तिवान् होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भका केतु लग्न से नवम स्थान में

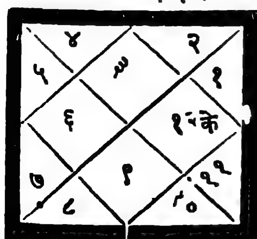
नं० ३२१



हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान में कुछ परेशानियां सहने वाला और भाग्य की उन्नति करने के लिये स्थिर रूप से घोर परिश्रम करने वाला तथा धर्म के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला एवं तामसी धर्म का पालन करने वाला तथा यश प्राप्ति के संबध में कुछ कमी पाने वाला और ईश्वर के विश्वास की कुछ कमजोरी पाने वाला तथा भाग्य के संबंध में उन्नति करने के लिये कटिबद्ध तत्परता को गुप्त शक्ति से काम लेकर अत में किसी मजबूती को पाने वाला और असफलताओं के समय महान् धैर्य स काम लेने वाला स्वार्थयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से दसवें स्थान में

नं० ३२२

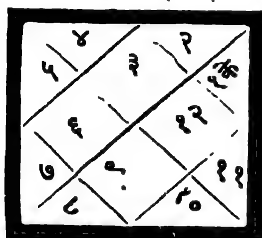


हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ हानि व कुछ परेशानी का योग पाने वाला और पदोन्नति के मार्ग मे बड़ी २ दिक्कतें सहने वाला तथा राज समाज के कार्यों मे मान पाने के लिये बहुत भारी परिश्रम करने वाला और कार-

वार की उन्नति के लिये बहुत मेहनत व गुप्त धैर्य की महान् शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा कभी २ इज्जत आबरू के स्थान में घोर संकट का सामना पाने वाला किन्तु बहुत प्रकार की निराशाओं के बाद भी किसी अच्छे मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक डट कर कार्य करते रहने वाला और अंत में किसी मजबूत शक्ति को पाने वाला होता है।

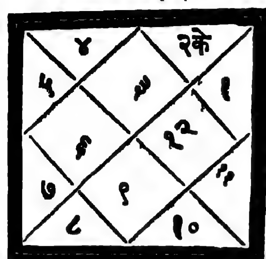
जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आमदनी के स्थान में बड़ी भारी शक्ति प्राप्त करने वाला और लाभ स्थान में वृद्धि करने के लिये महान् शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा कुछ अनधिकार लाभ भी प्राप्त करने वाला एवं लाभ प्राप्ति के स्थान में अन्धविश्वास की धारणा शक्ति को लेकर महान् परिश्रम और कठिन दौड़ धूप करने वाला तथा महान् धैर्य के साथ लाभ के स्थान में तत्परता से काम करने वाला एवं लाभ के विषय में बड़ी से बड़ी मुसीबत को भी सह लेने वाला तथा अपने वास्तविक हक से ज्यादा लाभ पाने का सदैव प्रयत्न करने वाला तथा कुछ छिपाव शक्ति से भी सफल होने वाला होता है।

नं० ३२३




जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और खर्च शक्ति को पाने के लिये महान् परिश्रम करने वाला तथा चतुराई के मार्ग से आन्तरिक धैर्य व धारणा शक्ति के द्वारा

न० ३२४

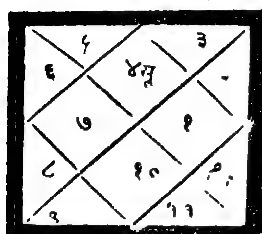



खर्च की योजनायें संचालन रखने वाला और अन्य स्थानों से संबंधित सम्पर्कों में कुछ कठिनाइयां व कुछ परेशानियों का योग पाने वाला और बाहरी स्थानों की शक्ति पाने के लिये अन्धविश्वास के साथ चतुराइयों से युक्त कठिन प्रयत्न करने वाला और बाहरी स्थानों से व खर्च के संबंध से बेफिक्री पाने के लिये कभी कभी महान् संकट भी सह लेने वाला और अन्त में मजबूती पाने वाला होता है।

# कर्कलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न के पहिले स्थान में

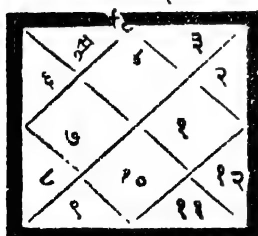
नं० ३२५




हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी, धनवान्, तेजस्वी, और बचाव की व प्रभाव की शक्ति पाने वाला और स्त्री पक्ष से व रोजगारिक पक्ष से, फायदे में कुछ नीरसता का योग पाने वाला तथा साथ ही साथ कुछ अड़चनें भी महसूस करने वाला और देह की द्वारा धन की शक्ति पाने वाला व कुटुम्ब वाला और कुछ नरम गरम मिजाज वाला एवं देह में कुछ बंधन सा पाने वाला तथा मान व इज्जत प्राप्त करने वाला तथा बड़ी कीमती योजनायें बनाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३२६

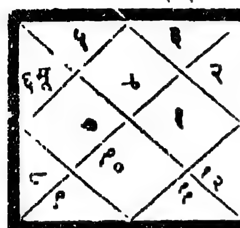



हो तो वह मनुष्य बड़ा धनवान् व कुटुम्ब वाला, और धन के कारण से ही जीवन की दिनचर्या में कुछ २ अशांति पाने वाला और धन की शक्ति से कुछ अड़चनों द्वारा, गूढ़ तत्त्व का कुछ फायदा उठाने वाला, तथा आयु की दिनचर्या में कुछ नीरसता का आभास और अमीरात का ढंग रखने व समझने वाला, एवं धन की तरफ से बड़े प्रभाव की शक्ति रखने वाला व प्रभाव पाने वाला, और धन की

संग्रह शक्ति को ही विशेष महत्त्व देने वाला तथा प्रभाव की ताकत से धन की वृद्धि करने वाला, बड़ा इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान में

नं० ३२७



हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी सुन्दर पुरुषार्थ की शक्ति पाने वाला और पुरुषार्थ से ही धन कमाने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला व धन से धर्म की भी कुछ उन्नति करने वाला और बड़ा भाग्यवान् समझा जाने वाला तथा भाई बहन वाला तथा बड़ी कीमती मेहनत करने वाला, और अपने हाथों से बाहुबल के द्वारा, चामत्कारिक कार्य करने वाला तथा बड़े प्रभाव की महान् शक्ति पाने वाला और प्रभाव की शक्ति से धन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा महान् हिम्मत की शक्ति से, बड़ी २ सफलता व गौरव पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से चौथे स्थान में

नं० ३२८



हो तो वह मनुष्य, धन के कारणों से कष्ट अनुभव करने वाला और सुख स्थानमें बड़ी अशान्ति व बंधन पानेवाला तथा मातृ स्थान में कुछ कमी व पिता स्थान में कुछ वृद्धि पाने वाला, और व्योपार आदि मान प्रतिष्ठा की वृद्धि पाने वाला और नगद धन में कमी पाने वाला तथा जमीन

जायदाद से संबंधित कुछ कष्ट अनुभव करने वाला, तथा राज समाज में मान पाने वाला, और कुटुम्ब स्थान की कुछ कमी व अशांति पाने वाला तथा कुछ अशांति से धन कमाने वाला और थोड़े आराम वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से पाँचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी बुद्धिमान् और बड़ा धन कमाने वाला तथा बड़ा लाभ पाने वाला और बहुत बड़े कुटुम्ब का पिता योग्य होने वाला तथा बड़ी दूरदर्शिता रखने वाला और बहुत अधिक प्रभावशाली कीमती बातें कहने वाला और तीव्र गति से विचार करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ बंधन पाने वाला और अपनी बुद्धि के सामने दूसरों की बुद्धि को कमजोर मानने वाला और विद्यास्थान में महानता व प्रभाव की शक्ति पाने वाला एवं दिमाग से बहुत वजनदार भारी काम लेने वाला गरम मिजाज होता है।

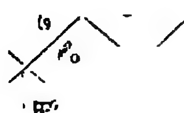
नं० ३२९




जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से, छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य महान् प्रभावशाली व परिश्रमी कर्म की शक्ति से धन कमाने वाला, तथा दिक्कतों की व शत्रुओं की कुछ भी परवाह न करने वाला, बल्कि शत्रु पक्ष से व दिक्कतों के मार्ग में, फायदा उठाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा धन की कमी महसूस करने वाला, और धन प्राप्ति में कुछ परतंत्रता पाने वाला, और

नं० ३३०

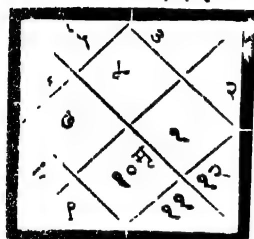




ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव पाने वाला तथा रोग दोष पर काबू पाने वाला तथा कुटुम्ब सुख में कुछ कमी पाने वाला और धन की ताकत से, प्रभाव की महान् वृद्धि पाने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

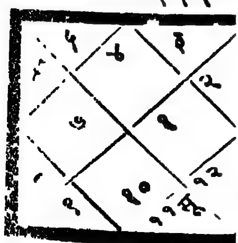
नं० ३३१



में हो तो वह मनुष्य धन से कुछ कठिनाइयों के द्वारा दैनिक रोजगार करने वाला, तथा रोजगार की लाइन में कुछ दिक्कतों व परेशानियों से धन प्राप्त करने वाला और स्त्री पक्ष से कुछ लाभ व कुछ कष्ट अनुभव करने वाला तथा धनवान् समझा जाने वाला, एवं स्त्री पक्ष में कुछ द्रव्य के कारणों से कुछ नीरसता का योग पाने वाला व इज्जतदार रोजगारी जीवन पाने वाला तथा इन्द्रिय संबंध के भोगादिक सुखों में कुछ बंधन व नीरसता का योग पाने वाला तथा लौकिक कार्यों में बड़े प्रभाव से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से आठवें स्थान

नं० ३३२

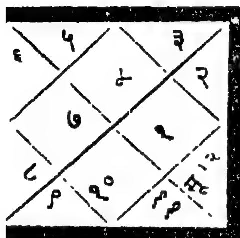


में हो तो वह मनुष्य, बड़े कष्टसाध्य युक्तियों से धन कमाने वाला, तथा धन की कमी महसूस करने वाला और कुछ मृतक या प्राचीन धन पाने वाला तथा कभी २ अचानक धन की हानि भी पाने वाला, एवं धन को अपने पास इकट्ठा कर सकने में अपने को असमर्थ पाने वाला तथा

धन प्राप्ति के विषय में, कुछ न्याय विरुद्ध भी कार्य करने वाला, तथा धन की वृद्धि करने के लिये कुछ गुप्त प्रभाव की शक्ति से काम लेने वाला व जीवन की दिनचर्या में कुछ नीरसतायुक्त अमीरात का ढंग पाने वाला तथा धन प्राप्ति के लिये कुछ विदेश का संबंध भी पाने वाला होता है।

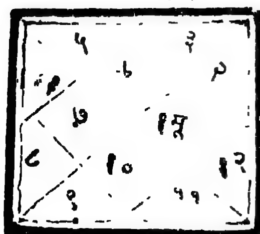
जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य, बड़ा भाग्यवान्, बड़ा धर्मवान्, तथा बड़ा धनवान् और भाग्य की शक्ति से धन पाने वाला तथा बड़ा पुरुषार्थ करने वाला तथा भाई वाला और बहुत दूर दर्शिता की शक्ति से फायदा उठाने वाला व गहरे प्रभाव की शक्ति से भी बहुत फायदा उठाने वाला तथा बहुत मान व इज्जत पाने वाला और गहरे तत्त्व का ज्ञान रखने वाला व धर्म से धन की वृद्धि पाने वाला व धन से धर्म की वृद्धि पाने वाला और ईश्वर का भरोसा रखने वाला, तथा अन्याय के धन को बुरा मानने वाला बड़ा हिम्मत वाला होता है।

न० ३३३




जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी प्रभाव शक्ति पाने वाला और मकान जायदाद की कुछ लापरवाही करने वाला, तथा धन का बड़ा वैभव पाने वाला व पिता स्थान का बड़ी तरक्की पाने वाला, और पिता स्थान से बड़ा मान व फायदा पाने वाला तथा व्यापार से या किसी इज्जत के कार्य से, खूब धन

न० ३३४



कमाने वाला और मातृ स्थान में कुछ दिक्कतें पाने वाला एवं सुख शांति में कुछ बाधा पाने वाला तथा बड़ा भारी प्रभावशाली कर्म करने वाला तथा राज व समाज से मान व धन की खूब शक्ति प्राप्त करने वाला तथा बड़ा कुटुम्बी व प्रतापी व प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान

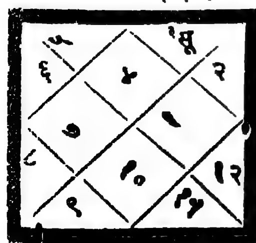
नं० ३३५



में हो तो वह मनुष्य लाभ के योग से धन की शक्ति प्राप्त करने वाला और रुपयों से रुपया कमाने वाला व धन प्राप्ति के स्थान संबंध में बुद्धि से कुछ अच्छा काम लेने वाला तथा संतान शक्ति पाने वाला, तथा कुछ नीरसता में युक्त कौटुम्बिक लाभ पाने वाला और आमदनी के स्थान में भी कुछ नीरसता से युक्त, अच्छा धन लाभ, रत्न आभूषण आदि पाने वाला तथा तेज बुद्धि से काम लेने वाला और विद्या संतान में कुछ गहराई पाने वाला, तथा स्वार्थ की बड़ी कीमती २ बातें कहने वाला, प्रभावयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान

नं० ३३६



में हो तो वह मनुष्य, बहुत धन शक्ति खर्च करने वाला, तथा धन संग्रह न कर सकने वाला और बाहरी अन्य स्थानों से धन प्राप्त करने वाला व खर्च की ताकत से, शत्रु स्थान पर प्रभाव रखने वाला और रोग व

दिक्कतों से बचाव पाने वाला तथा धन व कुटुम्ब की कमी के कारणों से दुःख का योग अनुभव करने वाला एवं बाहरी आदमियों से बहुत मेल व प्रभाव की शक्ति पाते रहने वाला और स्थानीय प्रभाव की कमी पाने वाला, तथा खर्च स्थान से प्रभाव पाने वाला होता है ।

## कर्कलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान में

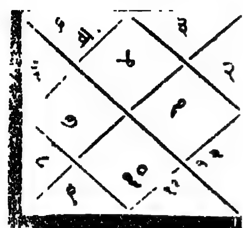
न० ३३७



हो तो वह मनुष्य गौर वर्ण सुन्दर सुडौल देह वाला और प्रसन्न चित्त, दृढ़ आत्मा, तथा मन पर काबू रख सकने वाला तथा स्वाभिमानी, तत्त्वज्ञानी, तथा गृहस्थिक परिस्थिति पर व अपने दैनिक कार्य व रोजगार पर पूर्ण-ध्यान रखने वाला तथा भोग चाहने वाला व पाने वाला तथा माननीय प्रतिष्ठावान् सुखी देह वाला व अपने मन-की मानी करने वाला तथा स्वच्छन्दतायुक्त रहने वाला तथा स्त्रीस्थान में कुछ नीरसता पाने वाला तथा कुछ ख्याति युक्त नामवर स्थिर चित्त होता है ।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान में

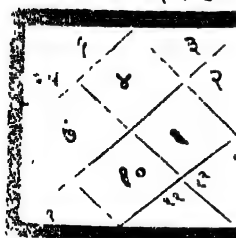
नं० ३३८



हो, तो वह मनुष्य, खूब धन कमाने वाला तथा तन मन से धन और कुटुम्ब की वृद्धि चाहने,व करनेवाला तथा जीवन में अमीरी से दिनचर्या रखने वाला व आयु की वृद्धि का पूर्ण ध्यान रखने वाला तथा पुरातत्त्व की खोज करने वाला व कुछ घिराव में रहने वाला एवं लौकिक प्रणाली की उन्नति करने वाला और अच्छी देह वाला एवं मिजाज व बड़प्पन रखने वाला व मान प्राप्त करने वाला और लौकिक कार्यों में ही जीवन लगाये रखने वाला बड़ा स्वार्थी इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ३३९

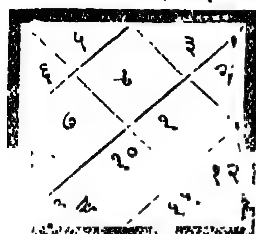


में हो तो वह मनुष्य बड़ा पुरुषार्थ करने वाला तथा तन मन से उन्नति के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला, और प्रसन्न चित्त रहने वाला तथा धर्म को मानने वाला और भाग्यवानी प्राप्त करने वाला तथा बहन भाइयों को बहुत चाहने वाला और सुन्दर देह पाने वाला तथा उत्साह की महान् शक्ति प्राप्त करने वाला तथा बड़ी हिम्मत की शक्ति से विजई होने वाला और यश प्राप्त करने वाला और शांति पूर्वक कार्य को दत्त चित्त हो कर करने वाला और न्याय व ईश्वर को मानने वाला तथा आत्मबल वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान नं० ३४० में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक अपने स्थान में रहने वाला और सुन्दर देह वाला तथा जमीन जायदाद का सुख प्राप्त करने वाला और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला तथा बड़ा कारवार करने वाला और हँसने हँसाने वाला तथा माता पिता को मान देने वाला तथा विदेश जाने की मुशीबत समझने वाला तथा सुन्दर कर्म करने वाला और राज समाज से मान व अच्छाई पाने वाला आनन्दी जीव शांति युक्त रहने वाला और मनोयोग की शक्ति से, लौकिक व घरेलू संबंधों में उन्नति व सफलता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान नं० ३४१ में हो तो वह मनुष्य बुद्धि विद्या में कमजोरी व संतान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला तथा हृदय में कुछ अशांति पाने वाला तथा लाभ प्राप्ति के लिये, अधिक चेष्टा व प्रयत्न करने वाला व लाभ के विषय में अपने अन्दर बहुत उन्नति करने की भावनायें रखने वाला और कुछ संकीर्ण विचार रखने वाला यथा भाषण द्वारा व बात चीतों से अपने भाव को पूरा न समझा सकने वाला और मन व बुद्धि में कमजोरी युक्त ज्ञान रखने वाला तथा असत्य से फायदा उठाने वाला और देह की सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला तथा छोटे कद वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से छठे स्थान में
नं० ३४२ हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कमजोरी व कुछ रोग का योग पाने वाला और बड़ी पेचीदा तरकीबों से प्रभाव जमाने वाला तथा कुछ परतंत्रतायुक्त स्थिति में रहने वाला और तन, मन में कुछ अशांति पाने वाला व काशी कुछ ननसाल



में रहन सहन करने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा शत्रु और परेशानियों का कुछ भय मानने वाला और कुछ दिक्कत व झंझटों में रह कर अपने को कुछ निस्सहाय सा समझने वाला तथा साधारण कद वाला और पतले शरीर वाला तथा कुछ गलत बकने वाला और महान् शांत हृदय वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान
नं० ३४३ में हो तो वह मनुष्य, कुछ प्रशंसा प्राप्त करने वाला और दैनिक कार्यों को बड़ी दिलचस्पी से करने वाला तथा काम वासनाओं में रहने वाला और भोग-विलास चाहने व पाने वाला तथा सुन्दर स्त्री वाला व तन मन से बराबर खूब



रोजगार करने वाला, व कोमल अंग वाला व देह की सुन्दरता का व स्वाभिमान का पूरा ख्याल रखने वाला तथा अपने व्यक्तित्व को कुछ दबाव में डलवा कर भी किसी २ समय कुछ काम निकालने वाला और स्त्री को विशेष महत्त्व

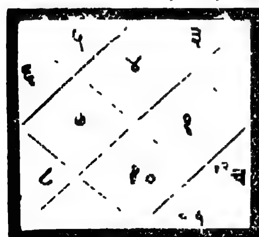
देने वाला व लौकिक प्रणाली में सफलता पाने वाला, एवं आत्मबल से दैनिक रोजगार का विशेष आनन्द पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी २ मुशीबतें सहने वाला तथा परदेशों में जाते रहने वाला और देह में सुन्दरता की कुछ कमी पाने वाला और बड़ी कठिनाइयों से व गुप्त रीतियों से तरक्की करने वाला और कुछ पुरातत्त्व की खोज में रहने वाला तथा धन प्राप्ति का बराबर ध्यान रखने वाला और कुटम्ब की वृद्धि न हने वाला तथा जीवन के समय का कुछ फायदा उठाने वाला व कुछ गलत रास्ते पर चलने वाला और जीवन की दिनचर्या को सहायक होने वाली कुछ गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला कुछ खिन्न मन होता है।

नं० ३४४

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् व बड़ा धर्मात्मा तथा बड़े मस्तक वाला और ईश्वर में विश्वास करने वाला व सुन्दर देह वाला तथा प्रसन्न रहने वाला तथा पुरुषार्थ करने वाला और बहन भाइयों को चाहने वाला तथा तत्त्वज्ञान प्राप्त करने वाला और सुयश प्राप्त करने वाला तथा पुण्य संचय करने वाला व दैवी बल प्राप्त करने वाला

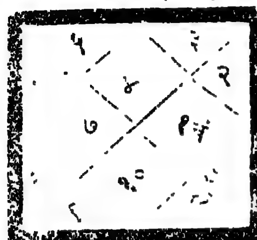
नं० ३४५



और भाग्य को विशेष महत्त्व देने वाला और मनोबल की शक्ति से, बड़ीभारी दूरंदेशी की महान् शक्ति प्राप्त करने वाला महान्, सज्जन शील-स्वभाव वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से दसवें स्थान में

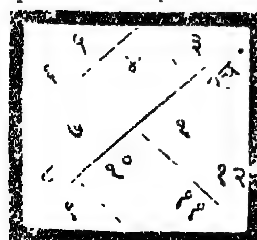
नं० ३४६



हो तो वह मनुष्य बड़े वैभव वाला और माता पिता से लाभ पाने वाला एवं बड़ा कारबार करने वाला, तथा बड़ी शान शौक में रहने वाला और सुख के साधन प्राप्त करने वाला तथा जमीन जायदाद चाहने वाला और बड़प्पन की सदैव इच्छा रखने वाला तथा अच्छे कर्म करने वाला, एवं सुन्दर आचार की देह वाला तथा प्रशंसा पाने वाला और प्रभाव शक्ति प्राप्त करने वाला तथा राज समाज में बड़ा मान पाने वाला, व मनोबल की ताकत से बड़ी भारी उन्नति करने वाला, प्रभुत्व वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ३४७

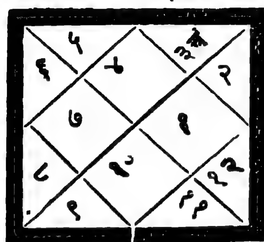


में हो तो वह मनुष्य स्थूल व प्रभावशाली सुन्दर देहवाला तथा तन मन से निरंतर धन कमाने वाला और बड़े २ लाभ पाने वाला तथा बुद्धि में कुछ नुकीली बातें रखने वाला तथा कुछ छिपाव की युक्तियों से बातें करने वाला और बड़प्पन व प्रभाव से रहने वाला, बड़े ठाट वाला, तथा धन पैदा करने में बड़ी तेजी रखने वाला और संतान पक्ष में कुछ कमी व कुछ लापरवाही का योग रखने वाला और

मन के अन्दर बड़ी भारी उमंग रखने वाला और विद्या स्थान की भी कुछ कमी व कुछ लापरवाही रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान

नं० ३४८



में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कमी व कुछ कमजोरी पाने वाला और अन्य बाहरी स्थानों में रहने वाला तथा बाहरी स्थानों से मान पाने वाला और मानसिक व शारीरिक कष्ट अनुभव करने वाला तथा शत्रु स्थान पर कुछ प्रभाव कायम रखने की चेष्टा सदैव मन में रखने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला और मनोबल की ताकत से दूसरे स्थानों से संबंधित कार्य करने वाला तथा कुछ उदासीनता रखने वाला और कुछ बहुत दूर की बातें सोचने वाला और हृदय में कुछ दुर्बलता का योग पाने वाला तथा कुछ भ्रमित चित्त रहने वाला अशांत हृदय होता है।

## कर्कलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने मान प्रतिष्ठा में कुछ कमी महसूस करने वाला और माता पिता के स्थान में कुछ कमी

नं० ३४९

सञ्चित शक्ति पाने वाला तथा दैनिक रोजगार और स्त्री स्थान की वृद्धि का विशेष ध्यान एवं देह स्थान में कुछ कमी या कमजोरी मानने वाला तथा बुद्धि सुख और संतान पक्ष में कुछ चिंतित रहने वाला और विद्या में कुछ कमी पाने वाला और जीवन में कुछ निरसता मानने वाला तथा बड़े २ महान् कार्य करने की योजना बनाने वाला व आशावादी उन्नति की उमंगों से जी बहलाने वाला तथा कशमकश की गुप्त शक्ति से समय को निकालने वाला व अधिक भोग चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से दूसरे स्थान

नं० ३५०

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की शक्ति का सहारा पाकर बुद्धि द्वारा अपने जीवन में, महान् और कीमती कार्य करने वाला तथा खूब धन कमाने वाला एवं उन्नति करने वाला तथा भाग्यवान् संतान पाने वाला तथा धर्म स्थान का और भाग्य स्थान का विशेष ध्यान रखने वाला और खूब विद्या संग्रह करने वाला व राज समाज तथा कुटुम्ब स्थान में इज्जत पाने वाला और बड़ी चतुराइयों से अधिक फायदा उठाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति अनुभव करने वाला तथा बड़ा हाजिर जवाब, गुण ग्राही मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से तीसरे स्थान

नं० ३५१

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी व राज समाज में बड़ी भारी इज्जत पाने वाला और बुद्धि बल से व कर्मबल से समाज पर अधिकार रखने वाला और पिता स्थान को उन्नति व नाम दिलाने वाला व शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला और अपने कर्म द्वारा बुद्धि योग से उन्नति की निरन्तर चेष्टा करने वाला तथा अपनी उन्नति करने की अपने अन्दर सामर्थ रखने वाला और हिम्मत हारकर कभी निराश न होने वाला और अपनी सफलताओं के मार्ग में विरुद्धावस्था की स्थिति में भाई, संतान, पिता, धर्म और अधर्म किसी की भी परवाह न करने वाला तथा समाज को भय्या बेटा समझने वाला बड़ा कार्य कुशल, विजई वीर होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से चौथे स्थान

नं० ३५२

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि और व्यापार एवं बड़े कार वारसे खूब लाभ पाने वाला और लौकिक व गृहस्थिक कार्य करने में बड़ी प्रवीणता रखने वाला और अपनी दैनिक कार्य प्रवीणता के योग से ही बड़ा नाम व बड़ा लाभ पाने वाला और अपने स्थान में व स्त्री पक्ष में बड़ा प्रभाव और मान पाने वाला व पिता और पुत्र व माता से सुख प्राप्त करने वाला तथा जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला तथा अधिक भोग चाहने व पाने वाला तथा प्रभावशाली कर्म

करने वाला व राज समाज में मान पाने वाला तथा विशेष भोग विलास प्राप्त करने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य राजनैतिक विद्या के संबंध में विशेष ज्ञान रखने वाला तथा पिता और पुत्र की विशेष शक्ति के बल से दिमाग में मस्त रहने वाला तथा लाभ के मुकाबले में खर्च की अधिक योजना रखने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ नीरसता अनुभव करने वाला और कुछ अड़चनों के सहित गूढ़ तत्त्व की खोज करने वाला और कुछ अन्य दूसरे स्थानों से विशेष संबंध रखने वाला तथा हुकूमत के साथ बातें करने वाला और अपने व पिता के दिमाग की शक्ति से उन्नति व मान पानें वाला बड़ा प्रभावशाली तीव्र विचारक इज्जतदार व्यापारी होता है ।

नं ३५३

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा बहादुर प्रभाव रखने वाला तथा बुद्धि और राजनैतिक युक्तियों से अपने प्रताप व गौरव को कायम रखने वाला तथा शत्रु और रोग पर विजय पाने वाला और कुछ गलत हेकड़ियों के स्तेमाल करने से अपने शरीर में कुछ मुशीबत अनुभव करने वाला किन्तु मुशीबतों की परवाह न करने वाला और देह में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति का बड़ा ख्याल करने वाला

नं० ३५४

तथा बुद्धि की पेचीदा चालों से व तिरछे ढंग से शेरदिली की बातें करके मतलब बनाने वाला तथा खूब खर्च करने वाला व पिता और संतान पक्ष में कुछ अशांति पाने वाला तथा विद्या और बुद्धि में कुछ कमी पाने वाला तथा भेद बुद्धि से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से सातवें स्थान

न० ३५५

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी शानदार रोजगार करने वाला और बुद्धि योग से तथा स्त्री के भाग्य द्वारा उन्नति को प्राप्त करने वाला और किसी उँचे प्रबन्ध से संबंधित महान् कार्य को करने वाला और संलग्नता पूर्वक किसी दैनिक कार्यक्रम को बड़ी मुस्तैदी के साथ पूरा करके उन्नति व यश प्राप्त करने वाला और बड़े ठाट व प्रभाव वाली स्त्री पाने वाला और राज समाज में व बड़े २ स्थानों में इज्जत प्राप्त करने वाला और अपने देह में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा वहुत भोग विलास की शक्ति पाने वाला तथा धन वृद्धि की विशेष चेष्टा करने वाला व पिता पुत्र का सहारा पाने वाला माननीय प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से आठवें स्थान

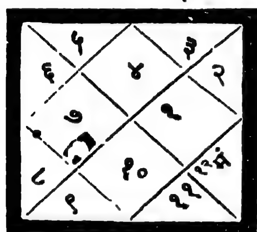
नं० ३५६

में हो तो वह मनुष्य पिता पुत्र की हानि का योग पाने वाला और महान् गुप्त व कठिन कर्मों को करने वाला एवं थोड़ी विद्या पाने वाला और परदेश आदि मुशीबतों के योगों से चिन्तित रहते हुए कर्म करने वाला

तथा असत्य व छिपाव की शक्ति से काम निकालने वाला और कुछ कटु बोलने वाला तथा कुछ गलत रास्ते पर चलने वाला और धन व आमद एवं बाहुबल की शक्ति आदि की वृद्धि का बहुत ध्यान रखने वाला और मान प्राप्ति में कठिनाइयां पाने वाला तथा राज समाज के संबंध में कुछ असंतोष पाने वाला और उन्नति के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला तथा कुछ आलसी सा होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से नवम स्थान में

नं० ३५७



हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली तथा पिता व पुत्र का सुख उठाने वाला तथा बुद्धि और कर्म की शक्ति द्वारा सनमान पाने वाला तथा पूर्व संचित पुण्यों का फल प्राप्त करने वाला और धर्म कर्म को समझने वाला तथा हिसाब व गणित की अच्छी जानकारी रखने वाला तथा शास्त्र और नीति की बातें बड़े जचाव से कहने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला और भूमि व सुख प्राप्ति के साधनों को प्राप्त करने का बड़ा ध्यान रखने वाला तथा राज समाज से मान व यश पाने वाला तथा उत्तम विद्या ग्रहण करने वाला तथा चौड़े मस्तक वाला व व्यापार आदि ऊँचे कर्म से फायदा उठाने वाला तथा भाग्य स्थान से उन्नति पाने वाला व कीर्तिवान बड़ा दूरदर्शी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़े भारी मुंतजिम दिमाग वाला तथा राज काज करने वाला तथा समाज पर अधिकार पाने वाला

न० ३५८

बड़ा बुद्धिमान् तथा कायदे के कर्तव्य कर्म के संबंध में धारा प्रवाह बोलने वाला और बड़ा भारी मान सम्मान पाने वाला तथा बड़ा कर्तव्य परायण रहने वाला तथा पिता व पुत्र की महानता पाने वाला एवं देह के स्थान में कुछ कमजोरी या कुछ कमी रखने वाला तथा सुन्दर भेषभूषा रखने वाला व महान् प्रभावशाली कार व्योपार करने वाला और अपने नियमों का सुचारु रूप से पालन करने में देह की भी ठीक परवाह न करने वाला एवं मिजाज में बड़ी गर्मी व हुकूमत से काम लेने वाला-बड़ा प्रतापी प्रभावशाली होता है।

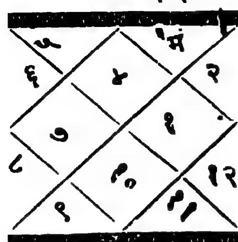
जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ३५९

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि और कारवार की ताकत से खूब लाभ पाने वाला तथा पिता व पुत्र स्थान का लाभ पाने वाला और धन संग्रह करने का व धन प्राप्त करने का महान् प्रयत्न करने वाला तथा शत्रु स्थान में खूब प्रभाव जमाने वाला तथा व्यापार आदि की अनेक शक्तियों द्वारा धन लाभ करने वाला और खूब मान सम्मान पाने वाला व दिक्कतों पर विजय पाने वाला तथा विद्या और संतान की ताकत से उन्नति करने वाला तथा राज समाज व विद्या की ताकत से खूब धन पैदा करने वाला बड़ा भारी प्रभावशाली स्वार्थ युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने मान सम्मान में कुछ हानि पाने वाला और पिता व पुत्र का कुछ कष्ट अनुभव करने वाला तथा विद्या बुद्धि में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा दूसरे बाहरी स्थानों से संबंध रखकर काम करने वाला और विशेष खर्च करने वाला तथा दैनिक रोजगार की बाहरी संबंध से वृद्धि करने वाला और स्त्री आदि भोगों को विशेष चाहने व पाने वाला तथा कोई शुभ कर्म करने की विशेष इच्छा न करने वाला तथा कुछ हेर फेर की बातों से काम निकालने वाला तथा बड़े कारबार में नुकसान देने वाला और बहुत परिश्रम करके उन्नति करने वाला बड़ा हिम्मत वाला पुरुषार्थ वादी होता है।

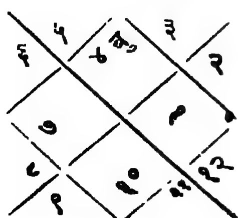
नं० ३६०



## कर्कलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य स्वयं अपनी देह से पुरुषार्थोन्नति करने वाला तथा शानदार खर्च करने वाला और चतुर रोज़गारी हिम्मत वाला होते हुये भी, अपने में कमजोरी मानने वाला तथा कुछ दूसरे स्थान के संबंध से बल पाने वाला व

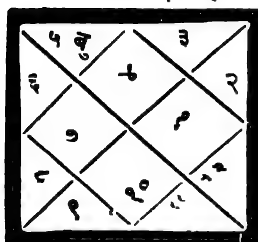
नं० ३६१



गृहस्थ और रोजगार में बड़ी शक्ति लगाने वाला एवं भाई बहन के पक्ष में कुछ कमी युक्त सुख को पाने वाला तथा मान युक्त, कोमल स्वभाव वाला व कमजोरी और मजबूती को साथ २ रखने वाला तथा अन्य बाहरी स्थानों के संबंध में महान् विवेक शक्ति से काम लेने वाला एवं बाहरी स्थानों में आने जाने वाला, शीलवान् होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहरी संबंध योग के पुरुषार्थ से धन कमाने वाला तथा धन के कोष स्थल में, घटाव बढ़ाव के कारणों से पूर्ण शक्ति न पाने वाला और बहन भाई का कुछ अधूरा सुख उठाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ शानदारी रखने वाला एवं खर्च को रोकने की चेष्टा करने वाला तथा अपने बाहुबल से धन की वृद्धि व धन की हानि का योग पैदा करने वाला व इज्जत प्राप्त करने वाला और धन कुटुम्ब की वृद्धि करने के लिये ही विशेषतया अपनी विवेक शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा अपने पुरुषार्थ बल में कुछ बंधन सा पाने वाला व गूढ़ युक्तियों वाला होता है।

नं० ३६२




जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला तथा पुरुषार्थ के सामने भाग्यबल को कमजोर मानने वाला और बाहरी संबंधों से खूब शक्ति पाने वाला तथा भाई बहनों का योग पाने वाला, किन्तु भाई बहनों के संबंध में

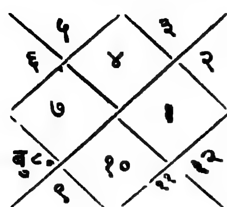
नं० ३६३ । व बाहुबल की प्रकट शक्ति में कुछ अन्दरूनी कमजोरी का योग पाने वाला और धर्म पर कम विश्वास करने वाला तथा अच्छे कदवाला, बड़ी खर्च शक्ति रखने वाला व विवेक की महान् हिम्मत के बल से बड़ी उमंगों का योग पाने वाला तथा सौम्य शक्ति के बल से बड़ा प्रभाव व साहस प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक अपना काम करने वाला तथा सुख पूर्वक खर्च चलाने वाला और सुख प्राप्ति के स्थान में आनन्द के साथ साथ कुछ सुख की कमी का अनुभव करने

नं० ३६४ वाला तथा माता पिता के स्थान में कुछ न्यूनता पाने वाला तथा मातृ भूमि व जमीन जायदाद की कुछ हानि व कुछ शक्ति पाने वाला और अपने स्थान से ही अन्य स्थानों का कार्य साहस युक्त होकर शांति से करने वाला और बहन भाई का कुछ न्यून सुख पाने वाला तथा अन्य स्थानों के संबंध में विवेक शक्ति की मेहनत व फल से सुख के साधन पाने वाला व राज समाज के संबंधों में कुछ सफलता व असफलता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या बुद्धि के स्थान से शक्ति बल प्राप्त करने वाला तथा विद्या स्थान से ही खर्च करने वाला

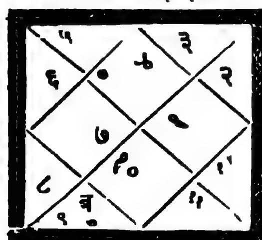
नं० ३६५




और बाहरी शक्ति के कारणों से बुद्धि योग द्वारा लाभ भी प्राप्त करने वाला तथा संतान पक्ष में व बहन भाई के पक्ष में कुछ कमी लिये हुये सुख का अनुभव करने वाला और बड़ा चतुर बुद्धिमान् तथा अपनी कही हुई बात की कमजोरी या गलती को गलत न मानने वाला तथा हर एक बात को घुमा फिराकर तथा चतुराइयों से कहकर सिद्ध कर देने की कोशिश करने वाला तथा बुद्धि योग से कभी २ कुछ हानि का भी योग पाने वाला और अपने दिमाग के अन्दर कुछ शक्ति व कुछ कमजोरी का मिश्रित असर पाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य बाहरी स्थानों के संपर्क से कुछ बंधन सा पाने वाला और खर्च करने में कुछ दिक्कतें पाने वाला

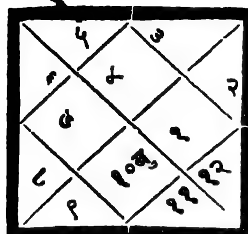
नं० ३६६




और कुछ परतन्त्रता युक्त परेशानी का सा काम करने वाला और खर्च को रोकने की चेष्टा करने पर भी व खर्च से कुछ दिक्कतें सहने पर भी अधिक खर्च करने वाला तथा शत्रु स्थान में कुछ विवेक की शक्ति से शील युक्त होकर काम निकालने वाला और कुछ पुरुषार्थ बल की कमजोरी के लिये भी खर्च करने वाला तथा बहन भाई के पक्ष में झंझट व कमजोरी पाने वाला तथा कुछ अशांतप्रद रहने वाला व कुछ गुप्त विवेकी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से सातवें स्थान

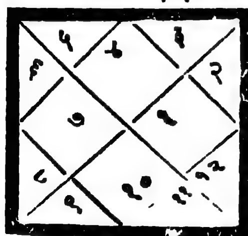
नं० ३६७



में हो तो वह मनुष्य बाहरी अन्य स्थानों के योगों से और नित्य की मेहनत व सुचारु ढंग के कर्म से दैनिक रोजगार करते हुये खर्च की शक्ति पाने वाला व भाई के मुकाबले में बहन का अच्छा सुख प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान से कुछ कमी के साथ २ साहस व शक्ति का भी योग पानें वाला एवं रोजगार के दायरे से मान पाने वाला किन्तु रोजगार में कुछ शक्ति और कमजोरी का संमिश्रण योग पाने वाला व देह में कुछ शक्ति का घटाव बढ़ाव भी पाने वाला तथा लौकिक कार्यों में विवेक शक्ति से सफलता पाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से आठवें स्थान

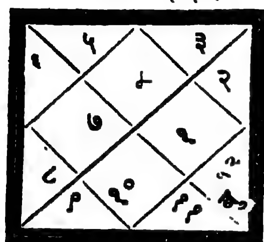
नं० ३६८



में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला व छिपी शक्ति से काम लेने वाला और विवेक योग से व विदेश योग से अधिक परिश्रम-द्वारा खर्च चलाने वाला तथा धन प्राप्ति के लिये कठिन से कठिन कार्य को भी करने वाला तथा भाई बहन का वियोग अनुभव करने वाला और बहुत दूर की युक्तियों से काम लेने वाला तथा घुमाव फिराव का काम करने वाला एवं शील शांति दिखाकर रहने वाला और गूढ़ विवेक की महान् शक्ति को छिपे-तौर से काम में लाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से नवम स्थान में

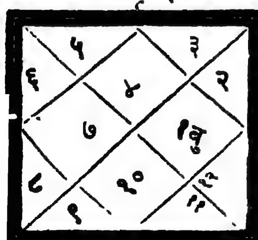
नं० ३६९




हो तो वह मनुष्य ईश्वर में कुछ अविश्वास करने वाला तथा बहन भाई का कुछ अधूरा सुख प्राप्त करने वाला और भाग्य की कमजोरी पाते हुये भी अधिक पुरुषार्थ करने वाला और धर्म की कुछ हानि व कुछ कमजोरी पाने वाला तथा अन्य दूसरे स्थान के संबंधों में कुछ कमजोरी पाने वाला और खर्च की कमी के कारणों से भाग्य को दोष देने वाला और ठीक तौर से सनातन धर्म का पालन न कर सकने वाला तथा समाजवादी ढंग को मानने वाला और भाग्य तथा यश की हानि पाने वाला तथा बरक्कत की कमी पाने वाला संकीर्ण विवेकी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से दसवें स्थान में

नं० ३७०

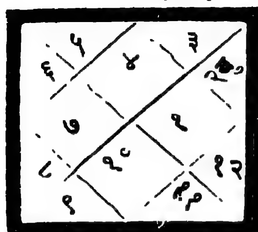



हो तो वह मनुष्य विवेक शक्ति के द्वारा बड़े ढंग से काम करने वाला और कुछ बड़प्पन का जचाव रखने वाला तथा भाई व पिता की शक्ति में कुछ कमजोरी का योग पाने वाला और अपनी शक्ति की शान व सुख के हेतु खूब खर्च करने वाला किन्तु फिर भी शान और व्यापार आदि के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के योग से कुछ शक्ति पाने वाला तथा मातृ स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और राज समाज के स्थान संबंध में

विवेक की शक्ति बहुत प्रयोग करने पर भी सफलता की कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान में

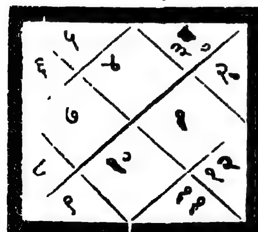
नं० ३७१



हो तो वह मनुष्य अपने बाहुबल से व विवेक शक्ति के योग से तथा बाहरी संबंधों से खूब लाभ पाने वाला और कुछ खर्च की शक्ति से भी लाभ पाने वाला व लाभ स्थान में कुछ कमी भी महसूस करने वाला और बुद्धि व चतुराई से विशेष काम लेने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये बहुत उलट फेर करने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ हानि व कुछ लाभ पाने वाला और बुद्धि द्वारा कुछ गलत व कुछ सही मामले पर भी जोर देकर वहस करने वाला तथा भाई बहन का कुछ सामान्य लाभ पाने वाला तथा कुछ बल पुरुषार्थ प्राप्त करने वाला व शानदार खरचीला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न मे बारहवें स्थान

नं० ३७२



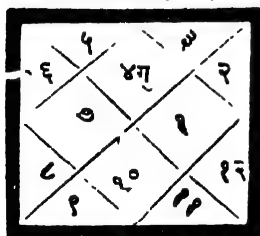
में हो तो वह मनुष्य वड़ी भारी खर्च की शक्ति रखने वाला तथा बहन भाइयों से दूर का संबंध रखने वाला व अपने भाइयों की कुछ हानि भी पाने वाला और अपनी संचित शक्ति को खर्च कर देने वाला तथा बल पुरुषार्थ में कमी पाने वाला तथा दूसरे स्थानों के संबंध से काम चलाने वाला तथा खर्च की शक्ति से शत्रु स्थान पर कुछ प्रभाव रखने वाला और रोग व दिक्कतों के लिये भी कुछ

खर्च शक्ति का प्रयोग करने वाला और खर्च के स्थान मार्ग में कभी भी रुकावट न करने वाला और अपनी विवेक शक्ति का प्रयोग बड़े हेर फेर से व देर से काम में लाने वाला तथा हिम्मत के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा विवेक की महान् शक्ति से खर्च की संचालन शक्ति कायम रखने वाला होता है।

## कर्कलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा आत्मज्ञानी बड़ा प्रतापी, बड़ा भाग्यशाली, बड़ा धरमात्मा तथा हृदय में शूरवीरता रखने वाला व न्याय और सत्य चाहने वाला तथा धर्म और अधर्म को खूब समझने वाला, बड़ा मान पाने वाला एवं गौरवर्ण वाला और सुन्दर दृढ़ देह वाला, बड़ा बुद्धिमान्, चौड़े मस्तक वाला तथा लम्बे कद वाला, सन्तान वाला व पुण्यकर्म के बल से उत्थान पाने वाला और स्त्री भोगादिक में कुछ न्यूनता पाने वाला व गृहस्थी के संबंध में कुछ लापरवाही रखने वाला तथा ऊँची ननसाल वाला एवं प्रभाव शक्ति से स्वार्थ सिद्धी करने वाला तथा विद्यावान् ज्योतिष प्रेमी महान् चतुर और भेदकला की महान् शक्ति रखने वाला व शत्रु को परास्त करने वाला विजई होता है।

नं० ३७३



जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३७४

हो तो वह मनुष्य अपने प्रभाव और भाग्य से खूब धन कमाने वाला तथा महान् प्रभावशाली कर्म करने वाला व बहुत किस्म के दाव पेचों की जानकारी से शत्रु स्थान में फायदा उठाने वाला और खूब व्यापार करने वाला तथा लौकिक उन्नति के लिये महान् परिश्रम कर्म करने वाला व खूब मान पाने वाला तथा ननसाल पक्ष से फायदा व इज्जत पाने वाला और राज समाज व पिता स्थान से कुछ मामूली कठिनाइयों के द्वारा, मान व इज्जत और धन का फायदा पाने वाला तथा धन और भाग्य की शक्ति से प्रभाव की वृद्धि पाने वाला तथा पेचीदा युक्तियों से हृदयबल के द्वारा धन की वृद्धि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से तीसरे स्थान

नं० ३७५

में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ से उन्नति करने वाला तथा स्त्री भोगादि गृहस्थ के पक्ष को छोटा समझने वाला तथा भाई की शक्ति का योग पाने वाला तथा कुछ पैतरे बन्दी से धर्म का पालन करने वाला व भाग्य और पुरुषार्थ से खूब लाभ पाने वाला तथा कुछ पेचीदा युक्तियों से शत्रु-स्थान में सफलता पाने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ उन्नति के मार्ग प्राप्ति के साथ २ कुछ वैमनस्य का भी योग पाने वाला और उन्नति पर पहुँचने की विशेष चेष्टा

करने वाला तथा परिश्रम करने में सदैव लगा रहने वाला प्रभावशाली तथा भोगादिक इन्द्रियों में कुछ न्यूनता पाने वाला कुछ गृहस्थी में चिन्तित रहता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान समझा जाने वाला व अधिक खर्च करने वाला और भाग्य विकाश के लिये कुछ गूढ़ युक्तियों पर विशेष ध्यान होते हुये भी उसमें कुछ नीरसता का योग पाने वाला तथा सुख प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये कुछ दैवीयुक्तियों के बल से सफलता व भूमि आदि के साधन पाने वाला और मातृस्थान में कुछ दुःख सुख सहित प्रभाव पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ नीरसता का योग पाते हुये भी शक्ति का अनुभव करनेवाला और भाग्य स्थान की शक्ति से व कुछ युक्तियों के द्वारा राज समाज व पिता स्थान से मान पाने वाला तथा बाहरी स्थानों से भी सुख सफलता का योग पाने वाला व शत्रु पक्ष के संबंध में कुछ अशांति व कुछ प्रभाव पाने वाला होता है।

नं० ३७६

| | | |
|---|---|---|
| ५ | | ३ |
| ६ | ४ | २ |
| ७ गु | १ | |
| ८ | १० | १२ |
| ९ | ११ | |

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी बुद्धिवान धर्मवान तथा धर्म शास्त्रों का बड़ा ध्यान रखने वाला और ज्योतिष कला में भी दखल रखने वाला तथा बड़ा भारी मान पाने वाला और देह में भाग्यमानी व सुन्दरता का योग पाने

नं० ३७७

| | | |
|---|---|---|
| ५ | | ३ |
| ६ | ४ | २ |
| ७ | १ | |
| ८ गु | १० | १२ |
| ९ | ११ | |

वाला तथा बड़प्पन की और बड़े जचाव की बातें कहकर प्रभाव जमाने वाला और दिमाग के अन्दर सत्य की प्रधानता के साथ २ कुछ छिपाव शक्ति से भी काम लेकर शत्रु स्थान में विजई होने वाला और संतान पक्ष से शक्तियुक्त कुछ वैमनस्य पाने वाला बड़ा दूरदर्शी तथा बड़े मस्तक वाला और तत्त्व की खोज करने वाला कुछ युक्तिवाज ईश्वरवादी होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से छठे स्थान में हो

नं० ३७८

तो वह मनुष्य धर्म का ठीक पालन न कर सकने वाला और सनातन धर्म के अलावा एक प्रपञ्ची धर्म को मानने वाला तथा हृदय बल और असहयोग की न्याय शक्ति के बल से शत्रु को बड़प्पन के साथ हराने वाला और एक बहुत बड़े तप के बाद भाग्य की उन्नति पाने वाला और हठयोग की शक्ति से मान व धन पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति पाने वाला तथा रोग शत्रु और दिक्कतों पर भाग्यबल से विजय पाने वाला किन्तु भाग्य की उन्नति के मार्ग में सदैव विघ्न बाधाओं का सामना पाने वाला तथा अपना प्रभाव कायम रखने की योजनाओं की वजह से पुन-र्जन्म के लिये धर्म संग्रह करने की आवश्यकताओं को निर्मूल समझ कर ठुकरा देने वाला और राज समाज में प्रभाव पाने वाला तथा खर्च करने वाला बड़ा प्रभावशाली तथा उन्नति पाने के लिये महान् परिश्रम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से सातवें स्थान

नं० ३७९

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की उन्नति में व शादी के संबंध में बड़ी परेशानी व दिक्कतों का योग पाने वाला और फसाव व परेशानियों का-सा ही दैनिक रोजगार फिकरमंदी के साथ करने वाला और उसी काम की बदौलत देह में प्रभाव पाने वाला तथा कुछ गुप्त परिश्रम और भाग्य की ताकत से लाभ की वृद्धि व पुरुषार्थ की वृद्धि पाने वाला तथा भाई बहन वाला और धर्म पालन के संबंध में गलती करने वाला तथा गृहस्थिक व दैनिक कार्यों में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और स्त्री पक्ष में व इन्द्रियादिक पक्ष में कुछ कमी व कुछ अशांति का योग हृदय में अनुभव करने वाला और शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ काम निकालने वाला तथा कुछ कमजोर भाग्य वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से आठवें स्थान में

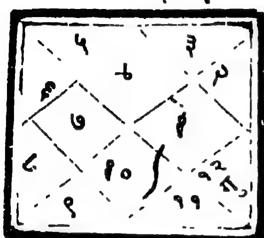
नं० ३८०

हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में कुछ दुर्बलता का योग और झंझट पाने वाला तथा धर्म का पालन ठीक तौर से न कर सकने वाला और भाग्य की वृद्धि करने के लिये विदेश आदि की महान् परिश्रमी व पेचीदा कर्म के योग से काम लेने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा शत्रु पक्ष के संबंध में बड़ी कठिनाइयों से व भलमनसाहत की आड़ में छिपी शक्ति से काम लेने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ

कुछ हानि पाने वाला और दूसरे स्थानों के योग से शक्ति, उन्नति, सुख और प्रभाव पानेवाला तथा सुयश की कमी पाने वाला और ईश्वर की चिन्ता में कमी का योग पाने वाला अतिगूढ़ धर्मी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से नवम स्थान में

नं० ३८१



हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली बड़ा मान पाने वाला व देह में प्रभाव पाने वाला बड़ी बुद्धिमानी से काम लेने वाला सुडौल कद वाला तथा संतान शक्ति पाने वाला व विद्या विवेक और वाणी की शक्ति पाने वाला तथा कुछ पैंतरे बन्दी से उत्तम धर्म का पालन करने वाला तथा भाग्य-बल से शत्रु को जीतने वाला किन्तु भाग्य स्थान में कुछ रुकावटें पाने वाला झगड़ा न चाहने वाला तथा कुछ भाग्य-वान् ननसाल वाला एवं धर्म और सज्जनता के स्थान में सदैव अपने गुप्त स्वार्थ का पालन ध्यान से करने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से दसवें स्थान में

नं० ३८२



हो तो वह मनुष्य महान् प्रभावशाली तथा बड़ा भाग्यवान् और बड़ा मुंतजिम तथा बड़े २ व्यापारिक समस्याओं की गुत्थी को हल करने वाला तथा राज़ समाज और पिता के स्थान में मान व प्रभाव पाने वाला और अपनी भाग्यो-न्नति व पदोन्नति के लिये महान् परिश्रम व दौड़ धूप करने

वाला और धन स्थान की खूब वृद्धि करने वाला और भाग्य की दैवी शक्ति के बल से उन्नति के मार्ग पर स्वतह चल निकलने वाला तथा अपने दायरे में मुखिया बन कर रहने वाला और शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला व ननसाल की शक्ति में बड़प्पन पाने वाला और पूर्व संचित धर्म के बल से फायदा उठाने वाला और पुनर्जन्म के लिये धर्म की परवाह न करने वाला सदैव स्वार्थयुक्त पेचीदा चाल चलने वाला बड़ा होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान

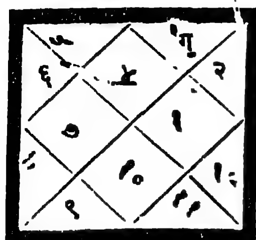
नं० ३८३




में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति से व युक्तियों से खूब लाभ पाने वाला तथा खूब पुरुषार्थ करने वाला तथा दैनिक रोजगार को ओछा समझ कर कुछ लापरवाही करने वाला और स्त्री पक्ष में व इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में कुछ न्यूनता पाने वाला तथा विद्या व संतान पाने वाला और शत्रु पक्ष से कुछ सामान्य लाभ पाने वाला और धर्म के संबंध से कुछ लाभ पाने वाला व चतुराइयों से बातें करने वाला तथा कुछ बहन भाई का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार में कुछ दिक्कतें व कुछ लघुता का योग पाने वाला और हर एक प्रकार से स्वार्थ सिद्ध करने वाला बड़ा चतुर समझदार होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा खर्च करने वाला तथा भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला व धर्म और न्याय

नं० ३८४ । का पालन न कर सकने वाला तथा गुप्त प्रभाव से काम लेने वाला और शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी पाने वाला और दूसरे बाहरी स्थानों के संबंध से व परि-श्रम के योग से भाग्य शक्ति को बड़ी मुश्किलों से प्राप्त करने वाला और खर्च

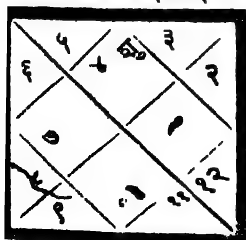


की संचालन शक्ति में भाग्य और परिश्रम का सहारा पाने वाला तथा यश प्राप्ति में कुछ कमी पाने वाला और ईश्वर की निष्ठा में भी कुछ न्यूनता पाने वाला तथा बाहरी स्थानों में प्रभाव पाने वाला व जीवन की दिनचर्या में व सुख प्राप्ति के संबंध में कुछ नीरसता युक्त शक्ति पाने वाला होता है।

## कर्कलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ३८५ में हो तो वह मनुष्य माता की शक्ति का सुख पूर्वक लाभ पाने वाला तथा देह को सुन्दर और सुखी रखने वाला और सुख रहित लाभ को न चाहने वाला तथा मकान जायदाद पाने वाला और स्त्री स्थानों में सुख प्राप्ति का

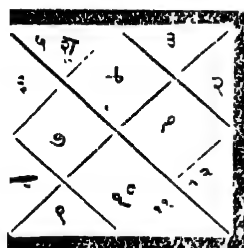


योग पाने वाला तथा दैनिक रोजगार को सुख से चलाकर

सुख व लाभ महसूस करने वाला और इज्जत व मान प्राप्त करने वाला बड़ा चतुर होशियार और देह के योग से भी आमदनी की वृद्धि के कारण बनाने वाला और शांति स्वभाव रखने वाला व बड़ी भारी आदर्श चतुराइयों के योग से गृहस्थिक व लौकिक कार्यों में सफलता पाने वाला तथा सुन्दरता चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३८६




हो तो वह मनुष्य लाभ प्राप्ति और धन के पक्ष में सुख युक्त होते हुवे भी एक खास कठामकश व परेशानी का योग लाभ के संबंध से पाने वाला और माता के सुख में व मातृस्थान में कुछ घाटा समझने व पाने वाला तथा धन के कोष संबंधित मामलों में प्रकट दिखावे के मुकाबले में अन्दरूनी कमजोरी पाने वाला और अपने जीवन की दिनचर्या में एक अमीरी का ढंग पाने वाला और आयु का सुख उठाने वाला और गढ़ युक्तियों को इस्तेमाल करने से सु प्राप्त करने वाला एवं लौकिक पद्धति में बड़ी चतुराइयों से फायदा उठाने वाला तथा सुख, आराम की स्वच्छन्दता में कुछ बंधन का योग पाने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ३८७

में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ से आमदनी की वृद्धि करने में कमजोरी मानने वाला और भाग्य का पूरा भरोसा करने वाला और अपनी कमजोरी के कारण से सुख में घाटा समझने वाला दुःख अनुभव करने वाला तथा

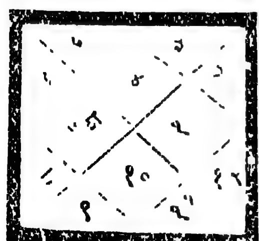


भाई के पक्ष में कुछ कमी पाने वाला एवं धर्म से सुख व लाभ पाने वाला व धर्म को और ईश्वर को मानने वाला और मातृस्थान की तरफ से कुछ कमजोरी पाने वाला तथा मेहनत व तजवीज के मुकाबिले में तकदीर को बड़ा मानने वाला और भाग्यवान् समझा जाने वाला व मकान जायदाद के सुख की कुछ कमजोरी पाने वाला व कुछ आलसी सा होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से चौथे स्थान में

नं० ३८८

हो तो वह मनुष्य भूमि स्थान का महान् लाभ पाने वाला और जमीन जायदाद से फायदा उठाने वाला तथा सुखपूर्वक आमदनी पाने वाला और बहुत प्रकार की सुन्दर सुन्दर सुखद सामग्री तथा सुख प्राप्ति के साधन, महान् गम्भीर

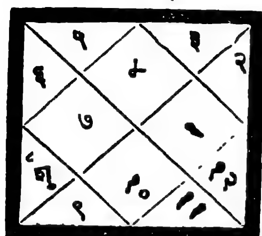


चतुराइयों से प्राप्त करने वाला तथा माता का विशेष कृपापात्र होने वाला और पिता स्थान से लाभ पाने वाला तथा सवारी का सुख प्राप्त करने वाला और मान प्रतिष्ठा से

युक्त रहने 'वाला तथा राज समाज से सुख उठाने वाला एवं उन्नति पर पहुँचने के लिये बहुत २ प्रकार की चतुराइयों के सुन्दर २ कर्म करने वाला शांत प्रिय होता है।

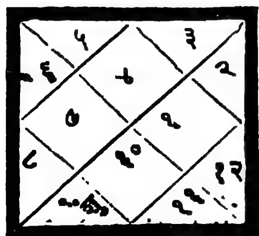
जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी बुद्धिमानी रखने वाला तथा बुद्धि से बहुत लाभ प्राप्त करन वाला और बुद्धि व वाणी में बड़ी बड़ी कलायें रखने वाला तथा बुद्धि द्वारा बड़े २ सुख का अनुभव करने वाला और संतान का सुख उठाने वाला और संतान से लाभ प्राप्ति के साधन प्राप्त करने वाला तथा महान् गम्भीरता से शांति पूर्वक चतुराइयों से भरी हुई मीठी २ सुखद बातें कहने वाला तथा इज्जतदार मानयुक्त जायदाद वाला सुखपूर्वक विद्या ग्रहण करने वाला और लाभ प्राप्ति के संबध में बड़ी बड़ी गम्भीर योजनायें बनाने वाला और सुख पूर्वक हर एक प्रकार का लाभ पाने वाला महान् चतुर शांतियुक्त होता है।

नं० ३८९



जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य कुछ परेशानी व कुछ परतंत्रता के योग से आमदनी पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला व मातृस्थान में कुछ कमी पाने वाला और सुख शांति में बाधा पाने वाला तथा जायदाद का कुछ कमी व कुछ दिक्कतें समझने वाला एवं कुछ झगड़े रोग व शत्रु स्थान से फायदा

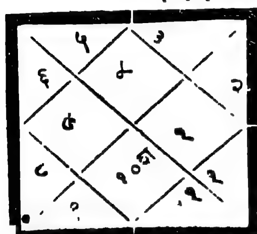
नं० ३९०



पाने वाला एवं कुछ ननसाल पक्ष से सुख का थोड़ा योग पाने वाला और बहुत हेर-फेर की चतुराइयों से सुख व लाभ की वृद्धि करने वाला और शत्रु स्थान में बड़ी शाँति पूर्वक युक्तियों से काम निकालने वाला तथा शत्रु से सम्मुख झगड़ा न चाहने वाला तथा अन्य दूसरे स्थानों से भी सुख व लाभ का योजना पाने वाला गुप्त चतुर होता है।

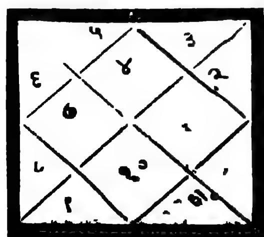
जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी शानदार दैनिक रोजगार सुख के साथ करने वाला और देह में सुन्दरता व सुख का योग पाने वाला तथा स्त्री स्थान में भी सुख लाभ व सुन्दरता का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार के स्थान से बहुत लाभ व सुख प्राप्ति के साधन बड़ी चतुराइयो से प्राप्त करने वाला और लौकिक व गृहस्थिक कार्यों में बड़ा गौरव सुख व मान प्राप्त करने वाला और मातृस्थान से व भूमिस्थान से बड़ा सहारा पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक का महान् लाभ पाने वाला और शाँति पूर्वक बहुत २ प्रकार की सफलतायें पाने वाला बड़ा भारी चतुर होता है।

नं० ३९१



जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी लम्बी और गूढ़ युक्तियों से लाभ पाने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये दूसरे स्थानों का संबंध पाने वाला और अपने स्थानीय सुख में घाटा तथा दूसरे स्थानों से सुख व लाभ का सुन्दर योग पाने वाला

न० ३९२



व मातृस्थान में कुछ असंतोष पाने वाला और आयुस्थान में कुछ वृद्धि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ी गम्भीर चतुराइयों के योग से बहुत सुख मानने वाला और धन वृद्धि का बहुत ध्यान रखने पर भी कुछ नीरसता पाने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला बड़ा भारी गुप्त चतुर होता है।

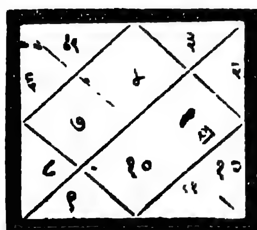
जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से नवम स्थान में

नं० ३९३

हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् तथा भाग्य की शक्ति से ही लाभ व सुख की बहुत वृद्धि करने वाला व धर्मस्थान का तथा कुछ परोपकार का लाभ महान् चतुराइयों के द्वारा प्राप्त करने वाला और माता का व मातृस्थान का खूब लाभ पाने वाला और जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला एवं बल पुरुषार्थ की शक्ति में कुछ कमजोरी व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला और भाई के सहारे की परवाह न करने वाला तथा चौड़े मस्तक वाला एवं ईश्वर में बहुत भरोसा करने वाला व सुखपूर्वक लाभोन्नति तथा कभी २ अचानक अधिक फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से दसम स्थान में

नं० ३९४

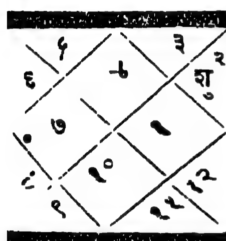



हो तो वह मनुष्य माता पिता से लाभ और सुख प्राप्त करने वाला तथा राज समाज से बहुत फायदा व आनन्द पाने वाला एवं बड़ा भारी सुन्दर चतुराइयों का कर्म करने वाला तथा जमीन जायदाद से लाभ व ऐश्वर्य प्राप्त करने

वाला और मान प्रतिष्ठा की स्थाई योजनायें पाने वाला बड़ा उज्ज्वल कारव्यापार करने वाला व आमदनी के स्थान में सुख व मान को छोड़कर प्राप्ति न चाहने वाला और सवारी आदि का बड़ा सुन्दर लाभ पाने वाला और बड़ी गम्भीर चतुराइयों के योग से बहुत उन्नति करने वाला तथा बड़ा प्रभावशाली, इज्जतदार महान् कार्य कुशल चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ३९५




में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक वे फ़िक्री से आमदनी पाने वाला तथा माता का लाभ पाने वाला और जमीन जायदाद का लाभ पाने वाला व अनेक प्रकार के लाभ स्वत: प्राप्त करने वाला और विद्या ग्रहण करने वाला, संतान सुख उठाने वाला तथा मिठास की बातों से बहुत लाभ पाने वाला और बहुत सुन्दर २ सुखों की प्राप्ति के लिये बड़ी भारी चतुराइयों के योग से लाभ पाने वाला तथा बड़ी गम्भीर शक्ति की स्थिरता से काम लेने की प्रकृति रखने वाला और सदैव शांति युक्त बंधी आमदनी को ही महत्त्व देने वाला महान् चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के स्थान की कुछ हानि पाने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला और बाहरी अन्य स्थानों के योग से लाभ पाने वाला और दूसरे स्थानों में ही सुख का अनुभव करने वाला व भूमि आदि के हेरफेर से भी

नं० ३९६ सुख व खर्च की शक्ति पाने वाला और आमदनी को प्रायः खर्च कर देने में ही सुख मानने वाला और कुछ परिश्रम व प्रपञ्च के योग से भी सुख व लाभ उठाने वाला और अपनी मातृभूमि की कुछ हानि पाने वाला तथा शत्रु स्थान में शांति से व गुप्त चतुराइयों से काम लेने वाला तथा कुछ अशांति युक्त होता है।

## कर्कलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न के पहिले स्थान में

नं० ३९७ हो तो वह मनुष्य बड़े भारी परिश्रम से दैनिक रोजगार करने वाला तथा बड़ी आयु पाने वाला एवं अपनी एक स्त्री से तृप्त न होने वाला और इन्द्रिय भोगादिक संबंध में बहुत ऊँची व गूढ़ युक्तियों से काम करने वाला और रोजगार के सबध में बड़ी गूढ युक्तियों व कठिनाइयों की जोरदारी से काम करने वाला और लौकिक व दैनिक उन्नति करने के लिये बड़े ऊँचे प्रपंच से काम लेने वाला तथा पिता के स्थान में व राज समाज के संबंध में कुछ कमजोरी व कुछ

लापरवाही से काम लेने के कारणों से वास्तविक उन्नति में व मान प्रतिष्ठा में कमजोरी पाने वाला तथा भाई के पक्ष में सहारा देने और लेने के संबंध में कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा देह में कुछ परेशानी व कुछ कमजोरी का योग पाने वाला तथा कुछ चिंतित रहने वाला हिम्मत वर होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ३६८

हो तो वह मनुष्य बड़ी गहरी और गूढ़ युक्तियों की संग्रह शक्ति से दैनिक रोजगार करने वाला तथा बड़ी आयु पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ के संबंध में बंधन व अशांति का योग पाने वाला एवं पुरातत्त्व शक्ति के बल से भूमि स्थान की व सुख स्थान की विशेष शक्ति पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ बंधन व कुछ नीरसता व अमीरी का योग पाने वाला और पूर्व संचित धन व कुटुम्ब की हानि पाने वाला और अपने दैनिक परिश्रम के बल से युक्तियों के द्वारा खूब लाभ पाने वाला और अपनी जीवन की दिनचर्या के बल से मस्ती और भोग प्राप्त करने वाला आनन्दी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से तीसरे स्थान

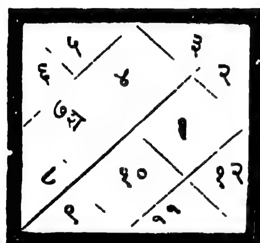
नं० ३६६

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी उद्योग करने वाला और अपने पुरुषार्थ कर्म के बल से बड़ी भारी युक्तियों के द्वारा दैनिक रोजगार करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ मस्ती का योग तथा भोग प्राप्त करने वाला और आयु

की शक्ति पाने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला और स्त्री व भोगादिक पक्ष में प्रभाव की शक्ति पाने वाला और बहन भाई के स्थाने में कुछ झंझट पाने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु की शक्ति पाने वाला और स्वार्थयुक्त होकर कुछ कड़वा बोलने वाला और धर्म संबंध की कुछ हानि व भाग्य की कुछ वृद्धि करने वाला बड़ा तेज होता है ।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में बड़ा सुख और मस्ती का योग पाने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने वाला व पिता स्थान में बड़ी लापरवाही का योग पाने वाला और राज समाज में मान की कमी पाने वाला और दैनिक रोजगार में बड़े गम्भीर प्रपञ्च के साथ सुख उठाने वाला और शत्रु स्थान की तरक्की व तनज्जुली का योग पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का गहरा फायदा पाने वाला तथा देह में कुछ परेशानी व चिन्ता का योग पाने वाला एवं स्त्री भोगादिक व गृहस्थ के संबंध से बहुत सुख का साधन पाने वाला और दिक्कतों पर बड़ी युक्तियों से विजय पाने वाला होता है ।

नं० ४००



जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य कुछ फिकर चिंताओं के द्वारा दैनिक रोजगार को संचालित रखने वाला तथा रोजगार व संतान और स्त्री के कारणों से दिमाग में परेशानी सहने वाला और स्त्री भोगादिक के संबंध की प्राप्ति व वृद्धि के लिये संलग्नता पूर्वक सदैव चिन्तन व साधन करने वाला और धन के कोष की वृद्धि करने के लिये सदैव चिन्तातुर व प्रयत्नशील रहने वाला और आयु के समय का कुछ लौकिक आनन्द पाने वाला तथा बुद्धि के अन्दर स्वार्थ व गुस्सा और पेचीदा चालों का योग प्राप्त करने वाला तथा कुछ कड़वा बोलने वाला बड़ा कामीदा होता है।

नं० ४०१

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | ५ | ४ | ३ |
| ७ | | | २ |
| ८श | | १० | १ |
| ९ | | ११ | १२ |

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी आयु पाने वाला तथा बड़े भारी प्रपञ्च की शक्ति से व महान् परिश्रम से दैनिक रोजगार करन वाला और स्त्री स्थान से कुछ कष्ट अनुभव करने वाला कुछ रोगादिक झगड़े तलब मामलों से जीवन की दिनचर्या में प्रभाव पाने वाला तथा प्रभाव की वृद्धि करने के लिये महान् कष्ट साध्य पेचीदा युक्तियों का प्रयोग करने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में कुछ कमी व कुछ कष्ट तथा कुछ प्रपञ्च और प्रभाव से काम लेने वाला तथा ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला तथा जीवन को सहा-

नं० ४०२

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | ५ | ४ | ३ |
| ७ | | | २ |
| ८ | | १० | १ |
| ९श | | ११ | १२ |

यक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर प्रभाव वाली वस्तु का लाभ पाने वाला तथा कुछ प्रसिद्धता पाने वाला व शत्रु स्थान में छिपी आग से काम लेने वाला बड़ा क्रोधी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० ४०३

में हो तो वह मनुष्य कई २ प्रकार से महान् परिश्रमी दैनिक रोजगार करने वाला तथा रोजगार में व स्त्री स्थान में प्रभाव पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ कष्ट साध्य शक्ति का योग पाने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ शक्ति, रोजगार से व कुछ ससुराल से पाने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने वाला तथा स्त्री स्थान में व कुछ भोगादिक पक्ष में कुछ न्यूनाधिक रद्दोबदल का योग पाने वाला तथा देह में कुछ कष्ट पाने वाला तथा गृहस्थ में व जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी का योग पाने वाला तथा महान् पेचीदा गुप्त चालों से स्वार्थ सिद्धि करने वाला तथा पुरातत्त्व शक्ति के बल से जमीन जायदाद व सुख की वृद्धि करनें वाला व धर्म की हानि करने वाला बड़ा भोगी होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से आठवें स्थान

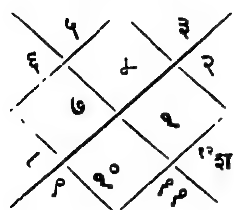
नं० ४०४

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में स्त्री व पिता और पुत्र की तरफ से चिंताओं के कारण पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में एक भारी मस्ती का स्थिर योग पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली किसी गम्भीर

वस्तु का स्थाई लाभ पाने वाला किन्तु स्त्री व गृहस्थ भोग के संबंध में कुछ परेशानियों के सहित तथा कुछ गुप्त योजनाओं के द्वारा काम चलाने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने वाला और राज समाज के स्थान संबंध में उन्नति के लिये कुछ रुकावटों का व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला तथा मान में कुछ कमी पाने वाला और व्यापार आदि के संबंध में व दैनिक रोजगार के संबंध में बड़ी कमजोरी व परेशानी अनुभव करने वाला तथा अपने दैनिक कार्यक्रम की शक्ति का विकाश करने के लिये विदेश आदि का विशेष संबंध पाने वाला तथा कुछ कड़वा बोलने वाला बड़ा गुप्त कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भाग्यवानी के तरीके से जीवन की दिनचर्या व्यतीत करने वाला और बड़ा भाग्यवान् समझा जाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला व जीवन को सहायक होने वाली किसी पहिली व गम्भीर वस्तु का लाभ

नं ४०५




भाग्यबल से प्राप्त करने वाला और वास्तविक भाग्यस्थान में कुछ अन्दरूनी व असंतोष के कारण पाने वाला तथा दैनिक रोजगार की वृद्धि करने के लिये तथा स्त्री व गृहस्थ का सुख भोगने के लिये किसी सुन्दरतायुक्त प्रपञ्च के डंडे से काम लेने वाला तथा अपना प्रभाव कायम रखने के लिये दिखावटी सज्जनता के योग से बड़ी सतर्कता व मुस्तैदी से काम लेने वाला तथा खूब लाभ पाने वाला लापरवाह होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से दसवें स्थान

नं० ४०६

में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में महान् कष्ट का योग पाने वाला तथा दैनिक रोजगार व्यापार की उन्नति के लिये, बड़े २ कष्ट साध्य पेचीदा कर्म करने वाला और गृहस्थ व स्त्री के संबंध में बड़ा विचित्र कशमकश की ऊंची नीची योजनायें पाने वाला तथा पुरातत्त्व शक्ति के बल से कुछ मकान जायदाद व सुख के साधन पाने वाला तथा मातृस्थान का कुछ आडम्बरी सुख प्राप्त करने वाला तथा खूब खर्च करने वाला तथा राज समाज के स्थान में कुछ गुप्त तरकीबों से दैनिक व्यवसाय धन्दे का फायदा उठाने वाला तथा भोग विलास की विशेष इच्छा होते हुये भी कुछ न्यूनाधिक योग पाने वाला और जीवन को सहायक होने नाली कुछ पहिली वस्तु की कमजोरी पाने वाला कुछ आलसी होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ४०७

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में आयु स्थान की खूब वृद्धि पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली गम्भीर वस्तु का बड़ा लाभ पाने वाला तथा खूब धन पैदा करने वाला व जीवन की दिनचर्या में बड़ी मस्ती का वैं दैनिक रोजगार का बड़ा लाभ पाने वाला और देह के किसी हिस्से मे कुछ न्यूनता पाने वाला तथा स्त्री भोगादि

का खूब लाभ पाने वाला और अपने हक व वित्त से ज्यादा मुनाफा खाने वाला तथा संतान व वाणी में कुछ कड़-वास पाने वाला एवं गूढ़ युक्तियों की मास्टरी रखने वाला तथा उदर संबंधी विकारों से मुक्त रहने वाला तथा विदेश आदि से खूब लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अधिक खर्च करने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली पहिली वस्तु की कुछ हानि पाने वाला तथा बाहरी स्थानों के संबंध से दैनिक रोजगार की शक्ति पाने वाला और बड़े कष्ट साध्य उपायों से व. गुप्त तरकीबों से भाग्य की वृद्धि करने वाला, आयु के स्थान में कभी कभी बड़ी हानियों के योग पाने वाला और स्त्री व गृहस्थी के सुख संबंध में बड़ी २ कमजोरियों के योग पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक के सुख संबंध में स्थानीय कमजोरी पाकर कुछ खर्च की शक्ति से काम निकालने वाला और भाग्य की व धर्म की दिखावटी शक्ति में कुछ वृद्धि पाने वाला तथा धन के कोष की हानि पाने वाला व कुटुम्ब की हानि पाने वाला होता है।

नं० ४०८



# कर्कलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न के पहिले स्थान में

नं० ४०९

हो तो वह मनुष्य अपनी देह के स्थान में कुछ अरिष्ट व कुछ कमी का योग पाने वाला तथा देह के संबंध से कुछ किसी प्रकार का चिंता फिकर मानने वाला और महान् ऊँची चतुराइयों को गुप्त रूप से सोचकर स्तेमाल करने वाला तथा कुछ मानसिक कष्ट व देह की सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला और मन के अन्दर कुछ डर व कुछ २ घबराहट का योग पाने वाला और अपने व्यक्तित्व की उन्नति व जागृति के लिये कुछ कष्टसाध्य अनधिकार चेष्टा करने वाला तथा देह के संबंध में कभी २ मृत्यु तुल्य मुशीबत का योग पाने वाला तथा बड़ी २ गहरी व छिपी हुई युक्तियों से अन्त में जाकर गहरा आनन्द पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से दूसरे स्थान में

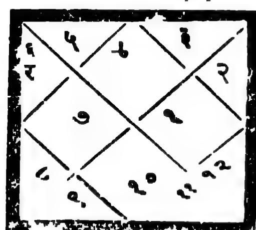
नं० ४१०

हो तो वह मनुष्य धन के कोष स्थान में बहुत हानि पाने वाला तथा कुटुम्ब की भी बहुत हानि पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये महान् तीक्ष्ण भेदीले कर्म, गुप्त रूप से करने वाला और धन की हानि के कारण से कभी २ दिमाग के अन्दरूनी हिस्से में मूर्छा सी पाने वाला तथा घोर वेदना

का अनुभव करने वाला और धन व इज्जत की रक्षा के लिये बड़ी बड़ी युक्तियों से काम निकालने वाला तथा धन के कार्यों की पूर्ति करने के लिये कभी २ कर्जदारी से काम निकालने वाला तथा कुछ परेशान व चिंतातुर सा रहने वाला होता है ।

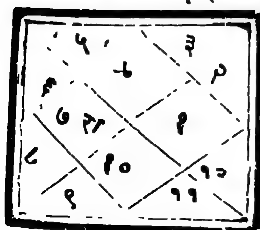
जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी हिम्मत की शक्ति से काम करने वाला तथा युक्तियों की शक्ति से हिम्मत की वृद्धि पाने वाला और बहुत २ सफलतायें व कामयाबी की योजनायें पाने वाला और बहन भाई के स्थान में कुछ हानि व क्लेश का योग पाने वाला और अपना मतलब सिद्ध करनें में न्याय अन्याय की परवाह न करने वाला किन्तु कार्य सिद्धि के समय बड़ी भारी तत्परता व मुस्तैदी से काम लेने वाला और बाहुबल के स्थान में युक्तिबल से अधिक सफलता पाने वाला बड़ा सावधान होशियार तथा परम धैर्यवान् साहसी होता है ।

नं० ४११



जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख शांति में बाधा पाने वाला तथा मातृस्थान में कुछ हानि व क्लेश का योग पाने वाला और मकान जायदाद व भूमि के स्थान में कुछ हानि व कमी का योग पाने वाला तथा रहने के स्थान में भी कुछ कमी महसूस करने वाला और सुख के साधनों को प्राप्त करने

नं० ४१२



के लिये महान् गम्भीर व गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला व दिमाग. की गुप्त शक्ति के बल सें सदैव सुख स्थान की स्थिर वृद्धि में ही लगा रहने वाला और अन्त में सुख की कुछ नवीन मजबूती को पा लेने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ४१३

में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में बड़ी बड़ी दिक्कतें व हानियों के योग पाने और विद्या स्थान में भी बड़ी २ दिक्कतें सहने के बाद कुछ गुप्त युक्तियों से सफलता पाने वाला और कुछ असत्य बल की शक्ति से वाणी द्वारा विद्या का प्रभाव अधिक जमाने वाला और शब्दों के अन्दर बड़ी वीरत्व शक्ति का परिचय देने वाला और कुछ नशा आदि की इच्छा रखने वाला एवं शब्दों को बड़ी होशियारी से बोलने पर भी कुछ नीरसता का आभास प्रतीत कराने वाला व दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी व गरमी का योग पाने वाला किन्तु दिमाग की अन्दरूनी मजबूती रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से छठे स्थान में

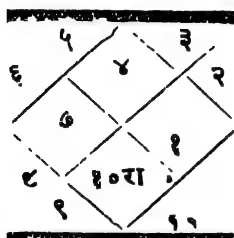
नं० ४१४

हो तो वह मनुष्य महान् छिपी हुई युक्तियों से काम लेने वाला और अपने स्वार्थ सिद्धि के मार्ग में न्याय अन्यायकी परवाह न करने वाला और शत्रु पक्ष के संबंध में बहुत गुप्त व बहुत संकीर्ण चाल चलने वाला और ननसाल पक्ष में

हानि पाने वाला और शत्रु व दिक्कतों से फिकर मानने पर अपनी युक्तियों से काम निकालने वाला और प्रभाव की वृद्धि करने के लिये अत्यन्त छिपी हुई शक्ति का प्रयोग करने वाला और झगड़े झंझटों के स्थान में कुछ परेशानियों के बाद सफलता पाने वाला बड़ा होशियार मतलबी, सावधान होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से सातवें स्थान में

न० ४१५




हो तो वह मनुष्य स्त्री के स्थान में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला तथा स्त्री के संबंध में कभी कभी घोर अशांति व निराशाओं का भी योग पाने वाला और दैनिक रोजगार में बड़ी बड़ी दिक्कतें व परेशानियाँ सहने वाला और रोजगार के स्थान में कभी कभी साँघातिक हानि का योग भी पाने वाला रोजगार की लाइन में बड़ी २ पेचीदा गुप्त युक्तियों से व परिश्रम से सफलता पाने वाला और गृहस्थी के संचालन व दैनिक कार्यों में एवं भोगादिक पक्ष में कुछ कमियों के कारणों से अतृप्त रहने वाली वासनाओं की अन्त में पूर्ति के साधन पाने वाला तथा बड़ी होशियारी व स्वार्थ परता से काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्नसे आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, बड़ी भारी, महान चालाकियों से, मुस्तैदी के साथ काम करके जीवन की दिनचर्या में शक्ति पाने वाला तथा पुरातत्त्व की गहरी व गुप्त खोज करके फायदा उठाने वाला व उदर या पेट में कुछ शिकायत पाने

नं० ४१६

वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ चिंतित रहने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहली गम्भीर वस्तुकी हानि पाने वाला और जीवन में बहुतसी निराशाओं के बाद आशा का योग पाने वाला तथा गूढ़ युक्तियों को और भी गूढ़ करके काम में लाने वाला तथा कुछ अन्दरूनी परेशानी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से नवमें स्थान में

न० ४१७

हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में बड़ी हानियाँ व परेशानियों को पाने वाला और धर्म के स्थान में वास्तविकता की कमी पाने पर भी कुछ विचारों की अन्दरूनी सूझ से कुछ मुफ्त के सदृश कार्यों में ही धर्म की पूरी शक्ति मान लेने वाला और धर्म का बाहरी दिखावा, अच्छा दिखा सकने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये, महान गुप्त चतुराइयों का ओजस्वी प्रयोग करने वाला और बहुत बहुत सी निराशाओं के बाद अन्त में आशा की मजबूती पाने वाला तथा कुदरत से भी, अपनी युक्तियों के बल से अधिक फायदा उठाने की तरकीबें पैदा करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, पिता के स्थान में कष्ट अनुभव करने वाला तथा व्यापार आदि में बड़ी बड़ी दिक्कतें सहने वाला

और राज समाज के स्थान में, महान कष्ट साध्य कर्म करते रहने के बाद व कठिन मुसीबतें सहने के बाद मान प्राप्त करने वाला और मानोन्नति व पदोन्नति के लिये, महान पेचीदा कर्मों का गुप्त रूप से, बड़ी दृढ़ता के साथ काम में लाने वाला तथा मान प्रतिष्ठा के स्थान में कभी २ मार्मिक वेदनाओं का भी योग पाने वाला और दिमाग के अंदर अन्दरूनी हिस्से में बड़ी शाही ढंग की योजनायें रखने वाला व कठिन परिश्रम करने वाला होता है।

नं० ४१८

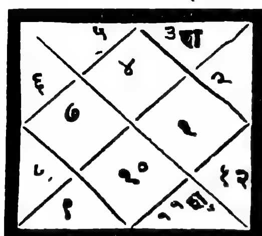
जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, आमदनी के स्थान में बहुत द्रव्य लाभ पाने वाला तथा कभी २ बहुत अधिक मुफ्त का साधन भी प्राप्त करने वाला और लाभ की अधिकता पाने के लिये बड़ी बड़ी गहरी युक्तियों का गुप्त रूप से प्रयोग करने वाला और लाभ प्राप्ति के स्थान संबंध में सदैव गहरे स्वार्थ की तरकीबें सोचने वाला तथा आमदनी के स्थान में बड़ी भारी होशियारी व सतर्कता से काम लेने वाला और हक से ज्यादा मुनाफा खाने वाला तथा महान चतुराइयों वाला प्रतापी होता है।

नं० ४१९

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा शाही खर्च करने वाला तथा खर्च

के स्थान में बड़ी २ गहरी व ऊँची योजनाओं से काम लेने वाला और बड़ी लापरवाही व आसानियों से खर्च चला सकने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों का महान संबंध पाने वाला और बाहरी संबंधों में बड़ी बड़ी ऊँची योजनाओं का महान पेचीदा ढंग से व गुप्त शक्ति के बल को काम मे लाकर प्रभाव पाने वाला तथा दिमाग के अन्दरूनी हिस्से में बाहरी संबंधों के ज्ञान की महान शक्ति रखने वाला होता है।

नं० ४२०



## कर्कलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह की सुन्दरतामें कमी पाने वाला तथा देह में दुरबलता व कष्ट के योग पाने वाला और कभी २ देह में कोई सांघातिक मृत्यु तुल्य मुसीबत का योग पाने वाला तथा हृदय में मानसिक चिंता का योग पाने वाला तथा अपने अन्दर आन्तरिक मजबूती व शक्ति का योग अनुभव करने वाला और गुप्त युक्तियों को, अधांधुन्दी के साथ स्तेमाल करने वाला और अन्त में कुछ नाम व शक्ति

नं० ४२१



का स्थिर लाभ अपनें में प्राप्त करने वाला तथा अन्दरूनी हिम्मत वाला, जिद्दी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो व मनुष्य, धन के कोष के स्थान में बहुत हानियाँ पाने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिए महान परिश्रम

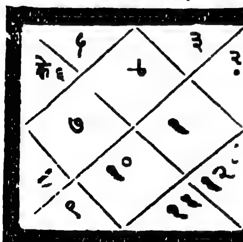
नं० ४२२



करने वाला तथा धन के लिये, बाहु-बल की अन्दरूनी शक्ति व युक्तियों का घोर प्रयोग करने वाला और धन व कुटुम्ब के स्थान में कभी २ महान संकट का सामना पाने वाला और धन संग्रह न कर सकने वाला और इज्जत आबरू की रक्षा के लिए बहुत भारी चिंता का गुप्त योग पाने वाला, और अन्त में किसी मजबूती के साथ धन का मार्ग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से तीसरे स्थान

नं० ४२३

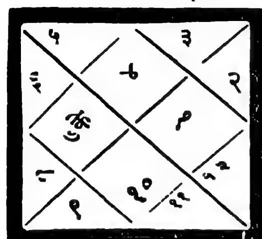


में हो तो वह मनुष्य, अपने पुरुषार्थ बल और बाहुबल की महान शक्ति पाने वाला और इस शक्ति के बल से महान सफलता व उन्नति पाने वाला तथा धैर्य की महान् शक्ति का प्रयोग, बड़े गुप्त रूप से करनेवाला और बड़ी भारी दौड़ धूप की शक्ति से बड़ी कामयाबी व हिम्मत प्राप्त करने वाला और अपने बाहुबल की शक्ति का प्रयोग बड़ी अधाँ-धुंदी के साथ में आशा युक्त होकर, सदैव करते चले जानें

वाला और अपनी शक्ति में कुछ कमजोरी के होते हुये भी, वे फिकरी के साथ आगे बढ़ने वाला प्रभावशाली होता।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से चौथे स्थान में

नं० ४२४



हो तो वह मनुष्य, सुख स्थान में व मातृस्थान में हानि व कमी का योग पाने वाला. और मकान भूमि आदि की शक्ति में भी बहुत कमी का योग पाने वाला, और सुख प्राप्ति के साधनों को पाने के लिये, महान कठिन परि-श्रम व गहरी छिपी हुई शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा रहने के स्थान में कुछ दिक्कतें सहने वाला और शांति में वाधा पाने वाला और कुछ जिद्दवाजी से व हठयोग से गुप्त सुख का अनुभव करने वाला और सुख के प्रकट स्थान में कभी कभी घोर संकट का योग पाने पर भी, महान धैर्य की शक्ति से, अन्त में सुख की वड़ी मजबूती, पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ४२५

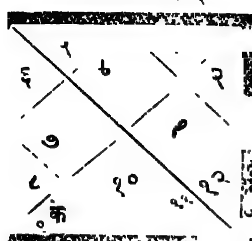


में हो तो वह मनुष्य, संतान संबंध में बहुत हानि व कलेश का योग पाने वाला तथा विद्या स्थान में भी, विद्या ग्रहण करते समय वड़ी २ कठिनाइयों का योग पाने वाला, और विद्या स्थान में व बुद्धि स्थान में गुप्त कमजोरी व गुप्त मजबूती का योग पाने वाला और बोल चाल के अन्दर शब्दों की सुन्दरता में बड़ी कमजोरी पाने वाला तथा कुछ तीक्ष्ण

मिजाजी से बातें करने वाला, और दिमाग संबंधी कुछ चिंता फिकर का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से छटे स्थान में

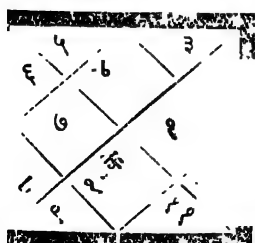
नं० ४२६



हो तो वह मनुष्य, बड़ी भारी बहादुरी रखने वाला और अत्यंत गहरी व कठोर युक्तियों मे काम लेने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव की महान शक्ति पाने वाला और बड़े मे बड़े शत्रू को नीचा दिखाकर अपना आतंक जमाने वाला और ननसाल पक्ष की हानि पाने वाला तथा गुप्त युक्तियों का प्रयोग, अपनी उन्नति के लिये, बड़ी भारी अधागुंदी के साथ करने वाला और नीति का उल्लंघन करने वाला तथा स्वार्थ सिद्धी के सामने, पाप पुण्य की लेशमात्र भी परवाह न करने वाला, तथा खतरनाक, बड़ा निडर, महान विजयी होता है।

जिस व्यक्ति का कार का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं० ४२७



में हो तो वह मनुष्य, अपने स्त्री स्थान में कष्ट उठाने वाला और दैनिक रोजगार के अन्दर बड़ी २ कठिनाइयाँ व महान परिश्रम का योग पाने वाला और रोजगार की उन्नति के लिये, गुप्त परिश्रम से बाहुबल के द्वारा, संलग्नता पूर्वक काम करने वाला और रोजगार के अन्दर कभी कभी घोर निराशाओं को पा लेने पर भी निरुत्साह न होने वाला और अन्त में बड़ी स्थिर मजबूती को

पा लेनें वाला और इन्द्रिय भोगादिक के स्थान में, गुप्त शक्ति की महानता पाने वाला एवं अधिक भोग प्राप्त करने वाला और एक स्त्री से पार न पाने वाला, किन्तु वास्तविक, स्त्री स्थान में कुछ अशांती का योग पाकर भी आन्तरिक धैर्य से काम लेने वाला तथा लौकिक व गृहस्थी के मामलों में बडी मेहनत करने वाला होता है।

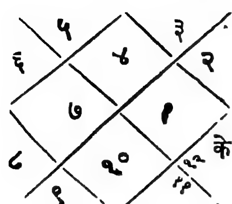
जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, अत्यन्त गूढ़ युक्तियों के कार्य को, गुप्त बाहुबल की शक्ति से, संलग्नता पूर्वक करने वाला, और पेट के अन्दर कुछ अन्दरूनी शिकायत पाने वाला और आयु स्थान में बहुत २ से गहरे खतरे पा लेने पर भी, अन्त में आयु की मजबूती पाने वाला, और पुरातत्व की वर्तमान शक्तियों में हानि पाने वाला और भविष्य की शक्ती पाने वाला, और जीवन की दिनचर्या को, बेफिक्री से व्यतीत करने के लिये, महान् कठिन परिश्रम कर २ के, अन्त में किसी स्थिर शक्ति को पाने वाला और अपनी दिनचर्या के अन्दर एक अजीब और गरीब मस्ती का योग पाने वाला होता है।

नं० ४२८

| | | |
|---|---|---|
| ५ | | ३ |
| ६ | ४ | २ |
| ७ | | १ |
| ८ | १० | १२ |
| ९ | | ११ के० |

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य, अपने भाग्य के स्थान में बड़े २ कष्ट सहन करने वाला तथा भाग्योन्नति में, बड़ी २ रुकावटें पाने वाला और भाग्य स्थान में कभी २ घोर निराशायें पाने के बाद अन्त में, भाग्य की मजबूती का मार्ग, बड़ी

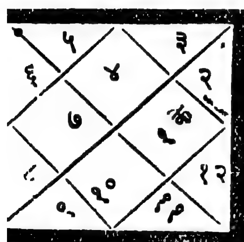
नं० ४२९




भारी परिश्रम की शक्ती से प्राप्त करने वाला, और धर्म के स्थान में, वास्तविक हानि का योग पाने वाला और किसी प्रकार कुछ तामसी उग्र धर्म का, पालन करने वाला और भाग्य की वृद्धी करने के लिये, धर्म की भी हानिसह लेने वाला तथा भाग्योन्नति के स्थान में गुप्त बाहुबल की शक्ती से, व गुप्त मंत्रणाओं से काम लेने वाला, दिखावटी धर्मज्ञ होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, पिता के स्थान में

नं० ४३०




कुछ हानि का योग पाने वाला और पिता स्थान से कुछ अलहदगी व कुछ कष्ट अनुभव करने वाला, और व्योपार आदि उन्नति के स्थान में, बड़ी २ दिक्कतें व परेशानियां सहने वाला और राज समाज में, मान उन्नति के लिये, महान् कठिन परिश्रम, गुप्त शक्ती के आधार पर करने वाला और मान व इज्जत आवरू के स्थान में, कभी २ घोर अंधकार पाने पर भी, गुप्त धैर्य की शक्ती से काम लेने वाला और अन्त में किसी मजबूती के योग को प्राप्त करके, कुछ आन्तरिक बेफिकर पाने वाला, बड़ा कठिन कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, बहुत आमदनी प्राप्त करने वाला

और लाभ प्राप्ती के स्थान मार्ग में, लाभ की अधिक वृद्धी करने के लिये, गुप्त बाहुबल की शक्ती का महान् प्रयोग व महान् परिश्रम करने वाला, और लाभ के स्थान में, गुप्त चतुराई के योग से, तथा बड़ी दृढ़ता के साथ, अपने स्वार्थ को सिद्ध करने वाला तथा सदैव स्वार्थ युक्त रहने के कारण से लेन-देन के अन्दर कुछ कटू प्रयोग करने वाला, और कुछ हक से ज्यादा मुनाफा खाने वाला और फिर भी, आमदनी के संबंध में कुछ कमी महसूस करने वाला, बड़ा भारी प्रयत्नशील, उद्योगी होता है।

नं० ४३१

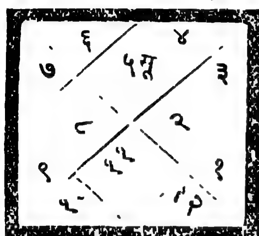
जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, खर्च के स्थान में महान् कठिनाइयों का व अशान्तियों का योग पाने वाला, और खर्च के स्थान में कभी २ घोर संकट काल का योग पाने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों के संबंध में, बड़ी २ मुश्किल व दिक्कतें सहने वाला और बाहरी संबंधों में व खर्च के संबंध में, महान् कष्ट साध्य कर्म करने वाला और बड़ी २ मुश्किलों से व संकीर्ण गुप्त शक्ती के बल से, खर्च संचालन की शक्ती पाने वाला, और खर्च के स्थान में कुछ अनुचित रीति का भी प्रयोग करने वाला, तथा लघु धैर्यवाला होता है।

नं० ४३२

## सिंहलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न के पहिले स्थान में

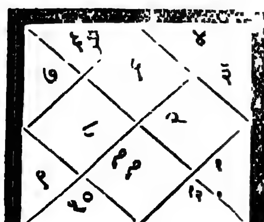
नं० ४३३



हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी प्रताप की शक्ति रखने वाला तथा कुछ प्रसिद्धता पाने वाला तथा देह में लम्बाई और गौरव का योग पाने वाला तथा बड़ी भारी हकड़ी और गुस्सा रखने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ कमी व कुछ नीरसता का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन को ओच्छी निगाह से देखने वाला तथा दिलचस्पी से रहित होकर ही, गृहस्थिक कार्य व दैनिक रोजगार को संचालन करने वाला और अपनी मस्ती में व अन्तरात्मा में, मस्त रहने वाला और इन्द्रिय भोगादिक का कुछ वास्तविक अभावसा या विरोधसा, महसूस करने वाला किन्तु फिर भी भोगादिक की इच्छा विशेष रखने वाला; बड़ा भारी स्वाभिमानी व देहाभिमानी शूर वीर होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ४३४



हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला तथा बड़ा धनी कहलाने वाला और धन कमाने में ही लगा रहने वाला और धन स्थान से ही प्रभाव की बड़ी वृद्धि पाने वाला और देह में कुछ बंधन पाने वाला या कुछ घिराव सा महसूस

करने वाला और जीवन की दिनचर्या का एक प्रकार से बड़ी अमीरी का सा ढंग बनाये रखने वाला और पुरातत्त्व स्थान का फायदा कुछ आत्मबल की शक्ति से पैदा करने वाला और आयु स्थान मे शक्ति पैदा करने वाला तथा मृत्यु स्थान में गौरव पाने वाला और कुटुम्ब का प्रभाव रखने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली किसी पूर्व शक्ति का लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

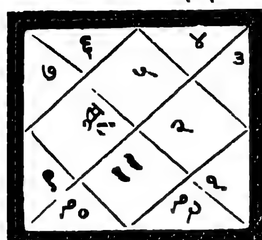
जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी पुरुषार्थोन्नति करने वाला होने पर भी पुरुषार्थ की वृद्धि में असफलताओं का योग पाने वाला और भाग्य स्थान की बड़ी वृद्धि करने वाला तथा बड़ा भाग्यवान समझा जानेवाला और ईश्वर की शक्ति मे बहुत विश्वास करने वाला तथा धर्म को बहुत महत्व देने और भाग्य की उन्नति करने के लिये कुछ अनुचित प्रयत्न भी करने वाला और बहन भाइयों के स्थान में कुछ असंतोष पाने वाला और कुछ मानयुक्त परतन्त्रता का सा योग पाने वाला और अपने बल पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी पाने वाला और कभी २ कुछ महान् निराशाओं का योग पाने वाला हिम्मतवर होता है।

नं० ४३५




जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से चौथे स्थान

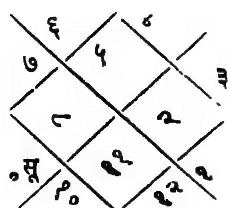
नं० ४३६




में हो तो वह वह मनुष्य, मातृस्थान की बड़ी भारी शक्ति पाने वाला, तथा घर की जमीन जायदाद का सुख उठानेवाला और सुख पूर्वक अपने स्थान में रहने वाला तथा प्रभाव की महान शक्ति पाने वाला और माता के गुणों को ग्रहण करने वाला और पिता स्थान में व व्यापार स्थान में कुछ नीरसता का योग पाने वाला और राज सभा के संबंध में कुछ वैमनस्यता के साथ संबंध रखने वाला और विदेश यात्राओं के संबंध में अपने अन्दर असुविधा मानने वाला और देह व आत्मा के अंदर अन्दरूनी कोमलता व प्रकट में कटुता रखने वाला और निर्भय रहने वाला तथा शांति चाहने वाला, क्रोधी होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान में हो

नं० ४३७




तो वह मनुष्य विद्या के स्थान में विशेष शक्ति पाने वाला तथा हृदय में महान ज्ञान को धारण करने वाला और वाणी से व देह से महान प्रभाव पाने वाला और संतान शक्ति का महान गौरव प्राप्त करने वाला और बड़ी गरमाई के साथ बातें करने वाला और अपनी बुद्धी को सबसे ऊँचा व बड़ा मानने वाला और लाभ प्राप्ति की वृद्धि का महान ख्याल रखने वाला, और महान लाभ पाने वाला तथा आत्मबल की शक्ति से बड़ी २ दूर की व गहरी बातों को सोचने विचारने वाला तथा बड़ा मान प्राप्त करने वाला, और बड़ा विद्वान प्रभाव शाली होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से छठे स्थान में

नं० ४३८

हो तो वह मनुष्य, शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा अपने अन्दर महान प्रभाव की शक्ति रखने वाला और कुछ प्रभाव युक्त परतंत्रता का सा योग पाने वाला और देह में कुछ परेशानी सी व नीरसता का सा योग पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों में प्रभाव पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ निरसता का योग पाने वाला और दिक्कत व मुसीबतों की जरा भी परवाह न करने वाला और दाव पेच की शक्तियों को बड़ी लापरवाही से व बड़ी बहादुरी से काम में लाने वाला, बड़ा गुस्से बाज होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

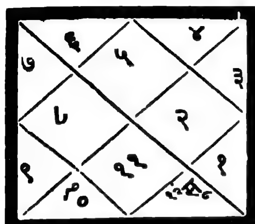
नं० ४३९

में हो तो वह मनुष्य, दैनिक रोजगार की लाइन में, नीरसता से युक्त, बहुत मेहनत करने वाला, और स्त्री स्थान में भी नीरसता के साथ विशेष संबंध रखने वाला और कुछ परतंत्रता का सा, प्रभाव युक्त काम धंदा करने वाला और गृहस्थ संबंधी दैनिक व लौकिक कार्यों में, कुछ अरुचि व विशेष आशक्ती रखने वाला और अपने स्वाभिमान का विशेष ख्याल रखने वाला और अपने हृदय के अन्दर कुछ अशांति व कुछ गरमी रखने वाला और इन्द्रिय संबंधी भोगादि पक्ष में कुछ अतृप्ती पाने वाला तथा कुछ

आत्म शक्ति रखने वाला व कुछ दूरदर्शिता की शक्ति रखने वाला, प्रभावशाली होता है ।

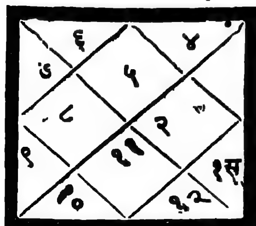
जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, किसी दूसरे स्थान में रहने वाला तथा अपने आत्म-बल की शक्ति से बड़ २ कष्टों पर विजय पाने वाला और आयु स्थान की वृद्धी करने वाला, और छिपी हुई गुप्त क्रियाओं को जानने की महान् शक्ति रखने वाला तथा बडी गहरी व पेचीदा गूढ़ चालों को काम में लाने वाला, तथा धन कमाने का पूरा ख्याल रखने वाला और देह में कुछ चिंता व सुन्दरता की कुछ कमी पाने वाला और अपने जीवन की दिनचर्या में कुछ गौरव मानने वाला, तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पूर्व संचित शक्ती का लाभ प्राप्त करने वाला, और कुछ घिरावसा महसूस करने वाला होता है ।

न० ४४०




जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य, बड़ी भाग्यवानी की शक्ति प्राप्त करने वाला, तथा बड़ी भारी सुन्दरता पाने वाला और चौड़े लम्बे मस्तक वाला और भाई बहनों की परवाह न करने वाला और धर्म का विशेष ज्ञान तथा विशेष पालन करने वाला और प्रभाव की महान् शक्ति रखने वाला तथा बहुत मान प्राप्त करने वाला और बहुत यश कमाने

न० ४४१



वाला तथा धार्मिक स्थान में बड़ा बनकर रहने वाला और भाग्य की शक्ति के सहारे से मस्ती और बेफिकरी का योग पाने वाला तथा आत्मज्ञान व आत्मीयता की महान् शक्ति रखने वाला तथा परोपकारी कार्य का काम करन वाला और कुछ प्रसिद्धता का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से दसवें स्थान में

नं० ४४२

| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ८ | | २सू |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

हो तो वह मनुष्य बड़ी प्रताप की शक्ति रखने वाला, तथा बहुत मान व प्रतिष्ठा पाने वाला और सुख स्थान की वृद्धि का बहुत ख्याल व प्रयत्न करने वाला और पिता के स्थान में, कुछ नीरसता मे युक्त संबंध पाने वाला और बड़े भारी बड़प्पन के साथ रहने वाला और माता के स्थान में विशेष हमदर्दी रखने वाला और व्यापार आदि का, देश शक्ति के द्वारा, खूब काम करने वाला, और राज सभाज के संबंध में, बडी दौड़ धूप करके, प्रभाव पाने वाला, और कुछ जमीन जायदाद की वृद्धी का विशेष ध्यान रखने वाला, बड़ा भारी स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से ग्यारहवें

नं० ४४३

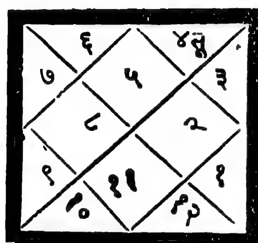
| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५ | ३सू |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

स्थान में हो तो वह मनुष्य, बड़ा भारी लाभ पानें वाला तथा बड़ी भारी आमदनीं पैदा करनें वाला और देह में बड़ी सुन्दरता व सुडौलता प्राप्त करने वाला और ज्यादा से ज्यादा लाभ व नफा खाने की कोशिश करने

वाला और देह को बलवान करने की भी कोशिश करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला तथा विद्या ग्रहण करनें वाला और प्रभाव के साथ बोलने वाला और देह में बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा प्रभाव की शक्ति से ही बहुत २ प्रकार के अनेक लाभ व अनेक पदार्थ पाने वाला और हरएक आवश्यकताओं की पूर्ती पाने वाला, बड़ा दूरदर्शी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान

सं० ४४४




में हो तो वह मनुष्य कुछ दुर्बल देह वाला तथा बाहरी दूसरे स्थानों में रहने वाला तथा हृदय में कुछ कमजोरी पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला और शत्रु स्थान को बहुत तीक्षण दृष्टी से देखने वाला और बहुत प्रकार की दिक्कतों व परेशानियों से अपने बचाव का साधन सोचनें, रखने वाला और अपना प्रभाव कायम रखने का बड़ा प्रयत्न तथा ख्याल रखने वाला और दूसरे स्थानों में बड़ा भारी प्रभाव जमाने वाला और आत्मा के अन्दर कुछ अकेलापन महसूस करने वाला और देह के संबंध में कुछ अशांति व कुछ भ्रमण की शक्ति रखने वाला, तथा अपनी देह में कुछ सुन्दरता की कमी महसूस करने वाला होता है।

# सिंहलग्नान्तरचंद्रफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ४४५

में हो तो वह मनुष्य, बाहरी दूसरे स्थानों की संपर्क शक्ति रखने वाला तथा कुछ भ्रमण करने वाला व देह में कुछ कमजोरी पाने वाला और देह की वास्तविक सुन्दरता में कमी पाने वाला और मन के अन्दर कुछ शक्ति, व कुछ कमजोरी का समीक्षण योग पाने वाला और शानदार प्रभाव शाली खर्च करने वाला और स्त्री स्थान के बाहरी संबंध में खर्च करने वाला और देह की ताकत से खर्च की शक्ति प्राप्त करनें वाला तथा दैनिक रोजगार व स्त्रीस्थान में कुछ कमजोरी का योग महसूस करने वाला तथा दूसरे स्थानों के संबंध से, मनके द्वारा बहुत प्रकार की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा कुछ कमजोर हृदय, भ्रमित मन होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० ४४६

में हो तो वह मनुष्य, धन संग्रह के कोष के स्थान में कुछ हानि व कुछ कमजोरी पाने वाला तथा कुटुम्ब में कुछ हानि पाने वाला और दूसरे स्थानों के संबंधित मनोयोग की शक्ति से, धन की वृद्धि करने के साधन पाने वाला,

और खर्च की शक्ति को बंदिश में लाकर, धन जोड़ने की चेष्टा करने पर भी, संचित धन में, कभी कभी अधिक व्यय हो जाने का योग पाने वाला और जीवन की पूर्व सहायक पुरातत्व शक्ति में भी कुछ कमजोरी व कुछ हानि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ खर्च की रौनक पाने वाला और धन संचय करने में बराबर मन को लगाये रखने वाला तथा कुछ दिखावटी अमीरी का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ४४७



में हो तो वह मनुष्य, अपने मन के अन्दर बाहरी दूसरे स्थानों की संबंधित शक्ति का बल प्राप्त करने वाला, और स्थानीय बाहुबल की शक्ति में कमजोरी पाने वाला तथा बहन भाई के स्थान में बड़ी कमजोरी व हानियों के योग पाने वाला और बहन भाई के पक्ष में व बल पुरुषार्थ की वृद्धि के संबंध में, विशेष खर्च करने वाला और मन के अन्दर, एक अजीब प्रकार की कमजोरी व शक्ति का समीकरण योग पाने वाला तथा धर्म और भाग्य के स्थान में भी कुछ कमजोरी का योग पाने वाला तथा अधिक खर्च के कारणों से पुरुषार्थ बल में कमजोरी महसूस करने वाला तथा शांति युक्त पुरुषार्थ करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ४४८

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | | ४ | ३ |
| ७ | ५ | | |
| चं८ | | २ | |
| ९ | ११ | | १ |
| १० | | १२ | |

में हो तो वह मनुष्य, मातृ स्थान में महान त्रुटि व कमजोरी पाने वाला, और सुख शांति में बहुत बाधा पाने वाला और मनोयोग के महान अशांत प्रद कार्य के द्वारा, खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और संकीर्ण रूप से खर्च करने के कारणों से कुछ दुख व अशांति का योग पाने वाला और बाहरी दूसरों के संबंध से व मनोयोग के परिश्रम द्वारा बड़ी २ दिक्कतें सह २ करके इज्जत आबरू व मान प्रतिष्ठा की वृद्धि करने वाला तथा घर के मकान जायदाद की कमजोरी व हानि पाने वाला और पिता के तुल्य किसी दूसरे आदमी का सहारा पाने वाला तथा घर के अन्दर बहुत २ प्रकार के मानसिक कष्ट सहन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान में

नं० ४४९

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | | ४ | ३ |
| ७ | ५ | | |
| ८ | चं | २ | |
| ९च | ११ | | १ |
| १० | | १२ | |

हो तो वह मनुष्य बाहरी अन्य स्थानों के संबंधित मन और बुद्धि में ज्ञान व शक्ति रखने वाला और बुद्धि द्वारा खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में हानि व कमजोरी पाने वाला और विद्या स्थान में भी कमजोरी पाने वाला और कुछ भ्रमित बुद्धि रखने वाला और कुछ मनोयोग के द्वारा हेर-फेर की बातें करके, दूसरों को भी चक्कर में डाल देने वाला और दिमाग में कुछ खर्च संबंधी की परेशानी अनुभव करने वाला तथा लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और बड़ी भारी

बिचारों की उधेड़ बुन में रहने वाला और वास्तविक में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा दूर की सोचने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च के स्थान में कुछ परतंत्रतासी का योग पाने वाला और मन के अन्दर महान घिराव व बंधन सा पाने वाला और मनकी शक्ति के द्वारा बाहरी स्थानों के संबंधित, पेचीदा मामलों को हल करने में मनको थकान पाने वाला और खर्च को रोकने की या कम करने की कोशिश करने पर भी कुछ अधिकता खर्च करने वाला शत्रुस्थान में बड़ी नरमाई और शांति से काम निकालने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला तथा कुछ रोगादिक झंझट तलब मामलों में भी खर्च करने वाला तथा अपने प्रभाव में कुछ कमी महसूस करने वाला तथा शत्रु को कुछ हानि पहुँचाने वाला होता है।

नं० ४५०

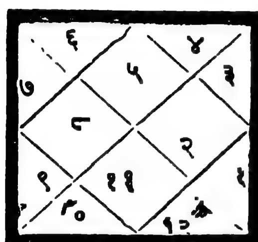
जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, अपने गृहस्थ व स्त्री के स्थान में हानि व कमजोरी पाने वाला, और दूसरे बाहरी स्थानों के संबंध से दैनिक रोजगार चलाने वाला तथा स्थानीय रोजगार में हानि पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक सुखों की कमजोरी पाने वाला और बाहरी संबंधों

नं० ४५१

के द्वारा, भोग प्राप्त करने की मन में इच्छा रखने वाला और देह में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा दैनिक रोजगार के अन्दर मन की शक्ति से बड़ी २ उलट फेर करने की तरकीबें सोचने वाला और भोगादिक पक्ष में व गृहस्थिक पक्ष में ही अधिकाँश खर्च करने वाला तथा कुछ फिकर मन्द रहने वाला तथा दैनिक कार्यों में कुछ कमजोरी पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान

न० ४५२




में हो तो वह मनुष्य, खर्च की संचालन शक्ति को दूसरे स्थानों के योग से तथा मानसिक परिश्रम के द्वारा प्राप्त करने वाला तथा खर्च की कुछ कमी व कुछ परेशानी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अभाव सा महसूस करने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली, कुछ पूर्व संचित शक्ति की कमजोरी पाने वाला और बाहरी स्थानों से संबंधित, गूढ़ विषय की जानकारी, मन के अन्दर प्राप्त करने वाला और बाहरी संबंधों की शक्ति से, मन के द्वारा, धन की वृद्धी करने का सदैव प्रयत्न करने वाला तथा धन के कोष में कुछ कमजोरी के कारण भी प्राप्त करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली शक्ति को, देर से प्राप्त कर सकने वाला तथा आयु की वृद्धी में कुछ न्यूनता पाने वाला, कुछ चिंतित मन वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से नवम स्थान

नं० ४५३

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | | ४ | |
| ७ | ५ | | ३ |
| ८ | | २ | |
| ९ | ११ | | चं १ |
| १० | | १२ | |

में हो तो वह मनुष्य, भाग्य की ताकत से, खर्च संचालन की शक्ति प्राप्त करने वाला किन्तु भाग्य के संबंध में, कुछ कमजोरी का योग पाने वाला और धर्म की कुछ कमजोरी पाने वाला तथा ईश्वर की निष्ठा में भी कुछ भ्रमात्मक विचारों को मन में सोचने वाला, और यश की कुछ कमी पाने वाला और दूसरे स्थानों के संबंध का फायदा उठाने में, कुछ कुदरत की सहायता प्राप्त करने वाला, तथा मन के अन्दर कुछ शांती व अशांती का मिश्रित योग प्राप्त करने वाला, तथा बहन भाई के स्थान में कुछ कमी देखने वाला तथा बल पुरुषार्थ में भी कुछ कमजोरी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से दसम स्थान

नं० ४५४

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | | ४ | |
| ७ | ५ | | ३ |
| ८ | | २ चं | |
| ९ | ११ | | १ |
| १० | | १२ | |

में हो तो वह मनुष्य, बाहरी स्थानों की संपर्क शक्ति से मनोयोग का बहुत व्यापार करने वाला तथा स्थानीय व्योपार में बहुत हानियों का योग पाने वाला तथा पिता के स्थान में, बाहरी संबंध की शक्ति तथा स्थानीय स्थिति में कुछ कमजोरी व कुछ हानि का योग पाने वाला, तथा मातृ स्थान में भी कुछ हानि पाने वाला तथा मकान जायदाद की कुछ कमजोरी पाने वाला तथा सुख शाँति में भी बड़ी कमजोरी पाने वाला और बहुत ज्यादा शाही ढंग के खर्च करने वाला तथा राज समाज और प्रतिष्ठा के स्थान में, खर्च

की शक्ति से दिखावटी प्रभाव की शक्ति पानेवाला और वास्तविक उन्नति में कमजोरी पाने वाला, तथा मन में मगन रहने वाला तथा बड़े भारी हेर-फेर से काम चलाने वाला, होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, बाहरी स्थानों के संबंध से, मनोयोग के द्वारा, बहुत लाभ पाने वाला और खर्च की शक्ति से, भी आमदनी पैदा करने वाला तथा खूब खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और संतान पक्ष में कुछ कमज़ोरी पाने वाला और विद्या ग्रहण करने में भी कुछ कमजोरी पाने वाला और मन व बुद्धि के अन्दर बड़े हेर, फेर की बातें सोचने वाला तथा अपनी आवश्यकताओं की इस्तेमाली चीजों में कुछ कमी महसूस करने वाला और मन में कुछ अन्दरूनी कमजोरी और बाहरी प्रसन्नता का योग पाने वाला होता है।

नं० ४५५

जिस व्यक्ति का, कर्क का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, बहुत धारा प्रवाह खर्च करने में ही मन को लगानें वाला, और खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी संबंधों की महान् शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा बाहरी संबंधों में ही मन के अन्दर रौनक व प्रसन्ता का योग पाने वाला और खर्च स्थान में बड़ा गौरव और चमत्कार रखने

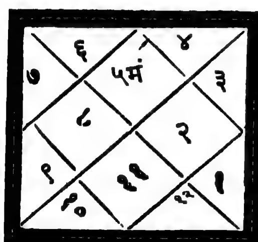
नं० ४५६

वाला तथा खर्च को रोकने की शक्ति में असमर्थता पाने वाला और ननसाल पक्ष में, कुछ हानि का या कमजोरी का योग पाने वाला तथा खर्च के स्थान से, शत्रुस्थान में कुछ नरमाई से भी काम निकालने वाला, कुछ अशांतयुक्त चौकस मन वाला होता है।

## सिंहलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल, लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य, भाग्य की शक्ति से बड़ामान व जमीन जायदाद की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और जमीन जायदाद के द्वारा भाग्यवान समझा जाने वाला और माता की महान् शक्ति व माता का आदर्श प्राप्त करने वाला और सुख प्राप्ति के बड़े ऊँचे साधन व प्रभाव प्राप्त करने वाला और यथा शक्ति धर्म के संबंध का वर्तमान में पालन व ध्यान करने वाला और पूर्व संचित धर्म के बल से, बहुत प्रकार की, आसाइसें व सहूलियतें पाने वाला और देह को सुन्दर व सुखद रखने वाला, तथा जीवन की दिनचर्या मे बड़ा गौरव मानने वाला और स्त्री व गृहस्थ और दैनिक रोजगार के स्थान में, नीरसता का योग पाने वाला पुरातत्व से सुखी होता है।

नं० ४५७



जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से दूसरे स्थान

नं० ४५८

में हो तो वह मनुष्य, बड़ा भाग्यशाली, तथा भाग्य की शक्ति से, कुदरती धन की वृद्धि प्राप्त करने वाला, और धन की शक्ति से बड़ा भाग्यवान समझा जाने वाला तथा मकान जायदाद प्राप्त करने वाला और स्वार्थ युक्त होकर धर्म का पालन करन वाला और पूर्व संचित धर्म के बल से, धन की संचित शक्ति का योग पाने वाला तथा माता के पक्ष में, व घरेलु सुख के स्थान में कुछ कंटक का समझने वाला और कौटम्बिक शक्ति का योग पाने वाला तथा सतान सुख प्राप्त करने वाला और विद्या बुद्धि के स्थान में सज्जनता धारण करने वाला तथा बातचीतों में, सत्यता व गम्भीरता के योग से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से तीसरे स्थान

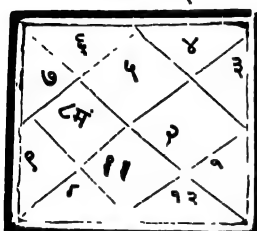
नं० ४५९

में हो तो वह मनुष्य बड़ी भाग्यवानी को प्राप्त करने वाला तथा पुरुषार्थ शक्ति से, अपने बाहुबल के द्वारा, बड़ी भारी सफलता पाने वाला और कुदरती सहायताओं के द्वारा, बड़ी आसानियों से, उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने वाला और यश व प्रभाव की शक्ति वृद्धि प्राप्त करने वाला, तथा धर्म को मानने वाला और शत्रूस्थान में महान प्रभाव पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में कुछ बड़प्पन व सुख देखने वाला तथा पिता के स्थान में कुछ नीरसता पाने वाला और राज समाज व मानोन्नति के स्थान में कुछ अड़चनों के

साथ वृद्धि का योग पाने वाला और रोग दोष व दिक्कतों की जरा भी परवाह न करने वाला, बड़ा भारी हिम्मत वाला तथा माता व बहन भाई की शक्ति पाने वाला, बड़ा प्रभाव शाली होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से चौथे

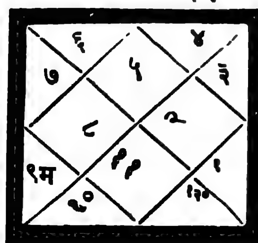
नं० ४६०



स्थान में हो तो वह मनुष्य, घर की जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला तथा माता की महानता पाने वाला, और बड़ी भाग्यवानी भोगने वाला तथा गम्भीर सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और रोजगार व्यापार की लाइन में कुछ नीरसता का योग पाने वाला और राज समाज व लौकिक कार्यों में तथा मान वृद्धि के स्थान में कुछ असंतोष मानने वाला और भाग्यबल व स्थान बल के द्वारा, बहुत लाभ प्राप्त करने वाला तथा ईश्वर के अन्दर गम्भीर विश्वास रखने वाला और धर्म का पालन भी करने वाला तथा स्त्री व पिता के स्थान में कुछ नीरसता का योग मानने वाला तथा सुख प्राप्ति की मस्ती में मस्त रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

नं० ४६१

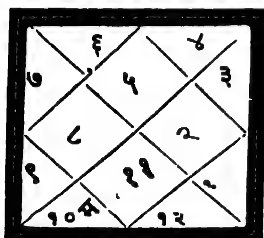


में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक विद्या ग्रहण करने वाला तथा सतान सुख प्राप्त करने वाला और विद्या वृद्धि के स्थान से भाग्य की उन्नति व सुख प्राप्त करने वाला और मकानादि का सुख प्राप्त करने वाला और सुख पूर्वक

लाभ प्राप्त करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में भाग्य शक्ति का गौरव अनुभव करने वाला तथा भाग्य की सुख शक्ति की तरफ से, बाहरी स्थानों में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा खर्च के स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और वृद्धि के अन्दर नरमाई व गरमाई रखने वाला और माता के गुणों को ग्रहण करने वाला, बड़ी शांति चाहने वाला, तथा आयु का सुख प्राप्त करने वाला तथा धर्म को जानने वाला तथा वाणी से सज्जनता का पालन करने वाला, बड़ा गूढ़ ज्ञानी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से छटे स्थान में हो तो वह मनुष्य, भाग्य की शक्ति से प्रभाव की महान उन्नति पाने तथा सतोगुणी शक्ति से शत्रु को हराने वाला और तमोगुणी धर्म का पालन करने वाला तथा ननसाल पक्ष में महानता पाने वाला तथा मातृ सुख में कुछ कमजोरी देखने वाला और सुखशांति में बाधा पाने वाला तथा कुछ मकानादि की शक्ति रखने वाला और भाग्योन्नति के स्थान में कुछ रुकावटें व दिक्कतें सह २ करके वृद्धि की तरफ जाने वाला और भाग्योन्नति के लिये, परिश्रम की अधिकता व दैवी सहायता के संमिश्रण योग से प्राप्ति पाने वाला और खर्च में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा व देह में कुछ भाग्यवानी से मान का योग पाने वाला तथा धर्म की आड़ से कुछ नाजाइज तरक्की पाने वाला होता है।

नं० ४६२



जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, माता के पक्ष में व स्त्री के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त सुख का योग पाने वाला और घरेलू सुख के दायरे में सुख युक्त होकर भी कुछ असंतोष मानने वाला और दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ थोड़ा सा परिश्रम कर के भी सफलता पाने वाला और कुछ मकानादि का सुख प्राप्त करने वाला तथा उन्नति पाने के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला और भाग्य की ताकत से कुछ धन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा कुछ सामान्य धर्म का पालन करने वाला और गृहस्थ के प्रत्येक दैनिक कार्यों में कुछ धर्म का ख्याल करने वाला और भोगादिक की प्राप्ति के लिये कुछ धर्म की हानि पाने वाला मानयुक्त होता है।

नं० ४६३

| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ म | १ |
| १० | | १२ |

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य के स्थान में, बड़े बड़े संकट सहने वाला तथा धर्म की हानि पाने वाला और सुख शांति में बहुत बाधा पाने वाला और माता के स्थान में कमी व कष्ट सहने वाला और मकानादि रहने के स्थान की भी कमजोरी मातृभूमि के अन्दर पाने वाला और यश प्राप्ति की कमी पाने वाला तथा दूसरे शहरों के योग से, सुखप्राप्त करने वाला तथा दूसरे स्थानों के योग से ही भाग्य की वृद्धि

नं० ४६४

| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ म |

का योग पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति के लिये, बड़े२ सुखों की आहूति देने वाला और जीवन को सहायक होनें वाली किसी पुरातत्व शक्ति का सहारा पाने वाला और आयु में कुछ वृद्धि पाने वाला तथा गुप्त मार्ग का ज्ञानीहोता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान में, महान शक्ति प्राप्त करने वाला और बड़ा भारी भाग्यवान समझा जाने वाला तथा जमीन जायदाद की महान शक्ति का आनन्द प्राप्त करने वाला और माता का परम आनन्द प्राप्त करने वाला तथा सुख संबंधित मामलों में, बड़े भारी सहायक साधन प्राप्त करने वाला और दूसरे बाहरी स्थानों में बड़ा कंटक समझने वाला तथा खर्च स्थान में कुछ त्रुटि व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला और धर्म का गहरा पालन करने वाला तथा ईश्वर में अटल विश्वास करने वाला तथा बड़ा यश प्राप्त करने वाला और भाग्य के भरोसे मौज करने वाला तथा बड़ा मान पाने वाला होता है।

नं० ४६५

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत व्यापार आदि से सुख व उन्नति प्राप्त करने वाला तथा माता पिता का वैभव प्राप्त करने वाला, घर की जमीन जायदाद रखने वाला तथा धर्म कर्म करने वाला और राज समाज के अन्दर

नं० ४६६

बहुत मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और बुद्धि विद्या में सफलता पाने वाला और संतान पक्ष से सुख शाँति पाने वाला, व देह को सन्मान सुख प्राप्त करने वाला तथा सुख प्राप्ती के बहुत से साधन रखने वाला और पूर्व जन्म के धर्म बल से, बड़ी उन्नति पाने वाला तथा और बातचीतों के अन्दर सत्यता व शाँति का परिचय देने वाला, बड़ा भारी प्रभावशाली, कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, भाग्य की शक्ति से सुख पूर्वक खूब लाभ पाने वाला तथा धन को संग्रह करने में, कुछ कुदरती सहायता पाने वाला तथा माता का लाभ प्राप्त करने वाला और सुख के बहुत से साधन पाने वाला और मकान भूमि आदि का लाभ पाने वाला तथा शत्रु स्थान में, महान प्रभाव पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ महानता पाने वाला तथा कुटुम्ब का सुख देखने वाला, और बुद्धि स्थान में व विद्या स्थान में बड़ी समझदारी से काम लेने वाला तथा कुछ संतान का लाभ पाने वाला और पूर्व जन्म के पुण्यों की शक्ति से बड़े २ लाभ व अनेक प्रकार की सफलतायें पाने वाला, धर्मवान, स्वार्थी होता है।

नं० ४६७

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य, अपने भाग्य स्थान में महान कमजोरी पाने वाला तथा मातृ स्थान में महान हानि

नं० ४६८

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ५ | ४म |
| ७ | | ३ |
| ८ | २ | |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

पाने वाला, और सुख शाँति में महान कमजोरी पाने वाला, और रहने के स्थानों की व मकान भूमि आदि की बड़ी हानि पाने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों के योग से, बड़ी अशाँति के द्वारा, अपने बल पुरुषार्थ की वृद्धि करने वाला, और खर्च के स्थान में बड़ी अशाँति के कारण, पाने वाला तथा धर्म के संबंध में बड़ी भारी कमजोरी पाने वाला, और दूसरे स्थानों के योग से, दैनिक रोजगार में बड़ी तरक्की करने वाला तथा यश की कमी पाने वाला, तथा शत्रु स्थान में प्रभाव पाने वाला होता है ।

## सिंहलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध, लग्न के पहिले स्थान

नं० ४६९

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ५बु | ४ |
| ७ | | ३ |
| ८ | २ | |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

में हो तो वह मनुष्य अपनी देह से बहुत सा लाभ पाने वाला तथा बहुत धन प्राप्त करने वाला और देह से धनी समझा जाने वाला और विवेक की महान शक्ति के द्वारा अनेक प्रकार की महान स्वार्थ सिद्धी करने वाला और धन की शक्ति से दैनिक रोजगार में बड़ी सफलता

पानें वाला और स्त्री स्थान में महान लाभ पानें वाला और धन व विवेक की आदर्श शक्ति के द्वारा लौकिक व भोगदिक के पदार्थों में बड़ी सफलता पाने वाला और खूब मान पाने वाला तथा देह में सुन्दरता व शीलता प्राप्त करने वाला तथा सदैव धन खेंचने की तरकीबें पैदा करने वाला बड़ा इज्जतदार चतुर होता है ।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन संग्रह करने वाला और मोटी आमदनी पाने वाल और बहुत बड़े कुटुम्ब वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी व कुछ लापरवाही से काम करने वाला और पुरातत्व शक्ति की परवाह न करने वाला और धन की शक्ति को प्राप्त करने में महान विवेक की शक्ति से काम लेने वाला, और आमदनी के स्थान में कुछ बंधन का सा मार्ग पाने वाला और बड़ी भारी इज्जत प्राप्त करने वाला तथा धन की वृद्धि के कारणों से आयु के समय को कुछ नीरसता युक्त लापरवाही से रखने वाला होता है ।

नं० ४७०

६ बु ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ व बाहुबल से बहुत धन कमाने वाला तथा बहुत २ प्रकार के लाभ प्राप्त करने वाल तथा बहन भाइयों का लाभ पाने वाला और बड़ी भाग्य शक्ति की उन्नति करने वाला तथा धन की

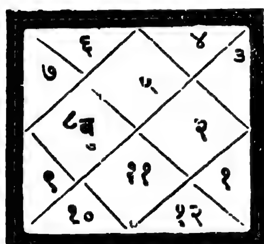
नं० ४७१

६ ४ ७ बु ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२

ताकत से धर्म भी करने वाला और विवेक की महान शक्ति से महान उन्नति व यश प्राप्त करने वाला और कुछ सुन्दरता युक्त प्रभाव की शक्ति पाने वाला और अपने पुरुषार्थ का बड़ा भरोसा रखने वाला और ईश्वर में भी बहुत निष्ठा करने वाला तथा उत्साह की महानता पाने वाला और धन वृद्धि के कारणों से कुछ बंधन युक्त सा रहकर कार्य करने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की संग्रह शक्ति का बड़ा सुख प्राप्त करने वाला और सुख पूर्वक विवेक शक्ति के द्वारा आमदनी व लाभ प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की सुन्दर शक्ति प्राप्त करने वाला तथा घर बैठे सुख पूर्वक हर एक आवश्यकताओं की पूर्ति पाने वाला तथा बड़े बड़े सुन्दर सुन्दर वस्त्र आभूषण इत्यादि की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धन की शक्ति से बड़ा कारोबार करने वाला तथा राज समाज में बड़ी इज्जत पाने वाला और माता के संबंध में व सुख प्राप्ति के सबंध में कुछ बंधन युक्त लाभ की योजना पाने वाला और पिता स्थान से लाभ पाने वाला चतुर कर्मेष्ठी होता है।

नं० ४७२




जिस व्यक्ति का धनका बुध लग्न से पांचवें स्थान

नं० ४७३

में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्या ग्रहण करने वाला तथा बुद्धि के अन्दर महान कला रखने वाला और विद्या बुद्धि के योग से खूब धन कमाने वाला तथा बड़े बड़े महान कीमती लाभ पाने वाला और बड़ी बड़ी कीमती बातें कहने वाला तथा संतान का बड़ा लाभ पाने वाला और विवेक की महान शक्ति के द्वारा बड़ी बड़ी कीमती योजनायें बनाने वाला तथा दिमाग की शक्ति से सदैव स्वार्थ सिद्धी में लगा रहने वाला तथा मान और इज्जत प्राप्त करने वाला और कोमल बातों से मतलब निकालने वाला बड़ा चतुर होता है

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से छटे स्थान

नं० ४७४

में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता युक्त कर्म के बल से धन की प्राप्ति करने वाला और कुछ गुप्त व पेचीदा विवेक की शक्ति से भी धन लाभ पाने वाला और धन संञ्चय करने के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा धन के संबंध से कुछ दिक्कतें सहने वाला और शत्रू व रोग के संबंध में कुछ धन से फायदा उठाने वाला और खूब खर्च करने वाला और शत्रू पक्ष में व झगड़े झंझटों में कुछ भोले पन की कीमती योजनाओं से काम निकालने वाला और कुछ दूसरे स्थानों के संबंध से भी लाभ प्राप्त करने वाला बड़ा गुप्त चतुर होता है ।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से सातवें स्थान

नं० ४७५

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ५ | ४ |
| ७ | | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ बु | १ |
| १० | | १२ |

में हो तो वह मनुष्य धन की ताकत से तथा बिवेक शक्ति के द्वारा दैनिक रोजगार में बड़ी भारी सफलता व वृद्धि पाने वाला और खूब धन कमाने वाला और ससुराल से फायदा उठाने वाला और स्त्री व गृहस्थ के स्थान में धन की ताकत से बड़ा आनन्द पाने वाला किन्तु साथ ही कुछ बंधन सा महसूस करने वाला और बड़ा मान व इज्जत पाने वाला और कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करने वाला और भोगादिक का बड़ा लाभ पाने वाला तथा आमदनी की दैनिक शक्ति का खूब लाभ पाने वाला चतुर धनवान तथा सुन्दरता युक्त सुन्दर रोजगारी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से आठवें स्थान

नं० ४७६

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ५ | ४ |
| ७ | | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ बु |

में हो तो वह मनुष्य धन स्थान की महान हानि पाने वाला और महान कष्ट साध्य कर्मों के द्वारा धन की प्राप्ती पाने वाला तथा धन प्राप्ती के संबंध मे कुछ दूसरे स्थानों के योग से व कुछ गूढ़ातिगूढ़ न्यून कर्मों के योग से काम चलाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व धन शक्ति की बड़ी कमजोरी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में व आयु स्थान में कुछ अशांति के कारण पाने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये

विवेक शक्ति की संकीर्ण क्रिया को सदैव काम में लाने वाला तथा महान गुप्त युक्तियों का बल रखने वाला कुछ चिंतित जीवन होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से नवम स्थान

नं० ४७७

६ ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ १बु १० ११ १२

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से खूब धन लाभ प्राप्त करने वाला तथा अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ती के साधन स्वतः प्राप्त कर लेने वाला तथा धर्म की शक्ति से विवेक के द्वारा भी धन लाभ प्राप्त करने वाला और धन की शक्ति से धर्म का भी पालन करने वाला और बहुत यश व सफलता प्राप्त करने वाला तथा ईश्वर में बड़ा भरोसा करने वाला और बहन भाइयों का लाभ पाने वाला और धन की शक्ति से पुरुषार्थ की वृद्धि करने वाला और धन प्राप्त करने में न्याय का ध्यान रखने वाला तथा पूर्व संचित पुण्यों के कारण बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करने वाला तथा माननीय इज्जतदार बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से दसम स्थान

नं० ४७८

६ ४ ७ ५ ३ ८ २बु ९ ११ १ १० १२

में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान से बहुत धन लाभ प्राप्त करने वाला और व्योपार आदि से विवेक शक्ति के द्वारा खूब धन कमाने वाला तथा धन की ताकत से व्यापार कार की वृद्धि करने वाला और राज समाज में बड़ी इज्जत

पाने वाला तथा पिता स्थान के कारोबार में व धनोन्नति के पक्ष में कुछ बंधनयुक्त व मानयुक्त काम करने वाला तथा मातृ पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला और मकान जमीन की शक्ति प्राप्त करने वाला और धन की ताकत से बहुत प्रकार के सुख साधन प्राप्त करने वाला तथा अनेक प्रकार के ऐश्वर्य पदार्थ प्राप्त करने वाला प्रतिष्ठित होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुद्ध लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य महान लाभ प्राप्त करने वाला और खूब धन कमाने वाला तथा आमदनी के स्थान में कुछ गौरव युक्त बंधन सा प्राप्त करने वाला और विवेक की महान शक्ति से नाना प्रकार के लाभ प्राप्त करने वाला और अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति स्वतह प्राप्त कर लेने वाला और संतान पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला तथा विद्या के स्थान में बहुत कला तथा धन कमाने की बड़ी शक्ति प्राप्त करने वाला और अपने फायदे के संबंध में बड़ी भारी कीमती बातें कहने वाला और बड़ी चतुराई की प्रशंसा पाने वाला बड़ा इज्जतदार धनवान होता है।

नं० ४७९

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करने वाला और धन स्थान की कमजोरी व हानि का योग पाने वाला और

नं० ४८०

| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४बु |
| ७ | ५ | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

बाहरी दूसरे स्थानों के योग से धन की प्राप्ति के साधन पाने वाला और खर्च के योगों से भी धन प्राप्ति के साधन प्राप्त करने वाला और धन संग्रह को महत्व न देकर धन के खर्च से ही अमीरी का योग पाने वाला और विवेक की महान शक्ति से खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करने वाला और शत्रु व रोग और दिक्कतों को हटाने में भी धन की सहायता से काम लेने वाला तथा धन के कोष में अभाव पाने से कुछ कष्ट अनुभव करने वाला होता है।

## सिंहलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरू लग्न के पहिले स्थान

नं० ४८१

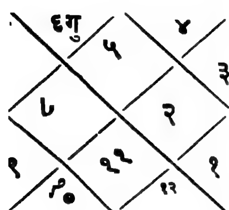
| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५गु | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ |
| १० | | १२ |

में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला तथा बहुत विद्या ग्रहण करने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली किसी पुरातत्व शक्ति का लाभ हृदयबल से प्राप्त करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला और जीवन की दिनचर्या को बड़े भारी बड़प्पन के साथ व्यतीत करने वाला व अंतरज्ञान की ओर बड़े भारी बड़प्पन

की बातें कहने वाला और भाग्यवान कहलाने वाला तथा देह के अन्दर बड़ा प्रभाव वृद्धि व सुन्दरता की कुछ कमी पाने वाला और कुछ अन्दरूनी गूढ़ युक्तियों की लपेट लगाकर महान पाण्डित्य की शक्ति दिखाने वाला तथा गृहस्थिक वातावरण में नीरसता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरू लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ४८२



हो तो वह मनुष्य बड़े भारी अमीरात के ढंग से जीवन का समय व्यतीत करने वाला और धन के कोष में कुछ हानि व कुछ कमजोरी पाने वाला और ननसाल पक्ष में भी हानि पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ बंधन युक्त रहकर उन्नति व मान की वृद्धि करने में बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला तथा पिता के स्थान में व संतान संबंध में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और विद्या संग्रह करने और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली व गम्भीर वस्तु का लाभ प्राप्त करने वाला और धन की वृद्धि करने में जी जान लगाने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरू लग्न से तीसरे स्थान में

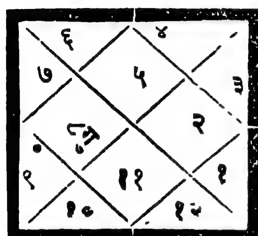
नं० ४८३



हो तो वह मनुष्य उन्नति प्राप्त करने के लिये महान प्रयत्न व महान पुरुषार्थ करने वाला और अच्छी आयु वाला तथा बहन और भाई क स्थान में कुछ क्लेश का योग प्राप्त करने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला और संतान

शक्ति के संबंध में कुछ नीरसता युक्त लाभ पाने वाला और बुद्धि व विद्या की शक्ति से युक्त गुप्त व गूढ़ युक्तियों के द्वारा बहुत लाभ व शक्ति प्राप्त करने वाला तथा दैनिक रोजगार के अन्दर कुछ अभाव सा महसूस करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ बड़प्पन की नीरसता युक्त शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा भाग्यवान समझा जाने वाला धैर्यवान होता है।

जिव व्यक्ति का वृश्चिक का गुरू लग्न से चौथे स्थान
नं० ४८४ में हो तो वह मनुष्य, अपने जीवन की दिनचर्या को बड़े भारी सुख के साथ व्यतीत करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली किसी पूर्व गम्भीर वस्तु का लाभ योग पाकर सुखी होने वाला और बड़ी आयु पाने



वाला तथा कुछ मातृ स्थान के सुख में घाटा पाने वाला और दूसरे शहरों के योग से सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और कुछ कमी के साथ संतान शक्ति प्राप्त करने वाला और गूढ़ विद्या की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और महान खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के संपर्क में बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला तथा स्थानीय सुख में कुछ खरखसा होते हुये भी मस्ती से समय निकालने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरू लग्न से पाँचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी गूढ़ युक्तियों की संग्रहात्मक

नं० ४८५

विद्या को जानने वाला तथा कुछ बाधाओं से युक्त सतान सुख प्राप्त करने वाला और बातों के अन्दर कुछ अनुचित रीति का पुट लगाकर फायदा व मान प्राप्त करने वाला और विद्या ग्रहण करने में व संतान सुख प्राप्त करने में दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी का योग पाने वाला और पुरातत्व शक्ति के बल से कुछ भाग्यवान समझा जाने वाला तथा अच्छी आयु प्राप्त करने वाला तथा देह को मान प्राप्त करने वाला तथा जीवन के समय को मस्ती से निकालने की ही दिमाग में योजनायें रखने वाला और सदैव ही पुरातत्व शैली से बड़ी पेचीदा बातें करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से छटे स्थान

नं० ४८६

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या मे बड़ी भारी अशांति व घिराव सा महसूस करने वाला और संतान कष्ट सहन करने वाला और दिमाग के थकान पाने वाले कार्य को कर कर के जीवन की निर्वाहिक शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा बाहरी स्थानों का विशेष ज्ञान रखने वाला तथा खूब खर्च करने वाला और शत्रु स्थान में महान कूटनीति से काम लेने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला और धन की वृद्धि करने में विशेष प्रयत्न करने वाला तथा बड़ी भेद वाली बातों को

व छिपाव की बातों को काम में लाने वाला गुप्त चतुर अशांत हृदय तथा जीवन की मस्ती के योग से मुक्त रहने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरू लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बडी कठिनाइयों के द्वारा बुद्धि और विदेश योग से दैनिक रोजगार करने वाला और स्त्री स्थान में बड़ी परेशानी व नीरसता का योग प्राप्त करने वाला और रोजगार की संचालन शक्ति को प्राप्त करने में बड़ी बड़ी दिक्कतें व रुकावटें सहने वाला और आयु प्राप्त करने वाला और विद्या व संतान का भी सुख प्राप्त करने में कुछ दिक्कतें सहने वाला और हृदय की प्रपंचिक कार्य शक्ति से बराबर लाभ प्राप्त करने वाला और भाई बहन व पुरुषार्थ शक्ति के संबंध में कुछ नीरसता प्राप्त करने वाला तथा कुछ भोगादिक का अनुचित लाभ पाने की इच्छा रखने वाला कुछ मान युक्त होता है ।

नं० ४८७

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला और संतान कष्ट सहन करने वाला और विद्या स्थान में कुछ कमी व कुछ प्रपंच की महानता पाने वाला तथा दिमाग में कुछ परेशानी मानने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पुरातत्विक व बौधिक शक्ति की महानता

नं० ४८८

पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में मस्ती मानने वाला तथा खूब खर्च करने वाला और मातृ स्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा सुख स्थान में कुछ कमज़ोरी पाने वाला और बाहरी स्थानों के संबंध में विशेष ज्ञान व विशेष प्रभाव का योग पाने वाला तथा धन की वृद्धि चाहने वाला तथा कुछ पेचीदा बातें करने वाला कूट नीतिज्ञ होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरू लग्न से नवम स्थान

नं० ४८६

| | | |
|---|---|---|
| ६ | | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ८ | | २ |
| ९ | ११ | १ गु |
| १० | | १२ |

में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्या ग्रहण करने वाला तथा संतान शक्ति प्राप्त करने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पूर्व संचित शक्ति का भाग्यबल से ही सहारा पाने वाला और भाग्य के अन्दर कुछ परेशानी मानने वाला और बुद्धि व विद्या की गुप्त शक्ति के बल से भाग्य की कुछ शक्ति का विकास करने वाला और मान प्राप्त करने वाला तथा कुछ पेचीदा तौर से महान धार्मिक बातें कहने वाला और दूरदर्शिता की शक्ति पाने वाला तथा यश प्राप्ति में कुछ न्यूनता पाने वाला और जीवन का समय बड़ी भाग्यवानी व बड़ी बुद्धमानी से व्यतीत करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरू लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला और जीवन का समय बड़ी भारी चतुराई और प्रभाव के साथ व्यतीत करने वाला और

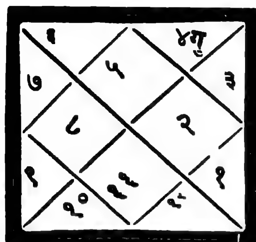
नं० ४९०

संतान शक्ति प्राप्त करने वाला तथा ननसाल पक्ष में हानि का योग पाने वाला तथा शत्रु स्थान में महान गुप्त नीति से काम निकालने वाला और राज समाजमें मान पाने के लिये बड़ी भारी दौड़ धूप व पेचीदा युक्तियों से काम लेने वाला और आयु की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धन की वृद्धि करने के लिये महान प्रयत्न करने वाला तथा मातृ स्थान में व सुख स्थान में कुछ प्रभाव पाने वाला और उन्नति करने के लिये महा कष्ट साध्य उपायों को हृदय की शक्ति से काम में लाने वाला बड़ा स्वाभिमानी कार्यकुशल होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरू लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला और विद्या प्राप्त करने वाला तथा संतान शक्ति प्राप्त करने वाला और जीवन का समय खुश मिजाजी से काटने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पूर्व संचित शक्ति व बुद्धि का लाभ पाने वाला और बुद्धि की महान गूढ़ युक्तियों के द्वारा बहुत लाभ प्राप्त करने वाला किन्तु लाभ के प्रघट स्थान में कुछ परेशानी के योग पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ के दैनिक कार्यों में बड़ी असुविधाओं का योग पाने वाला और भाई बहन व पुरुषार्थ शक्ति के स्थान में भी कुछ न्यूनता पाने वाला होता है।

नं० ४९१

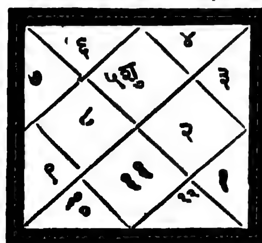
जिस व्यक्ति का कर्क का गुरू लग्न से बारहवें स्थान
नं० ४९२ में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने



वाला और थोड़ी विद्या व थोड़ी संतान वाला और बड़े भारी हेर-फेर से जवाबदार बातें कहने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ बाहरी स्थानों का गौरव व बाहरी स्थानों का ज्ञान प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में व हृदय के अन्दर कुछ दुख सुख का संमिश्रण योग प्राप्त करने वाला और सुख स्थान में कुछ हानि पाने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली गम्भीर वस्तु का लाभ दूसरे स्थानों से विशेष रूप में प्राप्त करने वाला होता है।

## सिंहलग्नान्तरशुक्र फलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न के पहिले स्थान
नं० ४९३ में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ



से बहुत काम करने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला और भाई व पिता की शक्ति को प्राप्त कर के भी उसमें कुछ नीरसता का आभास पाने वाला तथा रोजगार व व्यापार की वृद्धि

करने वाला और स्त्री स्थान में मान व शक्ति प्राप्त करने वाला और भोगादिक की विशेष शक्ति प्राप्त करने वाला और राज समाज में मान की वृद्धि करने के लिए कुछ अधिक परिश्रम करने वाला और महान चतुराइयों से काम निकालने वाला और अपनी देह में कुछ बड़प्पन व शोभा का ध्यान रखने वाला महान कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न मे दूसरे स्थान में

नं० ४६४

हो तो वह मनष्य, धन के कोष स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा भाई और पिता के स्थान संबंध से कमजोरी पाने वाला तथा बाहुबल की शक्ति में भी कमजोरी पाने वाला तथा कुटुम्ब स्थान में भी कमजोरी अनुभव करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ विशेष शक्ति का गौरव अनुभव करने वाला और पुरातत्व स्थान की कुछ विशेष शक्ति प्राप्त करने वाला और आयु स्थान की वृद्धि का योग पाने वाला और राज समाज की शक्ति में कमजोरी पाने वाला और मान सन्मान व इज्जत, आबरू में भी कुछ कमजोरी का योग पाने वाला तथा धन की वृद्धि के लिये गुप्त कर्म शक्ति का प्रयोग गुप्त चतुराइयों के द्वारा करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी महान उद्योग कर्म करने वाला और भाई बहन व पिता आदि की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा राज समाज के संबंध से महान शक्ति व प्रभाव

१९

नं० ४९५

और मान प्राप्त करने वाला तथा अपने बाहुबल की शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि कर के भाग्यवान कहलाने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और धर्म कर्म करने वाला तथा व्यापारादि से भी तरक्की पाने वाला तथा चतुराइयों की शक्ति का महान भरोसा रखने वाला तथा उन्नति प्राप्त करने के लिये महान प्रयत्न करने वाला तथा बड़ा भारी उत्साही व परिश्रमी और बड़ी भारी हिम्मत वाला कार्य कुशल होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ४९६

में हो तो वह मनुष्य बड़े सुख के साथ बड़ा भारी कारबार करने वाला तथा बड़ी भारी मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला और माता पिता व भाई बन्धुओं का सुख प्राप्त करने वाला और राज समाज से महान चतुराइयों के द्वारा बड़ी भारी सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों की बहुत शक्ति प्राप्त करने वाला और अपने बल पुरुषार्थ की शक्ति का गौरव प्राप्त करने वाला और रहने के स्थान में सुन्दरता व सजावट का योग प्राप्त करने वाला और अपने में महान् प्रभाव की शक्ति रखने वाला तथा बड़ा नियमित कार्य कुशल होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या के स्थान में महानता प्राप्त करने वाला, तथा संतान की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा बहन भाई व पिता स्थान की शक्ति से लाभ पाने वाला और राज-नैतिक कायदे कानून की बातों को जानने व कहने वाला और अपने बुद्धि के पुरुषार्थ कर्म के द्वारा महान उन्नति व महान लाभ प्राप्ति के साधन पाने वाला और महान चतुराईयों की बातों को बड़े भारी प्रभाव के साथ कहने वाला और राज समाज से मान व लाभ पाने वाला तथा अपने दिमाग के अन्दर बड़ा भारी गौरव मानने वाला तथा बुद्धि के द्वारा बड़ा प्रभाव ज़नाने वाला व धन कमाने वाला महान चतुर होता है।

नं० ४९७

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो 'वह मनुष्य भाई बहिन और पिता के स्थान में कुछ वैमनस्यता की शक्ति का योग प्राप्त करने वाला और मान उन्नति व पदोन्नति के स्थान में कुछ रुकावटें पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति का योग पाने वाला तथा महान गुप्त चतुराइयों के कर्म योग से उन्नति प्राप्त करने वाला और राज समाज से कुछ सामान्य शक्ति का योग प्राप्त करने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा बड़े रूप से 'कारबार चलाने में' दिक्कतें पाने वाला और

नं० ४९८

गुप्त युक्तियों के पुरुषार्थ बल से शत्रु स्थान में प्रभाव कायम करने वाला और उन्नति प्राप्त करने के लिये महान परिश्रम करने वाला व कुछ घिरावसा महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ४९९

६ ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ ११शु १ १० १२

में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी दैनिक व स्थाई कारबार व रोजगार की शक्ति प्राप्त करने वाला और बहन भाई व पिता स्थान की शक्ति का सुन्दर लाभ पाने वाला और अपनी लौकिक उन्नति करने में महान शक्ति व चतुराइयों का प्रयोग व परिश्रम कर के महान सफलता पाने वाला और राज समाज के संबध में दैनिक कार्यों की शक्ति से बड़ा मान व प्रभाव पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ के स्थान में बड़ी भारी शक्ति और वैभव प्राप्त करने वाला और भोगादिक की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और महान कार्य कुशलता व पुरुषार्थ की शक्ति पाने वाला बड़ा हिम्मतवर होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ५००

६ ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२शु

में हो तो वह मनुष्य बड़ी बड़ी दूर तक की विदेश यात्रा करने वाला और अपने जीवन में एक खास किस्म की गहरी मस्ती का गुप्त योग प्राप्त करने वाला और बहन भाई व पिता के संबंध में कुछ अजीब प्रकार का दुख सुख

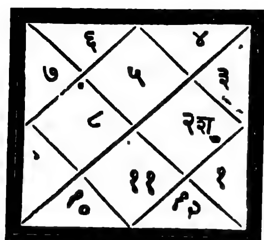
प्राप्त करने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला तथा धन के कोष स्थान की कुछ कमी व कुछ लापरवाही प्राप्त करने वाला और कुटुम्ब की कमजोरी पाने वाला और जीवन की सहायक होने वाली किसी पुरातत्व शक्ति के लाभ का योग प्राप्त करने वाला और महान गूढ़ कर्म की शक्ति की महानता के जरिये से बड़ा प्रभाव व मान प्राप्त करने वाला जंगल का राजा होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति के बल से महान सफलता व उन्नति प्राप्त करने वाला और भाई बहन व पिता स्थान की शक्ति का बड़ा फायदा उठाने वाला और महान चतुराइयों के कर्म योग से भाग्य की वृद्धि करने वाला और धर्म कर्म का लाभ प्राप्त करने वाला तथा ईश्वरीय सहायताओं का चमत्कार पाने वाला और सफलताओं से यश व प्रशंसा प्राप्त करने वाला और राज समाज से मान व सफलता प्राप्त करने वाला और अपने बाहुबल की शक्ति से महान वृद्धि प्राप्त करने वाला और बड़ी सज्जनता के ढंग से काम करने वाला बड़ा प्रभाव शाली होता है।

नं० ५०१

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई बहन व पिता स्थान की शक्ति का लाभ पाने वाला और राज समाज की शक्ति का बड़ा लाभ पाने वाला और मान प्रतिष्ठा के स्थान में बड़ी

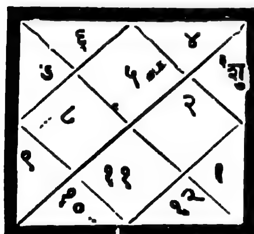
नं ५०२ तरक्की पाने वाला और माता के संबंध से




शक्ति प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की शक्ति भी प्राप्त करने वाला और बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और उन्नति प्राप्त करने के लिये महान पुरुषार्थ कर्म की शक्ति से काम लेने वाला तथा महान चतुराइयों की गहरी युक्ति से व्यापार आदि की बड़ी सफलता पाने वाला और खूब सुख प्राप्त करने वाला बड़ी भारी उमंगों वाला वैभव युक्त बड़ा मेहनती स्वाभिमानी होता है ।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से ग्यारहवें

नं० ५०३




स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बाहुबल की शक्ति से बहुत धन कमाने वाला और महान चतुराइयों के कर्म योग से बड़ा भारी मान व प्रभाव प्राप्त करने वाला और पिता व भाई बहन की शक्ति का बड़ा लाभ पाने वाला और राज समाज से फायदा उठाने वाला तथा व्यापार आदि का लाभ पाने वाला और पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि पाने वाला तथा विद्या स्थान में बड़ी सफलता पाने वाला और संतान स्थान से शक्ति प्राप्त करने वाला और बात चीत के अन्दर चतुराई की महान शक्ति का परिचय देने वाला तथा बड़े २ महान लाभ पाने वाला बड़ा उत्साही कर्मशील होता है ।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान

नं० ५०४

में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला तथा पिता व भाई के स्थान में कमजोरी व हानि का योग पाने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों के संपर्क से शक्ति प्राप्त करने वाला और व्यापार आदि में तथा मौजूदा परस्थिती में कुछ हानि व कमजोरी सहने वाला और राज समाज के स्थानों में कुछ प्रभाव की कमजोरी पाने वाला और बाहरी स्थानों में प्रभाव पाने वाला और खर्च की शक्ति से व चतुराइयों के योग से शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वला और बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला तथा छिपी ताकत से कांम करंने वाला होता है।

## सिंहलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न के पहिले स्थान

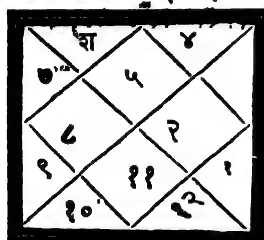
नं० ५०५

में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के द्वारा कुछ कठिन परिश्रम के दैनिक रोजगार को करने वाला और गृहस्थ व स्त्री से संबंधित मार्ग में बड़ी कठिनाइयों के द्वारा अच्छाई का योग व प्रभाव प्राप्त करने वाला और शत्रु पक्ष से

भी कुछ परेशानियों के साथ २ प्रभाव की शक्ति पाने वाला और देह के अन्दर कुछ रोग व कुछ घिराव सा व कुछ गुप्त चिंता आदि का योग पाने वाला और भोगादिक की कामेच्छा का विशेष योग पाने वाला और उन्नति के मार्ग में महान पुरुषार्थ कर्म से काम लेने वाला और बड़ी भारी दौड़ धूप की शक्ति से व युक्ति से काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन के स्थान में कुछ पेचीदा तरकीबों के दैनिक कार्यों के द्वारा कुछ सफलता पाने वाला तथा की वृद्धि के लिये कुछ बंधन युक्त परिश्रम करने वाला और धन स्थान में कभी २ कुछ हानियां भी पाने वाला और लाभ स्थान की वृद्धि करने के लिये महान प्रयत्न शील रहने वाला तथा मातृ स्थान में व सुख स्थान में बाधायें पाने वाला और मकानादि रहने के स्थान में भी कुछ अशांति का वातावरण पाने वाला और स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान संबंध में व शत्रु स्थान में कुछ संबंध युक्त शैली के योग से काम करने वाला कुछ अशांत जीवन होता है।

नं० ५०६




जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य महान परिश्रम व पुरुषार्थ की शक्ति प्राप्त करने वाला और शत्रु स्थान में महान प्रभाव शक्ति से व बाहुबल की शक्ति से विजय पाने वाला

नं० ५०७

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ६ | ४ | ३ |
| ७श | ५ | | |
| | ८ | २ | |
| ९ | | | १ |
| | १० ११ | १२ | |

और ननसाल से कुछ प्रभाव पाने वाला और अपने पुरुषार्थ बल से दैनिक रोजगार की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री व गृहस्थ में प्रभाव की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला और संतान पक्ष में कुछ अशांति का योग पाने वाला और धर्म स्थान में व भाग्य स्थान में कुछ कमी व कुछ लापरवाही का योग प्राप्त करने वाला और खर्च स्थान में कुछ अशांति पाने वाला व बाहरी स्थानों में कुछ प्रभाव जमाने वाला तथा बड़ी भारी हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ स्थान में

नं० ५०८

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ६ | ४ | |
| ७ | ५ | | ३ |
| | ८श | २ | |
| ९ | ११ | | १ |
| | १० | १२ | |

हानि व कुछ कलेश का योग पाने वाला और अपने स्थानमें दैनिक रोजगार के योग से प्रभाव की महान शक्ति पाने वाला और शत्रु को दबाने वाला किन्तु सुख शांति में बाधायें पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ अशांति युक्त सुख का साधन पाने वाला और देह के स्थान में कुछ सुन्दरता की कमी व अशांति पाने वाला और प्रभाव उन्नति के लिये व लौकिक और गृहस्थिक उन्नति करने के लिये महान परिश्रम व पेचीदा तरकीबों से काम लेने वाला और रोगा-

दिक झंझटों पर विजय पाने वाला बड़ा धैर्यवान हठी होता है ।

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से पंचम स्थान

नं० ५०९

में हो तो वह मनुष्य अपने बुद्धि योग से बड़ी संलग्नता पूर्वक दैनिक रोजगार खब करने वाला और अधिक भोगादिक की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा भोगादिक की महान योजनायें दिमाग के अन्दर सदैव बनाने वाला और सतान पक्ष में कुछ फिकर व कुछ नीरसता का योग पाने वाला और विद्या व बुद्धि के स्थान में कुछ लौकिक ज्ञान व गुप्त युक्तियों की व्यवहारिक शक्ति को प्राप्त करने वाला और धन की वृद्धि करने का महान प्रयत्न करने वाला व दिमाग में कुछ परेशान रहने वाला बड़ा भारी कार्य कुशल व शत्रु को प्रभावित करने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० ५१०

में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष से सदैव झंझट और प्रभाव का योग प्राप्त करने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक की कुछ कमी व कुछ अनुचित लाभ प्राप्त करने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करने वाला और दैनिक रोजगार में बड़ा परिश्रम व बड़ी दिक्कतें व रुकावटें सह सह कर के प्रभाव पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी सहने वाला व प्रभाव पैदा करने वाला व

महान गुढ़ युक्तियों को काम में लेने वाला और अपने बल पुरुषार्थ की महान शक्ति का सहयोग प्राप्त करने वाला चतुर बहादुर होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत परिश्रम व युक्तियों के द्वारा दैनिक रोजगार की स्थिर शक्ति प्राप्त करने वाला और भोग कामादिक की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता के साथ २ विशेष शक्ति प्राप्त करने वाला और धर्म को हानि पहुँचाने वाला तथा भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी व कुछ लापरवाही का योग पाने वाला और यश की कमी पाने वाला तथा लौकिक व दैनिक कार्यों को बड़ी मुस्तैदी व परेशानियों के साथ संलग्नता पूर्वक करने वाला और देह में कुछ रोग व कुछ परेशानी पाने वाला और मातृ स्थान में व सुखशांति के स्थान में बड़ी २ बाधायें पाने वाला बड़ा मेहनती व होशियार तथा शत्रु पर प्रभाव जमाने वाला होता है।

नं० ५११

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में विशेष हानि पाने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में अत्यन्त कठिनाइयाँ सहने वाला और विदेश आदि के योग से तथा महान पेचीदा तरकीबों से तथा महान परिश्रम के योग से

नं० ५१२

रोजगार व गृहस्थ की संचालन शक्ति प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में भी कष्ट सहन करने वाला तथा विद्या स्थान् में कुछ हानि पाने वाला और बातचीत के अन्दर कुछ रूखेपन की व अधिक बोलने की शक्ति प्राप्त करने वाला और अच्छी आयु पाने वाला किन्तु आयु स्थान में कभी २ बड़ी निराशायें व जीवन की दिनचर्या में बड़ी अशांति का योग पाने वाला और राज समाज व मान ऊन्नति के पक्ष में वृद्धि पाने के लिये महान प्रयत्न करने वाला और शत्रु पक्ष में बड़ी गुप्त चालों से काम लेने वाला गुप्त शक्तिवान होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में बड़ी कमजोरी मानने वाला और धर्म को कुछ हानि पहुंचाकर अपने प्रभाव की वृद्धी पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ की शक्ति में कुछ कमजोरी पाने वाला और ईश्वर की शक्ति में विश्वास कुछ कमी पाने वाला और महान पुरुषार्थ व परिश्रम की शक्ति से अधिक काम लेने वाला और कुछ धन लाभ की पूर्ती पाने वाला तथा आमद की वृद्धि करने के लिये महान प्रयत्न करने वाला और पेचीदा चालों की शक्ति का महान प्रयोग करने में सज्जनताई की आड़ से सफलता पाने वाला और बरक्कत की कमी पाने वाला तथा यश में कमी पाने वाला कुछ अशांत प्रद होता है।

नं० ५१३

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ५ | ४ |
| ७ | ८ ... २ | ३ |
| ९ | ११ | १श |
| १० | | १२ |

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से दसम स्थान

नं० ५१४

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और दैनिक कार्य क्रम की योग्यता से बड़ा मान प्राप्त करने वाला और राज समाज व मान उन्नति के स्थान में महान परिश्रम व महान प्रयत्न कर के सफलता पाने वाला और स्त्री व भोगादिक की महान शक्ति प्राप्त करने वाला और खूब खर्च करने वाला और बड़ी भारी युक्तियों की शक्ति से लौकिक कार्यों में बड़ी उन्नति व मान पाने वाला और दनिक कार्यों की महानता से शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला और सुख शांति में कुछ बाधायें पाने वाला और माता पिता के स्थान में कुछ अशांति पाने वाला और बड़ा भारी कार्य कुशल महनती होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से ग्यारहवें

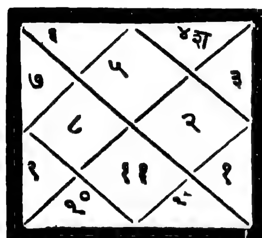
न० ४१५

स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक कार्य क्रम व रोजगार की लाइन में बहुत धन कमाने वाला और देह में कुछ रोग व कुछ अशांति पाने वाला और धन लाभ की वृद्धि करने के लिये कुछ अनधिकार प्रयत्न भी करने वाला और बड़ भारी परिश्रम व युक्तियों से बहुत बहुत प्रकार के फायदे उठाने वाला तथा बहुत प्रभाव पाने वाला और स्त्री तथा भोगादिक का बड़ा लाभ पाने वाला और शत्रु

स्थान में बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्य में बड़ी परेशानियों का योग पाने वाला और अधिक नफा खाने वाला और महान गूढ़ युक्तियों का इस्तेमाल कर के जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ हानि पाने वाला और खर्च की ताकत से शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला तथा धन के कोषकी वृद्धि करने के लिये बाहरी रोजगार की शक्ति और परिश्रम की शक्ति से काम लेने वाला और दूसरे स्थानों के संबंध से दैनिक रोजगार व प्रभाव की शक्ति प्राप्त करने वाला और भाग्य को व ईश्वर को कम मानने वाला और भाग्य स्थान में व धर्म-स्थान में कुछ हानि पाने वाला और यश में कुछ कमी पाने वाला और झगड़े व रोगादिक के संबंधों में भी खूब खर्च करने वाला कुछ अशांति युक्त होता है।

नं० ४१६



# सिंहलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का राहू लग्न के पहिले स्थान नं ५१७ में हो तो वह मनुष्य देह में कमजोरी व कुछ कमी पाने वाला और दिमाग में कुछ चिंता व कुछ शक्ति पाने वाला और देह की सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला और देह में कुछ थकान पाने वाला और देह के ऊपर वाले हिस्से में कभी कभी कोई सांघातिक चोटों का भी योग पाने वाला और महान छिपाव की शक्ति से काम लेनें वाला और कुछ अनधिकार लाभ पाने वाला तथा अपने अन्दर महान स्थिर शक्ति को पाने का गुप्त रूप से महान प्रयत्न करने वाला और अन्दरूनी कुछ भय माननें वाला तथा बहुत ऊँचा स्वार्थ सिद्ध करने की योजनायें बनानें वाला और प्रभाव रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहू लग्न से दूसरे स्थान नं० ५१८ में हो तो वह मनुष्य धन के कोष की वृद्धि करने के लिये गुप्त रूप से महान प्रयत्न करने वाला तथा धन के संबंध से किसी दूसरे स्थान के धन का कुछ अनधिकार लाभ पाने में सफलता और मुसीबत का समीश्रण योग पाने वाला और कभी कभी धन स्थान में कुछ हानियां भी पाने वाला और धनवान समझा जाने वाला तथा धन के स्थान में कुछ

अन्दरूनी कमजोरी को महसूस करने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा धन प्राप्तिके लिये महान गहरी युक्तियों के गुप्त साधन व परिश्रम व परेशानियों से काम लेने वाला तथा कुछ अशांतप्रद होता है।

जिस व्यक्ति का तूला का राहू लग्न से तीसरे स्थान

नं० ५१९

में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी कूट युक्तियों की शक्ति प्राप्त करने वाला और महान प्रभाव की शक्ति प्राप्त करने वाला और भाई बहन के स्थान में कुछ विग्रह व कुछ अशांति का योग पाने वाला और बड़ा भारी दौड़ धूप करने में अपने अन्दर अन्दरूनी शक्ति का संचार रखने वाला और अपने बाहुबल के अन्दर महान हिम्मत शक्ति रखने वाला तथा अपने स्वार्थ सिद्धी करने के स्थान में कमजोरी व शील से रहित होकर काम लेने वाला और कठिन से कठिन कार्यों को भी पूरा करने की महान धैर्य शक्ति व कूटशक्ति रखने वाला और दिक्कतों व मुसीबतों की परवाह न करने वाला बड़ा गुप्त चतुर और अन्त में धन की वृद्धि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से चौथे स्थान

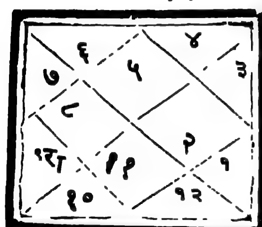
नं० ५२०

में हो तो वह मनुष्य माता की व मातृ स्थान की हानि या वियोग का योग पाने वाला और सुख प्राप्ती के साधनों में बड़ी हानि पाने वाला और मकान जायदाद की कमी पाने वाला और सुख प्राप्ती के स्थान में कुछ

दूसरों का भी सहारा लेने वाला और कुछ अन्दरूनी अशांति महसूस करने वाला तथा सुख प्राप्ति के लिये बड़े २ कठिन और गुप्त कर्म करने वाला और बड़ी २ अशांतियां सहने वाला तथा कभी २ घरेलू वातावरण में घोर संकट काल भी सहने वाला और बहुत परेशानियों के बाद तथा बहुत समय के बाद सुख प्राप्ति साधन बड़ी कठिनाइयों के द्वारा प्राप्त करने वाला होता है ।

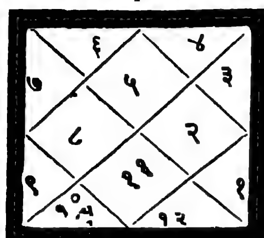
जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य महान असत्य की शक्ति से बातें करके काम निकालने वाला तथा संतान पक्ष में महान कष्ट सहन करने वाला और विद्या प्राप्ति के स्थान में कमजोरी पाने वाला तथा दिमाग में परेशान रहने वाला और कुछ पेचीदा व कडवी बातें कहने वाला और बुद्धि के अन्दर बहुत २ प्रकार का छिपाव रखने वाला और कुछ ठीक तौर से व ठीक शब्दों में अपने मंतव्य को जाहिर करने में बडी मुश्किलें पाने वाला और कभी २ दिमाग के अन्दर मूर्छाओं की सी परेशानी का योग प्राप्त करने वाला और सोच विचारों में डूबा रहने वाला कुछ अशांति युक्त होता है ।

नं० ५२१




जिस व्यक्ति का मकर राहु लग्न से छटे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में महान प्रभाव की शक्ति रखने वाला तथा दिक्कतों व मुसीबतों पर हावी रहने वाला और महान हिम्मत की शक्ति से काम लेने वाला

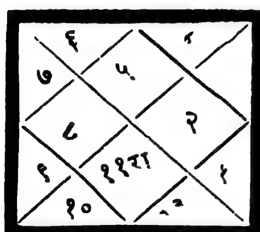
नं० ५२२ और ननसाल पक्षकी हानि पाने वाला




और छिपी हुई गूढ़ युक्तियों से व गुप्त चतराइयों सें महान स्वार्थ की सिद्धी करने वाला और नरमाई व शील संतोष का उलंघन करने बाला और अपनी छिपी युक्तियों की सफलताओं से खुशी मानने वाला और दुख तथा भय की आशंकाओं से मुक्त रहने वाला बड़ा होशियार प्रभावशाली विजयता होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से सातवें स्थान

नं० ५२३ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में




अशांति का योग पाने वाला तथा दैनिक रोजगार के अन्दर भी बड़ी परेशानियां सहने वाला और भोगादिक इन्द्री संबंधी कुछ विकार का योग पाने वाला और भोगादिक के पक्ष में कुछ अतृप्त वासनाओं को तृप्त करने की इच्छा रखने वाला तथा कुछ भोगादिक के स्थान में बड़ी भारी गुप्त योजनायों से काम लेने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी पोशीदा युक्तियों से व कठिनाइयों से काम करने वाला और गृहस्थ के अन्दर कभी कभी महान संकटों का सामना पाने वाला और अन्त में कुछ मजबूती पाकर दैनिक व्यवस्था में सफल होने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से आठवें स्थान

नं० ५२४

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में बड़ी परेशानी मानने वाला और पेट के अन्दर कुछ अन्दरूनी विकार पाने वाला तथा जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली स्थाई वस्तु की कुछ हानि पाने वाला और महान गुप्त योजनाओं से व बहुत कष्ट साध्य युक्तियों से जीवन को शक्ति प्राप्त करने वाला और आयु के स्थान में कभी कभी सांघातिक हानियों के योग भी प्राप्त करने वाला और बहुत बहुत सी कठिनाइयां सहने के बाद अन्त में शांति के कारण पाने वाला गुप्त चिंतित होता है।

• जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से नवम स्थान

नं० ५२५

में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में बड़ी भारी अशांति व हानियों के योग प्राप्त करने वाला और धर्म के संबंध में बड़ी बड़ी कमजोरियां पाने वाला और ईश्वर की निष्ठा में भरोसे में हानि पाने वाला और भाग्य की उन्नति करने के लिये बहुत बहुत गुप्त पेचीदा तरकीबों से काम लेने वाला तथा भाग्य वृद्धि के लिये धर्म अधर्म की परवाह न करने वाला और भाग्य स्थान में बड़ी बड़ी रुकावटें पाते रहने के बाद अन्त में सफलता शक्ति पाने वाला और सज्जनता के बाने के अन्दर कुछ अनुचित स्वार्थ की पूर्ती करने वाला तथा यश की कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से दसम स्थान
नं० ५२६

६ ४ ७ ५ ३ ८ २रा ९ ११ १ १० १२

मे हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में बड़ी कठिनाइयां सहने वाला और राज समाज के संबंध में भी कुछ कठिनाइयों के योग पाने वाला तथा उन्नति को प्राप्त करने के लिये महान गुप्त युक्तियों के द्वारा कार्य करने वाला और मान उन्नति व पदोन्नति में रुकावट पाने वाला और कभी २ इज्जत आबरू के स्थान में घोर सकट काल का योग प्राप्त करने वाला और बहुत दिक्कतों क बाद बड़ी राज नैतिक तरकीबों से उन्नति का मार्ग पाने 'वाला तथा बड़े बड़प्पन से रहने वाल होता है ।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से ग्यारहवें
नं० ५२७

६ ४ ७ ५ ३रा ८ २ ९ ११ १ १० १२

में हो तो वह मनुष्य बहुत जबरदस्त आमदनी पाने वाला और लाभ प्राप्ति के स्थान में महान पेचीदा युक्तियों का शक्तिशाली प्रयोग करने वाला तथा गुप्त का सा बहुत धन प्राप्त करने वाला और प्राप्ति के स्थान में महान स्वार्थ युक्त होकर स्थिर शक्ति का बड़ी भारी हिम्मत के साथ प्रयोग करने वाला और ज्यादा से ज्यादा नफा खाने की तरकीबें निकालने वाला और धन की प्राप्ति के स्थान में कभी भी संतोष नहीं मानने वाला तृष्णावन्त होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला

नं० ५२८

तथा खर्च के कारणों से महान कष्ट अनुभव करने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों के संबंध से भी परेशानी सहने वाला और बड़ी २ दिक्कतों से व चिंताओं से खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करने वाला और कभी २ खर्च के मार्ग में घोर संकटों का सामना पाने वाला तथा बड़ी २ गुप्त युक्तियों से खर्च की शक्ति पाने वाला तथा बहुत समय बाद खर्च की लाइन में चिंताओं से मुक्त होने वाला होता है।

## सिंहलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न के पहिले स्थान

नं० ५२९

में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के अन्दर कुछ कमजोरी व कुछ कमी महसूस करने वाला और देह में कभी कभी कोई मृत्यु तुल्य खतरे का योग प्राप्त करने वाला और देह से महान परिश्रमी कार्य करने वाला और देह में कुछ सुन्दरता की भी कुछ कमी का योग पाने वाला तथा देह के संबंधित अंधा धुन्दी भावनाओं के द्वारा गुप्त रूप से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने वाला और अपने

मान व गौरव में कुछ कमी महसूस करने वाला किन्तु फिर भी अपनी शक्ति के गुप्त बल से बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और हिम्मतवर हेंकड़ी रखने वाला व भोगादिक की भी बड़ी शक्ति रखने वाला तथा बड़ी भारी दौड़ धूप करने वाला होता है।

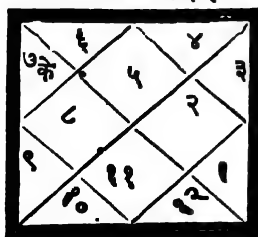
जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन के कोष स्थान में कुछ हानि व कुछ कमजोरी पाने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये अपनी गुप्त शक्ति का महान प्रयोग करने वाला और धन के संबंध में महान परिश्रम व महान दौड़ धूप की अधा धुन्दो से काम लेने वाला और आंतरिक धारणा शक्ति के बल से धन वृद्धि के मार्ग में कभी निराश व हताश न होने वाला बल्कि उत्तरोत्तर प्रयत्न को सफल कर के धन की प्राप्ति में ही लगा रहने वाला और अन्त में धन की वृद्धि को प्राप्त कर लेने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ कमजोरी का योग पाने वाला तथा लौकिक वृद्धि के अन्दर महान धैर्य से काम लेने वाला होता है।

नं० ५३०




जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहुबल की महान शक्ति को प्राप्त करने वाला और महान पुरुषार्थ व महान परिश्रम करने वाला और उन्नति करने के लिये युक्ति व शक्ति के संमिश्रण, योग से अंधाधुन्द काम करने वाला और सफलता प्राप्त

न० ५३१



करने की महान उमंगों व तरगों की शक्ति से विजयी होने वाला और बहन भाई के स्थान में कुछ कमी या कुछ अशांति पाने वाला और बड़ी भारी हिम्मत रखने वाला तथा प्रभाव की महान वृद्धि पाने वाला और नरमाई व शील की पर-वाह न करने वाला और सदैव अपने स्वार्थ सिद्ध करने में तत्पर रहने वाला शक्ति शाली होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के स्थान में कुछ हानि व कमी का योग पाने वाला और मातृ भूमि व जन्म भूमि से वियोग पाने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों में बड़े २ विघ्न बाधायें पाने वाला तथा रहने के स्थान में व मकान जायदाद के संबंध में भी कमी पाने वाला और स्थान परि-वर्तन का योग प्राप्त करने वाला तथा कुछ अशांति युक्त वातावरण में रहने वाला और थोड़ी आराम पाने वाला और कभी २ सुखशांति के स्थान में घोर संकट काल भी प्राप्त करने वाला और बहुत सी कठिनाइयां सहते रहने के बाद अन्त में सुख की मजबूती साधन और आन्तरिक धैर्य की शक्ति प्राप्त करने वाला होता है।

नं० ५३२

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के महान परिश्रम से विद्या ग्रहण करने वाला और संतान पक्ष में कुछ कष्ट सहन करने वाला और ज्ञान तथा विवेक की वृद्धि करनेके लिये तादाद से ज्यादा मेहनत करने वाला किन्तु फिर भी दिमाग की शक्ति

नं० ५३३

६ ४
७ ५ ३
८ २
के९ ११ १
१० १२

का कुछ प्रभाव महसूस करने वाला और कुछ परेशानी मानने वाला तथा बातचीतों के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव दिखाकर काम निकालने वाला किन्तु यथार्थ मंतव्य या यथार्थ तत्व को ठीक तौर से समझाने में कुछ मुश्किल महसूस करने वाला और आन्तरिक धारण शक्ति का बल प्राप्त करने वाला तथा अपनी बात पर अड़कर काम करने वाला होता है।

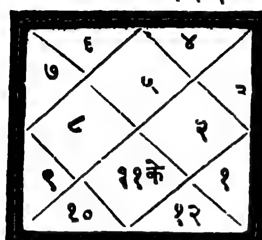
जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से छटे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में महान प्रभाव की शक्ति से काम लेने वाला और रोग व दिक्कतों का नाश कर देने वाला तथा ननसाल पक्ष की हानि पाने वाला और बाहुबल की शक्ति व परिश्रम से महान बिजय पाने वाला तथा बड़ी से बड़ी मुसीबतों में भी धैर्य की शक्ति को धारण करने वाला और शील का उलंघन करने वाला तथा महान स्वार्थ सिद्धि करने वाला और बड़ी बहादुरी रखने वाला तथा बड़ी भारी हिम्मत वाला और कठिन से कठिन कार्य को पूरा करने के लिये सदैव तत्पर रहने वाला बड़ा भारी प्रभाव शाली होता है।

नं ५३४

६ ४
७ ५ ३
८ २
९ ११ १
१० के १२

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं० ५३५




में हो तो वह मनुष्य, स्त्री स्थान में बड़ी हानि पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक की विशेष शक्ति पाने वाला तथा दैनिक रोजगार के स्थान में बड़ी भारी मेहनत करने वाला तथा दैनिक रोजगार में उन्नति प्राप्त करने के लिये अंधा धुन्द शक्ति का प्रयोग कर के आन्तरिक धारणा के बल से सफल होने वाला और कभी कभी रोजगार के स्थान घोर संकट काल का योग प्राप्त करने वाला और स्त्री भोगादिक की लाइन में व रोजगार की लाइन में कुछ अनधिकार फायदा उठाने वाला और कुछ गुप्त हिम्मत व गुप्त भय की संमिश्रण शक्ति से गृहस्थिक कार्य दैनिक रूप से करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से आठवें स्थान

नं० ५३६




में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में महान परेशानियों का योग पाने वाला और पेट के अन्दर कुछ अन्दरूनी बीमारी या शिकायत सहने वाला और कुछ पूर्व संचित जीवन की सहायक होने वाली वस्तु की कुछ हानि पाने वाला और जीवन में कुछ गूढ़ातिगूढ़ शक्ति का अन्दरूनी संचार पाने वाला और आयु स्थान में कभी कभी महान सांघातिक हानि का योग भी प्राप्त करने वाला और जीवन की निर्वाहक शक्ति को प्राप्त करने के लिये महान कष्ट साध्य कठिन परिश्रम करने वाला और अन्त में

बड़ी बड़ी मुसीबतों के बाद जीवन की निर्वाहक शक्ति का बल प्राप्त करने वाला तथा बड़ी छिपाव शक्ति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से नवम स्थान

नं० ५३७

में हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान में बड़ी बड़ी दिक्कतें सहने वाला और भाग्य की उन्नति के मार्ग में रुकावटें व कुछ हानियां सहने वाला और धर्म पालन के संबंध में बड़ी हानियों का व रुकावटों का योग प्राप्त करने वाला और ईश्वर की यथार्थ निष्ठा में कमजोरी पाने वाला तथा यश प्राप्ति के स्थान में बड़ी कमी पाने वाला और कुछ उग्रधर्म का पालन करने वाला और भाग्य की उन्नति करने के लिये महान परिश्रम करने वाला तथा आन्तरिक धारणा की शक्ति से भाग्योन्नति के मार्ग में अंधा धुन्दी से अग्रसर होने वाला और अन्त में भाग्य की मजबूती का योग पाने वाला कुछ चिंतित होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से दशम स्थान में

नं० ५३८

हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ हानियों का योग पाने वाला तथा कारबार व्योपार आदि के स्थान में महान परिश्रम करने वाला व कठिनाइयां सहने वाला और राज समाज में उन्नति पाने के लिये बड़ी २ दिक्कतें सहने वाला और मान उन्नति व पद उन्नति के लिये महान

चतुराइयों की गुप्त चालों के अन्दर कठिन परिश्रम करने वाला और कभी २ इज्जत आबरू के स्थान में घोर संकट काल का योग भी प्राप्त करने वाला और महान धैर्य की शक्ति से बड़ी दिक्कतों के बाद उन्नति के मार्ग को प्राप्त करने वाला तथा संलग्न मेहनती गुप्त पुरुषार्थी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आमदनी के स्थान में कुछ न्यून परिश्रम की शक्ति से काम करने वाला और कुछ न्यून फायदा भी उठाने वाला तथा लाभ प्राप्ति के स्थान में कुछ असंतोष मानने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये कुछ कष्ट साध्य कर्म के योग से सफलता पाने वाला और कुछ अनुचित लाभ भी प्राप्त करने वाला और कुछ धन प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये दूसरों के नफा नुकसान की भी परवाह न करने वाला तथा धन के लिये कुछ तादाद से ज्यादा मेहनत करने वाला और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती होने में कुछ कमजोरी व छिपी शक्तियों का योग पाने वाला बड़ा गुप्त धैर्यवान होता है।

न० ५३९

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला तथा खर्च के स्थान में महान अशांति का योग प्राप्त करने तथा कुछ कष्ट साध्य कर्म के योग से खर्च की शक्ति प्राप्त करने वाला और खर्च शक्ति की प्राप्ति के लिये महान कठिन

न० ५४०

परिश्रम करने वाला और खर्च के स्थान में कभी २ घोर संकट व मार्मिक वेदनाओं का अनुभव करने वाला और बाहरी स्थानों के संबंधित परिश्रम में कुछ अशांति के कारण पाने वाला तथा बहुत सी दिक्कतें सह २ करके आन्तरिक धैर्य से काम लेने वाला और अन्त में खर्च की कुछ मजबूती का योग पाने वाला होता है।

## कन्यालग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला व देह में दुर्बलता व कमजोरी पाने वाला तथा अन्य स्थानों के संबंध से प्रभाव पाने वाला व देह के परिश्रम से खर्च चलाने वाला तथा दैनिक रोजगार को खर्च की ताकत से कुछ सचालन करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और दूसरे स्थानों में आने जाने वाला व रोजगार में कुछ नुकसान व कमजोरी भी पाने वाला और देह की कमजोरी में भी गुस्सा रखने वाला तथा खर्च करने की प्रभावशक्ति रखने वाला कुछ फिकर मंद होता है।

नं० ५४१

७ ५
८ ६सू ४
९ ३
१० १२ २
११ १

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान में

नं० ५४२

हो तो वह मनुष्य धन की बड़ी हानि पाने वाला और धन को बेजा तौर से खर्च करने वाला और धन संग्रह न कर सकने का कष्ट पाने वाला और कुटुम्ब की हानि पाने वाला व अन्य स्थान से संबंधित परेशानियाँ द्वारा धन का थोड़ा सुख उठाने वाला व पुरातत्व का लाभ पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ प्रभाव पाने वाला तथा गूढ़ और पेचीदा युक्तियों से काम निकालने वाला थोड़ा खर्च करने वाला होता है।

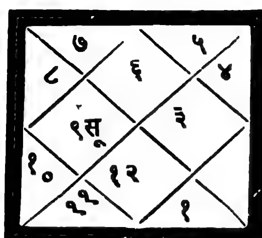
जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

नं० ५४३

में हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम से खर्च चलाने वाला तथा भाई को नुकसान पहुंचाने वाला और अपने पुरुषार्थ बल से कुछ हानि पाने वाला और भाग्य में कुछ कमजोरी व चिंता महसूस करने वाला और धर्म को कुछ हानि पहुचाने वाला और दूसरे अन्य स्थानों का बल पाने वाला तथा बड़ी हिम्मत वाला और घुमाव फिराव की शक्ति का उपयोग करने वाला और खर्च की शक्ति से बड़ा प्रभाव पाने वाला बड़ा मेहनती होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख प्राप्ति के साधनों के लिये खर्च करने वाला और सुख पूर्वक खर्च चलाने वाला और सुख के साधनों में कमी पाने वाला और मातृ स्थान में कुछ

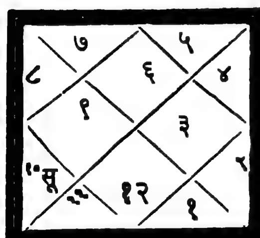
नं० ५४४




कमी व वियोग पाने वाला और पिता के स्थान से कुछ कमजोरी पाने वाला और व्यापार के बड़े कामकाज में भी कमजोरी पाने वाला व दूसरे अन्य स्थानों के संबंध से अच्छाई और सुख प्राप्त करने वाला और राज समाज एवं मान वृद्धि के योग में कुछ कमी पाने वाला और घर के अन्दर खर्च शक्ति का प्रभाव रखने वाला कुछ अशांत प्रद होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान

नं० ५४५




स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि की परेशानियों से खर्च चलाने वाला और विद्या स्थान में कमी पाने वाला और संतान संबंध में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला तथा कुछ चिंतित दिमाग रहने वाला और दूसरे अन्य स्थानों से संबंधित परेशानियों से लाभ की योजना बनाने वाला और लाभ में कुछ कमजोरी पाने वाला और अपनी कमजोर बातों को भी जोरदार बताने वाला एवं गुस्सा रखने वाला और अपनी वाणी द्वारा घुमाव फिराव से बातें कहने वाला और अपने मंतव्य को ठीक तौर से पूरा न समझा सकने वाला चंचल दिमाग वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से छठे स्थान

न० ५४६

में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता युक्त कर्म से खूब खर्च चलाने वाला और खर्च को रोकना चाहने पर भी न रोक सकने वाला और खर्च के संबंध में कुछ अड़चन और कुछ नीरसता का योग पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और कुछ रोगादि झगड़े तलब मामलों में खर्च का योग पाने वाला और खर्च के बल की हेंकड़ी या प्रभाव रखने वाला और खर्च में व प्रभाव वृद्धि में कुछ अन्य स्थानों का संबंध पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

नं० ५४७

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार से खर्च चलाने वाला और रोजगार में कुछ कमजोरी व अन्य स्थान का संबंध भी पाने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ हानि या कमजोरी पाने वाला और गृहस्थ सुख में कुछ कमी व अशांति का योग पाने वाला और खर्च के योग से देह में कुछ अशांति का योग पाने वाला और देह में कुछ दुर्बलता का योग पाने वाला व रोजगार के पक्ष में कुछ हेर फेर से काम चलाने वाला तथा गृहस्थ के अंदर खर्च शक्ति का प्रभाव पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य स्थानों के संपर्क से पुरातत्व का लाभ व अधिक खर्च करने वाला और संचित होने

न० ५४८

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १सू

वाले धन के काम में कुछ कमजोरी पाने वाला व कुटुम्ब स्थान में भी कुछ कमजोरी पाने वाला व जीवन की दिनचर्या को बड़े शानदार खर्च की योजनाओं के द्वारा व्यतीत करने वाला और प्रभाव व मस्ती पाने वाला और विदेश आदि का बड़ा योग पाने वाला और खर्च के मामले में बडी गूढ़ युक्तियों से व कुछ मुसीबतों के योग से काम लेने वाला तथा धन की संग्रह शक्ति को कुछ मामूली महत्व देने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से नवम स्थान

नं० ५४९

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २म ११ १

में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति से खर्च करने वाला किन्तु भाग्य में कमजोरी पाने वाला तथा भाग्य की चिन्ता महसूस करने वाला और धर्म में व ईश्वर भक्ति में कुछ कमी पाने वाला व पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी पाकर भी पुरुषार्थ व उद्योग करने वाला और भाई के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और भाग्य में कुछ अन्य स्थान का संबंध भी पाने वाला और धर्म के संबंध में कुछ यथार्थ का विरोध कर के किसी प्रभाव वाले न्यून धर्म को मानने वाला तथा सुयश उन्नति के स्थान में रुकावटें पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से दसवें स्थान

नं० ५५०

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३सू १० १२ २ ११ १

में हो तो वह मनष्य पिता स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और पिता स्थान व व्यापार स्थान से खर्च चलाने वाला तथा शानदार खर्च करने वाला और मातृ स्थान में भी कुछ हानि या कमजोरी का योग पाने वाला और व्यपार स्थान में व मान प्रतिष्ठा की उन्नति में कुछ कमी पाने वाला और पुरातन राज्य की खिलाफत कर के नये राज्य की तरफदारी करने वाला और अपनी मान प्रतिष्ठा बनाने में अन्य दूसरे स्थान का भी सहारा पाने वाला और बाहरी फैशन दिखाने वाला और असल की जगह नकल का काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ५५१

४म १० १२ २ ११

में हो तो वह मनुष्य आमदनी के योग से खर्च करने वाला और आमदनी में कुछ कमजोरी पाने वाला और अन्य दूसरे स्थानों से संबंधित लाभ का योग पाने वाला और पुरातन लाभ के योग को छोड़ कर नये तरीके से लाभ का योग अच्छा पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला और विद्या में कुछ कमी पाने वाला और बुद्धि में व वाणी में कुछ रूखापन व तीक्ष्णता रखने वाला और प्रभाव के हेर फेर से लाभ खर्च करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान

नं० ५५२

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | | ५स | |
| ८ | ६ | | ४ |
| | ९ | ३ | |
| १० | १२ | | २ |
| ११ | | १ | |

में हो तो वह मनुष्य खूब खर्च करने वाला और अन्य स्थान के संपर्क से भी खर्च शक्ति को प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि का योग पाने वाला और शत्रु पर प्रभाव रखने वाला और कछ झगड़े तलब मामलों में भी व रोगादि में भी खर्च करने वाला और खर्च संचालन की शक्ति को स्वत: प्राप्त रखने वाला और घिराव व परेशानियों को खर्च की ताकत से दूर करने वाला और खर्च स्थान में व बाहरी स्थानों में महान प्रभाव शक्ति पाने वाला होता है ।

## कन्यालग्नान्तरचंद्रफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का चंद्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ५५३

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | | ५ | |
| ८ | ६च | | ४ |
| | ९ | ३ | |
| १० | १२ | | २ |
| ११ | | १ | |

में हो तो वह मनुष्य तन मन से प्रसन्नता पूर्वक लाभ पाने वाला व सुन्दर देह पाने वाला व शांति स्वभाव वाला सुन्दर स्त्री वाला और रोजगार से खूब लाभ पाने वाला तथा भोग सुख प्राप्त करने वाला बड़ा मान पाने वाला व प्रसन्नचित रहने वाला और स्त्री स्थान में खूब मन लगाने

वाला व ससुराल से लाभ पाने वाला तथा आमदनी और दैनिक रोजगार का खूब ख्याल रखने वाला और बड़े बड़े सुन्दर व दिव्य पदार्थ प्राप्त करने वाला और बड़े ऊँच मन वाला और तेजवान नामवर तथा विशेष भोग विलास चांहते रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चंद्र लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला और धन संचय करने वाला तथा बड़ा कुटुम्ब वाला और जीवन के समय में बड़ा लाभ का आनन्द अनुभव करने वाला और अच्छी आयु वाला पुरातत्व का लाभ पाने वाला और सदैव धन संचय में मन लगाने वाला और गूढ़ युक्तियों के बल से भी फायदा पान वाला तथा बड़ा इज्जतदार तथा सफेद वस्तु से लाभ अधिक पाने वाला और मनोयोग की शक्ति के द्वारा धन की वृद्धि के महान कारण पदा करने वाला अमीर होता है।

न० ५५४

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान मे हो तो वह मनुष्य मनोयोग के कठिन परिश्रम क द्वारा सामान्य लाभ पाने वाला और इस कठिनाई के कर्म मार्ग से भाग्यवान समझा जाने वाला तथा धर्म और ईश्वर में श्रद्धा रखने वाला भाई के पक्ष में कमी या कलेश का योग पाने वाला व मानसिक परिश्रम

नं० ५५५

के द्वारा विचारों में कुछ अशांति का योग पाने वाला तथा पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी पाने वाला और कुछ परतंत्रतायुक्त भाग्य की वृद्धि पाने वाला व दिल और हिम्मत के अन्दर कमजोरी रखने वाला तथा लाभ प्राप्ति के लिये कुछ अनुचित काय भी करने वाला और कुछ छोटे विचारों के द्वारा छोटी चाल चलने वाला, बल और ताकत के स्थान पर कुछ छिपाव और कमजोरी से काम निकालने वाला चिंतित मन वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान

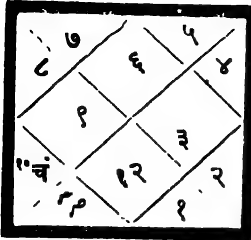
न० ५५६




में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी सुख पूर्वक आमदनी पाने वाला व जमीन जायदाद का लाभ पाने वाला और माता पिता का सुख लाभ प्राप्त करने वाला तथा कार व्यापार से भी लाभ पाने वाला तथा सुख और सवारी का आनन्द लेने वाला बड़ा मान पाने वाला व राज समाज से लाभ पाने वाला व मगन मन रहने वाला और सुन्दर कर्म करने वाला और सुन्दर २ पदार्थ वस्त्र आभूषण आदि पाने वाला व मातृस्थान से खूब सुख प्राप्त करने वाला और मनोयोग की ताकत से सुख प्राप्ति के अनेक साधन पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि द्वारा लाभ पाने वाला व संतान लाभ पाने वाला तथा विद्या प्राप्त करने वाला और बुद्धि के अन्दर मानसिक विचारों की प्रधानता का लाभ

नं० ५५७




पाने वाला और विशेष प्राप्ति के लिये सदैव बुद्धि पर जोर देने वाला एवं लाभ के लिये निरंतर ध्यान रखने वाला और विचारों में शीतलता व वाणी में भी शीतलता धारण करने वाला बड़ा चतुर बुद्धिमान तथा बुद्धि और मन में कुछ कुछ परेशानी अनुभव करने वाला व कुछ पुत्र के मुकाबले में कन्या संतान का पक्ष पाने वाला और मनोबल व बुद्धि बल से खूब लाभ पाने वाला बड़ा समझदार होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चंद्र लग्न से छठे स्थान

नं० ५५८




में हो तो वह मनुष्य लाभ के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला व मानसिक चिन्तायें पाने वाला और खर्च अधिक करने वाला और आमदनी के लिये कुछ परतंत्रता का योग पाने वाला या दिक्कत तलब झंझट युक्त कर्म से लाभ पाने वाला और कुछ ननसाल पक्ष से थोड़ा लाभ पाने वाला और लाभ के विषय में कुछ बाहरी स्थानों का संबध भी पाने वाला और मन के मुताबिक आवश्यक पदार्थों में कुछ कमी पाने वाला और अनियमित तौर से लाभ की योजना पाने वाला एवं कुछ मन को घिराव में पाने वाला और लाभ प्राप्ति के कारणों से कुछ प्रभाव पाने वाला शील युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चंद्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ५५९

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार से खूब लाभ पाने वाला व सुन्दर स्त्री प्राप्त करने वाला तथा बहुत सुन्दर ढंग से भोग विलास प्राप्त करने वाला व गृहस्थ संबंध की तरक्की में ही मन को लगाने वाला व सुन्दर देह पाने वाला और समुराल से लाभ की योजना पाने वाला और मनोयोग की शक्ति से दैनिक रोजगर में बड़ी सफलता पाने वाला और सुन्दरता के संबंधित कार्यों से खूब लाभ पाने वाला तथा शांत चित्त मानयुक्त उत्साही और अनेक सुन्दर पदार्थ पाने वाला तथा प्रत्येक लौकिक कार्यों में बड़ी सफलता पाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चंद्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ५६०

में हो तो वह मनुष्य लाभ के लिये कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा विदेश आदि स्थानों के संबंध से लाब पाने वाला तथा धन प्राप्ति के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला और पुरातत्व का कुछ लाभ पाने वाला तथा गूढ़ युक्तियों की गहरी चालों से मनोयोग के द्वारा लाभ पाने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला और शानदार जीवन का समय व्यतीत करने वाला व मानसिक कष्ट सहने वाला और धन कुटुम्ब की और भाग्य की वृद्धि सदैव चाहने वाला और जीवन को सहायक होने वाली कुछ पहिली और गम्भीर वस्तु का लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चंद्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान और भाग्य की ही ताकत से खूब लाभ पाने वाला तथा बहुत विशेष ऊँचे मन वाला तथा ईश्वर और धर्म में विशेष श्रद्धा रखने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और भाई के पक्ष में कुछ कमी का योग पाने वाला व पुरुषार्थ को महत्व न देने वाला और बल पौरुष में कमी पाने वाला तथा तत्व ग्राही दूरदर्शी और उन्नत मस्तक वाला तथा पतले कद वाला प्रभावशाली और अनेक दिव्य पदार्थ भाग्यबल तथा मनोयोग द्वारा प्राप्त करने वाला और बड़े धर्म की खोज करने वाला और २४ साल की उम्र से लाभ की बहुत उन्नति पाने वाला होता है।

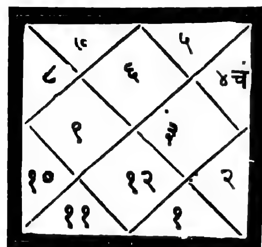
नं० ५६१

जिस व्यक्ति का मिथुन का चंद्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बडे शानदार तरीके से कारबार के जरिये लाभ पाने वाला और पिता स्थान से खूब लाभ पाने वाला तथा राज समाज से फायदा उठाने वाला और मनोयोग के कर्म बल से तरक्की करने वाला और बड़े ठाट बाट से रहने वाला, बड़े बड़े कीमती पदार्थों को प्राप्त करने वाला व सुख भोगने वाला व मातृ स्थान का व जमीन जायदाद का सुख लाभ प्राप्त करने वाला तथा राजसी भोग पाने वाला, माननीय, प्रभावशाली, कर्मष्ठी तथा प्रतिष्ठा युक्त तथा २४ साल की उम्र से तरक्की करने वाला बड़े ऊँचे मन वाला होता है।

नं० ५६२

जिस व्यक्ति का कर्क का चंद्र लग्न से ग्यारहवें

नं० ५६३



स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा उत्तम लाभ स्वत: पाने वाला एवं लाभ के लिये केवल मनोयोग की शक्ति के संकल्प से ही बिना किसी प्रयत्न के पाने वाला और बड़े २ दिव्य पदार्थ पाने वाला एवं इस्तेमाल करने वाला और संतान संबंध में कुछ सुख प्राप्त करने वाला और विद्या विवेक की शक्ति पाने वाला और बड़ी चतुराई व बुद्धि योग से काम लेने वाला तथा २४ साल की उम्र से लाभ की उन्नति पाने वाला व स्थिर मन वाला नक्षत्र धारी बेफिकर होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान

नं० ५६४



में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला तथा अन्य स्थानों के योग से लाभ पाने वाला तथा चंचल मन वाला और मन में अशांतयुक्त रहने वाला तथा बहुत दूर की बातें मन में से सोचने वाला और आमदनी की पूर्ण खर्च करने वाला और कुछ रोग या झगड़े के संबंध में फायदे की बातें सोचने वाला और शत्रु पक्ष में ठंढे मन से काम निकालने की सोचने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ फायदे की योजना पाने वाला व आमदनी में कमज़ोरी पाने वाला तथा कुछ नीरसता युक्त होता है।

## कन्यालग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न के पहिले

नं० ५६५ स्थान में हो तो वह मनुष्य पूर्ण आयु वाला और देह में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला बड़ा पराक्रमी और बहुत ऊँचे दर्जे की कट नीति को काम में लाने वाला बड़ी गहरी चाल चलनें वाला बड़ा हिम्मतवर पैत्रिक व पुरातत्व

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६मं | ५ |
| ८ | | ४ |
| ९ | | ३ |
| १० | १२ | २ |
| ११ | | १ |

का फायदा पाने वाला मातृ स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और स्त्री पक्ष कुछ क्लेश अनुभव करने वाला बहन भाई के पक्ष में कुछ कमी का योग व सहयोग पाने वाला और जीवन के समय को बड़े शानदार तरीके से व्यतीत करने वाला और जीवन को सहायता देनें वाली शक्ति को प्राप्त करने वाला कुछ प्रसिद्ध होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से दूसरे

नं० ५६६ स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़े रईसी ढंग से जीवन का समय व्यतीत करने वाला और अच्छी आयु वाला तथा भाई के पक्ष में कुछ कमी व कुछ बंधन सा अनुभव करने वाला व धन संग्रह में कुछ कमी व हानि पाने वाला

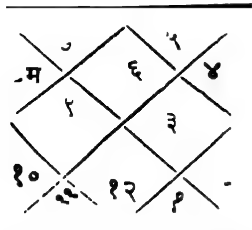
| | | |
|---|---|---|
| ७मं | ६ | ५ |
| ८ | | ४ |
| ९ | | ३ |
| १० | १२ | २ |
| ११ | | १ |

व कुटुम्ब की कुछ हानि पाने वाला और धन प्राप्ति के

संबंध में बड़ी कूट नीति की शक्ति का प्रयोग करने वाला और बड़ी गहरी चाल चलने वाला तथा पुरातत्व का फायदा पाने वाला व नामवर प्रभावशाली और बद्धि व सतान पक्ष में बहुत शक्ति का प्रयोग करने वाला बड़ा बाचाल होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी परेशानियों से महान पुरुषार्थ करने वाला व तीक्ष्ण शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा भाई के पक्ष को कुछ दबाव पहुंचाने वाला और बडी कूट नीति के गहरे कर्म करने वाला व ननमाल पक्ष को व पिता स्थान को कछ हानि पहुंचाने वाला तथा बाहुबल और हिम्मत से काम लेने वाला और बलवान आयु वाला व पुरातत्व की शक्ति को पाने वाला और धर्म स्थान में कुछ हानि पहुंचाने वाला तथा भाग्य में कछ कमजोरी पाने वाला व पुरुषार्थ को वड़ा मानने वाला और शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला होता है।

नं० ५६७



जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य अच्छी आयु वाला व जीवन के समय का सुख उठाने वाला और मातृ स्थान में कुछ हानि पाने वाला और पुरातत्व व पैत्रिक लाभ पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ हानि पहुंचाने वाला व आमदनी में कुछ कमी महसूस करने वाला और पिता स्थान में कुछ

नं० ५६८



कमी व कुछ कलेश महसूस करने वाला व शांति पूर्वक छिपी युक्तियों से कार्य करने वाला व सुख के साधनों में कुछ कमी पाने वाला व प्रभाव युक्त रहने वाला व भाई के पक्ष मे कुछ कमी सहित सुख उठाने वाला लापरवाह होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा शानदार जीवन व्यतीत करने वाला तथा बड़ा नाम पाने वाला व प्रतिष्ठा और प्रभाव पाने वाला और बुद्धि द्वारा बड़ी भारी कूट नीति को इस्तेमाल करने वाला एवं कोई विचित्र आविष्कार करने वाला तथा लाभ में कुछ कमी व लापरवाही पाने वाला और खर्च खूब करने वाला तथा वाणी में कुछ कला रखने वाला व संतान पक्ष में कुछ अजीब व गरीब सुख दुख का गहरा अनुभव करने वाला और बड़ी आयु वाला पुरातत्व का लाभ व ज्ञान प्राप्त करने वाला व गहरे विचार वाला और अन्य दूसरे स्थानों का विशेष संबध रखने वाला बड़ा तेज दिमाग गुस्सेबाज होता है।

नं० ५६९

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से छटे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और भाई के पक्ष में कुछ वैमनस्य व वियोग पाने वाला और पेचीदा मामलों से कुछ परेशानियों के द्वारा शक्ति पाने वाला और शत्रुओं को या विपक्षियों को बड़ी

नं० ५७०

कूट नीति एवं छिपी शक्ति की आग से तपाने वाला और अपने कड़वे प्रभाव को कायम रखन क हेतु देह में भी मुसीबत सहने वाला और अपन कश्य से धम और भाग्य को कुछ हानि पहुचाकर भी प्रभाव वृद्धि का ही ख्याल रखने वाला व पुरातत्व को कुछ हानि पाने वाला व अच्छी आयु और जीवन के समय का कुछ तामसी प्रयोग करने वाला और अपनी हेकड़ी का कायम रखने से खुश होने वाला और खूब खर्च करने वाला और कुछ बंधन या घिराव से में रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मगल लग्न से सातवें स्थान

न० ५७१

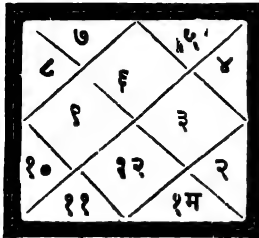
| | | |
|---|---|---|
| ८ | ७ ६ ५ | ४ |
| ९ | | ३ |
| १० | १२म | २ |
| | ११ १ | |

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ कलेश सहने वाला और रोजगार के पक्ष में कुछ परेशानियों से व मेहनत के द्वारा कामयाबी पाने वाला और रोजगार के सबध मे कुछ छिपी हुई युक्तियों से लाभ उन्नति की योजना बनान वाला और धन के सबध मे कुछ सग्रह शक्ति की कमी पाने वाला और पिता के स्थान मे कुछ कलेश कष्ट का योग पाने वाला और बहन भाई के पक्ष में कुछ कमी पाने वाला और बहुत मेहनत से दनिक कार्य करते रहने वाला व कुछ अच्छा आयु पाने वाला व देह में कुछ परेशानी, पाने वाला और पुरातत्व का लाभ पाने वाला तथा राज समाज के कार्यो में व मान्नोन्नति के मार्ग में महान परिश्रम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मगल लग्न से आठवें स्थान

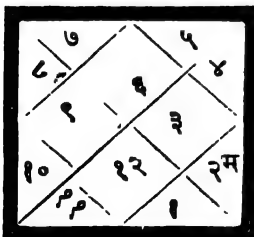
में हो तो वह मनुष्य बहुत आयु पाने वाला और जीवन की गुप्त शक्ति का जबरदस्त विकास करने वाला और पुरातत्व का विशेष लाभ व अधिकार पाने वाला व लाभ के पक्ष में कुछ कमी पाने वाला व भाई के पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला और किसी विदेश स्थान द्वारा शक्ति पाने वाला और गुप्त कर्म के बल का भरोसा रखने वाला और गहरी परेशानियों का कर्म करने वाला बड़ा खतरनाक व मस्त जीवन पाने वाला और जीवन के समय का बड़ा मूल्य पाने वाला बड़ा नामवर प्रभावशाली धन संचय की कुछ कमी पाने वाला तथा महान कठिन परिश्रम के द्वारा अपनी शक्ति का विकास पाने वाला होता है।

नं० ५७२




जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य पुरातत्व शक्ति का लाभ पाने वाला और बड़ी आयु पाने वाला बहुत खर्च करने वाला और मातृस्थान मे कुछ हानि पाने वाला व सुख के साधनों में कुछ कमी पाने वाला और धर्म स्थान में व भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला व यश में कुछ कमी पाने वाला व जीवन का समय शानदार भाग्यवानी से काटने वाला व पुरुषार्थ में छिपी शक्तियों के प्रयोग द्वारा उन्नति पाने वाला व भाई वाला और कुछ गलत रास्ते से मस्ती का लाभ उठाने वाला व ईश्वर पर कुछ कम श्रद्धा रखनेवाला

नं० ५७३



बड़ा मेहनती सफल पुरुषार्थी तथा भाई बहन के संबंध में कुछ दुख सुख का मिश्रित योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से दसवें स्थान

नं० ५७४

| ७ | ६ | ५ |
|---|---|---|
| ८ | ९ | ४ |
| | ३म | |
| १० | १२ | २ |
| ११ | १ | |

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान को कुछ कष्ट प्रद साबित होने वाला और पत्रिक व पुरातत्व का लाभ पाने वाला और अपनी सामाजिक व्यापारिक उन्नति में कुछ सुख दुख का योग पाने वाला व देह में कुछ कष्ट व परेशानी का योग पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ विशेष शक्ति का प्रयोग करन वाला व दुख सुख का विशेष अनुभव बुद्धि के द्वारा करने वाला तथा बहुत तीक्ष्ण बोलने वाला व गुप्त चालों के कर्म से उन्नति की आशा करने वाला और उन्नति के लिये बड़े बड़े कष्ट साध्य प्रयत्न करने वाला और मातृ स्थान में व सुख स्थान में कुछ कमी पाने वाला व अच्छी आयु पाने वाला और जीवन का समय बड़े शानदार ढंग से व्यतीत करने वाला और भाई के पक्ष में कुछ दुख सुख का योग पाने वाला मातृयुक्त प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से ग्यारहवें

नं० ५७५

| ७ | ६ | ५ |
|---|---|---|
| ८ | ९ | ४म |
| | ३ | |
| १० | १२ | २ |
| ११ | १ | |

स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी आमदनी व लाभ के स्थान में कुछ कमी पाने वाला और भाई के पक्ष से कुछ कष्ट अनुभव करने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये बड़े २ कष्ट साध्य कर्म करने वाला और कुछ

गुप्त रीति से व गलत रास्ते से भी फायदा पाने वाला व विद्या बुद्धि में व संतानपक्ष में बहुत जोर लगाकर उन्नति करने वाला व शत्रु स्थान को व ननसाल पक्ष को कुछ हानि पहुंचाने वाला व धन संग्रह के स्थान में कुछ हानि पाने वाला व सामान्यतया कुछ अच्छी आयु वाला तथा कुछ चिंतित जीवन व्यतीत करने वाला और कुटुम्ब की कुछ हानि पाने वाला व पुरातत्व का सामान्य लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला व पुरातत्व की कुछ हानि पाने वाला व गुप्त शक्ति के बल से छिप कर बहुत काम करने वाला और शत्रु स्थान व ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला और भाई की व स्त्री की

नं० ५७६




कुछ हानि पाने वाला व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ हानि व कष्ट अनुभव करने वाला तथा बाहरी संबंध से शक्ति प्राप्त करने वाला और अपनी शक्ति का कुछ गलत प्रयोग करने वाला और आयु के स्थान में कभी २ कुछ हानियों का योग पाने वाला व जीवन के समय का कुछ कमजोर लाभ पाने वाला व कुछ परतंत्रता का सा योग पाने वाला और विदेश से संबंधित शक्ति का बड़ा भरोसा मानने वाला होता है।

## कन्यालग्नान्तबुधफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का बुद्ध लग्न के पहिले स्थान

नं० ५७७

में हो तो वह मनुष्य लम्बे और जचाव की देह वाला व राजसी ऐश्वर्य भोगने वाला बडा प्रभावशाली व पिता स्थान से तरक्की पाने वाला तथा बहुत बड़ा कारबार करने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ लापरवाही व कुछ कमी महसूस करन वाला व इद्रिय भोगादिक पक्ष में भी बहुत कमी पाने वाला बड़ा स्वाभिमानी व देहाभिमानी और बहुत चतुर बुद्धिमान बड़ा कार्य कुशल छोटे दैनिक कारबार से नफरत मानने वाला बडा चतुर.राजनीतिज्ञ कर्मष्ठी मुन्तजिम आदमी तरक्की पाने वाला बड़ा विवेकी होता है

जिस व्यक्ति का तुला का बुद्ध लग्न से दूसरे स्थान

नं० ५७८

में हो तो वह मनुष्य बहुत धन पैदा करने वाला तथा व्यापार आदि से तरक्की पाने वाला और पिता की इज्जत से इज्जत पाने वाला तथा धन कमाने में व धन की वृद्धि में पूर्ण चतुराई से काम लेने वाला धन और कुटुम्ब की वृद्धि को ही जीवन का मुख्य ध्येय मानने वाला वड़ा धनी इज्जतदार माननीय आयुवालाकार्य कुशल पुरातत्व व पैत्रिक फायदा पाने वाला और कुछ घिराव में रह कर उन्नति करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुद्ध लग्न से तीसरे

नं० ५७९

स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा सुन्दर पुरुषार्थ करने वाला व तरक्की प्राप्त करने वाला व धर्म कर्म को मानने वाला व पिता स्थान की शक्ति पाने वाला तथा बहन भाई की शक्ति पाने वाला और कार्य कुशलता से सफलता पाने वाला और सौम्य प्रकृति होने हुये भी बड़ी हिम्मत व विवेक की चतुराई से काम करने वाला और मान प्राप्त करने वाला बड़ा सुन्दर जेवरात से रहने वाला बड़ा स्वाभिमानी ईश्वरवादी और देहबल व बाहुबल की शक्ति रखने वाला बड़ा उत्साही होता है।

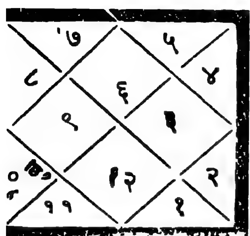
जिस व्यक्ति का धन का बुद्ध लग्न से चौथे स्थान में

नं० ५८०

हो तो वह मनुष्य बड़ा सुख पूर्वक रहने वाला घर की जायदाद पाने वाला और बड़े सजावट के सुन्दर मकान स्थान में रहने वाला व माता पिता का सुख उठाने वाला और सुख शांति पूर्वक अच्छा कारबार करने वाला व मान प्रतिष्ठा पाने वाला बड़ा चतुर कर्मेष्ठी सुन्दर देह वाला बुद्धिमान बड़ा स्वाभिमानी वैभवयुक्त तथा राज समाज से सुख व मान प्राप्त करने वाला और देहबल व कर्म बल से सुख व बहुत से साधन पैदा करने वाला आनन्दी जीव होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुद्ध लग्न से पांचवें स्थान

नं० ५८१



में हो तो वह मनुष्य बडा भारी बुद्धिमान विद्यावान व संतान शक्ति प्राप्त करने वाला बडा भारी स्वाभिमानी व कर्तव्य कर्म को जानने वाला तथा व्यापार कर्म का बुद्धियोग से अच्छा लाभ पाने वाला तथा सुन्दर सुसज्जित ढंग से प्रभाव युक्त रहने वाला आत्म ज्ञानी राज समाज के कानून में भी दखल रखने वाला और पिता से योग्यता प्राप्त करने वाला और शीलयुक्त विवेक की शक्ति के द्वारा बातें कहने वाला और आमदनी की वृद्धि करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न व ध्यान रखने वाला महान चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुद्ध लग्न से छठे स्थान

नं० ५८२

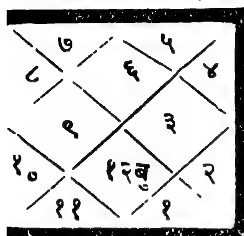


में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता युक्त रहने वाला व ननसाल पक्ष में कुछ तरक्की का योग पाने वाला व पिता के स्थान मे कुछ वैमनस्यता का योग पाने वाला और अपनी उन्नति में कुछ बाधा पाने वाला व रोग आदि झगड़े झंझटों में रह कर कुछ कार्य सफल करने वाला व शत्रु पक्ष मे शांति पूर्वक विवेक शक्ति के द्वारा मतलब सिद्ध करने वाला तथा खर्च खूब करने वाला और कुछ घिराव व परेशानी के कार्य में भी कुछ गौरव का अनुभव करने वाला

और देह की सुन्दरता व कद में कुछ कमी पाने वाला और कुछ पाप कर्म भोगने वाला शीलयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुद्ध लग्न से सातवें स्थान

नं० ५८३




में हो तो वह मनुष्य गृहस्थ में कुछ परेशानी का योग पाने वाला और पिता से और स्त्री स्थान से कुछ कमी व कष्ट का अनुभव करने वाला और देह में कुछ कमजोरी पाने वाला व कमजोर परिस्थिति में भी स्वाभिमान रखने वाला और दैनिक रोजगार व्यापार में कुछ कमजोरी और दुख महसूस करने वाला और मान सनमान की रक्षा बड़ी मुश्किलों से कर पाने वाला और स्त्री के सभोग सबंधित मामले में अपने प्रभाव की कुछ कमी व सुख की कमी महसूस करने वाला और रोजगार के पक्ष मे बड़ी मेहनती और कुछ सेवा के तौर से और परेशानी का सा कार्य करने वाला व कुछ परतंत्रता भी पाने वाला और कुछ अनुचित कर्म करने वाला व व्यथित रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुद्ध लग्न से आठवें स्थान

नं० ५८४




में हो तो वह मनुष्य अपनी देह व पिता के सुख सबंध में कुछ हानि व कलेश का योग पाने वाला व अपने उत्थान के संबंध में हृदय में कमजोरी और दुख मानने वाला व विदेश आदि में रहने वाला और धन वृद्धि की योजना

में लगा रहने वाला तथा कारबार के लिये संकट सहने वाला और पुरातत्व व गूढ़ युक्तियों का फायदा उठाने वाला और शुभ कर्म न करके अपने मत के रास्ते पर चलने वाला और अपनी जान लड़ा कर व कष्ट सह २ करके उन्नति व मान प्राप्त करने वाला व कुछ मस्त जीवन होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुद्ध लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी भाग्यवानी पाने वाला और धर्म कर्म का पालन करनें वाला और पिता स्थान से सहायता व मान और उन्नति पाने वाला और व्यापार में स्पतह सफलता पाने वाला व राज समाज म मान पाने वाला व सुन्दर सुसज्जित देह वाला और उचित कर्म का पालन करने वाला बहन भाई वाला व ईश्वर में निष्ठा करनें वाला और अपने व्यक्तित्व को वडा सुन्दर मानने वाला व दैवी सहायता से सफलता व उन्नति पाने वाला व राजसी ठाट पानें वाला और पुरुषार्थ कर्म से भी फायदा पाने वाला होता है।

नं० ५८५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | | ५ | |
| ८ | ६ | | ४ |
| | ९ | ३ | |
| १० | १२ | | २बु |
| | ११ | १ | |

जिस व्यक्ति को मिथुन का बुद्ध लग्न से दसवें स्थान म हो तो वह मनुष्य अपने देह बल और हृदय बल से महान उन्नति पाने वाला तथा शोभायुक्त सुन्दरता पाने वाला और शक्ति स बहुत बड़ा कारबार करने वाला तथा बड़ा भारी मान पाने वाला और पिता स्थान से व

नं० ५८६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | | ५ | |
| ८ | ६ | | ४ |
| | ९ | ३बु | |
| १० | १२ | | २ |
| | ११ | १ | |

समाज से बहुत तरक्की व सुख प्राप्त करने वाला और राज्य मान पाने वाला तथा मकान जायदाद का व माता का सुख उठाने वाला व बड़ा सौम्य कर्म करने वाला बड़ा मुन्तजिम स्वाभिमानी वैभव युक्त ठाट बाट से रहने वाला प्रभाव शाली रजोगुणी स्वभाव वाला हाकिम मिजाज शील युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुद्ध लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन पैदा करने वाला व पिता स्थान का बहुत फायदा पाने वाला व व्यापार कर्म से बहुत लाभ करने वाला व राज्य से सबधित फायदा उठाने वाला और दिव्य वस्त्र आभूषण आदि धारण करने वाला तथा बहुत चतुराई से कुशलता पूर्ण कार्य करने वाला बड़ी विद्या पाने वाला व सतान सुख प्राप्त करने वाला व देह से सन्मान पाने वाला और राज स्वभाव रखने वाला व स्वतंत्र मिजाज रहने वाला और देह व समाज के योग से विवेक शक्ति के द्वारा बहुत लाभ पाने वाला होता है।

नं० ५८७

जिस व्यक्ति का सिंह का बुद्ध लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खूब खर्च करने वाला व विदेश आदि में रहने जाने वाला और पिता पक्ष में व देह पक्ष में कुछ कमजोरी व अशांति का योग पाने वाला व मान प्रतिष्ठा और कार व्यापार के लिये दूसरे स्थान का सहारा

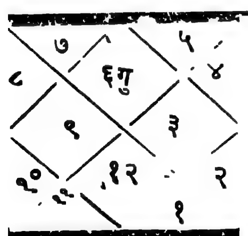
नं ५८८

लेने वाला और दूसरे स्थान में ही अपनी शक्ति का परिचय देने वाला तथा दिक्कतों और शत्रु पक्ष में कुछ शांती युक्त हिम्मत से काम लेने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ प्रेम रखने वाला तथा कुछ अशांति युक्त अकेलापन सा महसूस करने वाला तथा देह की महान शक्ति से खर्च की सचालन की शक्ति प्राप्त करने वाला होता है।

## कन्यालग्नान्तरंगुरूफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरू लग्न के पहिले स्थान

नं० ५८९

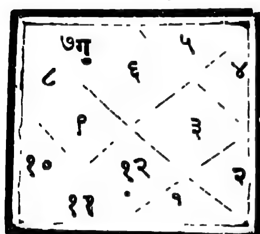



में हो तो वह मनुष्य बहुत उत्तम गृहस्थ सुख प्राप्त करने वाला व बहुत योग्य स्त्री पाने वाला और माता का आनन्द पाने वाला बड़ा सुखयुक्त सुन्दर रोजगार करने वाला और भाग्यवान समझा जाने वाला तथा गृहस्थ में धर्म का भी ध्यान रखने वाला और संतान पक्ष में कुछ कमी का व दुख का अनुभव करने वाला और बुद्धि विद्या में कुछ कमजोरी पाने वाला और गृहस्थ के कारणों से बुद्धि में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और बोलने में व समझने म कुछ कमजोरी का योग पाने वाला और स्त्री संबंधित मार्ग के कारणों से कुछ बुद्धि मे परेशानी पाने वाला और

बुद्धि में कुछ अनुचित व संकीर्ण विचार रखने वाला तथा माननीय स्थूल देह वाला, जायदाद वाला चतुर सुखी होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरू लग्न से दूसरे स्थान

नं० ५९०




में हो तो वह मनुष्य धन की शक्ति व इज्जतदारी को प्राप्त करने वाला व जायदाद इत्यादि का सुख प्राप्त करने वाला और मातृ स्थान के व स्त्री स्थान के सुख में कुछ बंधन का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार से व स्त्री संबंध से कुछ धन प्राप्त करने वाला व पिता स्थान से सहारा पाने वाला व राज समाज में सुख व मान प्राप्त करने वाला और जीवन में कुछ सुख का अनुभव करने वाला व अच्छी आयु वाला व पुरातत्व का सुख लाभ प्राप्त करने वाला व कुटुम्ब वाला व शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला तथा बड़ा व्यापार करने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ न्यून सुख का अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरू लग्न से तीसरे स्थान

नं० ५९१




में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक बहुत रोजगार कर के खूब लाभ पाने वाला और सुन्दर व प्रभावशाली स्त्री पाने वाला और स्वंय भी अच्छे कद वाला तथा खूब भोग सुख प्राप्त करने वाला व गृहस्थ धर्म का बड़े सुचारू रूप से

पालन करने वाला और अनेक प्रकार के दिव्य पदार्थ प्राप्त करने वाला व धर्म में श्रद्धा रखने वाला और बहन भाइयों वाला व मातृ स्थान से शक्ति पाने वाला तथा बड़ी महनत करने वाला प्रभाव शाली बड़ा कार्य प्रवीण तथा ससुराल से कुछ शक्ति पाने वाला व शादी के बाद तरक्की करने वाला और इन सब चीजों का १६ साल की उम्र से विकास पाने वाला भाग्यवान होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरू लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ स्थान का और स्त्री स्थान का सुख प्राप्त करने वाला व जायदाद पाने वाला और रोजगार से सुख प्राप्त करने वाला बड़ा खर्च करने वाला और पुरातत्व का लाभ पाने वाला व अच्छी आयु वाला

नं० ५९२




तथा शानदारी मे सुख पूर्वक जीवन का समय व्यतीत करने वाला व मान प्रतिष्ठा पाने वाला और सुख पूर्वक रोजगार करने वाला बड़ा कर्मेष्ठी और पिता स्थान का सुख प्राप्त करने वाला व गृहस्थ का सुख भोगने वाला तथा बाहरी संबंधों मे भी रोजगार में सुख की वृद्धि पाने वाला और गूढ़ कर्म से भी सुख प्राप्ति का मार्ग पाने वाला आनन्दी जीव होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरू लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने गृहस्थ सुख के संबंध में बडा बड़ा दुख अनुभव करने वाला व मातृ स्थान में व स्त्री पक्ष में व संतान पक्ष में तीनों में कमी व कमजोरी पाने

नं० ५९३

वाला और दैनिक रोजगार में कुछ परेशानी पानें वाला तथा विद्या बुद्धि में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा बोलने में कुछ हिचकने वाला व लाभ अधिक चाहने वाला और सुख शांति में कुछ बाधा लेंकर और बुद्धि की परेशानियों के द्वारा छोटे रोजगार से अच्छा लाभ करने वाला व धर्म को चाहने वाला व देह से सुख का मान पाने वाला व भोग विलास के संबंध में कुछ अनुचित विचार रखने वाला व्यथित बुद्धि होता है ।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरू लग्न से छटे स्थान

नं० ५९४

में हो तो वह मनुष्य गृहस्थ सुख में बड़ी बाधा पाने वाला व मातृ पक्ष में और स्त्री पक्ष में कुछ कलेश सहने वाला व सुख शांति में कमी पानें वाला व दैनिक रोजगार में बड़ी दिक्कतें सहने वाला और मान सनमान पानें वाला व कुछ धन संग्रह करने वाला व कुछ कुटुम्ब सुख पानें वाला और ननसाल पक्ष में कुछ समान्य सुख प्राप्त करने वाला व खूब खर्च करने वाला तथा शत्रु पक्ष में कुछ नरमाई से काम निकालने वाला और दिक्कत सह कर भी प्रभाव रखने वाला तथा भोग विलास में कुछ कमी पाने वाला और रहन सहन के स्थान में कुछ त्रुटि पानें वाला व पिता स्थान से कुछ मदद पाने वाला तथा बड़े ऊंचे व्यापार की योजना बनाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरू लग्न से सातवें स्थान

नं० ५९५

में हो तो वह मनुष्य बड़ा सुख भोग पाने वाला बड़ा दबंग व सुखद रोजगार करने वाला और बड़ा लाभ पाने वाला व दैनिक रोजगार कर्म से ही बड़ा मान व सुख प्राप्त करने वाला और शादी के बाद सुख की वृद्धि पाने वाला और स्त्री में कुछ शांति का अनुभव करने वाला और माता से अच्छा काम लेने वाला तथा बड़ा बढ़िया पुरुषार्थ करने वाला भाई बहन वाला अच्छे कद वाला अनेक वस्तुओं का सुख लाभ प्राप्त करने वाला बड़ा मेहनती सुखी विलासी प्रिय और हृदय बल की ताकत से बड़ी सफलता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरू लग्न से आठवें स्थान

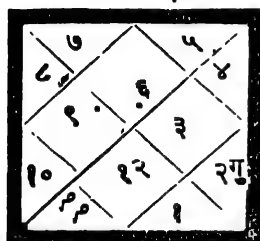
नं० ५९६

में हो तो वह मनुष्य गृहस्थ जीवन में बड़े दुख उठाने वाला व मातृ स्थान में कुछ कमी के साथ सुख उठाने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ कलेश व कुछ वियोग सहने वाला और स्त्री पक्ष की पूर्ति कुछ गहराई की चालों से व कूट युक्तियों से पुरी करने वाला व दैनिक रोजगार के पक्ष में बड़ी बड़ी दिक्कतें सह कर कामयाबी पाने वाला व खूब खर्च करने वाला और धन संग्रह की चेष्टा करने वाला और जीवन का समय प्रभाव युक्त बड़प्पन से काटने

वाला व पुरातत्व का भूमि लाभ पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला और कुछ छिपी युक्तियों से रोजगार का फायदा पाने वाला व कुछ अशांति युक्त और कुछ पहिली गम्भीर वस्तु का लाभ जीवन को सुखी करने के लिये हृदय बल से प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरू लग्न से नवम स्थान

नं० ५९७




में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान समझा जाने वाला हृदय बल का सुख प्राप्त करने वाला व ईश्वर का कुछ ध्यान करने वाला और भाग्य शक्ति से गृहस्थ सुख प्राप्त करने वाला और भाग्य शक्ति से ही रोजगार चलाने वाला और लौकिक व कुछ पारलौकिक दोनों का ध्यान रखने वाला तथा भाग्य में कुछ कमजोरी अनुभव करने वाला व माता और स्त्री दोनों ही धार्मिक विचार वाली पाने वाला और कुछ मकान जायदाद पाने वाला व बहन भाई वाला कुछ सतोगुणी पुरुषार्थ करने वाला व देह को सुख सनमान पाने बाला और संतान कष्ट का योग अनुभव करने वाला और विद्या और बुद्धि में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा विचार वाणी के द्वारा कुछ कमजोर और त्रुटि युक्त शब्द कहने वाला व बुद्धि नें कुछ परेशानी का अनुभव करने वाला शांति प्रिय दूरदर्शी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरू लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी कर्मेष्ठी और राजसी भोग विलास पाने वाला तथा बड़ा कारोबार करने

नं० ५९८

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ |
| ८ | ९ | ४ |
| १० | ३गु | २ |
| ११ | १२ | १ |

वाला और खूब धन कमाने वाला व जमीन जायदाद रखने वाला और माता पिता का स्थान सुख प्राप्त करने वाला व राज समाज में मान पाने वाला तथा स्त्री स्थान में सुख व प्रभाव और सौन्दर्य पाने वाला तथा रोजगार से इज्जत पाने वाला और शुभ कर्म करने वाला और हृदय में राजसी वृत्ती रखने वाला व कुछ कुटुम्ब वाला और ननसाल पक्ष से कुछ मामूली आनन्द लेने वाला और शत्रु पक्ष में कुछ अपने वैभव का प्रभाव रखने वाला और सुख शांति युक्त कर्म करके तरक्की पाने वाला प्रतिष्ठा वान आनन्दी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरू लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ५९९

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ |
| ८ | ९ | ४गु |
| १० | ३ | २ |
| ११ | १२ | १ |

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार से बहुत लाभ पाने वाला और बहुत विशेष सुन्दर स्त्री का सुख प्राप्त करने वाला तथा बहुत उत्तम भोग विलास पाने वाला और माता का व जमीन जायदाद का खूब लाभ पाने वाला और बहन भाइयों का सुख पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ कमी अनुभव करने वाला और विद्या बुद्धि में कुछ कम- जोरी पाने वाला और बड़ा सुन्दर पुरुषार्थ कर के सफलता पाने वाला और बड़े कीमती सुन्दर सुन्दर पदार्थ भोगने वाला और अच्छे कद वाला और सुख युक्त कर्म कर के भी बड़ी नफा खाने वाला व सवारी आदि का सुख प्राप्त करने

वाला और कुछ त्रुटि युक्त वाणी बोलने वाला व मगन हृदय चिंतित बुद्धि होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरू लग्न से बारहवें स्थान

नं० ६००

में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और स्त्री की हानि पाने वाला व दैनिक रोजगार में परेशानी पाने वाला और मातृ स्थान में कुछ कम-जोरी पाने वाला व अन्य बाहरी स्थानों के द्वारा सुख का साधन पाने वाला व सुख स्थान का व मातृ स्थान की वृद्धि का बहुत ख्याल रखने वाला और जीवन के समय में कुछ सुख का अनुभव करने वाला और आयु का सुख प्राप्त करने वाला और अन्य दूसरे स्थान से ससुराल का व स्त्री का योग प्राप्त करने वाला तथा खर्च बल से प्रभाव रखने वाला और पुरातत्व का कुछ लाभ पाने वाला और छिपी हुई गूढ़ युक्तियों से भी सुख प्राप्त करने वाला और जायदाद की कुछ लाभ हानि करने वाला और मातृ स्थान के बल से भी कुछ खर्च चलाने वाला होता है।

# कन्यालग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ६०१

७ ५
८ ६ शु ४
९ ३
१० १२ २
११ १

में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कमजोरी पाने वाला व धन प्राप्ति के लिये कुछ धर्म की हानि और शरीर से परिश्रम करके धन पाने वाला और धन में कुछ कमी पाने वाला तथा भाग्यवान स्त्री वाला बहुत बड़ा दैनिक रोजगार करने वाला और भोग विलास की प्राप्ति में अधिकता पाने वाला और शादी होने के बाद रोजगार की तरक्की पाने वाला और कुछ अड़चनों के बाद रोजगार में भाग्य शक्ति से भी विशेष तरक्की प्राप्त करने वाला तथा बड़ा युक्ति वाला और अपनी हृदय के अन्दर भाग्य के संबंध की कुछ कमजोरी पाने वाला बड़ा चतुर होता है ।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० ६०२

७ शु ५
८ ६ ४
९ ३
१० १२ २
११ १

में हो तो वह मनुष्य बहुत धनवान बहुत भाग्यवान तथा इज्जतदार कुटुम्ब वाला और बड़ी भाग्य शक्ति से धन की वृद्धि पाने वाला तथा जीवन का समय बड़ी रईसी के ढंग से व्यतीत करने वाला व अच्छी आयु वाला

और पुरातत्व का कुछ लाभ पाने वाला व गूढ़ युक्तियों से भी लाभ पाने वाला तत्वग्राही धर्मज्ञ माननीय तथा धर्म के वास्तविक रूप में व ईश्वर भक्ति में कुछ बंधन पाने वाला तथा पूर्व जन्म के पुण्यों के बल से धन की महान वृद्धि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से तीसरें स्थान

नं० ६०३

७ ५
८शु ६ ४
९ ३
१० १२ २
११ १

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति से धन की बृद्धि का योग पाने वाला व बहुत सुयश प्राप्त करने वाला बड़ा धर्मात्मा न्याययुक्त पुरुषार्थ से धन कमाने वाला बहन भाइयों वाला धार्मिक उन्नति के लिये धन और बल से काम लेने वाला तथा सुडौल कद वाला बड़ा भाग्यवान लौकिक व पारलौकिक दोनों धर्मों का पालन करने वाला बड़ा चतुर माननीय उन्नत शील और ईश्वरीय शक्ति का बड़ा भरोसा मानने वाला बड़ा सुघड़ दूरदर्शी इज्जतदार प्रभाव शाली होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ६०४

७ ५
८ ६ ४
९शु ३
१० १२ २
११ १

में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह करने वाला भाग्यशाली और कर्मेष्ठी व जायदाद जमीन वाला और सुख पूर्वक धन प्राप्त करने वाला व माता पिता का लाभ पाने वाला और मानयुक्त व्यापार से धन प्राप्त करने वाला और

धर्म कर्म का पालन करने वाला माननीय बहुत चतुर कार्य कुशल कुटुम्बी इज्जतदार राज्यमानी और मातृ स्थान में कुछ दुविधा का योग पाने वाला समाज सेवी और धन तथा भाग्य की शक्ति से सुख प्राप्ति के महान साधन पाने वाला भोगी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से पाँचवें स्थान

नं० ६०५

में हो तो वह मनुष्य बहुत बड़ा चतुर भाग्यवान धर्म को खूब समझने वाला और धार्मिक विषय पर अच्छा बोलने वाला और खूब धन पैदा करने वाला तथा बहुत विद्यावान गुणी एवं कलाकार तथा ज्योतिषी प्रेमी बड़ा नीतिज्ञ और विशेष संतान सुख प्राप्त करने वाला कुटुम्ब सुख उठाने वाला माननीय बुजुर्गी के ढंग वाला अनेक लाभयुक्त और ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार अनुभव करने वाला बड़ा भारी समझदार व दूरदर्शी दयावान होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से छठे स्थान

नं० ६०६

में हो तो वह मनुष्य बड़ा कामयाब कूटनीति एवं पेचीदा चालों से और कुछ दिक्कतों से धन पैदा करने वाला और धर्म की कुछ हानि करने वाला और भेदीली युक्तियों से व धर्म और धन के जोर से शत्रु पर विजय पाने वाला और भाग्य के संबंध में कुछ परेशानी महसूस करने

वाला व धन संग्रह के संबंध में कुछ कमजोरी अनुभव करने वाला और खर्च खूब होने पर भी कुछ वेमजाजगी महसूस करने वाला और भाग्यवान ननसाल वाला और व ननसाल से कुछ फायदा पाने वाला और ईश्वर के विश्वास पालन में कुछ कमी पाने वाला और प्रभाव के स्थान में महान चतुराइयों से व सज्जनता की शक्ति से फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न के सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली तथा बहुत ऊँचे दर्जे की भोग विलास की शक्ति प्राप्त करनेवाला और बहुत धन पैदा करने वाला तथा बहुत बड़ा दैनिक रोजगार करने वाला और कुछ सुन्दर वस्तु के रोजगार से लाभ पाने वाला और सुन्दर स्त्री वाला तथा शादी के बाद तरक्की पाने वाला तथा मालदार ससुराल वाला और बहुत कुटुम्बशक्ति प्राप्त करने वाला, व देह में कुछ कमी या कमजोरी पाने वाला व धर्म कार्य भी खूब करने वाला इज्जतदार और भाग्य की ताकत से व महान चतुराइयों से हर एक प्रकार की लौकिक सफलता पाने वाला होता है।

नं० ६०७

७ ६ ५
८ ४
९ ३
१० १२शु २
११ १

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य कुटुम्ब में व भाग्य में दुर्बलता पाने वाला व धन में कुछ हानि पाने वाला और धर्म का ठीक

नं० ६०८

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ |
| ८ | ९ | ४ |
| ३ | | |
| १० | १२ | २ |
| ११ | १ श | |

पालन न कर सकने वाला व धन और भाग्य की उन्नति के लिये विदेश आदि में झंझटों सहित सफलता पाने वाला और धन प्राप्ति के लिये न्याय अन्याय की परवाह न करने वाला और भाग्य उन्नति के लिये कूट नीतिज्ञता से काम निकालने वाला व अच्छी आयु वाला और जीवन का समय कुछ रईसी ढंग से निकालने वाला और पुरातत्व धन का लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्य शाली व धर्मात्मा और भाग्य शक्ति से स्वतः उन्नति पाने वाला व धन पाने वाला और कुटुम्बिक सुख उठाने वाला तथा बड़ा यश प्राप्त करने वाला बड़ा दूर-दर्शी और धन की ताकत से धर्म करने वाला और धम से धन की वृद्धि पाने वाला और भाई बहन व कुटुम्ब का सुख उठाने वाला बड़ा उत्तम पुरुषार्थ करने वाला सफलता युक्त हिम्मत वाला तथा माननीय इज्जतदार ईश्वर वादी होता है।

नं० ६०९

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ |
| ८ | ९ | ४ |
| ३ | | |
| १० | १२ | २ श |
| ११ | १ | |

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी मान पाने वाला और बड़ा भारी भाग्यवान समझा जाने वाला तथा भाग्य शक्ति

नं० ६१० से और धन की ताकत से बहुत उन्नति करने वाला व पिता स्थान से बड़प्पन व सफलता पाने वाला तथा बहुत बड़े व्यापार आदि से महान चतुराइयों के द्वारा धन कमाने वाला बड़ा राज्यमानी और धर्म कर्म करने वाला व मातृ स्थान से सुख उठाने वाला व जमीन जायदाद वाला और कुटुम्ब सुख प्राप्त करने वाला और स्वभाव शाली इज्जतदार धनवान बहुत चतुर तथा समाज से बड़ा फायदा व मान प्राप्त करने वाला शोभामान होता है।

| | | |
|---|---|---|
| | ७ | ५ |
| ८ | ६ | ४ |
| ९ | | ३ शु० |
| १० | १२ | २ |
| ११ | | १ |

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं ६११ में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति से खूब धन पैदा करने वाला बड़ा चतुर बुद्धमान व धर्म का पालन करने वाला व धन के और धर्म के बल से भी लाभ पाने वाला और संतान सुख उठाने वाला तथा कुटुम्बिक लाभ पाने वाला और अनेक वस्त्रभूषण व दिव्य पदार्थ प्राप्त करने वाला और लौकिक व पारलौकिक ज्ञान रखने वाला और बहुत चतुराई की बातें कहने वाला इज्जत-दार माननीय और दैवयोग से भी बड़ी सफलता पाने वाला होता है।

| | | |
|---|---|---|
| | ७ | ५ |
| ८ | ६ | ४ शु० |
| ९ | | ३ |
| १० | १२ | २ |
| ११ | | १ |

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान

नं० ६१२

में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला तथा भाग्य में कुछ कमजोरी पाने वाला और दूसरे स्थानों के योग से काम चलाने वाला वाला व कुछ अपयश व अशांति पाने वाला और धन संग्रह न कर सकने वाला तथा कुटुम्बिक हानि पाने वाला और खर्च के स्थान में कुछ नीरसता युक्त शक्ति पाने वाला व शत्रुओं को कुछ मित्र बनाने वाला व ननसाल पक्ष में कुछ अच्छाई पाने वाला तथा धन और भाग्य के पक्ष में कुछ नीरसता का योग पाने वाला व धर्म की कुछ हानि पान वाला होता है।

## कन्यालग्नान्तशनिफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का शनी लग्न के पहिले स्थान

नं० ६१३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा विजयी गम्भीर और पेचीदा विचार रखने वाला और बड़ी पेचीदा युक्तियों से प्रभाव की उन्नति पाने वाला व योग्य संतान और विद्या भी इंगलिश फैशन की पाने वाला और दैनिक रोजगार के संबंध

में कुछ परेशानियों द्वारा वृद्धि पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ वैमनस्य व कुछ शक्ति व कुछ वियोग भी पाने वाला तथा बहुत पुरुषार्थ करने वाला व भाई के पक्ष में कुछ विरोधता की भावना रखने वाला व विद्या संबध में पिता स्थान से कुछ प्रभाव व सहारा पाने वाला किन्तु पिता से तर्क द्वारा विरोध भावना भी सनमान युक्त रखने वाला और स्वंय देह में कुछ रोग व होशियारी और तेजंतर्रा की व बहादुरी और विवेक रखने वाला मानीय उद्यमी होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनी लग्न से दूसरे स्थान

न० ६१४

| | | |
|---|---|---|
| ७श | ६ | ५ |
| ८ | | ४ |
| ९ | | ३ |
| १० | १२ | २ |
| ११ | | १ |

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि की पेचीदा युक्तियों से खूब धन कमाने वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़ी बड़ी परिश्रम की शक्ति से महान कार्य करने वाला व मातृ स्थान को कुछ हानि पहुंचाने वाला और लाभ के लिये खूब परिश्रम व चालाकियों से काम निकालने वाला व जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति का अनुभव करने वाला और आयु संबंध में कुछ लापरवाही का योग रखने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ वृद्धि का योग पाने वाला व ननसाल पक्ष से कभी कुछ आर्थिक उन्नति का योग पाने वाला और बुद्धि विद्या में कुछ पेचीदा कला का योग संग्रह करने वाला कुछ अशांति युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनी लगन से तीसरे

न० ६१५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | |
| श ८ | | | ४ |
| ९ | | ३ | |
| १० | १२ | | २ |
| ११ | | १ | |

स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ बुद्धि योग के द्वारा करने वाला और बड़ी पेचीदा हिम्मतवाली युक्ति और बुद्धि से प्रवाव उन्नति करने वाला और विशेष खर्च की योजनाओं में कुछ कड़वाहट पाने वाला तथा दवंग व हेंकड़ संतान पाने वाला तथा बड़ी सफाई की बातों से झूठ को भी सत्य में परणित करने की शक्ति रखने वाला और शत्रु और रोगों पर बुद्धि से विजय पाने वाला तथा मेहनत से भाग्य की उन्नति करने वाला तथा भाई के पक्ष में अपना प्रभाव रखने वाला और कुछ प्रभावशाली ननसाल वाला व झगड़े व दिक्कत तलब मामलों से उन्नति की योजना बनाने वाला बड़ा हिम्मतवर प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शनी लगन से चौथे स्थान में

न० ६१६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | |
| ८ | | | ४ |
| ९ श० | | ३ | |
| १० | १२ | | २ |
| ११ | | १ | |

हो तो वह मनुष्य अपने मकान जायदाद के व दिखावटी सुख के बल से बड़ा प्रभाव रखने वाला व रोगऔर दिक्कतों से संबंधित बुद्धि द्वारा सुख प्राप्त करने वाला और स्वयं भी देह मे कुछ रोग व दिक्कत सहने वाला व ननसाल पक्ष से कुछ सुख उठाने वाला और झगड़े तलब पेचीदा मामलों पर घर बैठे फतह पाने वाला और बड़ी बहादुरी व हेंकड़ी का दादा रखने वाला तथा मान पाने वाला व माता पिता के सुख में कुछ कमी व कलेश का योग पाने वाला और माता के स्थान पर किसी दूसरी स्त्री का भी सहयोग पाने वाला

और सुख शान्ति के संबंध में कुछ कमी पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ दुख सुख का सम्मिलित योग पाने वाला तथा पेचीदा बातों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनी लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी तेज बुद्धि वाला और बुद्धि से हमेशा गुप्त युक्तियों की ही मजबूत बातें करने वाला व संतान संबंध में कुछ दिक्कतों के साथ वृद्धि पाने वाला और धन और रोजगार के संबंध में बहुत युक्ति बल लगाने वाला और शत्रु पक्ष में बुद्धि की युक्तियों से विजय पाने वाला और झगड़े व झंझटों के संबंध में व बीमारियों के संबंध में बड़ा ज्ञान रखने वाला और स्त्री स्थान में एक स्त्री से संतोष न मानने वाला और स्त्री पक्ष में व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ कलेश व परिश्रम सहने वाला तथा बड़ा चतुर होशियार गुस्सेबाज होता है।

नं० ६१७

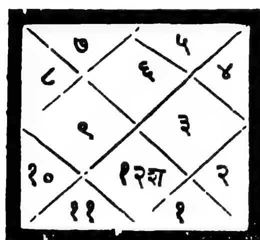
जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनी लग्न से छटे स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि की बेढब युक्तियों से बड़ा प्रभाव रखने वाला व शत्रु पक्ष को दमन करने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव का योग ख्याल करने वाला व झगड़े और रोगों की परवाह न करने वाला तथा भाई से कुछ कटुता का विरोध संबंध रखने वाला व जीवन के समय में कुछ अशांति पाने वाला और पुरातत्व

नं० ६१८

की कमी पाने वाला और खर्च के संबंध में कुछ कलेश अनुभव करने वाला व संतान पक्ष में बड़ा कलेश का योग पाने वाला और विद्या में कुछ कमी पाने वाला व तामसी विद्या रखने वाला और हमेशा टेढ़ी व घुमाव फिराव की बातें कहने वाला व संस्कृत विद्या का विरोध रखने वाला और हमेशा अपने प्रभाव वृद्धि की युक्तियों को सोचने वाला व बुद्धि से बड़ा कठिन परिश्रम करने वाला तथा बड़ा गुस्सा रखने वाला प्रभावशाली होता ह।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० ६१६




में हो तो वह मनुष्य बहुत प्रकार से दैनिक रोजगार करने वाला तथा बहुत प्रकार से कुछ न्यूनाधिक स्त्री संभोग करने वाला और स्त्री पक्ष में बड़े २ झंझट व कलेश भी सहने वाला और संतान पक्ष कुछ कलेशित रह कर स्त्री के भाग्य द्वारा संतान प्राप्त करने वाला व मातृ स्थान में कलेश पाने वाला व सुख के संबंध में किसी दूसरी स्त्री से मातृ सहयोग पाने वाला और रोजगार की वृद्धि के संबंध में बड़े २ प्रपंच और युक्तियों से काम करने वाला तथा भाग्य की वृद्धि का बड़ा ख्याल हमेशा रखने वाला और देह में कुछ रोग व कलेश सहने वाला तथा रोज-गार में प्रभाव रखने वाला व मतलब की विद्या संग्रह करने वाला और धर्म संबंध में नुक्ता चीनी करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लगन से आठवें स्थान में

नं० ६९०

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १श

हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में बड़ा कष्ट अनुभव करने वाला थोड़ी विद्या वाला और बड़ी खोटी और निन्दनीय युक्तियों से बुद्धि द्वारा काम करने वाला छिपाव और झूठ के मामले में बड़ी योग्यता रखने वाला तथा सेवा और चिंताओं से समय व्यतीत करने वाला व धन को ऊंची तादाद में चाहने वाला और पुरातत्व की हानि करने वाला व कारबार करने में बड़ी कुशलता रखने वाला और ननसाल पक्ष की हानि पाने वाला व बुद्धि में सदैव चिंतित रह कर सोचते रहन वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़ी बड़ी पेचीदा तरकीबें निकालने वाला व महान कूट नीति से काम करने वाला और जीवन काल में बड़े २ संकट सहने वाला बड़ा बातूनी और नशीली चीज तमाखू आदि खाने वाला व उदर विकार या गुदा की बीमारी पाने वाला चिंतित होता है ।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि का लग्न से नवम

नं० ६२१

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २श ११ १

स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान बडा होशियार और बड़ा भाग्यवान दिखने वाला और संतान सुख उठाने वाला बड़ा प्रभावशाली, बड़ा भारी मेहनती व ननसाल से उन्नति पाने वाला और बड़ी भारी भेद युक्तियों से सफलता पाने वाला तथा बड़ा लाभ करने

वाला व झगड़े और रोगादि के मामलों में बड़ी दक्षता रखने वाला और अपने प्रभाव वृद्धि की सदैव योजना बनाने वाला और अपने बुद्धि बल से व भाग्यबल से शत्रु को परास्त करने वाला व धर्म स्थान में कुछ युक्ति के साथ बड़ी रुचि व पूर्ण ज्ञान रखने वाला तथा पाप पुण्य की बड़ी व्याख्या करने वाला बड़ा चतुर और भाई के पक्ष में कुछ शत्रुता का भाव रखनें वाला तथा कायदे की पेचीदा लडाई लड़ने वाला बड़ा उन्नतिवान और साहसी हिम्मत वाला गुस्सेबाज होता है।

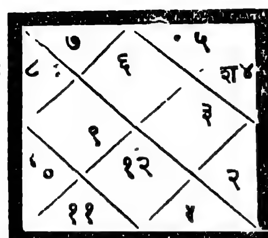
जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से दसवें स्थान नं ६२२ में हो तो वह मनुष्य अपनी योग्यता से

| | | |
|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ |
| ८ | ९ | ४ |
| | ३श | |
| १० ११ | १२ | २ |
| | १ | |

अपने प्रभाव की वृद्धि करने वाला तथा बुद्धि बल से बड़ा सन्मान पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ मान पाने वाला व राजनीतिक झगड़ों में बड़ी कुशलता रखने वाला व उन्नति प्राप्त करने वाला व पिता स्थान से कुछ दिक्कतों के साथ तरक्की पाने वाला व बुद्धि की बड़ी २ युक्तियों से कार बार में सफलता पाने वाला और खर्च के संबंध में कुछ कड़वाहट व कुछअसुविधा महसूस करने वाला व स्त्री स्थान में कुछ दिक्कतों के साथ वृद्धि का योग बनाने वाला व मातृ स्थान में कुछ अरुचि पाने वाला व रोजगार के स्थान में नित्य नई युक्तियों व सूझ निकालने वाला बड़ा ऊँचा कार्य प्रवीण होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ६२३




में हो तो वह मनुष्य बुद्धि की युक्तियों से बहुत लाभ करने वाला और कुछ पेचीदा मार्ग से भी लाभ पाने वाला व झगड़े और दिक्कतों को मोल लेनें वाला और संतान का लाभ कुछ दिक्कतों से युक्त अच्छा पाने वाला व जीवन के समय में हमेशा अशांति महसूस करने वाला और पुरातत्व की कुछ कमजोरी पाने वाला व देह में कुछ गड़वड़ी व कुछ घिराव पाने वाला तथा बहुत पेचीदा तौर से हमेशा बाते करने वाला बड़ा हिम्मत वाला तथा बुद्धिमान चतुर और धन पैदा करने वाला बड़ा होशियार और शत्रु पर प्रभाव जमाने वाला और अपने लिये यथार्थ लाभ व वस्तुओं में कुछ कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से बारहवें

नं० ६२४




स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च के बंवजा चलने से परेशान रहने वाला और संतान पक्ष में हानि व कलेश पाने वाला और विद्या बुद्धि में कमी पाने वाला व युक्तियों से काम निकालने वाला और धन वृद्धि की बड़ी ऊंची योजना बनाने वाला तथा दूसरे बाहरी स्थान से काम करने वाला व भाग्य की उन्नति के लिये विशेष अच्छा प्रयत्न करते रहने वाला और अपने प्रभाव की कुछ कमी महसूस करने वाला व हिम्मत वाला और सदैव बुद्धि में चिंता

पाने वाला धर्म का ख्याल रखने वाला चिंतित होकर बड़ी दूर की बातें सोचने वाला तथा कम बोलने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पाने वाला होता है।

## कन्यालग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से पहिले

नं० ६२५

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत चतुराई व चालाकी से बातें करने वाला व प्रभाव रखने और छिपी हुई युक्तियों से बहुत कामयाब होने वाला और अपनी आंतरिक परिस्थित की कमजोरी को छिपा कर अपनी सज्जनता और योग्यता का विशेष परिचय देने वाला और अपनी वास्तविक परिस्थित में कमजोरी महसूस करने वाला और कभी २ देह में कुछ संकट सहने वाला व कुछ अधूरे सुख का अनुभव करने वाला और स्त्री व रोजगार के स्थानों में बड़ी निगाह रखने वाला और स्थायी नाम रखने के लिये व महान सफलता पाने के लिये महान प्रयत्न परिश्रम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन के पक्ष में कुछ कमजोरी पाने वाला और कुछ कुटुम्बिक कलेश पाने वाला और धन के संबंध में बाहरी दिखावे के मुताबिक आंतरिक कमजोरी पाने वाला और कभी २ कर्जे का रुपया भी लेकर काम चलाने वाला व इज्जतदारी पाने वाला और धन के मामले में कभी २ अचानक हानियाँ भी पाने वाला और पुरातत्व का व गहरी चालों का ख्याल रखने वाला और धनोन्नति की चिंता करने वाला और सदैव के लिये स्थायी रूप में धन की शक्ति पाने के लिये महान प्रयत्न करने वाला होता है।

नं० ६२६

| | | | |
|---|---|---|---|
| रा | ५ | | |
| ८ | ६ | ४ | |
| ९ | ३ | | |
| १० | १२ | २ | |
| ११ | १ | | |

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा मेहनती बड़ा पराक्रमी और भाई के पक्ष में कुछ कलेश का योग पाने वाला और अपने कार्य में छिपी हुई युक्तियों से बहुत काम निकालने वाला और अपना मतलब गांठने में बड़ी होशियारी व तेजी रखने वाला और अपनी उन्नति के लिये महान परिश्रम के द्वारा थकान पाने वाला कार्य को कर कर के बड़ा प्रभाव और सफलता पाने वाला और फिर भी अपनी शक्ति में कुछ अधूरापन महसूस करने वाला और बड़ी हिम्मत वाला स्वार्थयुक्त होता है।

नं० ६२७

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ५ | | |
| रा | ६ | ४ | |
| ९ | ३ | | |
| १० | १२ | २ | |
| ११ | १ | | |

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से चौथे स्थान

नं ६२८

में हो तो वह मनुष्य सुख स्थान में बड़ी भारी अशांति पाने वाला और मातृ स्थान में कुछ अधिक हानि व कलेश का योग पाने वाला और जमीन जायदाद का व रहने के स्थान का कुछ दुख अनुभव करने वाला और अन्य स्थान का कुछ सहारा लेने वाला व दुख के साधन पाने वाला और सुख प्राप्ति के लिये कुछ क्षुद्र मार्ग का अनुसरण करने वाला और पिता स्थान का व उन्नति स्थान का बड़ा युक्तियों सहित ध्यान करने वाला और घोर संकटों के साधनों के द्वारा सुख प्राप्ति का मार्ग पाने वाला व गुप्त शक्ति का सुख उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से पांचवें

नं० ६२९

स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या बुद्धि में कुछ अशांति व कमजोरी और छिपी हुई युक्तियों का योग पाने वाला और बोलने में अपने भाव को अधिक समझाने की कोशिश करने वाला व गूढ़ ज्ञान की शक्ति रखने वाला और बातचीत में सत्य असत्य की परवाह न करने वाला तथा पेचीदा बातों वाला व तमाखू भांग आदि नशीली चीजें कुछ सेवन करने वाला और कभी २ झिर्राहट या गुस्सा से काम निकालने वाला और शब्द की तौल नाप कुछ गलत तौर से रखने वाला व कुछ संतान कष्ट सहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से छठे स्थान

नं० ६३०

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभावशाली बडी हिम्मत वाला तथा कूटनीति का शस्त्र रखने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला तथा वड़ी लापरवाही रखने वाला और शत्रु को कपट युक्तियों से हराने वाला तथा रोगों पर विजय पाने वाला व कुछ झंझटों में फंसने वाला और कुछ गलत चाल चलकर कुछ नाजायज फायदा उठाने वाला और अपने प्रभाव में अन्दरूनी कुछ कमजोरी महसूस करने वाला तथा दिखावे में बड़ी हिम्मत व मुस्तैदी से पेचीदा चालें चलने वाला तथा स्वार्थ सिद्धि पर मजबूत रहने वाला बड़ा होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से सातवें स्थान

नं० ६३१

में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट सहन करने वाला व गृहस्थ संबंध में चिंतित रहने वाला और रोजगार के स्थान में बड़ी बड़ी कठिनाइयों और परेशानियां सहने वाला और कुछ परिश्रम से युक्त, युक्तियों, द्वारा काम चलाने वाला और दैनिक रोजगार के संबंध में बाहरी परिस्थिति के मुकाबले में आंतरिक परिस्थिति में फरक पाने वाला और रोजगार संचालन में कुछ पेचीदा चतुराइयों से काम करने वाला तथा रोजगार में कभी २ अधिक संकट

सहने वाला तथा रोजगार में कुछ छिपाव शक्ति से भी काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से आठवें स्थान में

नं० ६३२

हो तो वह मनुष्य जीवन काल में बड़ी २ परेशानियां सहने वाला व दुख मानने वाला और पुरातत्व की कुछ हानि पाने वाला और आयु के स्थान मे कमी कभी घोर संकट पाने वाला और पेट में नाभी से नीचे के हिस्से में या गुदा में कुछ खराबी पाने वाला और कठिन परिश्रम सहने वाला और हेंकड़ी रखने वाला और बहुत गहरी और गुप्त चालों को काम में लाने वाला तथा खूब धन चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से नवम स्थान

नं० ६३३

में हो तो वह मनुष्य भाग्य में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और धर्म स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और यश प्राप्ति की कुछ कमी पाने वाला और ईश्वर में वास्तविक श्रद्धा की कुछ कमी व दिखावटी श्रद्धा की अधिकता पाने वाला और कुछ धर्म के बाहरी अंग की मजबूती पाने वाला और भाग्य उन्नति के लिये महान युक्तियों से काम लेने वाला और भाग्य स्थान पर कभी २ घोर संकटों का सामना पाने वाला किन्तु अंत में

मजबूती पाने वाला और असत्य को भी सत्य जचाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से दसवें स्थान

नं० ६३४

में हो तो वह मनुष्य अपने पिता स्थान में कुछ नये ढंग से विशेषता पाने वाला और व्यापार आदि कारबार में भी कुछ नवीनतम युक्तियों से महानता को पाने वाला और बाहरी ठाट व दिखावे के मुताबिक अपनी अंदरूनी परस्थिति में व वैभव में कुछ कमज़ोरी पाने वाला और अपनी उन्नति के लिये बड़ी भारी महान पेचीदा कार्यवाहियां करने वाला और बड़ी भारी होशियारी और मुस्तैदी से काम करने वाला और परिश्रम व परेशानी की जरा भी परवाह न करने वाला और राज समाज के मामलों में महान गहरी युक्तियों से प्रभाव पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ६३५

में हो तो वह मनुष्य खूब लाभ करने वाला और लाभ के स्थान में कुछ परेशानियां सहने वाला और कभी कभी अचानक लाभ की वजह से हानि का भी योग पाने वाला और लाभ के संबंध में बड़ी बड़ी तरकीबों से काम निकालते रहने पर भी कुछ मानसिक चिन्ता पाने वाला

और थोड़े में ज्यादा नफा खाने वाला और बुद्धि योग से बड़ी होशियारी का ध्यान रखने वाला एवं कुछ वस्त्र आभूषणों की कमी पाने वाला और अपने इस्तेमाली देह संबंध के पदार्थों की कुछ कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च के संबंध में बहुत कष्ट सहने वाला व परेशानियां उठाने वाला और खर्च की संचालन शक्ति में कछ अन्य स्थान का कलेशित संबंध पाने वाला और अन्य स्थानों के संबंधित मामलों में नाकामयाबी पाते २ पूरी थकान पाने पर भी बड़ी मुश्किलों से ठिकाने पर पहुंचाने वाला और अधूरा लाभ पाने वाला और अन्य स्थानों से संबंधित खर्च के मामलाओं में बडी युक्तियों व तरकीबों से काम करने वाला और खर्च स्थान में कभी कभी घोर संकट का सामना पानें वाला और अन्त में खर्च के संबंध में कुछ मजबूती पाने वाला होता है।

नं० ६३६

७ ५ रा ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

## कन्यालग्नान्तकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न के प स्थान में

नं० ६३७

हो तो वह मनुष्य अपने अंदर बड़ी हेंकड़ी रखने वाला और देह में कुछ दुबलापन व कमजोरी पाने और बड़ी बड़ी युक्तियां लगाने वाला व अपना प्रभाव जमाने वाला और अपनी महानता पाने के लिये महान दृढ़ता युक्त रहने वाला और अपनी देह के अन्दर खास तौर से कुछ कमी महसूस करने वाला और बाहरी दिखावे में हमेशा मजबूती रखने वाला और बड़ा चतुर माननीय व कुछ परेशानियों से युक्त रहने वाला और अपने हृदय के अन्दर महान शक्ति का संचार पाने वाला तथा अंधाधुंद कार्य करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से दूसरे स्थान

नं० ६३८

में हो तो वह मनुष्य धन को पूर्ण संग्रह न कर सकने वाला और धन की प्राप्ति में व धन संचय के स्थान में बड़ी भारी दृढ़ता व चतुराइयों से काम लेने वाला और कुटुम्बिक कलेश का भी योग पाने वाला और धन की

बाहरी मज़बूती के मुकाबिले में अन्दरूनी कमजोरी महसूस करने वाला और धन का अभाव महसूस करने वाला और अंत में धन संग्रह की शक्ति पाने वाला व धन की वृद्धि के लिये महान परिश्रम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से तीसरे स्थान

नं० ६३९

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पराक्रमी और कठिन मेहनत करने वाला और बहन के पक्ष में कुछ हानि पाने वाला व कुछ वियोग या अशांति सहने वाला और बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला तथा महान बहादुरी से काम लने वाला और अपनी कड़ी हिम्मत के सामने भविष्य के परिणाम की परवाह न करके अंधाधुंध शक्ति का प्रयोग करने वाला बड़ा उग्र गामी शील रहित निडर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से चौथे स्थान

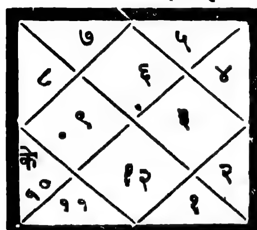
न० ६४०

में हो तो वह मनुष्य मकान जायदाद रखने वाला और मातृ स्थान में एक विशेष आडम्बर युक्त सुख को प्राप्त करने वाला और अपने सुख के साधनों को दृढ़ता पूर्वक पकड़े रहने वाला और वास्तविक शांति में कुछ कमजोरी पाने वाला और सुख का विशेष दिखावा करते रहने के कारणों से कुछ दिक्कतें सहने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों में शील संतोष काउल्लंघन करने वाला और सुख

व मातृ स्थान में कभी २ घोर संकट का सामना पाने वाला महान धैर्यवान होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से पाँचवें स्थान

नं० ६४१




में हो तो वह मनुष्य बहुत कठिन कठोर बुद्धि वाला और विद्या ग्रहण के समय बहुत कठिनाइयां पाने वाला और बड़ी गुस्सा व तेजी दिमाग में रखने वाला और अपनी बात को सरलता व शुद्धता पूर्वक न सम्भाल सकने वाला और संतान पक्ष मे कुछ कष्ट ग्रहण करने वाला व कुछ हेंकड़ दिमाग वाला और बुद्धि में चिन्ता पाने वाला एवं कुछ नशा चाहने वाला और अपनी बात को ही बड़ा बनाने वाला तथा कुछ शील का उलंघन करने वाला युक्तिबाज होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से छठे स्थान में

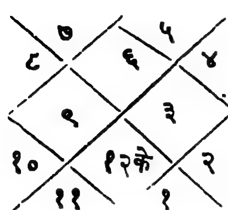
नं० ६४२




हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी महान शक्ति और बल पुरुषार्थ रखने वाला और अपने को बड़ा निडर मानने वाला और अपने स्वार्थ की बड़ी सिद्धि करने में बड़ी तत्परता से काम लेने वाला और शत्रु को हराने वाला हेंकड़ी व लापरवाही से सदैव काम करने वाला और ननसाल पंक्ष में हानि का योग पाने वाला रोगों को दमन करने वाला और अपनी प्रभाव उन्नति करने में न्याय अन्याय की परवाह न करने वाला शील रहित स्वार्थयुक्त प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष में कष्ट अनुभव करने वाला और गृहस्थ संचालन में कठिनाइयां पाने वाला और बड़ी मेहनत से काम चलाने वाला और दैनिक रोजगार के पक्ष में बड़ी मुश्किलातों से व परिश्रम से काम करने वाला और स्त्री भोग संबंध में कुछ तीव्रता रखने वाला किन्तु कुछ अधूरे सुख का अनुभव करने वाला और रोजगार में बड़ी गुप्त हिम्मत की शक्ति से काम करने वाला और प्रत्येक दैनिक कार्यों में आंतरिक धैर्य से काम लेने वाला होता है।

नं० ६४३



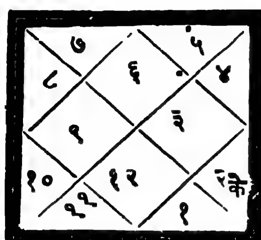

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में बड़ी अशांति पाने वाला और कठिनाइयों से समय व्यतीत करने वाला पुरातत्व की कुछ हानि पाने वाला और नाभी के नीचे के हिस्से में पेट या गुदा में खराबी एवं कुछ शिकायत पाने वाला और गुप्त कूट शक्ति रखने वाला व जीवन में कई बार मृत्यु तुल्य खतरे उठाने वाला और फिकरमंद रहने वाला और जीवन को सफल बनाने के लिये व नाम पाने के लिये कोई महान कठिन परिश्रम करने वाला तथा गुप्त शक्ति की महानता रखने वाला होता है।

नं० ६४४




जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से नवम स्थान

नं० ६४५




में हो तो वह मनुष्य भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी और कुछ अड़चने पाने वाला और धर्म स्थान में कुछ सनातन का विरोध कर के अपने ढंग से नये तरीके से धर्म को मानने वाला और धर्म स्थल पर हठ धर्मी से काम लेने वाला और भाग्य की उन्नति के संबंध में बडी बड़ी कठिनाइयां सहने के बाद मजबूती का मार्ग पाने वाला और शीलता को धारण न कर सकने वाला और भाग्य उन्नति की फिकर में महान परिश्रम कर के तत्परता के साथ लगा रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से दसवें स्थान

नं० ६४६




में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि व कष्ट का योग पाने वाला और राज्यस्थान में भी परेशानी का योग पाने वाला और व्यापार आदि कर्म व उन्नति के मार्ग में बड़ी बड़ी दिक्कतें और अड़चनें सहने वाला और बड़े स्थान के कार्यो में गिरावट एवं दबावट का योग पाने वाला और अपने मान रक्षा की चिन्ता पाने वाला व अपने को अभिमानी समझने वाला और उन्नति के मार्ग से छिपावट और रुकावटों के कार्य करने वाला और कुछ न्यून परिश्रम कार्य करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से ग्यारहवे स्थान

नं० ६४७

७ ५ ८ ६ ४के ९ ३ १० १२ २ ११ १

में हो तो वह मनुष्य अपनी आमदनी के स्थान में कुछ परेशानियों के द्वारा खूब लाभ करने वाला और आमदनी के लिये मन के स्थल पर आघात सहकर भी मन की कठुरता से खूब लाभ प्राप्त करने वाला और लाभ स्थान में मजबूती पैदा करने वाला और आमदनी की वृद्धि करने के लिये मन के न चाहने वाले कार्यों को भी करने वाला और लाभ के स्थान में महान परिश्रम करने पर भी अपने इस्तेमाली पदार्थों में कुछ कमी पाने वाला और फिर भी लाभ प्राप्ति में कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से बारहवें स्थान

नं० ६४८

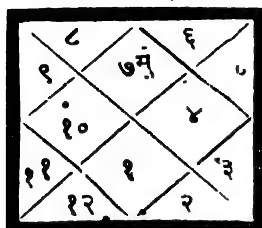
७ के ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

में हो तो वह मनुष्य खर्च के स्थान में महान संकट सहने वाला और अन्य स्थानों के संबंध में परेशानियों का योग पाने वाला और खर्च संचालन की शक्ति को प्राप्त करने में बड़ी बड़ी दिक्कतें सहने वाला और फिर भी बड़ी हिम्मत और बहादुरी से कामयाबी की तरफ दौड़ने वाला और खर्च के मार्ग में सदैव कुछ न कुछ अड़चनें सहने वाला किन्तु खर्च की मजबूत शक्ति को पाने के लिये महान परिश्रम करने वाला और अन्त में मजबूती पाने वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरफसूर्यलम्

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न के पहिले स्थान

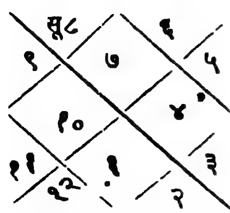
नं० ६४६




में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के परिश्रम से आमदनी पाने वाला और किन्तु आमदनी में कुछ कमजोरी पाने वाला और देह में कुछ कमजोरी पाने वाला और दैनिक रोजगार में मजबूती पाने वाला और गृहस्थ में व स्त्री स्थान में विशेष लाभ की योजना पाने वाला और विशेष भोग प्राप्त करने वाला और लाभ स्थान में कुछ बंधन यांनी कुछ परतंत्रता का सा या कुछ परेशानी का योग अनुभव करने वाला और मान सनमान में कुछ कमी का योग पाने वाला और गृहस्थ धर्म को ऊंचाई पर पहुंचाने के लिये अर्थात् गृहस्थ की स्थिती को सुचारू व सुन्दर बनाने के लिये हमेशा प्रयत्न शील व चिंतित रहने वाला व कुछ पतले शरीर वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान

नं० ६५०




में हो तो वह मनुष्य बहुत धन संग्रह करने वाला और मोटी आमदनी पाने वाला और कुटुम्ब लाभ अथवा धन लाभ पाने वाला और जीवन के समय में लाभ के सनमुख आराम की परवाह न करने वाला और धन संग्रह के लिये अपने आवश्यक पदार्थों के इस्तेमाल की परवाह

न करने वाला और पुरातत्व के स्थान योग से भी ला पाने वाला और प्रत्यक्ष में धनी मालूम पड़ने वाला तथा प्रकाशवान इज्जतदारी रखने वाला और अनेक दिव्य पदार्थों का संग्रह करने वाला और लाभ के उपभोग में कुछ बंधन व कमी पाने वाला और लाभ प्राप्ति के संबंध में मजबूती पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

नं ६५१

८ ७ ६
९सू ५
१० ४
११ १
१२ २

में हो तो वह मनुष्य बड़ा सफल पुरुषार्थ करने वाला और पुरुषार्थ से खूब फायदा पाने वाला औरबड़ी ताकत और प्रभाव रखने वाला और प्रशंसनीय मेहनत करने वाला उत्साही हिम्मत वाला और भाई का लाभ पाने वाला और धर्म प्राप्त करने वाला और धर्म स्थान से भी लाभ पाने वाला और आमदनी की ताकत से भाग्यवान एवं बलशाली और धर्मवान कहलाने वाला और सदैव हिम्मत से लाभ प्राप्त करने की योजना रखने वाला और दिव्य लाभ पाने वाला और लाभ के कारणों से बड़ी स्फूर्ति पाने वाला पुरुषार्थ वादी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से चौथे स्थान

नं० ६५२

१०सू ४
११
१२

में हो तो वह मनुष्य अपने स्थान में ही कुछ नीरसता युक्त लाभ प्राप्ति की योजनायें पाने वाला और सुख पूर्वक लाभ की योजना में कुछ कमी व अलकसाहट महसूस करने वाला और लाभ की स्थित के दायरे से मान पाने वाला

और पिता स्थान का लाभ भी मातृ स्थान की सहायता से प्राप्त करने वाला और मातृ स्थान का सुख अर्थात माता का व मकान का सुख कुछ नीरसता के साथ प्राप्त करने वाला और आवश्यक पदार्थों को येनकेन प्रकार से प्राप्त कर लेने वाला इज्जतदार एवं मान प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान

नं० ६५३




में हो तो वह मनुष्य बुद्धि योग द्वारा खूब लाभ पाने वाला और विद्या ग्रहण करने में कुछ अलकसाहट पाने पर भी विद्या को प्राप्त कर के फायदा उठाने वाला और संतान स्थान से लाभ पाने वाला और संतान पक्ष से कभी कुछ अशांति भी अनुभव करने वाला और लाभ प्राप्ति के कारणों से कुछ अपने मस्तिष्क में जरा अशांति या कुछ थकान अनुभव करने वाला और दिमाग में कुछ गरमी रखने वाला और प्राप्ति के लाभ संबधित मामलों पर ही ज्यादा ध्यान देने वाला और स्वार्थ सिद्धि की ही बातें करने वाला तथा शील रहित बुद्धिवान तेज बोलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से छठे स्थान

नं० ६५४




में हो तो वह मनुष्य कुछ घिराव या कुछ परतंत्रता युक्त कर्म से लाभ पाने वाला और लाभ स्थान के जरिये से प्रभाव पाने वाला और झगड़े झंझटों से फायदा में रहने वाला और शत्रु स्थान में विजय पाने वाला और नन-

साल पक्ष से भी फायदा पाने का हक रखने वाला और खूब खर्च करने वाला और लाभ के संबंध में कुछ अन्य स्थानों का सम्पर्क भी पाने वाला और आमदनी की कुछ कमजोरी सह कर भी प्रभाव की विशेषता को प्राप्त करने वाला और लाभ की ताकत व प्रभाव से रोग और दोष पर विजय पाने वाला बहादुर प्रकृति वाला प्रभाव शाली सुन्दर मार्ग वाला तेजस्वी निडर होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

नं० ६५५

| | | |
|---|---|---|
| ८ | ७ | ६ |
| ९ | | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १सू | ३ |
| १२ | | २ |

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभावशाली रोजगार करने वाला और रोजगार से खूब लाभ पाने वाला और स्त्री व ससुराल का महान लाभ पाने वाला और सुन्दर स्त्री वाला और स्त्री पक्ष में विशेष भोग प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में बड़ा प्रभाव पाने वाला और आमदनी के विशेषताओं से अथवा काम की अधिकताओं से देह में परेशानी अनुभव करने वाला और भोग की अधिकताओं से कुछ कमजोरी अनुभव करने वाला व देह में कुछ दुर्बलता पाने वाला और लौकिक उन्नति व आनन्द के सामने देह की परवाह न करने वाला और रोजगार व आमदनी के कार्य से बड़ा प्रभाव पाने वाला और ऊँचा कार्य करने वाला बड़ा मेहनती होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से आठवें स्थान

नं० ६५६

में हो तो वह मनुष्य आमदनी के लिये परेशानी सहने वाला और विदेश आदि में लाभ का साधन पाने वाला अथवा कुछ बंधन व प्रपंच के योग से कमजोर लाभ पाने वाला और जीवन में लाभ के कारण से कुछ परेशानी के साथ कुछ प्रभाव मानने वाला और धन संचय का बड़ा ध्यान रखने वाला व गूढ़ युक्तियों से भी लाभ पाने वाला और पुरातत्व व मैत्रिक लाभ को कुछ दिक्कतों से प्राप्त करने वाला और मेहनत के योगों से लाभ की पूर्ति करने वाला अर्थात मुश्किलों से आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहने वाला बड़ा परिश्रमी जीवन और कुटुम्ब वृद्धि करने वाला है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से नवम स्थान

नं० ६५७

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान और भाग्यशक्ति से मुफ्त की सी आमदनी पाने वाला और धर्म संबंध में दूरदर्शता की शक्ति का लाभ पाने वाला और भाग्य की ताकत से बहुत बड़े २ फायदा पाने वाला और लाभ शक्ति से पुरुषार्थ व हिम्मत की वृद्धि पाने वाला और भाई के स्थान से भी लाभ की योजना पाने वाला और दैवयोग से असंभव लाभ भी अर्थात जिस लाभ की कल्पना भी न हो उस तरीके के लाभ भी प्राप्त करने वाला और

ईश्वर प्राप्ति के संबंध का लाभ भी पाने वाला और तेजस्वी अर्थात् प्रभावशाली और वेफिकर होता है।

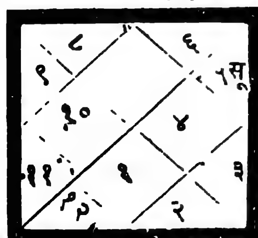
जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत इज्जत के साथ आमदनी पाने वाला और बड़ा कारबार करने वाला और पिता स्थान का खूब लाभ पाने वाला बड़ा माननीय और राज स्थान से भी लाभ का योग पाने वाला और प्रभावशाली कार्य करने से लाभयुक्त रहने वाला और मातृ स्थान के सुख में कमजोरी पाने वाला और घर जमीन के संबंध में भी कुछ लाभ की नीरसता का योग पाने वाला और प्रभावशाली व राजसी ठाट रखने वाला और कारबार के संबंध में वड़ी दूरदर्शता से काम लेने वाला और बड़ों के व बुजुर्गों के स्थान से व ढंग से लाभ की योजनायें पाने वाला होता है।

नं० ६५८



जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला और मजबूत आमदनी नियमित रूप से प्राप्त करने वाला और बड़े बड़े अमूल्य लाभ को व प्रकाशवान पदार्थों को स्वतः पा लेने वाला, और संतान पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ फल प्राप्त करने वाला और कुछ वैमनष्यता के साथ विद्या ग्रहण करने वाला और लाभ प्राप्ति के संबंध में कुछ नीरसता

नं० ६५९



युक्त बोलने वाला अर्थात् बोल चाल में तेजी से.व चिड़चिड़ाहट से काम लेने वाला और बुद्धि में तेजी की वजह से अपने मंतव्य को ठीक तौर से दूसरों को न समझा सकने वाला और आवश्यकताओं की पूर्ति सदैव हर जगहों पर प्रभाव से ही प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और अन्य दूसरे स्थान के संबंध से आमदनी पाने वाला और सर्वस्व लाभ को खर्च करने वाला और त्यागवृती रखने वाला और प्रभाव शाली खर्च करने वाला और अन्य स्थानों में प्रभाव की शक्ति से आवश्यकताओं की पूर्ति पाने वाला और शत्रु स्थान में व विपक्षियों में मैत्री प्रभाव की ताकत का लाभ पाने वाला अर्थात् प्रभाव शक्ति को मित्र रूप से इस्तेमाल कर के शत्रु से लाभ पाने वाला और ननसाल पक्ष से भी लाभ का कुछ संबंध पाने वाला और वस्त्र आदिक पदार्थों को थोड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

नं० ६६०

| | | |
|---|---|---|
| ८ | | ६ सू |
| ९ | ७ | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| १२ | | २ |

## तुलालग्नान्तचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का चंद्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ६६१

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी और एश्वर्यवान माननीय और पिता स्थान की तरक्की पाने वाला बड़ा उत्तम प्रशंसनीय कर्म करने वाला और सुन्दर शरीर वाला और बड़े ऊंचे विचारों की योजनायें मन में रखने वाला और भोग विलास का उत्तम आनन्द लेने वाला तथा स्त्री सुख प्राप्त करने वाला और रोज़गार के संबंध में बड़ी शानदारी से काम करने वाला एवं मानयुक्त रहने वाला और स्त्री स्थान में प्रभाव पाने वाला और रोजगार व्यापार से अर्थात् सुन्दर मनोयोग के कार्य से मान प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व पाने वाला और राज समाज में मान पाने वाला प्रभावशाली शांत हृदय बढ़मना स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चंद्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० ६६२

में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कमजोरी पाने वाला और पिता स्थान को कमजोरी पहुंचाने वाला और पिता स्थान से व व्यापार स्थान से कमजोरी पाने वाला और मान सनमान में व इज्जत आवरू में कमजोरी महसूस

करने से मानसिक कष्ट सहने वाला और उन्नति के मार्ग में मानसिक कमजोरी व धन के अभाव से गिरावट पाने वाला और पैत्रिक व पुरातत्व शक्ति का फायदा पाने वाला व जीवन की दिनचर्या को बड़ी लापरवाही से व्यतीत करने वाला और आयु में तरक्की पाने वाला और धन प्राप्ति के लिये कुछ गुप्त रूप से कर्म करने वाला और छोटी ताकत की प्रभाव शक्ति रखने वाला और गूढ़ युक्तियों के साधन का फायदा उठाने वाला लघु कुटुम्बी होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चंद्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ६६३

८ ६ ९चं ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

में हो तो वह मनुष्य बड़ा सुन्दर मनोयोग के द्वारा पुरुषार्थ कर के उन्नति पाने वाला अर्थात् सुन्दर प्रभाव शाली पुरुषार्थ कर के मान प्रतिष्ठा व प्रभुत्व को पाने वाला और पिता स्थान की शक्ति को अपनी सामर्थ्य में धारण करने वाला और मानसिक शक्ति से सदैव उन्नति के मार्ग पर चलने वाला और बहुत ऊँची योजनाओं के बल से प्रभाव और स्फूर्ति पाने वाला और बहन भाइयों की रौनक का सा योग पाने वाला बड़ा भाग्यशाली और सफल पुरुषार्थी तथा मन में मगन रहने वाला और कर्म शक्ति से धर्म कार्य करने वाला अर्थात् धर्म का पालन करने वाला और मनोयोग से ईश्वर में पूर्ण श्रद्धा रखने वाला एवं आदर्श विचारों वाला और आकाशी पुरुषार्थ से भाग्य वृद्धि को प्राप्त होने वाला बड़ी हिम्मत वाला उद्योगी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चंद्र लग्न से चौथे स्थान

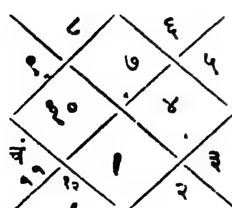
नं० ६६४




में हो तो वह मनुष्य घर की जायदाद रखने वाला व इज्जत आबरू पाने वाला और माता पिता की सुख शक्ति को पाने वाला और बड़े कारबार का सुख प्राप्त करने वाला प्रभाव शाली एवं माननीय और सुख से कार्य करने वाला होने पर भी कार्य स्थान में कुछ आलस्य महसूस करने वाला और मान प्रतिष्ठा की वृद्धि मनोयोग से घर बैठे करते रहने वाला और बड़ा कार्य कुशल स्वाभिमानी और सुन्दर कर्म करने वाला उडे ऊँचे मानसिक विचार रखने वाला तथा राज समाज में मान प्रतिष्ठा के मजबूत साधनों को संग्रह रखने वाला और मान प्रतिष्ठा की मजबूती से सुख का विशेष अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चंद्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० ६६५




में हो तो वह मनुष्य बहुत कार्य करने की तरकीबें जानने वाला और बुद्धि योग व मनोयोग से अपनी प्रभुत्व शक्ति को पाने वाला और पढा लिखा प्रभावशाली बड़ा चतुर रजोगुणी स्वभाव वाला और मानसिक विचारों मे बहुत ऊँचा योजनायें अपनी उन्नति के लिये हमेशा सोचते रहने वाला और अपनी बुद्धि में बड़ा स्वाभिमान रखने

वाला अर्थात अपनी बात को बड़ी रखने वाला जिद्दी स्वभाव वाला और शौकीन संतान वाला और संतान से उन्नति पाने वाला और लौकिक कर्म का ध्यान ज्ञान रखने वाला स्वार्थ बुद्धि और मानयुक्त लाभ पाने वाला और पिता स्थान का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त करने वाला एवं पिता की शक्ति से लाभ पाने वाला और अपना हुक्म हासिल चाहने वाला मुंतजिम दिमाग होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चंद्र लग्न से छटे स्थान

नं० ६६६ में हो तो वह मनुष्य अपनी मान प्रतिष्ठा में कुछ कमी पाने वाला व पिता स्थान में व पिता की शक्ति में कुछ कमजोरी पाने वाला और मनोयोग के परिश्रमी कर्म के द्वारा उज्जवल व्यापार करने वाला और खर्च शक्ति को वित्त शक्ति से ज्यादा पाने वाला और अपने मान सन्मान की रक्षा के हेतु बड़ी परेशानियां और पेचीदा तरकीबों से काम निकालने वाला और परेशानियों के स्थान में व शत्रु स्थान में मानसिक साहस व बड़प्पन की तरकीबों द्वारा शांति से काम निकालने वाला और मानसिक अशांति सहने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति पाने वाला और अपनी उन्नति में रुकावट पाने वाला और गुप्त चाल चलने वाला और गुप्त शक्ति का साहस पाने वाला और बाहरी स्थानों की सम्पर्क शक्ति रखने वाला भी होता है।



जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न के सातवें स्थान में

नं० ६६७

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ८ | ६ | |
| ९ | ७ | | ५ |
| | १० | ४ | |
| ११ | १चं | | ३ |
| | १२ | २ | |

हो तो वह मनुष्य बड़ी शानदारी से दैनिक रोजगार करने वाला अर्थात् उज्ज्वल व्यवसाय करने वाला और मनोयोग के प्रभाव वाला मेहनती कर्म से प्रधान उन्नति एवं प्रभुत्व शक्ति पाने वाला और बड़ी सुन्दर स्त्री तथा सुन्दर भोग प्राप्त करने वाला और स्वयं भी सुन्दरता को प्राप्त करने वाला और शादी के बाद मान उन्नति पाने वाला तथा इज्जतदार ससुराल वाला और गृहस्थ जीवन में महान ऐश्वर्य पाने वाला बड़ा चतुर कुशल कर्मेष्ठी एवं उत्साह युक्त रहने वाला और व्यवहारिक ज्ञान की उत्तम कुशलता रखने वाला और व्यवसायिक ज्ञान में सिद्ध योग पाने वाला और मानसिक शक्ति रखने वाला और सदैा भोग विलास में मन रखन वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चंद्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ६६८

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ८ | ६ | |
| ९ | ७ | | ५ |
| | १० | ४ | |
| ११ | १ | | ३ |
| | १२ | चं | |

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में एक अंग की कमजोरी और एक अंग से जोरदारी पाने वाला अर्थात् पिता की और अपनी मान प्रतिष्ठा के संबध में दिखावटी शानदारी के मुकाबले में आंतरिक कमजोरी पाने वाला और धन स्थान में कमजोरी महसूस करने वाला और मनोयोग की गूढ़ शक्ति के बल से उन्नति पाने वाला

और जीवन का समय शानदारी से व्यतीत करने वाला पुरातत्व का लाभ पाने वाला और मुसीबतों के स्थान में धैर्य धारण करने वाला और कुटुम्ब स्थान में कमजोरी पाने वाला आंतरिक ज्ञान रखने वाला और विदेश आदि स्थानों में आने जाने से मान पाने वाला और मृत्यु के समय अधिक कष्ट न सहने वाला और मृत्यु के बाद सराहना पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चंद्र लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और धर्म कर्म का मानने वाला एवं शुभ कर्मों में मन लगाने वाला और कारबार की शक्ति की मनोयोग और भाग्यबल से प्राप्त करने वाला और पिता स्थान की शक्ति का फायदा बड़ी सुगम रीति से पाने वाला और राज्य समाज से मान सन्मान युक्त रहने वाला और पुरुषार्थ को बड़े सुन्दर ढंग से पालन करने वाला तथा बहन भाइयों को पाने वाला और खूब भाग्यवान समझा जाने वाला परम विवेकी तत्व खोजी और मानसिक बल से बड़े २ कार्यों में सफलता पाने वाला और यश प्राप्त करने वाला एश्वर्यवान ईश्वरवादी होता है।

नं० ६६९

८ ६
९ ७ ५
१० ४
११ १ च
१२ २

जिस व्यक्ति का कर्क का चंद्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी एश्वर्यवान राज्यमानी प्रभाव वाला और पिता की वृद्धि करने वाला और पिता से वृद्धि पाने वाला और बड़ा कारबार करने

नं० ६७०

८ ६ ९ ७ ५ १० ४च ११ १ ३ १२ २

वाला मान प्रतिष्ठा पाने वाला और मनोबल के योग से बड़ी ऊँची योजनाओं द्वारा प्रभुत्वशक्ति को पाने वाला और सदैव उन्नति पाने का ही मन में ख्याल रखने वाला और अपनी मान प्रतिष्ठा के कारण बड़ा सुख प्राप्त करने वाला और बड़ा स्वाभिमानी राजसी ठाट रखने वाला बड़ा इज्जतदार और मातृ स्थान का सुख प्राप्त करने वाला एवं जायदाद रखने वाला और अपना हुक्म हासिल चाहने वाला बड़ा कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चंद्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ६७१

८ ६ ९ ७ ५च १० ४ ११ १ ३ १२ २

में हो तो वह मनुष्य बहुत दिव्य प्रभावशाली लाभ पाने वाला और मनोयोग के महान कार्य को बुद्धि की सहायता से महान सफल बनाने वाला और ऊंचे से ऊंचा लाभ पाने की चेष्टा सदैव मन में रखने वाला और पिता स्थान का सुन्दर लाभ पाने वाला और प्रभावशाली कर्म करने वाला और आकाशी कार्य की योजनाओं से बहुत बड़ा लाभ पाने वाला और बुद्धि व विद्या को शानदार तरीके से ग्रहण करने वाला और संतान सुख प्राप्त करने वाला और प्रसन्न रहने वाला तथा उत्ताम कर्मेष्ठी राज्यमानी बड़ा व्यापारी तथा समाज से फायदा उठाने वाला मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और कारबार में हानि पाने वाला और अन्य स्थान में कारबार की योजना पाने वाला और राज्यस्थान में कमी या नुकसान पाने वाला और मान सन्मान में कमी महसूस करने वाला और मान सन्मान को मनोयोग के द्वारा खर्च से व अन्य स्थान की शक्ति से प्राप्त करने वाला और अपनी शान गुमान की रक्षा के हेतु खर्च करने वाला और खर्च में प्रभाव व प्रभुत्व दरशाने वाला और शत्रु स्थान में भी खर्च शक्ति से व मनोयोग से प्रभाव जमाने वाला और मन में प्रभाव की कमी महसूस करने वाला होता है।

नं० ६७२

| | | |
|---|---|---|
| ८ | | ६ चं |
| ९ | ७ | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| १२ | | २ |

## तुलालग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा धनवान बड़ा इज्जतदार और देह में कुछ दुर्बलता पाने वाला और बड़ा कीमती रोजगार धंदा करने वाला और बड़ी योग्य सुन्दर स्त्री पाने वाला आदर्श भोग प्राप्त करने वाला और बड़ा

नं० ६७३

| | | |
|---|---|---|
| ८ | | ६ |
| ९ | ७ मं | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| १२ | | २ |

सुख प्राप्त करने वाला जमीन जायदाद एवं भूमि की इज्जत पाने वाला पुरातत्व का लाभ पाने वाला और देह में रक्त विकार एवं गर्मी इत्यादि की असुविधा पाने वाला और रोजगार से धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करने वाला बड़ा आदर्श जन बल वाला और सुख शांति के हेतु निरंतर कर्म करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार धंदे की लाइन से धन की वृद्धि पाने वाला और जन शक्ति पाने वाला और समुराल से थोड़ा लाभ पाने वाला व स्त्री पक्ष में सुख का घाटा पाने वाला और धन जन की शक्ति से भोग विलास की पूर्ति व अधिकता पाने वाला और कुछ पुत्र सुख प्राप्त करने वाला और रोजगार के संबंध में धन वृद्धि के लिये बड़ी तेज बुद्धि से काम लेने वाला व संतान से सहायता पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ बंधन पाने वाला व भाग्य और पुरातत्व से कुछ फायदा उठाने वाला इज्जतदार व मेहनती होता है।

नं० ६७४

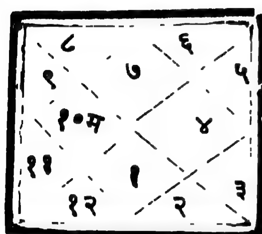
जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभाव शाली मेहनत करने वाला और रोजगार के सबब में जन बल धन बल और बाहु-बल से तरक्की व प्रभाव पाने वाला और प्रभाव शाली सुन्दर स्त्री वाला किन्तु स्त्री और भ्रातृ पक्ष में कुछ

नं० ६७५

बंधन पाने वाला और पिता स्थान में कुछ असंतोष पाने वाला भाग्य वृद्धि की चेष्टा करने वाला और स्त्री भोग व रोजगार और धन जन के कारणों से मान की उत्तम वृद्धि में कुछ कमज़ोरी पाने वाला एवं राज समाज में कुछ कमी महसूस करने वाला और बड़ा उत्साही प्रयत्नशील दौड़ धूप करने वाला और शत्रु स्थान के पक्ष में व परेशानियों में बड़ी फुर्ती से काम लेने वाला बडी हिम्मत वाला अच्छे कद वाला इज्ज़तदार व मेहनत से धन प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की महानता से बड़ा सुख और धन प्राप्त करने वाला व ज़मीन जायदाद पाने वाला और स्त्री का परम सुख प्राप्त करने वाला और शादी के बाद धन की तरक्की पाने वाला और घर में स्त्री की प्रभुता पाने वाला व माता का सुख प्राप्त करने वाला और जन बल का सुख उठाने वाला पिता स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला राज्य स्थान में व पद उन्नति में कुछ कमजोरी पाने वाला और बड़े थोक व्यापार में व बड़े काम में कुछ लापरवाही व कुछ कमजोरी करने वाला और भोग विलास का खूब आनन्द पानें वाला गृहस्थ सुखिया होता है।

नं० ६७६




जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

नं० ६७७

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के बल से दैनिक रोजगार करके धन कमानें वाला व अधिक खर्च करने वाला और विद्या प्राप्त करनें वाला व बुद्धि में कुछ परेशानी का योग गृहस्थ के संबंध से मानने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ विरोधक भावनाओं का योग पाने वाला धन और बुद्धि की ताकत से अन्य स्थानों का फायदा उठाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी व अमीरी का अनुभव करने वाला एवं दिमाग में व बोलचाल में कुछ गरमी रखने वाला तथा बुद्धिवान स्त्री वाला स्वार्थयुक्त अनुभशील होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से छटे स्थान

नं० ६७८

में हो तो वह मनुष्य धन व रोजगार के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और कुछ परेशानियों के मार्ग से धन की ताकत पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ में कुछ झंझट युक्त रह कर शक्ति पाने वाला तथा भाग्य और देह का सहारा लेने वाला और खूब खर्च करने वाला तथा शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखने वाला और ननसाल से कुछ सहारा पाने वाला व देह में कुछ विकार और इज्जत पाने वाला और रोगादि झगड़े तलब मामलों में कुछ फायदा पाने वाला और अपना प्रभाव रखने के हेतु धन व रोजगार की कमजोरी भी सहने वाला और भोग

विलास में कमी पाने वाला पेचीदा चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की ताकत से दैनिक रोजगार का पूरा फायदा पाने वाला और दैनिक रोजगार से बराबर खूब धन कमाने वाला और धन प्राप्ति के लिये निरंतर कर्म करने वाला और दैनिक कर्म बल के कारणों से मान के सबंध मे कुछ कमी पाने वाला व देह में कुछ बंधन पाने वाला तथा इज्जतदार समझा जाने वाला और सुन्दर व दृढ़ स्त्री पाने वाला व ससुराल से कुछ लाभ पाने वाला और पिता स्थान में व राजस्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और ऊंची प्रकार के कारबार के सबंध में भी कमजोरी पाने वाला और देह को कुछ बंधन व मान पाने वाला जन बल वाला होता है।

नं० ६७९

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य मौजूदा धन की कुछ हानि पाने वाला और पुरातत्व धन प्राप्त करने वाला और दैनिक रोजगार में बड़ी परेशानियां पाने वाला और दिक्कतों से व गूढ़ता से संबंधित रोजगार करने वाला और रोजगार में दूसरे स्थानों का संबंध पाने वाला और धन संग्रह में कमी व हानि पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ और कुटुम्बिक

नं० ६८०

कलेश पाने वाला और धन व आमद पाने के लिये बड़े से बड़े कष्ट साध्य प्रयत्न और मेहनत करने वाला और भाई बहन के स्थान पर कुछ बंधन पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने व स्त्री के भाग्य से धन पाने वाला व दैनिक रोजगार से वृद्धि करने वाला और धन जन की ताकत से अन्य स्थानों का भी फायदा पाने वाला और खूब खर्च करने वाला व बड़ा सुख उठाने वाला और मातृस्थान का खूब फायदा पाने वाला और जमीन जायदाद का खूब सुख उठाने वाला और गृहस्थ संबंधित धन जन द्वारा भाग्य बल से बड़े सुख का अनुभव करने वाला और दैनिक रोजगार का सुख प्राप्त करने वाला और रोजगार में व गृहस्थ संबंधित कार्य भोग में सतोगुणी कर्म करने वाला तथा धर्म आचरण करने वाला और धर्म पालने में सकाम कर्म करने वाला इज्जतदार भाग्यवान न्यायोक्त धन पाने वाला होता है।

नं० ६८१

८ ६
९ ७ ५
१० ४
११ १ ३मं
१२ २

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की व रोजगार की कमजोरी पाने वाला मान सन्मान व राज समाज में इज्जत की कमी पाने वाला स्त्री व पिता स्थान में भी धन की कमी के कारण अपमान जनक वेदना सहने वाला और

नं० ६८२

८ ६
९ ७ ५
१० ४मं
११ १ ३
१२ २

पिता व स्त्री और कोष में कमी व कष्ट सहने वाला और ओछे रोजगार से जीविका चलाने वाला और बड़े काम में घाटा पाने वाला व मातृ स्थान का सुख प्राप्त करने वाला और सुख विशेष चाहने के कारण रोजगार के पक्ष में लापरवाही करने वाला और देह व संतान पक्ष में एक बंधन सा प्रतीत करने वाला और भोग विलास में कमी पाने वाला व आलसी अकर्मण्य सा माना जाने वाला व अपमान की थोड़ी परवाह करने वाला गुप्त कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार से और धन जन की ताकत से बहुत जबरदस्त आमदनी पाने वाला तथा बड़ा धन कमाने वाला और बड़े बड़े मोटे स्थूल लाभ पाने वाला और स्त्री सुख प्राप्त करने वाला बड़ा बुद्धिवान और बड़ा प्रभावशाली और पेचीदा रास्ते से झंझट युक्त कर्मों से फायदा विशेष पाने वाला और बड़ी हिम्मत वाला एवं विपक्षी से लाभ पाने वाला बड़ी होशयारी से काम करने वाला और धन कमाने को मामूली बात समझ वाला तथा बेफिकर रहने वाला और धारा प्रवाह बंधी आमदनी पाने का अधिकारी होता है।

नं० ६८३

८ ६
९ ७ ५मं
१०
४
११ १ ३
१२ २

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से बारहवें स्थान

नं० ६८४

८ मं ६ ५ ९ ७ १० ४ ११ १ ३ १२ २

में हो तो वह मनुष्य धन जन की बहुत हानि पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ में अशांति पाने वाला तथा दैनिक रोजगार में कुछ अशांति व हानि का योग पाने वाला और दैनिक रोजगार में अन्य स्थान की शक्ति के द्वारा खर्च के जरिये से लाभ पाने वाला और बड़ी मेहनत करने वाला व दौड़ धूप से काम निकालने वाला और बहुत खर्च करने वाला किन्तु फिर भी खर्च और भाई व रोज-गार के मार्ग में एक प्रकार बंधन का सा योग पाने वाला तथा विपक्षियों में कुछ प्रभाव जमाने वाला व धन का अभाव महसूस करने वाला और रोजगार में कुछ विशेषता पाने वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का बुद्ध लग्न से पहिले स्थान

नं० ६८५

८ ६ ९ ७बु ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान समझा जाने वाला और शानदार खर्च करने वाला और खर्च व भाग्य शक्ति के द्वारा देह का आनन्द लेने वाला और देह में कुछ दुबलापन पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क

का बहुत उत्तम लाभ प्राप्त करने वाला और स्त्री संबंधित गृहस्थ का आनन्द लेने वाला और रोजगार में खूब सफलता करने वाला और धर्म के संबंध में बहुत ऊंचा विचार रखने वाला और मान प्रतिष्ठा पाने वाला बड़ा चतुर परम विवेक और न्याय करने वाला किन्तु शुद्ध न्याय शक्ति में कुछ कमजोरी पाने वाला और बड़ी दूर की बात सोचने वाला और थोड़ी सी कमजोरी के साथ भाग्यवानी भोगने वाला प्रभावयुक्त कोमल स्वभाव वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुद्ध लग्न से दूसरे

नं० ६८६




स्थान में हो तो वह मनुष्य धनवान एवं इज्जतदार माना जाने वाला और धन संग्रह शक्ति में कुछ कमजोरी पाने पर भी धन का आनन्द भाग्य शक्ति के द्वारा और अन्य स्थान की सम्पर्क शक्ति के द्वारा पाने वाला अर्थात् भाग्य और खर्च शक्ति के द्वारा जीवन की दिनचर्या में भाग्य शक्ति का कुछ चमत्कार पाने वाला अर्थात् भाग्य और खर्च शक्ति के द्वारा जीवन में आनन्द अनुभव करने वाला व पुरातत्व से फायदा पाने वाला और खर्च को रोकने पर भी धन ज्यादा खर्च करने वाला और कुटुम्बिक स्थान में कुछ कमजोरी के साथ वृद्धि पाने वाला और धर्म के संबंध में भी कुछ कमजोरी के साथ धर्म संग्रह करने वाला और धर्म से धन पाने वाला होता हैं।

ज़िस व्यक्ति का धन का बुद्ध लग्न से तीसरे स्थान

नं० ६८७ में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ से भाग्य की वृद्धि पाने वाला बड़ा और भाग्यवान समझा जाने वाला और अन्य स्थान की शक्ति के संपर्क से उन्नति का मार्ग बनाने वाला और खर्च शक्ति के योग का आनन्द पाने वाला व धर्म की वृद्धि का कुछ कमजोरी के साथ पालन करने वाला और सनातन धर्म का पालन विवेक भक्ति के योग द्वारा करने वाला और भाग्य के संबंध में कुछ कमजोरी होते हुये भी विवेक की शक्ति से भाग्य को मजबूत बनाने वाला तथा हिम्मतवर कोमलांगी और भाई बहन का कुछ कम-जोरी के साथ श्रेष्ठ सम्पर्क पाने वाला और धार्मिक शक्ति का ज्ञान व भाग्य शक्ति के ज्ञान का प्रभाव पाने वाला मान-नीय यशस्वी होता है।




जिस व्यक्ति का मकर का बुद्ध लग्न से चौथे स्थान

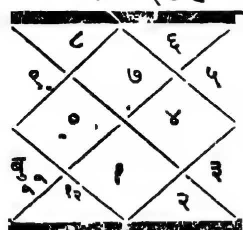
नं० ६८८ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली सुख भोगने वाला और सुख पूर्वक खर्च करने वाला और मातृ स्थान में कुछ कमी के साथ जोरदारी पाने वाला और अन्य स्थान के संबंध से खर्च योग द्वारा सुख पूर्वक अपने घर से भाग्य उन्नति करने वाला और विवेक शक्ति के भाग्य संबंधित कार्य में मुख्य व मान प्रतिष्ठा को पाने वाला और माता का



व भूमि स्थान का सुख देर से पाने वाला और भाग्य शक्ति से सदैव सहायक सहयोगियों को पाने वाला और शुभ विवेक व सुखद कार्य से भाग्योदय पाने वाला और बड़ा इज्जतदार व सुखी समझा जाने वाला धर्म कर्म वाला अर्थात् धर्म को कर्म रूप में पालन करने वाला होता है।

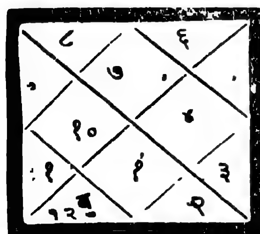
जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धर्म के संबंध में बड़ा दूर तक का गहरा ज्ञान रखने वाला और धार्मिक विवेक की बातें बड़ी कोमलता पूर्ण कुछ हेर फेर से करने वाला बड़ा चतुर विद्यावान् और बुद्धि विद्या व वाणी के हेर फेर से भाग्य वृद्धि करने वाला और संतान पक्ष में कुछ कमी के साथ अच्छा सुख प्राप्त करने वाला और संतानों में एक संतान कमजोर और एक संतान भाग्यवान् विवेकी पाने वाला और बुद्धि योग से भाग्यशक्ति के द्वारा खर्च चलाने वाला बड़ा नीतिज्ञ परम विवेकी और अन्य दूसरे स्थानों की सम्पर्क शक्ति का लाभ बुद्धि और भाग्य से यश पूर्वक प्राप्त करने वाला होता है।

नं० ६८९




जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में महान कमजोरी और अपयश पाने वाला और बड़ा दब्बू विचार वाला और मजबूरियों के चक्कर में फसकर बहुत खर्च करके भाग्य में हानि पाने वाला और शत्रु स्थान में अशांति का

नं० ६९०



योग पाने वाला और ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला और धर्म स्थान में हानि पाने वाला एवं गुप्त और ओछे धर्म का पालन करने वाला तथा ईश्वर शक्ति और परलोक धर्म की परवाह न करने वाला अर्थात् धर्म संबंध में बड़ी कमजोरी पाने वाला और अपने भाग्य पर अफसोस करते रहने वाला और डर व परेशानी का योग पाने वाला और अन्य स्थानों का हमेशा बड़ा संबंध पाने वाला और खर्च में परेशानी पाने वाला और बहुत गुप्त चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से सातवें स्थान

नं० ६९१

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और गृहस्थ का आनन्द लेने वाला और शादी के बाद रोजगार मे उन्नति पाने वाला और खर्च शक्ति को सूचारु रूप से गृहस्थ के संबंध में प्राप्त करने वाला और अन्य स्थान के संपर्क से खर्च द्वारा विवेक युक्तियों से भाग्य वृद्धि को प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ कमजोरी के साथ अच्छा सुन्दर आनन्द प्राप्त करने वाला और मान पाने वाला और भाग्य एवं खर्च शक्ति से भोग प्राप्ति का अच्छा साधन पाने वाला और धर्म संबंध में लौकिक वृद्धि के लिये सकाम कर्म करने वाला तथा स्त्री में भी धार्मिक स्वभाव पाने वाला और रोजगार में कुछ हानियों के साथ २ सुन्दर वृद्धि को प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से आठवें स्थान

नं० ६६२

में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में क्लेश अनुभव करने वाला और खर्च के संबंध में कमजोरी व अशांति पाने वाला और खर्च व भाग्यशक्ति को किसी दूसरे दूर के स्थान से पाने वाला और धर्म के संबंध में बड़ी कमजोरी पाने वाला और निर्जीव धर्म का पालन कुछ वेढंगे तरीके से करने वाला और पेत्रिक व पुरातत्व शक्ति से फायदा पाने वाला और गुप्त व गूढ़ योजनाओं व भाग्यबल से धन की वृद्धि करते रहने पर भी कुछ कमजोरी पाने वाला और समय की दिनचर्या को कुछ अच्छी मजेदारी से काटने वाला और आय में कुछ मजबूती का योग पान वाला और पारलौकिक के मुकाबले लौकिक जीवन की ही फिकर करने वाला और मृत्यु का समय सुन्दर पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से नवम स्थान

नं० ६६३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् यश प्राप्त करने वाला और अन्य स्थान के संपर्क से स्वेतः भाग्य वृद्धि को विवेक शवित के द्वारा प्राप्त करने वाला और कुदरती सहायता का अधिकार पाने वाला और भाग्यवानी से स्वतः खर्च की संचालन शक्ति को पाने वाला और धर्म के स्थान में कुछ कमजोरी के साथ २ मजबूती पाने वाला व ईश्वर पर भरोसा रखने वाला तथा ईमानदार कहलाने वाला और भाग्य के संबंध में भी कुछ कमजोरी के साथ

बहुत मजबूती पाने वाला और प्रथम अवस्था में भाग्य की कुछ चिंता मानने वाला और युवावस्था से वृद्धि को प्राप्त होने वाला और पुरुषार्थ करने वाला एवं हिम्मत वाला और बहन भाइयों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान प्रतापी तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला और भाग्य शक्ति से व अन्य स्थानों के सम्पर्क से बड़ा सुन्दर कारबार करने वाला और खर्च शक्ति से व उत्तम विचारों के द्वारा और उत्तम कर्म करते रहने से उत्तम प्रतिष्ठा को पाने वाला और पिता स्थान से कुछ कमजोरी के साथ श्रेष्ठ भाग्य की उन्नति पाने वाला और पिता की उन्नति के साथ २ कुछ अवनति भी पाने वाला और सुख का साधन पाने वाला एवं मातृ स्थान में कुछ कमजोरी के साथ अच्छा साधन पाने वाला और खूब शानदार खर्च करने वाला और धर्म के संबंध में कुछ कमजोरी के साथ धर्म को कर्म रूप से पालन करने वाला माननीय प्रतिष्ठावान इज्जतदार होता है।

नं० ६९४

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ ७ ६ | ५ |
| १० | | ४ बु |
| ११ | १ | ३ |
| | १२ २ | |

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य और अन्य स्थान की शक्ति से खूब लाभ करने वाला और उत्तम विवेक बुद्धि से आमदनी में वृद्धि करने वाला और आमदनी के स्थान में सफलता के साथ साथ कुछ कमजोरी भी महसूस करने

नं० ६९५

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ ७ ६ | ५ बु |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| | १२ २ | |

वाला और बुद्धि विद्या को ग्रहण करने वाला बड़ा विवेकी दूरदर्शी और सतान पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता पाने वाला और आमदनी के विषय में कुछ कमजोरी के साथ अच्छे न्याय से काम लेने वाला और धर्म के संबंध में भी कुछ कमजोरी के साथ अच्छे सुन्दर विवेक द्वारा धर्म लाभ पाने वाला और मीठा कोमल बोलने वाला और खर्च से लाभ लेने वाला भाग्यवान् चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से बारहवें स्थान

नं० ६९६



में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला तथा भाग्य स्थान में कई दफा हानियां पाने वाला और युवावस्था के बाद अन्य स्थान के सम्पर्कों से विवेक शक्ति के द्वारा महान् भाग्य वृद्धि पाने वाला और धर्म के यथार्थ अंग में कम श्रद्धा रखने वाला और धर्म के आडम्बर रूप को मानने वाला और तीर्थ यात्रा इत्यादि बाहरी धर्म मे खूब खर्च करन वाला अर्थात् दिखावटी धर्म का श्रद्धा सहित पालन करने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला व प्रभाव में कमी पाने वाला और बहादुरी के स्थान में डर मानने वाला और यश प्राप्ति में कमी पाने वाला और बड़ा भाग्यवान समझा जाने वाला और विपक्षियों के संबंध में विवेक की ओछी चाल चलने वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न के पहिले स्थान

नं० ६९७

८ ६ ९ ७गु ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली कार्य करने वाला और बड़ी हिम्मत रखने वाला और देह से बड़ा परिश्रम करने वाला बड़ा बुद्धिमान् चतुर नीति वाला बड़े भारी युक्ति बल से तथा बाहुबल से रोजगार करने वाला व मान पाने वाला और पुरुषार्थ की सफलता से भाग्यवान् समझा जाने वाला और धर्म आचरण का ध्यान रखने वाला किन्तु स्वार्थ सिद्धि के स्थान पर धर्म पालन की परवाह न कर सकने वाला और अपनी देह में कुछ दिक्कत व परेशानी के साथ २ एक प्रकार का गौरव का अनुभव करने वाला और संतान सुख में कुछ वैमनस्य पाने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्य के साथ गौरव पाने वाला और बड़ी होशियारी से चलने वाला गूढ़ चाल रखने वाला और विपक्षियों से विजय पाने की युक्ति रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से दूसरे

नं० ६९८

८गु ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी मेहनत व दौड़ धूप की शक्ति से खूब धन प्राप्त करने वाला और धन की ताकत से शत्रु स्थान पर प्रभाव रखने वाला तथा बड़ी भारी इज्जत पाने वाला तथा हृदयबल से प्रभाव पैदा

करने वाला तथा बड़ी कीमती योजनायें रखने वाला और बड़ी फुर्तीली और पेचीदा युक्तियों से बड़ी शक्ति प्राप्त करने वाला और भाई के पक्ष में कुछ बंधन पाने वाला और धन जन व राज समाज से उन्नति व मान प्राप्त करने वाला व जीवन के समय में कुछ गौरव प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष की शक्ति का भी कुछ लाभ पाने वाला और पेचीदा शक्ति का भंडार रखने वाला और पिता स्थान की उन्नति करने वाला बहादुर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु का लग्न से तीसरे

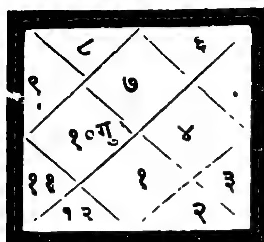
नं० ६९९




स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा उत्तम प्रभावशाली पुरुषार्थ करने वाला और ननसाल पक्ष की शक्ति का भी सहयोग किसी समय पाने वाला और अपने ओजस्वी पूर्ण परिश्रम के द्वारा रोजगार और लाभ को प्राप्त करने वाला और परिश्रम की सफलता से भाग्यवान समझा जाने वाला और हृदय में एक जबरदस्त हिम्मत व शक्ति का संचार पाने वाला और भाई के स्थान पर स्वयं अपनी सत्ता का अधिकार पाने वाला और विपक्ष सत्ता पर सदैव अपना पूरा प्रभाव रखने वाला और दिक्कतों व झंझटों में पूर्ण धैर्य से काम लेकर उनसे फायदा पाने वाला और अपनी शक्ति के अनुसार कर्तव्य अकर्तव्य का धर्म संबंध में साधारण ध्यान रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से चौथे स्थान

नं० ७००




में हो तो वह मनुष्य अपने मातृ स्थान में हानि पाने वाला और सुख के संबंध में बहुत मुश्किल से थोडी शांति पाने वाला और मान उन्नति व तरक्की के लिये बेजा परिश्रम कर के व अशांति सहकर भी प्राप्ति करने वाला तथा घर में भी चैन न पाने वाला और भाई के पक्ष में व ननसाल के पक्ष में अशांति पाने वाला और पुरातत्व शक्ति एवं जीवनाधार शक्ति का लाभ कठिन परिश्रम से प्राप्त करने वाला और अधिक खर्च करने वाला और अन्य स्थानों के संबंध से भी शक्ति पाने वाला और सुख स्थान पर कभी कभी बंधन युक्त कारावास का सा रूप पाने वाला और विजय पाने के हेतु विपक्षियों को गुप्त चालों के द्वारा हटाने वाला और वास्तविक धर्म न्याय की परवाह न कर के प्रकट न्याय को मानने वाला गुप्त हिम्मत वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ७०१




में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के बल से शक्ति प्राप्त करने वाला और देह व भाग्य में बल प्राप्त करने वाला और बुद्धि व संतानबल से लाभ में वृद्धि पाने वाला और बुद्धि के कठिन परिश्रम से अपने अन्दर हिम्मत व मान और प्रभाव पैदा करने वाला और संतान सुख को

प्राप्त करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना पाने वाला और विद्याग्रहण करते समय बुद्धि में थकान व कुछ कमजोरी पाने वाला और कुछ बहादुरी बुद्धि वाला और बहादुर संतान वाला और बडप्पन की पेचीदा बातों से काम निकालने वाला और छिपी हुई युक्तियों से बड़प्पन पाने वाला और बुद्धि में फिकर मानने वाला और धार्मिक शक्ति का भी प्रयोग उन्नति के लिये करने वाला बड़ा चतुर बुद्धिमान एवं कार्य प्रवीण होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला बीरप्रकृति वाला और अपनी महान मेहनत के द्वारा महानता को प्राप्त करने वाला और पिता स्थानके स्थान को तरक्की पहुंचाने वाला और लौकिक प्रतिष्ठा की उन्नति हृदयवल की शक्ति से एवं बाहुबल की शक्ति के द्वारा सदैव करने व चाहने वाला तथा स्थाई हिम्मत वाला और भाई के पक्ष में शक्ति व वैमनस्य दोनों का योग पाने वाला और अपनी प्रतिष्ठा रखने वाला हठयोगी और धन व जन की शक्ति पाने वाला इज्जतदार और पेचीदा मार्ग की शक्ति रखने वाला एवं विपक्षी को हराने वाला धैर्यवान और किसी समय ननसाल पक्ष से भी शक्ति पाने वाला खूब खरचा करने वाला और अन्य स्थान से भी शक्ति का फायदा उठाने वाला नित्य कर्मैष्ठी और अपने काम में कुछ बंधन पाने वाला लापरवाह होता है।

नं० ७०२



जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से सातवें स्थान

नं० ७०३

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार की बड़ी शक्ति प्राप्त करने वाला बड़ा भारी कार्य कुशल एवं सफल मेहनती और स्त्री के द्वारा भी महान शक्ति का योग पाने वाला और केन्द्रिय शक्ति के द्वारा लाभ व मान और बल प्राप्त करने वाला और न्यूनतम भाइयों का सहयोग पाने वाला और बड़ा जबरदस्त उद्योग करने वाला और अपने बल पुरुषार्थ से कुछ युक्तियों के द्वारा नित्य की निरंतर कार्य शक्ति करते करते अन्त में एक महान लाभदायक शक्ति को प्राप्त करने वाला और उसी कार्य शक्ति से देह सनमान पाने वाला और उसी शक्ति से शत्रु पक्ष का दमन कर के प्रभाव प्राप्त करने वाला और हृदय की शक्ति से विजय पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से आठवें स्थान

नं० ७०४

में हो तो वह मनुष्य अपनी शक्ति में महान् कमजोरी का अनुभव करने वाला और बड़ा डरपोक हृदय वाला और महान् गुप्त चालों से एवं गुप्त शक्तियों से काम करने वाला और विपक्षी के साथ अथवा झगड़े आदि शत्रु पक्ष मे दब कर काम निकालने वाला, और पुरातत्व शैली मे चलने वाला एवं महान् परिश्रम करने वाला भाई

और ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला और खूब खर्च करने वाला एवं अन्य स्थान के सहयोग से शक्ति पाने वाला और धन संचय की बड़ी योजना रखने वाला एवं मातृ स्थान में व भूमि और सुख स्थान में बड़ी कमजोरी अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान से शक्ति पाने वाला और कुछ अड़चनों के सहित भाई का सहयोग भी प्राप्त करने वाला और कुछ युक्तियों के साथ बड़ा सुन्दर पुरुषार्थ करने वाला झगड़े आदि शत्रु पक्ष की कुछ परवाह न करने वाला और अपनी भुजाओं का भरोसा करने वाला न्यायशक्ति की बाढ़ से वृद्धि पाने वाला और धर्म बल का सहारा लेने वाला किन्तु ईश्वर की यथार्थ भक्ति में कुछ कमी पाने वाला सनातन शक्ति की पूजा करने वाला और अपने बल पुरुषार्थ से मान पाने वाला और बुद्धि में तीव्रता रखने वाला व संतान वाला और वास्तविक धर्म पालन में व भाग्य स्थान में कुछ त्रुटि पाने वाला और कुछ अच्छी ननसाल वाला प्रभावशाली होता है।

नं० ७०५

| | | |
|---|---|---|
| ८ | ६ | |
| ९ | ७ | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ गु |
| १२ | | २ |

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी प्रभावशाली और मातृस्थान की अलहदगी व पितास्थान की तरक्की करने

नं० ७०६



वाला बड़ा ऊँचा व्योपार करने वाला महान् प्रतिष्ठा पाने वाला और बड़ी ऊँची युक्तियों से बिजय पाने वाला और ऊँची ननसाल वाला बड़ा स्वाभिमानी और बहादुराना राजसी काम करने वाला वीर पुरुष बड़ा प्रतापी एवं जबरदस्त मेहनत करने वाला और कारबार की विशेषताओं के कारण सुख शांति में बाधा पाने वाला और मान युक्त रह कर धन वृद्धि करने वाला व बहन भाइयों वाला और पेचीदा चालों का बड़ा माहिर होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ७०७



में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थी और पुरुषार्थ बल से ही कुछ युक्तियों के सहित बहुत धन कमाने वाला और विवेकी व आमदनी की शक्ति से बल और हिम्मत की वृद्धि पाने वाला और रोजगार में सफलता पाने वाला बड़ा सफल उद्यमी एवं प्रभावशाली और भाई की शक्ति पाने वाला और स्त्री स्थान में बड़ी शक्ति का उपभोग व सेवन करने वाला और संतान पक्ष में कुछ प्रभाव की कमी व वैमनस्य पाने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ अड़चनें और परिश्रम की योजनाओं से प्राप्ति पाने वाला और रोजगार व भोग वस्तुओं की शक्ति को प्राप्त करने में पूरी शक्ति लगाने वाला चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से बारहवें

नं० ७०८



स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी शक्ति और पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला दब्बू हिम्मत से काम करने वाला और छिपी ताकत के भरोसे को बड़ा मानने वाला और भाई से विरोध व वैमनस्य करने वाला ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला और विपक्षियों को एवं शत्रु पक्ष को छिपी हुई युक्तियो के बल से हराने का प्रयत्न करने वाला और अन्य स्थान की शक्ति से शक्ति पाने वाला एवं किसी प्रकार परतंत्रता का योग पाने वाला तथा आलसी अकर्मण्य सा और प्रभाव मे कमजोरी पाने वाला औरपुरातत्व व गूढ़ युक्तियों के दायरे से शक्ति पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ हिम्मत शक्ति का योग पाने वाला एवं लापरवाही रखने वाला व अधिक खर्च के कारण से बल में कमजोरी पाने वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न के पहिले स्थान

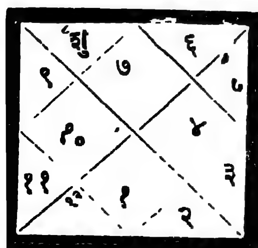
नं० ७०९ में हो तो वह मनुष्य आत्मविकाश




करने में सहयोग धारण करने वाला बहुत आयु पाने वाला और पुरातत्व का आदर्श लाभ पाने वाला तथा बड़ा माननीय प्रसिद्धता पाने वाला. और गहराई की चालों को बहुत उच्चतम रीति से काम में लाने वाला तथा महान् चतुराई से काम करने वाला और देह में कुछ कमजोरी पाने वाला व आत्माओं में दृढ़ता रखने वाला और दैहिक व आत्मिक बल से दैनिक कार्यों को बड़ी खूबी के साथ करने वाला और एक अजीब दु:ख सुख से युक्त गृहस्थ धर्म का संचालन करने वाला और बड़ा आत्मज्ञानी दूरदर्शी महान आत्मा कूटनीतिज्ञ प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० ७१० में हो तो वह मनुष्य पुरातत्व धन का




लाभ पाने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला और धन व कोष की वृद्धि करने में अपनी महान् सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करने वाला और इज्जतदार धनवान कहलाने वाला और धन

स्थान में कभी कभी हानियां भी पाने वाला और महान गहराई की युक्तियों से व आत्म योग से वृद्धि को प्राप्त होने वाला और कौटुम्बिक स्थान में कुछ दुःख सुख का योग पाने वाला और लौकिक उन्नति में आत्मसमर्पण करने वाला कुछ बंधन युक्त होता है।

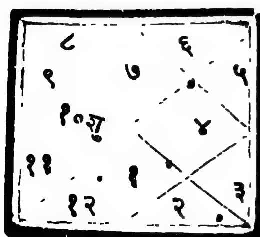
जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला और कठिन परिश्रम के द्वारा अपना व्यक्तित्व प्रकट करने वाला और आयु में शक्ति पाने वाला और भाग्य की वृद्धि करने में प्राण पण की चेष्टा करने वाला तथा बड़ा उत्साह प्राप्त करने वाला और अपने प्रभाव व मेहनत से महानता पाने वाला और बड़ी दौड धूप करने वाला और भाई के स्थान में कुछ कमी सहित पूर्ति पाने वाला और पुरातत्व की शक्ति रखने वाला और धर्म स्थान में कुछ कमी के साथ बड़ी श्रद्धा रखने वाला बड़ा चतुर होता है।

नं० ७११




जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने स्थान में सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला और अच्छी आयु पाने वाला तथा शानदारी के साथ प्रभाव से रहने वाला और पुरातत्व भूमि स्थान को प्राप्त करने वाला और सुख पूर्वक अपने

नं० ७१२



व्यक्तित्व द्वारा पुरातत्व का लाभ पाने वाला और माता पिता के स्थान में कुछ कमी सहित बड़प्पन को पाने वाला और सुख साम्राज्य को प्राप्त करने में जीवन की सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करने वाला बड़ा भारी चतुराइयों से राजसमाज व घरेलू कार्यों को कराने वाला गम्भीर होता है।

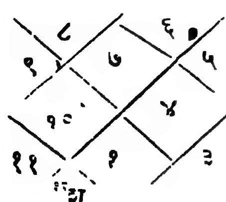
जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत स्थिर बुद्धि से काम लेने वाला व पुरातत्त्व का और प्रत्यक्ष का विशेष ज्ञान रखने वाला बड़ा गढ़ ज्ञान व आत्मज्ञान की शक्ति पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ कष्ट साध्य सुख को प्राप्त करने वाला और लाभ प्राप्ति का पूरा ध्यान रखने वाला और अच्छी आयु पाने वाला बड़ा गम्भीरता पूर्ण गहराई से बातें करने वाला और अपने सिद्धांत को सिद्ध करने में आत्मशक्ति का पूरा प्रयोग करने वाला बड़ा दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ कठिन समस्याओं वाला होता है।

नं० ७१३




जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़े शानदार ढंग से वीर भेष में रहने वाला तथा बहादुरी प्रकृति वाला और महान् कूट नीति वाला और अपने जीवन की कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने वाला बड़ा लापरवाह मस्ती

नं० ७१४



वाला और जीवन की शानदारी व प्रभाव के मुकाबले में कुछ खर्च की कमी महसूस करने वाला और कुछ परतंत्रता व स्वतंत्रता युक्त रहने वाला और ननसाल का कुछ सहयोग पाने वाला और घिराव व दिक्कतों पर विजय पाने का दावा करने वाला व अच्छी आयु वाला और दैहिक परिश्रम से पुरातत्व का लाभ पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान में कुछ कमी देखने वाला होता है।

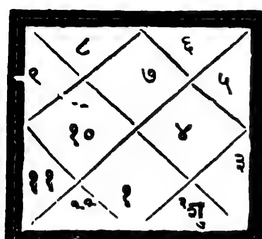
जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह की महान् शक्ति के द्वारा दैनिक रोजगार को संचालित रखने वाला और अच्छी आयु वाला व सुन्दर देह वाला तथा आत्मदर्शी कूटनीतिज्ञ बड़ा चतुर और अपने कार्यों को अपनी संपूर्ण शक्ति के द्वारा पूरा करने के संबंध में महानता को पाने वाला तथा प्रतिष्ठा पाने वाला और गृहस्थ के स्त्री संबंधित मार्ग में कुछ क्लेशित युक्तियों से सुख को प्राप्त करने वाला तथा शारीरिक और आत्मिक बल को प्राप्त करने वाला तथा भोगादिक पक्ष में कुछ गलत व कुछ गूढ़ युक्तियों से काम लेने वाला व पुरातत्व शक्ति का फायदा पाने वाला दूरदर्शी स्वाभिमानी तथा भोगी होता है।

नं० ७१५

८ ६
९ ७ ५
१० ४
११ १शु ३
१२ २

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य देह की सुन्दरता में कुछ कमी व कुछ दुर्बलता पाने वाला और अच्छी आयु वाला और बड़ा

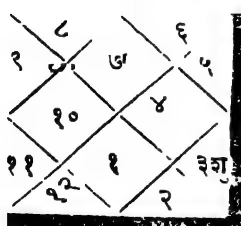
नं० ७१६




भारी कूटनीतिज्ञ और थोड़ी उम्र से ही वृद्धता को प्राप्त होने वाला व अपने से संबंधित किसी दूसरे स्थान में भी रहने वाला तथा अंतर ज्ञानकी शक्ति पाने वाला और पुरातत्व का महान् लाभ पाने वाला व धन प्राप्ति की प्राण पण से चेष्टा करने वाला और शानदार प्रभाव शक्ति का जीवन व्यतीत करने वाला व कुटुम्ब चाहने वाला और अपनी दैहिक कलाओं से ख्याति पाने वाला तथा गुप्त हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से नवम स्थान

नं० ७१७




में हो तो वह मनुष्य भाग्यवानी से जीवन व्यतीत करने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला और अपने अन्दर लापरवाही व बे फिकरी मानने वाला भाग्यवादी मेहनती और भाग्य उन्नति के संबंध में प्राण पण से चेष्टा करने वाला, किन्तु फिर भी भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और बहन भाई वाला होने पर भी उनसे प्रेम की कुछ कमी पाने वाला और धर्म में आस्तिकता रखने पर भी धर्म का पूरा पालन न कर सकने वाला और बड़ी हिम्मत से काम करने वाला व अन्तरगति का ध्यान रखने वाला व पुरातत्व का फायदा पाने वाला सुखी देह वाला बड़ा चतुर माननीय होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से दसवें स्थान
नं० ७१८. में हो तो वह मनुष्य राजसी जीवन व्यतीत करने वाला तथा प्रभुता पाने वाला व मान गुमान रखने वाला और पिता स्थान में कुछ कमी के साथ बड़प्पन पाने वाला और मातृस्थान का सुख प्राप्त करने वाला और बड़ी आयु पाने वाला और अपने बड़प्पन को कायम रखने में प्राण पण की चेष्टा करने वाला और पुरातत्व का फायदा पाने वाला गूढ़ कार्य करने वाला और सुख आराम को बड़ा चाहने वाला और मान वृद्धि में कठिनाइयां पाने वाला और व्यापार कर्म में कुछ कठिनता से वृद्धि को प्राप्त होने वाला हठधर्मी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान
नं० ७१९ में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में बहुत प्रकार के लाभ पाने वाला किन्तु अपने निज के लाभ स्थान में कुछ नीरसता महसूस करने वाला बड़ी भारी चतुराइयों वाला और जीवन की आयु में कुछ दिक्कतों का योग पाने वाला तथा कुछ सुन्दरतायुक्त रहने वाला और कुछ संतान व विद्या प्राप्त करने वाला और पुरातत्व का लाभ पाने वाला व देह के कठिन कर्म से लाभ के बड़े साधन पैदा करने वाला बड़ा गूढ़ युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला मानयुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह में बड़ी कमजोरी व खराबी पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान में रहने वाला और आय में कमजोरी का योग पाने वाला और पुरातत्व की हानि पाने वाला और सदैव आत्मा में अशांति पाने वाला और दिक्कतों व झंझटों में विशेष दखल रखने वाला तथा छिपी शक्ति का महान् प्रयोग करने वाला और दाव पेच की चालों में बड़ी गहरी चाल चलने वाला और खर्च में महान् संकट व कमी पाने वाला और अन्य स्थान में कष्ट अनुभव करने वाला ननसाल का कुछ सहारा पाने तथा जीवन की दिनचर्या में दुःख व अशांति मानने वाला होता है।

नं० ७२०

| | | |
|---|---|---|
| ८ | | शु |
| ९ | ७ | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| १२ | | २ |

## तुलालग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी सुन्दर सुडौल देह वाला बड़ा भारी सुख भोगने वाला 'खूब विद्या ग्रहण' करने वाला बड़ा अक्लमंद बड़ा प्रभावशाली और बड़ा मेहनती और बड़े कारबार का ध्यान रखने वाला और छोटे कारबार

नं० ७२१

| | | |
|---|---|---|
| ८ | | ६ |
| ९ | ७श | ५ |
| १० | | ४ |
| ११ | १ | ३ |
| १२ | | २ |

में बड़ी अरुचि व अश्रद्धा रखने वाला और स्त्री को घरेलू मामलातों में बुद्धि व वाणी के द्वारा कष्ट पहुंचाने वाला और स्वयं भी हृदय के अन्दर भोगादिक पक्ष में व स्त्री के वातावरण में कुछ कमी व लापरवाही मानने वाला और जायदाद वगैरह का व संतान का खूब सुख आनन्द प्राप्त करने वाला और अपनी देह सुख का बहुत ख्याल रखने वाला और मातृस्थान की शक्ति पाने वाला स्वाभिमानी मस्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य जमीन जायदाद की पृथ्वी पर शक्ति पाने वाला और बुद्धि व जनधन के बल से महान् सुख का अनुभव करने वाला और सुख के साधनों की संग्रह शक्ति रखने वाला और संचित नगद धन की भी बहुत परवाह न करने वाला व मातृस्थान की वृद्धि करने वाला और माता व संतान पक्ष में कुछ परेशानी व कुछ बंधन की समस्या पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में सुख शान्ति का योग पाने वाला और खूब लाभ पाने वाला तथा बुद्धि-धन रखने वाला और स्थिर शांति से पैदा करने वाला और गूढ़ योग व पुरातत्त्व का सुख प्राप्त करने वाला इज्जतदार होता है।

नं० ७२२




जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से तीसरे स्थान

नं० ७२३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा पुरुषार्थी और बड़ा बुद्धिमान् और बुद्धिबल की महान् शक्ति रखने वाला एवं बहुत वाचाल और शील रहित निःसंकोच बात कहने वाला और बुद्धि में शांति का ज्ञान होते हुये भी उसका पूर्ण पालन न कर सकने वाला और तीव्र संतान वाला और अधिक खर्च करने वाला और बुद्धि योग का अधिक परिश्रम करने वाला और बुद्धि व संतान का प्रभाव पाने वाला और भाग्य व धर्म का विचार करने वाला और कुछ भाई की शक्ति पाने वाला और मातृस्थान का कुछ विरोध भाव पाने वाला और बुद्धि योग से अन्य स्थान का संपर्क भी रखने वाला और बुद्धि विद्या की संग्रह शक्ति से काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से चौथे स्थान

नं० ७२४

में हो तो वह मनुष्य बड़ा सुखी रहने वाला और खूब विद्या ग्रहण करने पर भी केवल सुख प्राप्ति का ही अधिक ध्यान रखने वाला और देह को परम सुखी प्रभावशाली रखने के लिये पूर्ण बुद्धि योग की शक्ति से काम लेने वाला और सुख की शक्ति के प्रभाव से बुद्धि योग द्वारा विपक्षियों पर अर्थात् शत्रु स्थान पर पूर्ण प्रभाव रखने वाला और मान प्रतिष्ठा कायम रखने वाला और माता की व जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला और संतानपक्ष

की पूर्ति पाने वाला और अपने अन्दर आत्मगौरव व देह गौरव का योग पाने वाला बड़ा मस्त बेफिकर होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से पांचवें स्थान

नं० ७२५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | ७ | ६ | |
| ९ | १० | ४ | ५ |
| ११ श | १ | ३ | |
| १२ | | २ | |

में हो तो वह मनुष्य बड़ी विद्या ग्रहण करने वाला बड़ा बुद्धिमान् और संतान सुख प्राप्त करने वाला और अपनी बुद्धि में सुख का पूर्ण अनुभव करने वाला और सुन्दर शब्द बोलने वाला और स्त्री स्थान में कमी का अनुभव करने वाला और अपनी वाणी द्वारा स्त्री को कष्ट पहुंचाने वाला अर्थात् कटु भाषण से व्यथित करने वाला और धन संग्रह में कुछ कमी का अनुभव करने के कारण से धन वृद्धि की अधिक चेष्टा करने वाला और दैनिक रोजगार में व लाभ में कुछ कमी पाने वाला अर्थात् कुछ दुःख अनुभव करने वाला और बुद्धि के अन्दर मातृस्थान का परम सुख अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० ७२६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | ७ | ६ | |
| ९ | १० | ४ | ५ |
| ११ | १ | ३ | |
| १२ श | | २ | |

में हो तो वह मनुष्य अपने मातृस्थान से व संतान स्थान से दुःख का अनुभव करने वाला और सुख प्राप्ति में व विद्या प्राप्ति में घाटा पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ अजीव वृद्धि पाने वाला और आयु में व दिनचर्या में कुछ सुख

का अनुभव करने वाला और शत्रु पक्ष की वृद्धि पाने पर भी विपक्षियों की परवाह न करने वाला बड़ा चतुर पुरुषार्थी व मेहनती और बुद्धि योग से गुप चुप बड़ी पेचीदा चालों का जाल बनाने वाला बड़ा होशियारी रखने वाला और खर्च खूब करने वाला और कुछ घिराव पाने वाला और बातचीत करने में बडी घुमाव फिराव की शैली से काम निकालने वाला और कुछ कड़वा बोलने वाला हिम्मतवर प्रभावशाली और भाई से कुछ वैमनस्यता के साथ संपर्क पाने वाला और पुरातत्व का सुख उठाने वाला गूढ़ ज्ञानी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० ७२७

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ | ६ |
| १० | ७ | ५ |
| ११ | ४ | |
| | १श | ३ |
| १२ | | २ |

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कष्ट अनभव करने वाला और स्त्री स्थान से ही न्यून रीति से सुख प्राप्त करने वाला और मातृस्थान में हानि पाने वाला और गृहस्थ जीवन में सुख का घाटा होने से बुद्धि में परेशानी होते हुये भी सुख का अनुभव करने वाला एवं सुख प्राप्त करने का साधन बना लेने वाला और उसी तरह संतान पक्ष में बड़ी हानियां सहने के वाद सुख साधन पाने वाला और इसी तरह विद्या ग्रहण करने में बड़ी बड़ी मुसीबतों का अनुभव करने के बाद थोडी विद्या से ही सुख का योग पाने वाला और देह में लम्बाई और दैनिक रोजगार में क्लेश और भाग्य में बल पाने वाला और अपनी हर एक प्रकार की बुद्धि के लिये गुप्त चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वष का शनि लग्न से आठवें स्थान

नं० ७२८

८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ श

में हो तो वह मनुष्य बड़ा कूटनीतिज्ञ और लम्बी बातें सोचने वाला दूरदर्शिता रखने वाला और विद्या व संतान पक्ष में फल प्राप्ति होने पर भी उस में कमी के योग का कारण पाने वाला और बड़ी गहराई से बातें करने वाला और मातृस्थान में कुछ वियोग पाने वाला और सुख शांति की आहुति लगाकर बुद्धि योग द्वारा जीवनाधार पुरातत्व शक्ति को पाने वाला और आय का सुख भोगने वाला और मान प्रतिष्ठा की उन्नति के लिये बड़ी भारी युक्तियों से सदैव काम लेने वाला और पिता स्थान में सुख का घाटा पाने वाला और धन के स्थान में कमी देखने वाला व सुख में कमी पाने वाला गूढ़ ज्ञानी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से नवम

नं० ७२९

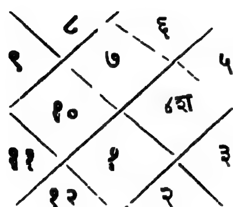
८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३श १२ २

स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति से सुख प्राप्त करने वाला बड़ा बुद्धिमान् धर्मज्ञानी और विद्या-युक्त शास्त्रीय कला रखने वाला और संतान सुख को प्राप्त करने वाला और बहुत शांति युक्त. बुद्धि बल से बड़ा प्रभाव रखने वाला महान् चतुर नीतिज्ञ गुणी और लाभ स्थान में कुछ कमी का अनुभव करने पर भी अच्छा लाभ पाने वाला और बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला और भाग्यबल

से मातृस्थान का सुख प्राप्त करने वाला और बेफिकर रहने वाला अर्थात् विशेष झंझटों के सामने होने पर भी उनकी परवाह न करने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ वैमनस्यता का योग होने पर भी कुछ सहयोग पाने वाला और धर्म स्थान में स्थाई रूप से बुद्धि लगाने वाला व उन्नत मस्तक वाला भाग्यवान् सुखी न्यायी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की सुख शांति में वैमनस्यता पाने वाला और मातस्थान का सुख प्राप्त करने वाला और संतान पक्ष में शक्ति पाने वाला विद्यावान एवं बड़ा चतुर होशियार और अपनी उन्नति के लिये बड़े

नं० ७३०




मतलब की बातें कहने वाला और अपनी बात को बड़ी करने की ही चेष्टा सदैव रखने वाला और खूब खर्च करने वाला एवं प्रभुत्व पाने वाला रजोगुणी स्वभाव वाला और स्त्री स्थान में त्रुटि व कमी महसूस करने वाला और अपनी वाणी द्वारा स्त्री को कष्ट पहुंचाने वाला और रोजगार में नित्य के धंदे के ख्याल से कमजोरी सोचने वाला और बड़ा रोजगार चाहने व करने वाला माननीय इज्जतदार मकानदार सुखी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य खूब लाभ पाने वाला व सुख प्राप्त करने वाला और बुद्धि विद्या से खूब तरक्की करने

नं० ७३१

वाला और देह में महानता पाने वाला और महान सुख का अनुभव अपने अन्दर करने वाला और मातृस्थान का अपने लिये अच्छा योग पाने वाला और संतान सुख का विशेष लाभ कुछ अलकसाहट के साथ पाने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ विशेषता होने पर भी कुछ परेशानी का योग अनुभव करते हुये सुख मानने वाला और आयु में व दिनचर्या में सुख का योग पाने वाला और पुरातत्व व गूढ़ युक्तियों से भी सुख का अच्छा साधन पाने वाला और जीवन में बेफिकरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति की कन्या का शनि लग्न से बारहवें स्थान

नं० ७३२

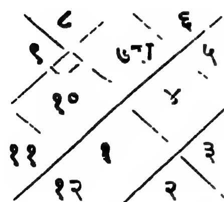
में हो तो वह मनुष्य सुख प्राप्ति के लिये अधिक खर्च करने वाला अर्थात् खर्च से ही सुख अनुभव करने वाला और अधिक खर्च के कारण सुखस्थान में कमज़ोरी पाने वाला अर्थात् बुद्धि में परेशानी अनुभव करने वाला और अन्य दूसरे स्थान में सुख शांति का साधन पाने वाला व अपने मातृस्थान में सुख का घाटा पाने वाला और विद्या बुद्धि में कुछ कमजोरी पाने वाला और संतान पक्ष में हानि पाने वाला एवं संतान सुख को देर अवेर में थोड़ा प्राप्त करने वाला और धन संग्रह में व कुटुम्ब के संबंध में बड़ी वैमनस्यता के साथ सुख का थोड़ा संबंध पाने

वाला और अन्य स्थान से व खर्च की शक्ति से भाग्य-वानी का योग पाने वाला और धर्म सबंध में विशेष रुचि रखने वाला न्याय को मानने वाला और परेशानियों का विशेष योग होने पर भी बड़े धैर्य और साहस से काम लेने वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न के पहिले स्थान

नं० ७३३




में हो तो वह मनुष्य बहुत भारी चालाकी से व चतुराईयों से काम निकालने वाला बड़ा होशियार रहने वाला और कुछ ख्याति पाने वाला और देह में व दिमाग में कुछ फिकर मानने वाला व अपने युक्तिबल से बहुत गहरा लाभ पाने की कोशिश सदैव करने वाला अर्थात् स्थिर लाभ पाने की पूर्ण चेष्टा करने वाला और दिल में कुछ डर मानने वाला और अपनी परिस्थिति मे बड़ी गुप्त कमजोरी महसूस करने वाला और अपनी होशियारी में गर्व मानने वाला और निर्भयता दिखाने वाला और देह पर कभी २ विशेष आघात सहने वाला अर्थात् जीवन से निराश होने तक का योग भी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से दूसरे स्थान

नं० ७३४

में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह रखने के स्थान में कुछ दुःख का अनुभव करने वाला अर्थात् धन का अभाव महसूस करने वाला और कुटुम्ब के संबंध में कुछ कमी व क्लेश अनुभव करने वाला और धन संग्रह की मजबूती के लिये बड़ा भारी जबरदस्त प्रयत्न करते रहने वाला और कभी २ धन और जन के ऊपर बड़े २ आघात सहने वाला—धन के मामलों में बड़ी २ मुसीबतें व दिक्कतें सहकर फिर बे फिकरी पाने वाला अर्थात् निराशाओं के बाद मजबूती पाने वाला और धन के लिये कोई न कोई नया मार्ग निकालने वाला होता।

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से तीसरे स्थान

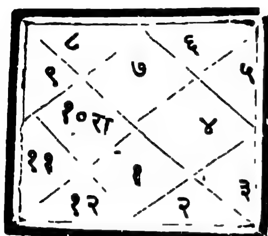
नं० ७३५

में हो तो वह मनुष्य बड़ा कमज़ोर पुरुषार्थ वाला और भाई के स्थान में हानि पाने वाला और भाई के पक्ष में क्लेश अनुभव करने वाला और छिपी हुई हिम्मत से और छिपी हुई युक्तियों से काम करने वाला और छिपी ताकत को ही श्रेष्ठ मानने वाला एवं कुछ अकर्मण्य आलसी सा रहने वाला और स्वार्थ सिद्धि का कुछ अप्रशंसनीय कार्य करने वाला और कार्य क्रम की प्रगति से कुछ थकान महसूस करने वाला और भुजाओं में कुछ कमजोरी पाने वाला और अन्दरूनी हिम्मत से कुछ हमेशा डर मानने

वाला और अपनी कमजोरी में भी छिपी हिम्मत से बहुत काम लेने वाला अर्थात् हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से चौथे स्थान

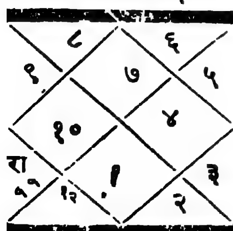
नं० ७३६




में हो तो वह मनुष्य सुख के साधनों में कुछ कमी पाने वाला और माता के पक्ष में व मातृस्थान में कुछ कमी के साधन पाने वाला और घर के रहने के स्थान में कुछ अशांति महसूस करने वाला और मकानादि में व भूमि-स्थान मे कुछ कमी व अड़चने महसूस करने वाला और सुख स्थान में कभी कभी गहरी हानियां पाने वाला और सुख प्राप्ति की मजबूती को पाने के लिये बड़ा गहरा प्रयत्न करने वाला और अन्त मे सत्य की गहरी मजबूती को पाने वाला और सारे जीवन में दूसरों के दिखाने का अच्छा सुख पाने वाला और सुख प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़े बड़े विचित्र प्रयोग करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ७३७




में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने में कठिनाइयां पाने वाला और बुद्धि से व वाणी से गुप्त भेदों की युक्तियों द्वारा कार्य करने वाला और संतान पक्ष में कुछ कठिनाइयां पाने वाला और छिपाव शक्ति से बातें करने में ही गौरव मानने वाला और कुछ विद्या थोड़ी होने पर भी विद्या की गहराई दिखाने का ही सदा प्रयत्न करने वाला और

अंत में किसी गहरे फायदे को जो बुद्धि का ही विषय हो उसे पाने वाला और संतान पक्ष में भी ठीक सुख देरी से पाने वाला और बुद्धि में व विद्या में और संतान पक्ष में कभी २ गहरे आघात सहने वाला और दिखावटी चतुराई में बड़ा जोर लगाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली एवं निडर प्रकृति वाला और रोगादि दिक्कतों पर विजय पाने वाला और शत्रु पक्ष को हराने वाला और ननसाल पक्ष का हानि करने वाला और प्रभाव की उन्नति के लिये बड़े २ प्रयत्न करने वाला और प्रभाव के स्थान में कभी २ कुछ फिकर भी सहने वाला किन्तु प्रभाव की पक्की जड जमाने का ही प्रयत्न करते रहने वाला और अन्त में प्रभाव की मजबूती पाने वाला और बडे धैर्य और साहस से काम करने वाला और बड़ी गहरी युक्तियों को काम में लेने वाला बड़ा होशियार सावधान स्वार्थी होता है।

नं० ७३८

८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ रा. २

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट सहने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी २ युक्तियां लगाने वाला और कठिनाइयां सहने वाला और स्त्रीस्थान में कठिन आघात सहने वाला और स्त्री व दैनिक रोज-

नं० ७३९

८ ६ ७ ९ ५ १० ४ ११ १रा ३ १२ २

गार के पक्ष में अधूरा सुख और परेशानी व झंझटों के साथ चलने वाला और कुछ छिपी हुई ताकत से काम निकालने वाला और स्त्री व रोजगार के पक्ष की मजबूती पाने के लिये सदैव चिंतित व प्रयत्नशील रहने वाला और अंत में किसी खास मजबूती को पाने वाला और इन्द्रिय में कुछ विकार पाने वाला तथा बड़ी मेहनत से काम चलाने वाला और भोग प्राप्ति में कुछ मुफ्त का सा विचित्र साधन पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से आठवें स्थान

नं० ७४०

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ कष्ट साध्य अनुभव करने वाला और समय की दिनचर्या को फिकरमंदी के तरीके से व्यतीत करने वाला अर्थात् जीवन के समय का कुछ सदुपयोग ढग से न कर सकने वाला और अड़चनें महसूस करने वाला और पुरातत्व में हानि पाने वाला और किसी गूढ़ ज्ञान की गहरी युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला और उदर के नीचे या गुदा में कुछ खराबी या कब्ज पाने वाला और पैतृक संपत्ति में कुछ हानि पाने वाला और जीवन में कुछ अमरनाम करने का महान् साधन करने वाला और आयु के स्थान में कई प्रकार के मार्मिक आघात सहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से नवम स्थान

नं० ७४१

में हो तो वह मनुष्य अपनी भाग्य-वानी की वृद्धि के लिये बड़े २ गहरे प्रयत्न करने वाला और भाग्यवानी के दिखावे को बड़े शानदार तरीकें से जचाने वाला और धर्म के संबंध में बड़ी गहरी युक्तियों का प्रयोग करने वाला और धर्म की लम्बी चौड़ी बातें कहने वाला और धर्म का बड़ा भारी दिखावा करने वाला और धर्म एवं भाग्य के पक्ष की कुछ यथार्थताओं में कमजोरी पाने वाला और धर्म व भाग्य की शक्ति से कुछ अनधिकार सफलता पाने वाला और भाग्य की मजबूती के लिए कोई स्थिर साधन प्राप्त कर के ही मानने वाला एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दो तरह की स्थिति रखने वाला भेदीला आदमी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से दसवें स्थान

नं० ७४२

में हो तो वह मनुष्य अपने पिता स्थान से कुछ हानि का योग व कुछ फिकर पाने वाला और राज समाज में व व्यापार स्थान में कभी कभी बड़े संकट सहने वाला और उन्नति के लिये बड़ा भारी प्रयत्नशील रहने वाला और कुछ स्वतंत्रता में कमी अनुभव करने वाला और अपने मान प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में कुछ कमी या कुछ क्लेश का योग पाने वाला और व्यापार वृद्धि के लिये कठिन से कठिन कष्ट साध्य कर्म को करने वाला और मानसिक क्लेश

सहने वाला और कभी कभी मान प्रतिष्ठा पर कुछ आघात भी सहने वाला और अन्त में किसी विशेष कार्य की शक्ति को प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से ग्यारहवें

नं० ७४३

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ करने वाला और लाभ के स्थान में कुछ परेशानियां भी सहने वाला और लाभ प्राप्ति के संबंध में विशेष प्रयत्नशील हमेशा रहने वाला और विशेष लाभ की इच्छा होने से भी वह अपनी अधिकार व अनधिकार की परवाह न करके स्वार्थ सिद्धि का ही लक्ष्य बनाये रखने वाला और आमदनी के संबंध स्थान में कभी २ संकटों का भी विशेष अनुभव करने वाला और अन्त में किसी मजबूत आमदनी को पाने वाला और लाभ के लिये बड़ी २ विचित्र युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से बारहवें स्थान

नं० ७४४

में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और खर्च के स्थान में कुछ अधूरापन महसूस करने वाला और खर्च स्थान में कभी २ बड़ा संकट सहने वाला और खर्च हमेशा बदस्तूर कायम रखने वाला और अन्य दूसरे स्थानों की कुछ कमजोरी के साथ २ एक विशेष मजबूती भी पाने वाला और खर्च स्थान में कुछ परेशानी के साथ एक

शानदारी का ढंग भी पाने वाला और अन्त में खर्च के संबंध में बड़ी मजबूती का योग पाने वाला और अन्य स्थान से शक्ति प्राप्त करने वाला और दूसरों को बड़ी लापरवाही दिखाने वाला और छिपी युक्तियों वाला होता है।

## तुलालग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ कमजोरी पाने वाला और अपने अन्दर कुछ अधूरापन महसूस करने वाला और अपने अन्दर की मौजूदा कमजोरी की कभी परवाह न करने वाला और हेकड़ी व बहादुरी के ढंग से रहने वाला और बड़ी बड़ी मुसीबतें सहकर व कुछ गुप्त युक्तियों द्वारा अपने अन्दर एक मजबूत शक्ति को पाने वाला और दौड़ धूप व परेशानियों से काम करने वाला और अपने स्थान पर स्थिरता से डटने वाला और स्वार्थ सिद्धि करने के लिये किसी भय की परवाह न करने वाला हठयोगी होता है।

नं० ७४५

८ ६ ९ ७के ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से दूसरे स्थान

नं० ७४६

| | | | |
|---|---|---|---|
| के | | ६ | |
| ९ | ७ | | ५ |
| १० | | ४ | |
| ११ | १ | | ३ |
| | १२ | २ | |

में हो तो वह मनुष्य धन के कोष स्थान में कुछ हानि पाने वाला और धन संग्रह न कर सकने के कारण से कुछ खी रहने वाला और कुछ कौटुम्बिक हानि पाने वाला और धन जन के स्थान में कभी कभी अचानक नुकसान और विपत्तियों का सामना पाने वाला और धन सग्रह के लिये बड़ी बड़ी मुसीबतों के बाद भी दृढ़ता के साथ बराबर उद्योग करते रहने वाला और बड़ी हिम्मत से काम लेने वाला और अधिक परिश्रम व कुछ विशष युक्तियों से धन की निर्भयता को प्राप्त कर सकने वाला और धन संग्रह के लिये बड़ी दौड़ धूप करने वाला गुप्त शक्ति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से तीसरे स्थान

नं० ७४७

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | | ६ | |
| ९के | ७ | | ५ |
| १० | | ४ | |
| ११ | १ | | ३ |
| | १२ | २ | |

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषाथ करने वाला और हिम्मत के काम में तादाद से ज्यादा काम करने वाला और बेहद दौड़ धूप करने वाला वड़ा उत्साह रखने वाला और अपने कार्य के मार्ग में भविष्य की जरा भी परवाह न करके सदैव आगे वढ़ने वाला और म... वीरता रखने वाला और भाई के स्थान में कुछ वि... और अधूरा महत्त्व प्राप्त करने वाला और पुरुषार्थ ... पराकाष्ठा पर पहुचने की हिम्मत रखने वाला तथा बड़ा प्रभावशाली मेहनती व कठोर और लम्बी भुजाओं

वाला और गुप्त शक्ति का बल हृदय में रखने वाला बड़ा चलता पुर्जा तेज तर्रार होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख के स्थान में व मातृस्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और सुख प्राप्ति के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला और सुख व भूमि के सबंध में कभी २ बड़ी बड़ी निराशाओं के बाद भी हिम्मत न हारने वाला और अन्त मे किसी मजबूत शक्ति को प्राप्त करके सुख का अनुभव करने वाला किन्तु सुख के साधनों के लिये परिश्रम व पुरुषार्थ और युक्तियो से काम निकालने वाला और अपने स्थान मे बाहर भी रहने वाला और सुख के एकत्रित साधनों में कुछ न कुछ कमी महसूस करने वाला और कुछ अशांति युक्त और गुप्त हिम्मत से सुख उठाने वाला लापरवाह होता है।

नं० ७४८

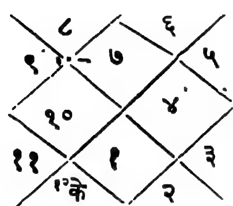
जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या के ग्रहण करने में बड़ी बड़ी मुश्किलों का सामना करने वाला और बुद्धि के संबंध में अन्त स्थल में मजबूती पाने वाला किन्तु अपने मंतव्य को वाणी द्वारा दूसरो को समझाने में बड़ी अड़चन महसूस करने वाला और बुद्धि में कठोरता व कटुता धारण करने वाला और संतान पक्ष मे कष्ट का योग पाने वाला

नं० ७४९

और बुद्धि में कुछ फिकर मन्द रहने वाला और विद्या की योग्यता को मुसीबतों के बाद व निराशाओं के बाद एक मजबूत ढंग से पाने वाला और बुद्धि मे गुप्त योजनायें रखने वाला और अपने सिद्धांत पर अटल रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रुओं पर बड़ा प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला या क्लेश पाने वाला और दिक्कतों पर विजय पाने वाला और बड़ा बहादुर प्रकृति वाला धैर्यवान बड़ी हिम्मत रखने वाला और शील का उल्लघन करने वाला स्वार्थ को सिद्ध करने वाला और विजय की गुप्त योजनाओं का महान् कार्य करने वाला और बड़े साहस के साथ, विफलताओं का मुकाबला करने वाला और हर एक मामले में हर एक के साथ जीत के सौदे को ही पकड़ने का पूरा प्रयत्न करने वाला और रोगादि झगड़े तलब मामलों में जल्दी मुक्त होने का उपाय करने वाला निडर स्वभाव होता है।

नं० ७५०




जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कष्ट व हानि का योग पाने वाला और गृहस्थी में चिन्ता पाने वाला और दैनिक रोजगार में परेशानी और हानि पाने वाला एवं रोजगार के संबंध में विच्छेद व बाधा और निराशाओं

नं० ७५१



का सामना करने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ दूसरे का सहारा और गुप्त भेद की क्रियाओं से काम निकालने वाला और फिकरमंद रहने वाला और रोजगार की मजबूत शक्ति को पाने के लिये सदैव विशेष प्रयत्नशील रहने वाला और अन्त में किसी मजबूती को पा लेनें वाला और बड़ी मेहनत का काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ अशांति पाने वाला और जीवन की गुप्त धैर्य शक्ति की ताकत को बडी मजबूती से धारण करने वाला और पुरातत्त्व की कुछ हानियां पाते रहने पर भी किसी प्रकार से कुछ विशेष शक्ति का प्रयोग संचय करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ अधूरापन सा व कुछ कमजोरी सी महसूस करने वाला एवं पैतृक सम्पत्ति में कुछ कमजोरी पाने वाला और जीवनाधार निर्वाहक शक्ति में कुछ दिक्कतें तथा कुछ मजबूती पाने वाला और बड़ी शान गुमान से रहने वाला तथा जीवन में कोई विशेष कार्य यादगार के लिये करने वाला तथा कुछ उदर विकारी होता है।

न० ७५२

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में बड़ी २ निराशाओं का संचार पाने वाला एवं भाग्य में अफसोस मानने

नं० ७५३




वाला और अपयश पाने वाला और धर्म की कमजोरी पाने वाला और किसी ओछे धर्म का पालन करने वाला और यथार्थ धर्म में श्रद्धा पा सकने वाला और भाग्य स्थान के ऊपर बड़े २ आघात सहने वाला और भाग्य उदय के संबंध में बड़ी फिकर मानने वाला और बड़ी २ मुश्किलों से भाग्य वृद्धि का मार्ग पाने वाला और धर्म को हानि पहुंचाने वाला और ईश्वर में कम श्रद्धा रखने वाला और भाग्य के लिये कोई गुप्त से गुप्त चाल चलने वाला व गुप्त हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि पाने वाला और पिता स्थान से क्लेश अनुभव करने वाला और कारबार में तथा व्योपार में नुकसान सहने वाला और कभी २ मान रक्षा के लिये बड़े २ संकटों का सामना करने वाला

नं० ७५४




और गुप्त शक्ति का संचार पाने वाला और हठ धर्मी से काम लेने वाला और अपनी उन्नति के लिये चाहे कितनी मुसीबत आवे या सहनी पड़े किन्तु पीछे न हटने वाला और आखिर किसी मजबूत शक्ति को पाने वाला बड़ी दृढ़ता से काम करने वाला और भेष भूषा में व वस्त्राभूषणों में कुछ कमी पाने वाला और मानसिक फिकर सहने वाला राज्य विरोधी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी आमदनी के लिये बड़ी भारी शक्ति का प्रयत्न करने वाला और बहुत लाभ पाने वाला और कभी २ मुफ्त का सा लाभ प्राप्त करने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ बाधा भी पाने वाला और आमदनी की वृद्धि के लिये कुछ परेशानियां भी सहने वाला अर्थात् आमदनी के सामने चाहे कितनी ही परेशानियां क्यों न आयें किन्तु घबड़ाहट महसूस न करने वाला और आमदनी के लिये अन्त में बहुत मजबूती प्राप्त कर लेने वाला तथा गुप्त शक्ति रखने वाला और अपना स्वार्थ सिद्ध करने में बड़ी मुस्तैदी से काम लेने वाला होता है।

नं० ७५५

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत मजबूत ढंग से हमेशा एक सा खर्च करने वाला और अन्य स्थान की ताकत का सहारा पाने वाला अर्थात् अन्य स्थान की शक्ति को हमेशा प्राप्त रखने वाला और खर्च की शैली बड़ी शानदारी से कायम रखने वाला तथा खर्च के मामले में कुछ कमजोरी के होते हुये भी जाहिर में बड़ी दिलेरी से काम लेने वाला तथा खर्च के स्थान में कभी २ अशां-

नं० ७५६

तियों का बड़ा भारी सामना आने पर भी हिम्मत से काम चलाने वाला और खर्च की भविष्य में बे फिकरी पाने के लिय बड़ा इन्तजाम करने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरसूर्यफलम्

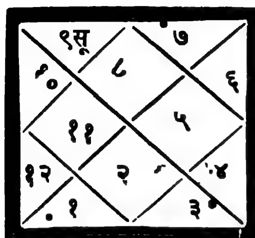
जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न के पहिले स्थान

नं० ७५७

९ ७
१० ८सू ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

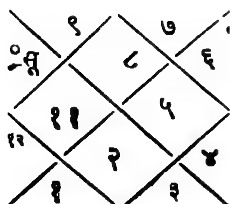
में हो तो वह मनुष्य राजसी ऐश्वर्य पाने वाला तथा बड़ा प्रतापी और बड़ा प्रभावशाली और बड़ी गुस्सा व हेंकड़ी रखने वाला और हुकूमत से काम लेने वाला और स्त्री स्थान में कमी पाने वाला व भोगादि योगों को पाने वाला व पिता स्थान की शक्ति पाने वाला और बड़ा ऊंचा कारबार करने वाला और ऊंचा कर्म करने वाला और सुन्दर वस्त्र आभूषण पहिनने वाला और देहादिक सम्बन्ध से सदैव मान पाने वाला और बड़े शान गुमान से रोजगार करने वाला व बड़ी तेजी से काम करने वाला और बड़े बड़े आदमियों से मेल भाव रख कर काम निकालने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान
नं० ७५८ में हो तो वह मनुष्य अपने कारबार




से खूब धन कमाने वाला और बड़ी इज्जत पैदा करने वाला व पिता स्थान से वृद्धि का मार्ग पाने वाला तथा राज व समाज से फायदा उठाने वाला व कुटुम्ब में प्रभाव पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ी शान गुमान का अनुभव करने वाला और बड़े बड़े विशाल कर्म करने वाला व धन कमाने के लिये पूर्ण शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा पुरातत्त्व की गहरी खोज करने वाला तथा पैतृक लाभ पाने वाला व संचित कर्म शक्ति के बल से जीवन में प्रकाश पाने वाला बड़ा उद्योगी मानयुक्त होता है।

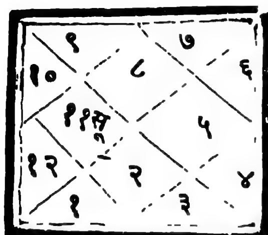
जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान
नं० ७५९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा पुरुषार्थी




तथा बड़ा भारी मेहनती एवं पिता स्थान की व भाई के स्थान की शक्ति को कुछ वैमनस्यता के साथ पाने वाला तथा उद्योग के जरिये उन्नति पर पहुंचने वाला तथा मान प्रतिष्ठा को पाने वाला तथा भाग्यशाली कहलाने वाला तथा कुछ धर्म कर्म का पालन करने वाला तथा परिश्रम से यश कमाने वाला तथा बड़प्पन की योजनाओं पर चलने वाला किन्तु परिश्रम के अनुसार पूर्ण सफलता पाने वाला तथा बड़ी

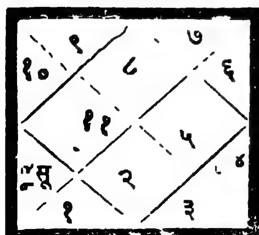
दौड़ धूप करने वाला व हिम्मत का भरोसा रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से चौथे स्थान नं० ७६० में हो तो वह मनुष्य माता पिता के




सपर्क सुख को कुछ नीरसता से प्राप्त करने वाला तथा कारबार को कुछ सुख पूर्वक चलाने वाला किन्तु कुछ अड़चनें सहने वाला और कुछ अड़चनों के साथ ही माता पिता के संबंध और स्थान का फायदा पाने वाला तथा भूमि का फायदा भी समान्यतया प्राप्त करने वाला और घर पर ही बहुत सी प्रकार के फेर बांधने वाला कुछ प्रकाशवान् कर्म करने वाला और सुख व एश्वर्य के साधनों में कुछ अड़चनें सहने वाला और कुछ प्रभावशाली तथा हुकूमत दिखाने वाला माननीय राजसी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान नं० ७६१ में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी चतुराइयों वाला व्यापारादि का बड़ा ज्ञान




रखने वाला तथा विद्याओं को व्यावहारिक व राजनैतिक रीति से सीखने व बरतने वाला एवं संतान प्राप्त करने वाला तथा पिता की शक्ति का फायदा पाने वाला और व्यापारादि से खूब लाभ पाने वाला तथा बड़ी होशियारी एवं चतुराइयों की बातों से बड़ा काम निकालने वाला एव हमेशा अपनी उन्नति की

बातों में लगा रहने वाला तथा उन्नति के लिये बड़ी बड़ी तरकीबों से काम करने वाला तथा स्वार्थ का सदैव ध्यान रखने वाला किन्तु लौकिक पद्धति के विपरीत न चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से छठे स्थान

नं० ७६२

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ | ६ |
| १० | ११ | ५ | ४ |
| १२ | १सू | २ | ३ |

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और शत्रुओं पर विजय पाने वाला और पिता के स्थान से कुछ विरोध और कुछ प्रभाव पाने वाला तथा अपनी हेकड़ी रखने वाला एवं ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति व प्रभाव पाने वाला और खर्च में कुछ कमजोरी पाने वाला व दूसरे स्थानों का सपर्क भी कुछ कमज़ोरी से पाने वाला व मुसीबतों और परेशानियों से न घबड़ाने वाला तथा बड़ी जबरदस्त युक्तियों से मान प्रतिष्ठा बनाने वाला और युक्तियों का ही कारबार करने वाला और तामसिक उग्र कार्यों के द्वारा बड़ा प्रभाव जमाने वाला और झगड़े बलब मामलों में बड़ा साहस रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से सातवें स्थान

नं० ७६३

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ | ६ |
| १० | ११ | ५ | ४ |
| १२ | १ | २सू | ३ |

में हो तो वह मनुष्य रोजगार को बड़े शानदार ढंग से करने वाला और कुछ कठिनाइयां होने पर भी रोजगार में कुछ बड़प्पन पाने वाला एवं स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता के साथ मान पाने वाला और स्त्री में कुछ तेजी पाने

वाला और कारबार व कर्म शक्ति के योग से मान प्राप्त करने वाला तथा स्त्री पक्ष व भोगादिक पक्ष में कुछ कमी के साथ २ प्रभाव व गुमान पाने वाला और लौकिक व गृहस्थिक कर्म को बड़ी उत्तेजना के साथ व प्रभाव के साथ पालन करने वाला और गृहस्थ कर्म करने में ही अपनी शोभा समझने वाला और पिता स्थान की कुछ गृहस्थिक व रोजगार शक्ति को पाने वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से आठवें

नं० ७६४

स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की हानि पाने वाला और मान प्रतिष्ठा की कमी महसूस करने वाला तथा बहुत गूढ़ युक्तियों को व्यवहार में ला करके उन्नति की चेष्टा करने वाला और उन्नति के लिये ही बड़ी २ परेशानी तथा विदेश आदि में कोशिश करने वाला और धन प्राप्ति के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला व जीवन की दिनचर्या में एक प्रकार की रौनक व प्रकाश पाने वाला और आयु में व दिनचर्या में वृद्धि व प्रभाव पाने वाला और कुटुम्ब की भी वृद्धि चाहने वाला और कुछ खोटे या गलत कर्म को परिश्रम सहित करने वाला राज समाज में विशेषता न पाने वाला पुरातत्व की कुछ शक्ति पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से नवम स्थान

नं० ७६५ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान प्रतापी और धर्म कर्म करने वाला और ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार का बहुत आनन्द पाने वाला पिता का बहुत फायदा पाने वाला और बहुत पुरुषार्थ करने वाला होने पर भी भाग्य को प्रधान मानने वाला और भाई के सम्बन्ध स्थान में पिता के मुकाबिले थोड़ा न्यून प्रेम रखने वाला और रजोगणी व सतोगुणी कर्म का पालन करने वाला और राजसी ऐश्वर्य केवल तकदीर के बल से प्राप्त करने वाला व खूब कारबार भी करने वाला और प्रभावशाली समझा जाने वाला और कीर्ति पाने वाला तथा दूरदर्शी तथा तत्त्व खोजी तथा परोपकारी एवं ज्ञानी होता।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से दसवें स्थान नं० ७६६ में हो तो वह मनुष्य राज समाज का वैभव प्राप्त करने वाला तथा बड़ा भारी हुकूमत रखने वाला तथा पिता स्थान की महान् शक्ति को पाने वाला राज्य शासन का सम्बन्ध पाने वाला एवं बड़ा भारी प्रभावशाली तथा प्रतापी मान पाने वाला और महान् उत्तेजनाओं का कार्य तेजी के साथ करने वाला तथा उग्र कर्मेष्ठी और अपनी कारबार व कार्य शैली के सामने किसी की परवाह न करने वाला तथा पिता को मान देने वाला होने

पर भी पिता की परवाह न करने वाला व मातृस्थान में कुछ विरोध पाने वाला कुछ अशांत प्रद. होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला और व्यापारादि से खूब धन कमाने वाला और बड़ी शान के साथ कमाई करने वाला व पिता स्थान का खूब लाभ पाने वाला तथा हमेशा फायदे और मान का ख्याल रखने वाला तथा विद्या में उत्तमता पाने वाला और संतान का वैभव पाने वाला तथा बहुत चतुराई की बातों से व कार्य से मान पाने वाला और राजनीतिक के संबंध में अच्छा बोल सकने वाला व ज्ञान रखने वाला तथा प्रभाव के साथ बोलने वाला एवं पिता की तरक्की चाहने व करने वाला और उत्तम कार्य करने वाला और तेजी के साथ काम करके फायदा पाने वाला होता है।

नं० ७६७



जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान की हानि पाने वाला और कारबार की हानि पाने वाला तथा मान प्रतिष्ठा की हानि पाने वाला और खर्च के स्थान में क्लेश सहने वाला और अपने व दूसरे स्थान में भी कारबार व मान प्रतिष्ठा के लिये बहुत चिंतित रह कर कमजोरी के

नं० ७६८

साथ काम करने वाला और कुछ आलसी व दब्बूपन की नीति से काम निकालने वाला और शत्रु स्थान में व ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव का योग पाने वाला और रोग दोष की परवाह न करने वाला व छिपी ताकत से बड़ी पेचीदा व प्रभाव की योजना बनाने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की कमजोरी व मानसिक चिन्ता पाने वाला और बहुत दिलचस्पी के साथ रोजगार में बडी दौड धूप करने वाला और देह में दूबलापन पाने वाला व गृहस्थी का पूरा ख्याल रखने वाला व स्त्री में और भोगादि पक्ष में मन की विशेष आसक्ति रखने वाला तथा रोजगार के सम्बन्ध में मन और भाग्य की ताकत से तरक्की करने वाला और धर्म का अधूरा पालन करने वाला और भाग्य की उन्नति बहुत चाहने पर भी, और उन्नति के बहुत २ से अवसर पाने पर भी यथार्थ उन्नति में रुकावटें पाने वाला और ऊंची भावनाओं के साथ होने पर भी दिल में कमजोरी पाने वाला और दैव गति पर अफसोस मानने वाला होता है।

नं० ७६९



जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान और बहुत धनवान् तथा भाग्यबल की ताकत से बहुत धन राशि पाने वाला और कुटुम्ब का आनन्द लेने वाला व धर्म का संग्रह करते रहने पर भी धर्म के यथार्थ सम्बन्ध में कुछ अरुचि पाने वाला और पूर्व संचित पुण्य के संस्कारों से लौकिक की सफलता तथा भाग्य के चमत्कार का प्रभाव पाने वाला एवं अमीरात भोगने वाला व आयु में वृद्धि का योग पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में गौरव तथा वड़प्पन का आनन्द अनुभव करने वाला और मानसिक विचारों की ताकत से और धर्म बल की ताकत से धन की वृद्धि पाने वाला और धन चाहने वाला होता है।

नं० ७७०

जिस व्यक्ति का मकर का चंद्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य महान् उत्साही बड़ा भाग्यवान् और बड़ा धर्म परायण ईश्वर भक्त तथा धर्म की संगति एवं धर्मबल और ईश्वर के भरोसे का बहुत विश्वास रखने वाला और सतोगुणी शक्ति का बड़ा सुन्दरता से सदुपयोग करने वाला तथा मगन मन रहने वाला और बहन भाइयों का बड़ा अपूर्व आनन्द लेने वाला और उन्नति के लिये सदैव ऊंचा मन करके कार्य करने वाला

नं० ७७१

और ऊंचे विचार वाला तथा पारलौकिक संबंध में भी बड़ी दूर तक की गहरी बातें सोचने वाला तथा पुरुषार्थ कर्म में कुछ नीरसतायुक्त महान् रस पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान
नं० ७७२




में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली खूब सुख भोगने वाला और धर्म कर्म का पालन करने वाला माता का व भूमि स्थान का सुख उठाने वाला और पिता का फायदा पाने वाला और मनोयोग से बड़ा सुख उठाने वाला तथा मन में धर्म की भावना बहुत रखने वाला और बड़ा कारबार करने वाला तथा भाग्य शक्ति से बड़ा सुख व ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला और सुखपूर्वक व अपने मातृस्थान में मनोयोग से भाग्योदय पाने वाला और कुछ मामूली अड़चनों के साथ बड़ा मगन मन रहने वाला ईश्वरबादी कर्मष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चंद्र लग्न से पांचवें स्थान
नं० ७७३




में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी बुद्धिमान् तथा विद्यवान् एवं दूरदर्शी तत्त्वज्ञाता और मनोयोग की देवी शक्ति को पाने वाला बड़ा भाग्यवान् धर्मात्मा और सत्य को ग्रहण करने वाला और सन्तान पक्ष से भाग्यवानी पाने वाला एवं बुद्धि योग व सात्त्विक मनोयोग से भाग्योदय पाने वाला और ईश्वर की भक्ति व धर्म ज्ञान का बड़ा ख्याल

रखने वाला और भाग्य की ताकत से बहुत प्रकार के सुन्दर २ लाभ पाने वाला और बड़ा मीठा बोलने वाला बड़ा गुणी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से छठे स्थान

नं० ७७४

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ९ | | ७ | |
| १० | | ८ | | ६ |
| | ११ | | ५ | |
| १२ | | २ | | ४ |
| | १चं | | ३ | |

में हो तो वह मनुष्य धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में कम श्रद्धा रखने वाला और भाग्य के पक्ष में कुछ कमजोरी पाने वाला एव भाग्य को उन्नति के लिये बहुत समय तक चिंतित रह कर मानसिक कष्ट सहने वाला और कुछ झगड़े तलब दिक्कतों के व परेशानियों क कर्म से भाग्य वृद्धि पाने वाला और भाग्य के सम्बन्ध में कुछ घिराव का सा योग पाने वाला और खर्च का साधन अधिक पाने वाला व शत्रु पक्ष में कुछ शांति से सफलता पाने वाला और स्वार्थ सिद्धि के लिये न्याय अन्याय की परवाह न करने वाला तथा मन के अन्दर की बड़ी बड़ी पेचीदा युक्तियों से फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ७७५

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ९ | | ७ | |
| १० | | ८ | | ६ |
| | ११ | | ५ | |
| १२ | | २चं | | ४ |
| | १ | | ३ | |

में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य का चमकता हुआ चमत्कार देखने वाला तथा भाग्य शक्ति से बहुत प्रकार के सुन्दर २ भोग प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान का बड़ा सुख व फायदा पाने वाला व रोजगार में बहुत फायदा

पाने वाला और भाग्यबल से मनोयोग द्वारा लौकिक तरक्की का व लौकिक आनन्द का अच्छा योग पाने वाला और धर्म के संबंध में विशेष रुचि होने पर भी सामान्य पालन करने वाला और रोजगार व गृहस्थ की तरक्की के लिए धर्म कार्य का यथा संभव विशेष पालन करने वाला और देह में कुछ कमजोरी व मन में उमंग पाने वाला होता है।

नं० ७७६

जिस व्यक्ति का मिथुन का चंद्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की कमजोरी से मानसिक कष्ट सहने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये बड़ी २ परेशानियों का सामना करने वाला और विदेशादि में एवं मुसीबतों से भाग्यबल की शक्ति को गूढ़ युक्तियों के द्वारा पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बहुत मानसिक चिन्तन करने वाला और कभी २ अपयश भी पाने वाला व धर्म की हानि करने वाला तथा पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला तथा भाग्यवृद्धि के मनोयोग की बड़ी गहरी तरकीबें सोचने वाला और ईश्वर के भरोसे पर न रहने वाला और धन प्राप्ति के लिये अन्याय की परवाह न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का चंद्र लग्न से नवम स्थान

नं० ७७७

९ ७
१० ८ ६
११ ५
१२ २ चं
१ ३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और यश प्राप्त करने वाला व धर्म का बड़ा सुन्दर पालन करने वाला और ईश्वर की भक्ति में बड़ी तत्परता रखने वाला और बड़ी स्थिरता से मगन मन रहने वाला व न्याय को प्रधान मानने वाला तथा ईश्वर पर बड़ा भरोसा रखने वाला व धार्मिक योजनाओं से भाग्य वृद्धि को पाने वाला तथा मनोयोग शक्ति का बड़ा फायदा उठाने वाला और बड़ी गहरी और दूर तक की सोचने वाला और दैवी योग का चमत्कार आनन्द लेने वाला और पुरुषार्थ व भक्ति के सहयोग से सफलता पाने वाला आनन्दी जीव होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चंद्र लग्न से दसवें स्थान

नं० ७७८

९ ७
१० ८ ६
११ ५च
१२ २ ४
१ ३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और राज्य सुख का आनन्द स्वतः प्राप्त करने वाला और धर्म कर्म को मानने वाला और पिता स्थान से व मनोयोग से भाग्य वृद्धि को पाने वाला बहुत प्रकार के सुन्दर २ कर्म व सुन्दर व्यापार करने वाला और भाग्यबल से बहुत सन-मान पाने वाला व बड़ा वैभव वाला तथा बहुत सन्तान पाने वाला और किसी ऊंचे शानदार धर्म का पालन करने वाला और बहुत ऊंची उन्नति चाहने वाला तथा लौकिक और पारलौकिक दोनो धर्मों का ध्यान रखने वाला बड़ा यशस्वी

तथा प्रतापी और मातृस्थान की सहायता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चंद्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्यशक्ति के बल से बहुत प्रकार के सुन्दर २ दिव्य लाभ पाने वाला और आमदनी की तरफ से बे फिकरी पाने वाला और धर्म का पालन करने वाला व धर्म की लाइन से एवं धार्मिक विचारों से ही फायदा पाने वाला व खूब धन कमाने वाला तथा विद्या स्थान को सुचारु रूप से व्यवहार में लाने वाला और सत्य का ध्यान रखने वाला व संतान सुख प्राप्त करने वाला और दैवयोग से बहुत सी विद्याओं का व वस्तुओं का लाभ पाने वाला और शील स्वभाव से फायदा पाने वाला बड़ा भाग्यवान् दयालु होता है।

नं० ७७९

९ ८ ७ १० ६चं ११ ५ १२ २ ४ १ ३

जिस व्यक्ति का तुला का चंद्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की कमजोरी पाने वाला और दूसरे स्थान में भाग्य का सहारा पाने वाला और अधिक खर्च का योग पाने वाला तथा भाग्य में यश की कमी पाने वाला और धर्म की कमजोरी पाने वाला व धर्म में कम विश्वास रखने वाला और भाग्य की तरफ से मानसिक कष्ठ सहने वाला और सनातन धर्म को न मान

नं० ७८०

९ ८ ७चं १० ६ ११ ५ १२ २ ४ १ ३

कर किसी कमजोर धर्म का पालन करने वाला और खर्च के संचालन में भाग्य की सहायता पाने वाला और भाग्य का उदय देरी से पाने वाला और ननसाल पक्ष से शत्रु पक्ष से कुछ शांत्वना पाने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से पहिले

नं० ७८१

९ ७
१० ८मं ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

स्थान में हो तो वह मनुष्य प्रभावशाली दृढ शरीर वाला और बड़ी गुस्सा और हेकडी रखने वाला और देह में कुछ गरमी का विकार कुछ रोग की सी शक्ल में पाने वाला और माता की व मातृस्थान की कुछ हानि पाने वाला और मकानादि का व सुख शांति के वातावरण में कुछ विघ्न व दिक्कतें पाने वाला और स्त्री स्थान में भी कुछ क्लेश पाने वाला व अशांति पाने वाला और दैनिक रोजगार में कुछ दिक्कतें सहने वाला तथा जीवन में कुछ परेशानी मानने वाला तथा बड़ी बहादुरी से व आत्मबल से बहुत २ से काम निकालने वाला एवं बड़ी जबरदस्त हिम्मत वाला व ननसाल पक्ष की कुछ शक्ति पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से दूसरे स्थान

नं० ७८२ में हो तो वह मनुष्य अपनी देह से धनवान् समझा जाने वाला और धन प्राप्ति के लिये सदैव ही विशेष प्रयत्न करने वाला तथा धन संग्रह के लिये बड़ी दौड़ धूप करने वाला और धन संग्रह के संबंध में कमी होने के कारण से कुछ कष्ट अनुभव करने वाला और देह में कुछ रोग व बंधन पाने वाला और ननसाल की कुछ न्यून सहायता पाने वाला और बड़ी जबरदस्त बातें करने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला और संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता के साथ बल प्राप्त करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ शान पाने वाला और धर्म व भाग्य में कुछ कमजोरी पाने वाला क्षुद्र धर्म वाला होता है।

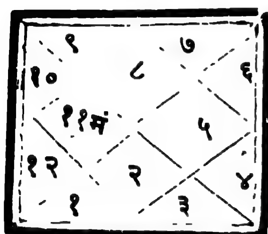
जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से तीसरे स्थान

नं० ७८३ में हो तो वह मनुष्य बडा भारी प्रभावशाली और महान् कार्य करने से महानता पाने वाला और उच्च कोटि का परिश्रम व पुरुषार्थ करने वाला बड़ी हिम्मत वाला और ननसाल की शक्ति भी प्राप्त करने वाला और झगड़े आदि दिक्कतों पर विजय पाने वाला और शत्रु पर पूरा प्रभाव जमाने वाला और धर्म व भाग्य में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और व्यापार आदि मान प्रतिष्ठा में तरक्की पाने वाला और उन्नति के लिये सदैव प्रयत्नशील

रहने वाला और पिता स्थान में कमजोरी पाने वाला और भाई के स्थान पर अपना प्रभुत्व रखने वाला और अपनी मेहनत का बड़ा भरोसा रखने वाला स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से चौथे स्थान

नं० ७८४




में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में व माता के पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और सुख स्थान में कुछ घाटा व कुछ नीरसता पाने वाला और अपने स्थान में रहने वाला और सुख शांति चाहने वाला व दैनिक रोजगार करने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ विरोध पाने वाला और स्त्री पक्ष में व रोजगार के पक्ष में कुछ आसक्ति व परिश्रम का योग पाने वाला तथा युक्तियों से व देहबल और आत्मबल से बहुत लाभ पाने वाला व इज्जत आबरू बढ़ाने वाला व प्रभाव पाने वाला और पिता स्थान से कुछ विरोध भावना के साथ शक्ति पाने वाला और राजसमाज में कुछ मान पाने वाला कुछ भूमियुक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

नं० ७८५

१०
११ ५
मं

में हो तो वह मनुष्य बहुत बुद्धिमान् चतुर और आत्मदर्शी तथा भेद नीतिज्ञ होशियारी रखने वाला और स्वाभिमान तथा वीरता की बातें कहने वाला व मिजाज में गरमी रखने वाला और पुरातत्व सिद्धांतों को मानने वाला एवं

जीवन में गौरव युक्त रहने वाला व आमदनी पाने का बड़ा प्रयत्न करने वाला और खर्चा अधिक करने वाला और अन्य दूसरे स्थान से भी संपर्क रखने वाला और बुद्धि व वाणी में शक्ति पाने वाला और पुत्र शक्ति पाने वाला किन्तु पुत्र संबंध में कुछ विरोध या परेशानी भी साथ में पाने वाला और कुछ देह में रोग का योग पाने वाला और शीलता का पालन न कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से छठे स्थान

नं० ७८६

में हो तो वह मनुष्य बड़ा बहादुर आत्माभिमानी और आत्मज्ञानी तथा दृढ़ शरीर वाला और मुसीबतों की व शत्रुओं की परवाह न करने वाला एवं उन्नतिशील विजयता और देहबल व आत्मबल और परिश्रम के द्वारा बहुत मान पाने वाला बड़ा प्रभावशाली और कुछ परतंत्रता युक्त रह कर ख्याति पाने वाला तथा धर्म स्थान में व भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और खर्च करने वाला तथा युक्ति बल से व पेचीदा मार्ग से बहुत काम निकालने वाला तथा तरक्की करने वाला एवं ननसाल पक्ष में प्रभाव पाने वाला तथा देह में कुछ परेशानी व दिक्कत और थकान का योग पाने वाला सावधान होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से सातवें स्थान

नं० ७८७

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता पाने वाला व कुछ शक्ति पाने वाला और कुछ झगड़ा व हित प्राप्त करने वाला एवं रोजगार के स्थान में बहुत मेहनत से काम चलाने वाला व रोजगार से मान पाने वाला बड़ा साहसी भोगी व इन्द्रिय सुख प्राप्त करने वाला और स्वाभिमानी देहबल वाला तथा देह में व इन्द्री में कुछ रोग व परेशानी और कुछ परिश्रम प्राप्त करने वाला तथा अपने परिश्रम से मुख्यतया दो चीजों का मान और धन का विशेष ख्याल रखने वाला और पिता स्थान की शक्ति व इज्जत को बढ़ाने वाला और राज समाज के स्थान में परोपकारी के द्वारा सफलता व प्रभाव पाने वाला तथा पेचीदा चाल चलने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से आठवें

नं० ७८८

स्थान में हो तो वह मनुष्य देह से कष्ट उठाने वाला व हृदय में दाह पाने वाला तथा रोगयुक्त प्रदेशवासी या दूसरे स्थान में रहने वाला व कुछ मुसीबतजदा रहने वाला और ननसाल पक्ष की हानि पाने वाला और छोटे कद वाला और आमदनी व लाभ और धन की प्राप्ति का बड़ा ख्याल रख कर कोशिश के साथ लगा रहने वाला और बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला तथा भाई को बड़ा

चाहने वाला बड़ी भारी हिम्मत वाला और गुप्त शक्ति वाला तथा बड़ी भेदीली युक्ति रखने वाला और मान अपमान की परवाह न करने वाला और छिपी ताकत के कारणों से कुछ खतरनाक समझा जाने वाला और जीवन में अपने अन्दर कुछ गुमान रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० ७८९

| | | |
|---|---|---|
| १० | ९ / ८ / ७ | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २ / १ / ३ | ४ मं |

में हो तो वह मनुष्य अपने अन्दर भाग्य की कमजोरी महसूस करने वाला और देह में कमजोरी पाने वाला और धर्म सबंध में भी कमजोरी पाने वाला और किसी कमजोर धर्म का पालन करने वाला और बहुत पुरुषार्थ करने वाला व परिश्रम से परेशानी पाने वाला तथा बहुत खर्च करने वाला व मातृस्थान में व ननसाल पक्ष में भी कमजोरी पाने वाला और सुख के साधन व भूमि का अधिकार पाने के लिये प्रयत्नशील रहने वाला और अन्य दूसरे स्थान का भी संपर्क योग रखने वाला और ईश्वर भक्ति व यथार्थ धर्म में कम श्रद्धा रखने वाला और कुछ कमजोरी के साथ व देर अवेर में भाग्य वृद्धि को परिश्रम से प्राप्त करने वाला और कुछ गुप्त युक्तियों वाला भाई की शक्ति वाला होता है।

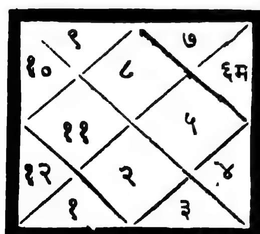
जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रतापी देहादिक राज्य सुख भोगने वाला और देह में सुन्दरता व

नं० ७९० तेज प्राप्त करने वाला बड़ा प्रभावशाली होशियार कर्मेष्ठी मुन्तजिम दिमागी कार्य करने वाला तथा कुछ रोगयुक्त व पिता स्थान की तरक्की करने वाला व पिता से कुछ विरोध पाने वाला बड़ी युक्तियों वाला और राज्य स्थान से मान पाने वाला एवं नाम पाने वाला और आत्मबल वाला दृढ़ संकल्प रखने वाला और मातृस्थान में कुछ नीरसता पाने वाला या विरोध पाने वाला तथा बड़ा मेहनत करने वाला तथा संतान शक्ति प्राप्त करने वाला बड़ा बुद्धिमान् तथा विद्यावान् बहुत मजबूत बोलने वाला हुकूमत करने वाला कुछ ख्याति युक्त होता है।



जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से ग्यारहवें

नं० ७९१ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के परिश्रम से बहुत आमदनी पाने वाला और बड़ा प्रभावशाली तथा उत्तम पुरुषार्थ करने वाला व अधिक नफा खाने वाला तथा ननसाल पक्ष से लाभयुक्त शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा पैदा करने वाला व बुद्धि में बल और तीक्ष्णता पाने वाला, व पुत्र सुख प्राप्त करने वाला व संतानपक्ष से कुछ थोड़ी सी परेशानी पाने वाला तथा, अपनी होशियारी व सावधानता के योग से विशेष लाभ पाने वाला और



विपक्षियों में विजय व प्रभाव पाने वाला व देह में कुछ कमजोरी पाने वाला गुस्सेबाज सतर्क होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से बारहवें

नं० ७९२ स्थान में हो तो वह मनुष्य देह पक्ष में बड़ा कष्ट अनुभव करने वाला तथा दुर्बलता पाने वाला और खर्च की परेशानियों से परेशान रहने वाला तथा झगड़े तलब मामलों में व रोगादि झंझटों में खर्च करने वाला व ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला व कुछ अन्य दूसरे स्थान में रहने वाला और बड़ा पुरुषार्थ तथा बड़ी मेहनत करने वाला व भाई को चाहने वाला तथा कमजोरी में भी प्रभाव रखने वाला व रोजगार करने वाला हृदय में अशांति अनुभव करने वाला और स्त्री व गृहस्थ में सुख दुःख का अनुभव करने वाला तथा भोग चाहने वाला और भोग प्राप्ति के लिये विशेष प्रयत्न करने वाला चंचल हृदय भ्रमण करने वाला होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ७मं | ८ | ६ |
| १० | ११ | ५ | |
| १२ | २ | ४ | |
| १ | ३ | | |

## वृश्चिकलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न के पा

नं० ७९३

९ ७
१० ८बु ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

स्थान में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व शक्ति से संबंधित विवेक कार्य के द्वारा लाभ व आमदनी पाने वाला और सौम्य प्रकृति व सौम्य आचरण के होते हुये भी एक प्रकार की गुस्सा व तामस को अपने अन्दर रखने वाला और अच्छी आयु वाला व शानदारी से जीवन का समय व्यतीत करने वाला और गहरी व गुप्त चालों का आदर्श रूप में विवेक शक्ति के द्वारा करके रोजगार में फायदा पाने वाला और देह के योग द्वारा व देह के कठिन परिश्रमों द्वारा लाभ पाने का अधिकारी होने वाला और जीवन की व आमदनी की शक्ति के द्वारा लौकिक गृहस्थी का पूरा ख्याल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से दूसरे स्थान

नं० ७९४

९बु ७
१० ८ ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह करने में बड़ी २ युक्तियों और विवेक शक्ति के द्वारा सफलता पाने वाला और आमदनी को जोड़ने का प्रयत्न करने वाला और पुरातत्त्व का बहुत फायदा पाने वाला और धन संग्रह करने में कुछ

हानियां भी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अमीरात की रहन सहन ऊंची होने के कारण से धन संग्रह में कुछ कमी पाने वाला और बहुत आयु वाला बड़ा इज्जतदार व रईसी भोगने वाला और बहुत लाभ पाने वाला व गूढ़ और पैतृक लाभ पाने वाला और विचार शक्ति से बड़ी २ गहरी चाल सोच कर फायदा उठाने वाला व कुटुम्ब में लाभ व हानि दोनों का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से तीसरे स्थान

नं० ७६५

९ ७ ६ ८ १० बु ११ ५ १२ २ ४ १ ३

में हो तो वह मनुष्य सौम्य रीति से बड़ा पुरुषार्थ करने वाला और पुरुषार्थ से लाभ पाने वाला तथा गूढ़ विवेक की शक्ति से लाभ पाने वाला व पुरातत्त्व शक्ति का सुन्दर फल प्राप्त करने वाला एवं गूढ़ लाभ की योजनाओं से भाग्य में सफलता का योग पाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला व बहन भाईयों के संपर्क में कुछ कठिनाइयों के साथ २ लाभ और आत्मीयता का योग पाने वाला और बहन भाइयों के संबंध में कुछ कमी या क्लेश का साधारण योग प्राप्त करने वाला तथा धर्म के संबंध में कुछ स्वार्थ युक्त नीति को काम में लाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से चौथे स्थान

नं० ७९६

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ९ | ७ | |
| १० | ८ | | ६ |
| ११ बु | | ५ | |
| १२ | २ | | ४ |
| | १ | ३ | |

में हो तो वह मनुष्य अपने स्थान में कुछ बाधाओं के सहित सुख पूर्वक आमदनी पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला और पुरातत्त्व लाभ का सुख उठाने वाला तथा आमदनी व दिनचर्या के कारणों से सुख के साधनों में कुछ कमी का योग पाने वाला और मातृस्थान में लाभ युक्त होते हुये भी कुछ कमी व क्लेश को पाने वाला और आमदनी व पुरातत्त्व के लाभ और सुख को विवेक व विचारों के द्वारा प्राप्त करने वाला और मान सनमान को युक्तिवल से प्राप्त करने वाला और गूढ़ युक्तियों से बहुत सुख का अनुभव करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से पांचवें स्थान

नं० ७९७

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ९ | ७ | |
| १० | ८ | | ६ |
| ११ | | ५ | |
| १२ बु | २ | | ४ |
| | १ | ३ | |

में हो तो वह मनुष्य विद्या और वृद्धि में कुछ कमजोरी पाने वाला एवं थोड़ी विद्या पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि व क्लेश पाने वाला और आयु की कुछ कमजोरी का ख्याल रखने वाला और गुप्त व गहरी योजनाओं से वृद्धि के द्वारा अधिक लाभ पाने वाला और अधिक लाभ का ख्याल हर एक बात में सोचने वाला तथा अधिक लाभ पाने के लिये बहुत चिन्तित रहने वाला और अपने जीवन में कुछ कमजोरी व दुख अनुभव करने वाला और पुरातत्त्व का लाभ कमजोरी से पाने वाला

किन्तु पुरातत्त्व के योग से व बुद्धि के कठिन परिश्रम से अधिक लाभ पा सकने वाला और कुछ कड़वा बोलने वाला छिपाव वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से छठे स्थान

नं० ७९८

मे हो तो वह मनुष्य आमदनी के लिये अपने जीवन में परेशानी व परतंत्रता का योग पाने वाला तथा कुछ आमदनी रोग या दिक्कत तलब कर्म से भी पाने वाला और खर्च का साधन अधिक पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान का भी कुछ संबंध पाने वाला और अपने जीवन काल में दिनचर्या के समय का पूरा सदुपयोग न कर सकने वाला किन्तु चिन्ताओं का सामना पाने वाला व गुप्त योजनाओं को विवेक शक्ति के द्वारा और भी गूढ़ करके इस्तेमाल करने वाला और जीवन की कठिनाइयों को सहकर ही दूर करने वाला और शत्रु स्थान में कोमल आग से काम निकाने वाला और ननसाल से कुछ न्यून सहयोग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से सातवें स्थान

नं० ७९९

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ कष्ट युक्त कर्म के द्वारा लाभ पाने वाला और मान भी पाने वाला एवं स्त्री के स्थान में लाभ सुख के अलावा कुछ छिपा हुआ क्लेश भी सहने वाला किन्तु जीवन का

आनन्द दायक समय भी शादी के बाद ही पाने वाला और भोग विलासता के संबंध में प्रत्यक्ष के मुकाबिले अप्रत्यक्ष का अधिक लाभ पाने वाला तथा रोजगार और लाभ के संबंध में केन्द्रस्थ रह कर पबलिक की जानकारी में आकर काम करने वाला और गूढ़ योजनाओं से वा जटिल विचारों से अधिक लाभ पाने वाला तथा गहरी विवेक शक्ति के लाभ और रोजगार से जीवन में गौरव मानने वाला परिश्रमी कर्म वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा आयु वाला तथा गूढ़ से गूढ़ तत्त्व को विवेक शक्ति से हल करने वाला और पुरा तत्त्व विषय का विशेष अधिकार व लाभ पाने वाला तथा आमदनी व लाभ के लिये दूसरे स्थानों में योग पाने वाला और विवेक के परिश्रमी कर्म के योग से लाभ पाने वाला तथा लाभ पाने के जरिये से अथवा प्राप्ति के मार्ग स्थान के कारणों से जीवन की दिनचर्या में रौनक व शानदारी पाने वाला और धन संग्रह के लिये पूर्णशक्ति, जो गूढ़ से गूढ़ हो उसका प्रयोग करने वाला और जीवन में मस्ती और गौरव का योग पाने वाला बड़ी लापरवाही रखने वाला और लाभ व दिनचर्या में कठोरता और कोमलता का मिश्रित उपयोग करने वाला होता है।

नं० ८००

| | | |
|---|---|---|
| | ९ | ७ |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २ | ४ |
| | १ | ३ बु |

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से नवम स्थान

नं० ८०१

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ |
| १० | | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २ | ४ बु |
| १ | | ३ |

में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति के द्वारा आमद संबंधी प्रत्यक्ष का खूब लाभ पाने वाला और विवेक शक्ति के द्वारा पैतृक व पुरातत्त्व का लाभ भी भाग्य के पूर्व संचित पुण्यों के बल पाने वाला और वर्तमान में पुण्य संचय करने व चाहने पर भी अधूरा काम कर सकने वाला और पुरुषार्थ की वृद्धि करने वाला और जीवन की दिनचर्या में आनन्द लेने वाला और आयु में वृद्धि पाने वाला और यश में कुछ कमी पाने वाला और लौकिक व पारलौकिक विषय के गूढ़ विवेक का लाभ पाने वाला और स्वार्थ सिद्धि का पूरा ध्यान रखने वाला व भाग्य में कुछ कमज़ोरी पाने वाला बे फिक्र होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से दसवें स्थान

नं० ८०२

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ |
| १० | | ६ |
| ११ | | ५ बु |
| १२ | २ | ४ |
| १ | | ३ |

में हो तो वह मनुष्य बड़े मान सम्मान से लाभ पाने वाला और पुरातत्त्व व पैतृक लाभ भी बड़ी शानदारी से पाने वाला और पिता के स्थान में कुछ हानि या क्लेश से युक्त फायदे की योजना पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला और जीवन का समय बड़े प्रभावशाली कर्म से और विवेक बल से व्यतीत करने वाला और आमदनी के लिये व उन्नति के लिये बहुत गूढ़ विवेक और राजनीति से काम करने वाला

किन्तु कठोरता के अन्दर कोमलता रखने वाला और अपनी पद उन्नति व मान प्रतिष्ठा के संबंध में कुछ रुकावटें पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व का महान् लाभ पाने वाला और बहुत आयु वाला और विवेक शक्ति व गूढ़ युक्तियों से बहुत प्रकार के अनेक लाभ पाने वाला और जीवन में मस्ती का महान् लाभ पाने वाला और बुद्धि मे व विद्या में कुछ कमजोरी पाने वाला व संतान पक्ष में भी कुछ क्लेश का योग पाने वाला एवं बोल चाल या बातचीत के अन्दर विवेक शक्ति में कुछ कमजोरी पाने वाला और पूर्व संचित शक्ति का खूब लाभ पाने वाला और कुछ छिपाव की बातों से मतलब निकालने वाला और जीवन की मस्त लापरवाही से व कुछ कड़वी बोल चाल से प्रभाव जमाने वाला होता है।

नं० ८०३

९ ७श ८ १० ६बु ११ ५ १२ २ ४ १ ३

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला व अन्य दूसरे स्थान के संपर्क से भी बहुत लाभ पाने वाला एवं पुरातत्त्व की संचित विभूति का यथार्थ लाभ न पाने वाला किन्तु पूर्व और वर्तमान् की हानि पाकर विवेक शक्ति से दूसरे स्थान में सफलता पाने वाला और बाल्य-

नं० ८०४

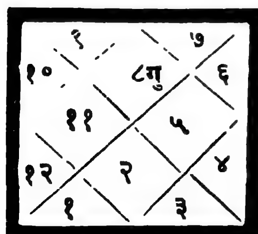
९ ७बु ८ १० ६ ११ ५ १२ २ ४ १ ३

काल के जीवन में अशांति का योग पाने वाला तथा जीवन काल में देर व दूर के संपर्क से लाभ पाने वाला और खर्च से फायदा उठाने वाला व लाभ में कमजोरी भी पाने वाला तथा आयु स्थान में भी कभी २ बड़े निराश-जनक योग पाने वाला और स्वतः अधिक खर्च का योग पाने वाला तथा कुछ झगड़े व रोग इत्यादि का योग भी पाने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न के पहिले स्थान

नं० ८०५




में हो तो वह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान् पंडित एवं बड़ा धर्मज्ञ नीतिज्ञ और धन की शक्ति प्राप्त करने वाला और बड़ी योग्यता व संतान पाने वाला हृदय और बुद्धि के बल से बड़ा मान पाने वाला और पुत्र के जरिये तरक्की पाने वाला और गृहस्थ व रोजगार का बड़ा ख्याल रखने वाला धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने में लगा रहने वाला बड़ा गुणी न्याय चाहने वाला व ठीक और जचाव की बातें कहने वाला देह में बड़ी कला रखने वाला तथा ज्योतिष

से बड़ा प्रेम करने वाला प्रतिष्ठावान् दूरदर्शिता रखने वाला और आत्मज्ञान रखने वाला प्रभावशाली तथा सनातन धर्मी ईश्वर में निष्ठा रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि विद्या के बल से धन संग्रह करने वाला और बहुत विद्या वाला बड़ा होशियार बड़ा प्रभाव रखने वाला और विद्या के बल से बहुत मान पानेवाला तथा इज्जत आबरू की तरक्की पाने वाला पिता स्थान से फायदे और वृद्धि का योग पाने वाला राजसमाज से फायदा पाने वाला बड़ा कर्मेष्ठी और उन्नति के लिये हृदय और बुद्धि बल से बड़ा प्रयत्नशील रहने वाला संतान वाला और जीवन में बड़प्पन पाने वाला और कुछ पुरातत्त्व की लाइन से फायदा पाने वाला और संतान पक्ष में व विद्या स्थान में कुछ बंधन पाने वाला होता है।

नं० ८०६

| | |
|---|---|
| गु ९ | ७ |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | ५ |
| १२ | २ | ४ |
| १ | ३ |

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई को हानि पहुँचाने वाला एवं भाई से कमजोरी पाने वाला और धन जन की हानि पाने वाला व विद्या की कमजोरी पाने वाला संतान पक्ष में भी कमजोरी पाने वाला बड़े मस्तक वाला धर्मवान् ईश्वर

नं० ८०७

| | |
|---|---|
| ९ | ७ |
| १०गु | ८ | ६ |
| ११ | ५ |
| १२ | २ | ४ |
| १ | ३ |

में बड़ी श्रद्धा रखने वाला बुद्धि से नवकर चलने वाला पुरुषार्थ के स्थान में कमजोरी पाने वाला और बुद्धि एवं धन की कमजोरी के कारणों से व छिपाव शक्ति से काम लेने वाला और खूब लाभ उठाने वाला व रोजगार से फायदा पाने वाला और स्त्री स्थान में सहयोग शक्ति पाने वाला व भोग में बुद्धि रखने वाला और धर्म एवं भाग्य की शक्ति को बड़ा मानने वाला व हृदय में कमजोरी रखने वाला होता है।

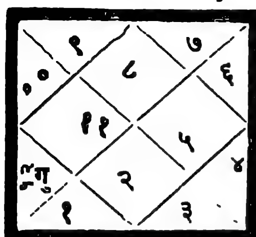
जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य धनवान् बुद्धिमान् तथा इज्जतदार और संतान प्राप्त करने वाला तथा आयु पाने वाला और खूब खर्च करने वाला और सुख के साधनों में कुछ कमी व कुछ नीरसता महसूस करने वाला और मातृस्थान में कुछ वैमनस्यता या अलकसाहट के साथ सहयोग पाने वाला और पिता स्थान का फायदा पाने वाला और जीवन की दिनचर्या का समय अमीरी ढंग से व्यतीत करने वाला और धन जोड़ने में या जायदाद कायम रखने में कुछ दिक्कतें महसूस करने वाला होता है।

न० ८०८

९ ७ १० ८ ६ ११गु ५ १२ २ ४ १ ३

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बडा भारी विद्वान् तथा बहुत विद्या रखने वाला और बड़ा प्रभाव पाने वाला और प्रभाव युक्त शैली से ही बड़प्पन की बातें कहने वाला धार्मिक व आध्यात्मिक ज्ञान पर अधिकार व श्रद्धा रखने वाला

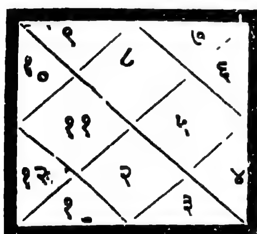
नं० ८०९




और देह में गौरव व मान पाने वाला व अपने अन्दर धन जन की शक्ति रखने वाला संतान प्राप्त करने वाला और भाग्य वृद्धि पाने वाला व भाग्य को बड़ा मानने वाला और सनातन धर्म का हृदय से पालन करने वाला व ईश्वर में बड़ा भरोसा रखने वाला और बहुत लाभ पाने वाला बुद्धि और वाणी में विशेष कला रखने वाला तथा बुद्धि से धन राशि पाने वाला शास्त्रीय ज्ञान रखने वाला बड़ा भाग्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से छठे स्थान

नं० ८१०




में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता से या कुछ दिक्कतों से बराबर धन कमाने वाला व बुद्धि के मेहनती काम से उन्नति पाने वाला मान व इज्जत का कार्य करने वाला पिता स्थान की उन्नति करने वाला शत्रु स्थान में दानाई से काम निकालने वाला अधिक धन संग्रह करने के लिये अधिक प्रयत्नशील रहने वाला कुटुम्ब की भी कुछ वृद्धि करने वाला संतान और विद्या की कमजोरी पाने वाला विद्या पढ़ने के समय कठिनाई महसूस करने वाला और खूब खर्च करने वाला अपनी बात को ठीक तौर से न कह सकने वाला एवं बुद्धि में व हृदय में कुछ कमजोरी मानने वाला व ननसाल से कुछ सहायता पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का ,गुरु लग्न से सातवें स्थान

नं० ८११ . में हो तो वह मनुष्य बुद्धि द्वारा दैनिक रोजगार की लाइन से कुछ परिश्रम युक्त रह कर धन कमाने वाला तथा हृदय बल से कुछ इज्जदारी का रोज-गार करने वाला और खूब अच्छा लाभ पाने वाला व देह को मान पाने वाला भाई के स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा पुरुषार्थ व हिम्मत में भी कमजोरी पाने वाला शादी के बाद स्त्री से सहायता शक्ति व धन वृद्धि का योग पाने वाला तथा संतान प्राप्त करने वाला और स्त्री में प्रभाव पाने वाला व स्त्री स्थान में कुछ नीरसता का योग पाने वाला और विद्या में कुछ कमजोरी के साथ २ होशियारी पाने वाला और बड़प्पन व अमीरात का ढंग रखने वाला व कीमती कार्य करने वाला सावधान होता है।

९ ७ १० ८ ६ ११ ५ १२ २गु ४ १ ३

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से आठवें

नं० ८१२ स्थान में हो तो वह मनुष्य थोड़ी विद्या वाला और थोड़े धन वाला और संतान पक्ष में कष्ट सहन करने वाला और हृदय में अशांति अनुभव करने वाला व अधिक खर्च करने वाला व धन कमाने के संबंध में बड़ा परिश्रमी व परेशानी और कुटनीति और गुप्त योजनाओं से काम निकालने वाला और पुरातत्त्व धन भी प्राप्त करने वाला

९ ७ १० ८ ६ ११ ५ १२ २ ४ १ ३गु

विदेश का संपर्क भी धन के लिये बनाने वाला और धन संचय करने के लिये व संतान सुख प्राप्त करने के लिये कठिन प्रतीक्षा करने वाला और कभी २ धन हानि व संतान हानियों का योग पाने वाला और घर मकान व मातृस्थान तथा सुख के साधनों में कुछ नीरसता महसूस करने वाला और प्रकट बुद्धि के मुकाबिले में गुप्त भेद की बुद्धि द्वारा बोलने चालने की शक्ति रखने वाला तथा अच्छी आयु वाला और धनी आदमियों का सा रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् बुद्धिवान् तथा महान् विद्या से आदर्श पाने वाला और धार्मिक कार्य करने वाला और धार्मिक विषय पर धारा प्रवाह बोलने वाला तथा भाग्य की शक्ति से महान् शास्त्रीय ज्ञान करने वाला और उत्तम तथा भाग्यवान संतान पाने वाला और बहुत प्रतिष्ठा पाने वाला तथा ज्योतिष का ज्ञान रखने वाला और देह में प्रभाव तथा मस्तक में चौड़ाई पाने वाला बड़ा दूरदर्शी और बुद्धि व भाग्य बल से बहुत धन पाने वाला व कौटुम्बिक शक्ति वाला व सनातन धर्मी और कम मेहनत करने वाला पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा बहन भाइयों की तरफ से कमी का कारण महसूस करने वाला और हृदय में बड़ा उत्साह तथा बुद्धि बल तथा ईश्वर पर भरोसा रखने वाला आत्मज्ञानी होता है।

नं० ८१३

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ |
| १० | | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २ | ४ |
| १ | | ३ |

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से दसवें स्थान

नं० ८१४

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी इज्जतदार तथा बहुत धन कमाने वाला और राज समाज से बुद्धि योग द्वारा धन शक्ति पाने वाला तथा व्योपार व पिता स्थान से भी धन शक्ति पाने वाला व बड़ा कारबार करने वाला और बड़ा भारी प्रभावशाली कर्म के योग से प्रभाव पाने वाला और संतान पाने वाला और राजनैतिक व सामाजिक विद्या तथा विवेक का अच्छा ज्ञान रखने वाला और मान युक्त व बड़प्पन की पूजनीय योग पाने वाला और बहुत धन जन की शक्ति पाने वाला व ननसाल पक्ष में भी बड़ी इज्जत व लाभ पाने वाला और शत्रुओं पर अपनी बुद्धि तथा धन और ऐश्वर्य का विलक्षण प्रभाव रखने वाला और सुख स्थान मे कुछ अलकसाहट के साथ संबंध पाने वाला उत्साही होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से ग्यारहवें

नं० ८१५

स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि द्वारा और विद्या के योग से धन कमाने वाला और संतान लाभ का अच्छा सुख प्राप्त करने वाला, अच्छी और कीमती विद्या पाने वाला और धन जन की शक्ति से खूब लाभ पाने वाला तथा पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला तथा भाई के स्थान में भी कमी महसूस करने वाला तथा बड़े जचाव की व फायदे की बातें

कहने वाला तथा दानाई के साथ बात चीत करने वाला और कुछ अलकसाहट के साथ खूब रोजगार करके फायदा उठाने वाला और स्त्री भोगादि में बुद्धि रखने वाला और रोजगार के दायरे में भी बड़े भारी विचारों के साथ हर समय तरक्की सोचने वाला तथा बड़ों की व गुरुजनों की कृपा पाने वाला तथा कौटुम्बिक लाभ पाने वाला धनवान् तथा इज्जतदार होता है।

नं० ८१६

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करने वाला और धन संग्रह करने में बड़ी मुश्किलों का सामना करने पर भी धन में कमजोरी पाने वाला और धन के लिये अन्य स्थान का संपर्क पाने वाला और संतान पक्ष में बहुत हानियां पाने वाला और संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करने वाला और थोड़ी विद्या वाला व विद्या ग्रहण करते समय बड़ी मुश्किलें सहने वाला और कुछ गलती तरीके से बात चीत करने वाला और अपना मतलब या अपनी बात को ठीक तौर से दूसरों को न समझा सकने वाला तथा पेचीदा तौर से बातें करके घुमाव फिराव से काम निकालने वाला और सुख शांति तथा मातृस्थान में कुछ कमी के साथ काम निकालने वाला और शत्रु पक्ष पर मित्रता का प्रभाव रखने वाला एवं आयु में ज्ञान पाने वाला व कुछ अमीरी ढंग से समय व्यतीत करने वाला एवं पुरातत्त्व का लाभ पानेवाला होता है।

# वृश्चिकलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न के पहिले

नं० ८१७

स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य दूसरे स्थान के सम्पर्क से अच्छा दैनिक रोजगार पाने वाला तथा बड़ी शानदारी के साथ बहुत खर्च करने वाला और कुछ हेर फेर के साथ उत्तम रोजगार में बडी होशियारी के साथ काम करने वाला किन्तु रोजगार में कुछ कमजोरी एवं कम बचत पाने वाला और स्त्री सुख व भोगादि में कुछ वृद्धि पाने वाला और स्त्री के कारणों से अधिक खर्च व देह में कमजोरी पाने वाला और रोजगार के कारण घूमने फिरने वाला व मान पाने वाला बड़ा चतुर और उत्तम भोग चाहने वाला और लौकिक व्यवहार को बड़ी योग्यता से उलट फेर करने वाला बडा कुशल चतुर व सावधान दूरदर्शी और सुन्दरता चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान

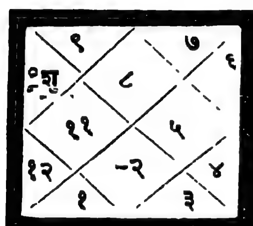
नं० ८१८

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार के द्वारा अन्य स्थान के सम्पर्क से धन प्राप्त करने वाला और धन संग्रह के स्थानमें कुछ कमजोरी पाने वाला तथा कुछ धन हानि पाने वाला और अधिक भोग चाहने वाला व खर्च को

रोकनें की चेष्टा करने वाला और आयु के समय में एवं दिनचर्या में भोग व खर्च का मजा लेने वाला तथा पुरातत्त्व का फायदा अधूरा उठानें वाला व रोजगार की वृद्धि करने की बड़ी २ युक्तियों रखने वाला तथा धन-वान् व इज्जतदार समझा जाने वाला व कुटुम्ब में कुछ हानि पाने वाला और अन्य स्थान से संबंधित खर्च धन के योग से रोजगार में तरक्की पाने वाला व कुछ कम-जोरी भी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० ८१९




में हो तो वह मनुष्य रोजगार के लिये बडी दौड़ धूप व पुरुषार्थ करने वाला और अन्य स्थान की सम्पर्क शक्ति से रोजगार में बल वृद्धि पाने वाला और स्त्री भोगादि का खर्च शक्ति से बड़ा उत्साह प्राप्त करने वाला और भाग्य उन्नति की बड़ी चेष्टा व प्रयत्न करने वाला व गृहस्थ का बड़ा आनन्द शानदारी से लेने वाला और भाई बहन का कुछ योग शक्ति पाने वाला और स्त्री का सहयोग पाने वाला तथा स्त्री के व अपने पुरुषार्थ से खर्च का आनन्द लेने वाला तथा देह के बल पुरुषार्थ में कुछ कमी पाने वाला और बहन भाइयों की तरफ से कुछ हानि का योग पाने वाला तथा बड़ी चतुराई एवं रौनक रखने वाला और रोजगार में कुछ न्याय का भी ख्याल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ८२० में हो तो वह मनुष्य बड़ी चतुराइयों से दैनिक रोजगार को अपने स्थान में सुख पूर्वक चलाने वाला और खर्चा भी सुख पूर्वक चलाने वाला तथा रोजगार में कुछ कमजोरी व कुछ नुकसान सहने वाला और मातृस्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा सुख के साधनों में कुछ घाटा पाने वाला और स्त्री स्थान से सुख प्राप्त करने वाला और रोजगार में कुछ अन्य दूसरे स्थानों का संपर्क पाने वाला एव भोग और खर्च का आनन्द लेने वाला पिता स्थान से कुछ वैमनस्य पाने वाला और मान उन्नति में कुछ रुकावटें पाने वाला तथा कुछ भूमि का थोड़ा अधिकार पाने वाला आनन्दी जीव होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० ८२१ में हो तो वह मनुष्य बहुत चतुराइयों का कला सहित दैनिक रोजगार करने वाला बहुत होशियार पढा लिखा बुद्धिमान् तथा बडी काट छांट करने वाला बड़ा खर्च करने वाला और आमदनी में कुछ कमी पाने वाला प्रभावशाली स्त्री वाला और रोजगार में दूसरी जगहों का संपर्क भी पाने वाला संतान प्राप्त करने वाला और अधिक भोग वासना रखने वाला और मेहनत और काम का पूरा फायदा

न पा सकने वाला संतान। पक्ष में कुछ कमी पाने वाला अधिक खर्च से कुछ परेशानी महसूस करने वाला और रोजगार की उन्नति के लिये बड़े २ दिमागी प्रयत्न सदैव करते रहने वाला होना है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री से विरोध पाने वाला तथा स्त्री के सुखों में घाटा पाने वाला और रोजगार में बहुत कमजोरी पाने वाला तथा रोजगार मे हानि व बंधन या परेशानी एवं अन्य स्थान का सहयोग पाने वाला और अधिक खर्च को परेशानिओं में पड़कर करने वाला व खर्च के संबंध में कुछ बंधन व कुछ रुकावटें पाने वाला गृहस्थ सुख में कंटक सहने वाला भोग में कमी पाने वाला और दूसरे स्थानों का संपर्क कुछ घिरावयुक्त तथा रोजगार दायक व युक्तिपूर्ण पाने वाला और रोजगार में कुछ उलट फेर का झगड़ा और खर्चा सह कर कुछ गुप्त युक्तियों से चलने वाला और कुछ स्त्री के पक्ष में बेजा खर्च सहने वाला बड़ा चतुर बड़ा होशियार होता है।

नं० ८२२

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ७ | | |
| १० | ८ | ६ | |
| ११ | ५ | | |
| १२ | २ | ४ | |
| १श | ३ | | |

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बाहरी स्थान के संपर्क से बहुत रोजगार करने वाला और रोजगार की मजबूती के लिये बहुत खर्च व बड़ी दौड़ धूप करने वाला और स्त्री व गृहस्थ का खूब आनन्द पाने वाला व खूब खर्च करने वाला

नं० ८२३

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ७ | | |
| १० | ८ | ६ | |
| ११ | ५ | | |
| १२ | २शु | | |
| १ | ३ | | |

व खूब भोग पाने वाला और रोजगार में सुन्दरता एवं खूबसूरती और कला का ध्यान रखने वाला और अन्य स्थानों के आदमियों से संपर्क रखकर अपने रोजगार में सुचारु रूप से चौकस काम करने वाला और इतने पर भी रोजगार में कुछ कमजोरी व कुछ कम मुनाफा पाने वाला और स्त्री पक्ष के सुख में कुछ कमजोरी पाने वाला और स्त्री से खर्च का विशेष संबंध रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान की कुछ हानि पाने वाला और दैनिक रोजगार में महान् कठिनाइयां सहने वाला और रोजगार को दूसरे स्थानों के संपर्क से व दिक्कतों से खर्च के योग से चलाने वाला किन्तु फिर भी रोजगार में कभी २ बड़ी रुकावटें एवं कमजोरियां पाने वाला व तामसिक गुप्त कलापूर्ण कार्यों से संचालित कर सकने वाला व बहुत परिश्रम सहने वाला धन वृद्धि की बड़ी चेष्टा रखने वाला तथा भोगादि कामेन्द्रियों के सुख में बड़ी कमी महसूस करने वाला व गृहस्थ के बड़े २ झंझटों और खर्च की खराबियों से परेशानी अनुभव करने वाला गुप्त चालें भी बड़ी युक्तियों से चलने वाला और फिर भी कुछ दिनचर्या को शानदार ढंग से चलाने की तरकीबें करने वाला होता है।

नं० ८२४

| | | |
|---|---|---|
| ९ | ८ | ७ |
| १० | ११ / ५ | ६ |
| १२ | २ | ४ |
| १ | | ३ शु |

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से नवम स्थान

नं० ८२५

में हो तो वह मनुष्य रोजगार की शक्ति को अन्य स्थान के सपक से व धार्मिक सबध से भाग्य की शक्ति के द्वारा पाने वाला और भाग्यबल से ही खर्च शक्ति पाने वाला तथा रोजगार व भाग्य मे कुछ कमजोरी पावे वाला और स्त्री व गृहस्थ का सुख भाग्य शक्ति द्वारा कुछ कमजोरी सहित अच्छा प्राप्त करने वाला और रोजगार में कुछ न्याय करन वाला और धर्म संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और सुन्दरता युक्त बहुत पुरुषाथ करने वाला बहन भाइयो का कुछ याग कमजोरी के साथ पाने वाला और ईश्वर व पुरुषार्थ दानों को मानने वाला कुछ भाग्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का सिह का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ८२६

मे हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार को अन्य स्थानो के सपर्क से ऊचे ढग स करने वाला और कुछ कमजोरी व परशानी भी रोजगार की तरक्की के लिय सहने वाला तथा दिखाव के मुताबिक अदरूनी मान प्रतिष्ठा में कुछ अशान्ति का वातावरण पान वाला व स्त्री पक्ष मे कुछ कमजोरी सहित ऊचाई और सुख प्राप्त करने वाला व मातृस्थान का कुछ अच्छा सुख प्राप्त करने वाला और मकानादि रहन सहन व सुख क साधनो को

प्राप्त करने वाला और भोग विलास की ऊंची योजनाओं के मुताबिक ऊंचाई न पाने वाला और पिता स्थान में कुछ अशांति का योग प्राप्त वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार का लाभ बड़ी कमजोर स्थिति और अन्य स्थान के संपर्क से प्राप्त करने वाला व आमदनी में बड़ी कमजोरियां सहने वाला और खर्च शक्ति मे भी कमजोरी पाते वाला तथा अधिक बुद्धि व अधिक चतुराइयों से काम लेने वाला स्त्री व गृहस्थ का लाभ अधूरा सा या कमजोर पाने वाला भोगादि इन्द्रियों के सुख में कुछ कमी पाने वाला और खर्च शक्ति में भी कुछ फायदा उठाने वाला और ख़र्च को कम करने की चेष्टा करने वाला और संतान की कुछ वृद्धि पाने वाला और लौकिक व्यवहार में व रोजगार के दायरे में कुछ अधिक ज्ञान रखने वाला व अधिक बोल कर अधिक प्रभाव को बुद्धि व विद्या के द्वारा जमाने वाला होता है।

नं० ८२७

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री व गृहस्थ की हानि पाने वाला और स्त्री भोगादि सुखों को खर्च की शक्ति और अन्य स्थान के योग से प्राप्त करने वाला और रोजगार को अन्य स्थान के सपर्क में ही पाने वाला और बहुत खर्च

नं० ८२८

करने वाला एवं सुन्दर पदार्थों में व सुन्दरता युक्त कर्मों में व मनोरंजन कलाओं मे ही प्राय: खूब खर्च करके खुशी मानने वाला और शत्रु पक्ष मे कुछ नरमाई से काम निकालने वाला और दूसरे स्थान में बड़ा प्रभाव पाने वाला और अपने स्थान म गृहस्थिक वातावरण की बड़ी कमजोरी महसूस करने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ थोड़ा सा न्यून सहयोग पाने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति

नं० ८२९

९ ७
१० ८श ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

का वृश्चिक का शनि लग्न से पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला और उत्साह रखने वाला और बहन भाइयों की शक्ति पाने वाला और रोजगार में तरक्की करने वाला व पिता स्थान मे कुछ क्लेश सहने वाला अथवा वैमनस्य पाने वाला और राज स्थान में व बड़े व्यापार में कुछ अलकसाहट व परेशानी महसूस करने वाला और अपने सुख समार्थ्य को कायम रखने में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और अपने अंदर बड़ी तेजी रखने वाला और भोग विलास चाहने वाला और अपनी उन्नति के लिये बहुत दौड़

धूप करने वाला और लम्बी भुजाओं वाला व लम्बे हाथ फेंकने वाला तथा बहुत सुख चाहने वाला और जिद्दी हठीला व मेहनती हिम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से दूसरे स्थान

नं० ८३०

में हो तो वह मनुष्य बहुत जमीन जायदाद की आमदनी पाने वाला यानी जायदाद रूपी धन रखने वाला और धन की वृद्धि करने वाला और धन संग्रह की शक्ति से परम सुख का अनुभव करने वाला व मातृस्थान के सुख में कुछ बंधन पाने वाला और अच्छी आमदनी व सुख संबंधी अनेक लाभ प्राप्त करने वाला और भाइयों बहनों का कुछ बंधन व वृद्धि पाने वाला और कुटुम्ब वृद्धि के साथ २ कुटुम्ब हानि या कमी का योग पाने वाला और धन के पक्ष में प्रथम हानि और फिर वृद्धि पाने वाला और आयु में व दिनचर्या मे कुछ सुख अनुभव करने वाला और धन की वृद्धि का ही पुरुषार्थ सदैव करने वाला और सुख युक्त सदैव रहने वाला होता है।

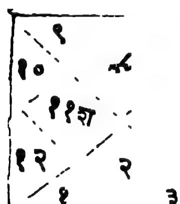
जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से तीसरे स्थान

नं० ८३१

में हो तो वह मनुष्य बड़ा पुरुषार्थी व सुख पूर्वक बड़े २ कार्य करने वाला और बहन भाइयों का सुख प्राप्त करने वाला बुद्धि में बहुत तेजी रखने वाला और बहुत प्रकार की बातों से बहुत काम निकालने वाला तथा बहुत ज्यादा

खर्च करनें वाला व संतान पक्ष में कुछ देर से वृद्धि पाने वाला और जमीन जायदाद की कुछ शक्ति रखने वाला तथा भाग्य वृद्धि के लिये प्रयत्न करने वाला माता के संपर्क योग से बल प्राप्त करने वाला और बहुत सी विद्याओं का व गुणों का संग्रह करने की हमेशा चेष्टा करने वाला एवं बुद्धि व वाणी द्वारा नरम गरम बातें कहने की जबरदस्त आदत पाने वाला और अपने बल से अन्य स्थान की संपर्क शक्ति का अच्छा खासा सहयोग पाने वाला तथा अन्य स्थान से बहुत बड़े सुख का आनन्द लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न के चौथे
नं० ८३२ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत जायदाद वाला मकान जमीन का सुख प्राप्त करने वाला और माता की शक्ति का फायदा व सुख प्राप्त करने वाला और मातृस्थान से शक्ति स्वतः पाने वाला व भाई बहन का सुख प्राप्त करने वाला और मामा के पक्ष में कुछ हानि पहुंचाने वाला व ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी पाने वाला और पत्नीपक्ष से कुछ अशांति महसूस करने वाला तथा सुख शक्ति के दायरे के अनुसार अपनी देह व आत्मा में सुख की कमी महसूस करने वाला और पिता स्थान में भी कुछ सुख के संबंध से कमी का योग पाने वाला व गुप्त दाव चलने वाला होता है।

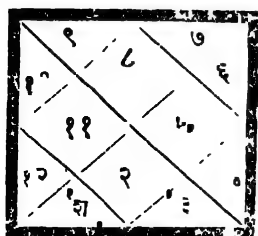


जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत तीव्र बुद्धि वाला और बहुत विद्या वाला और बुद्धि के द्वारा बोल चाल में कुछ कड़ाई व उत्तेजनाओं से काम निकालने वाला और सन्तान पक्ष में कुछ वृद्धि पाकर भी कुछ नीरसता पाने वाला और मातृ स्थान व भ्रातृ पक्ष की परवाह न करने वाला और रोजगार की लाइन में तरक्की करने वाला व धन जोड़ने का विशेष प्रयत्न करने वाला व स्त्री सुख में विशेष आसक्ति रखने वाला व आमदनी पाने वाला और धन जन के संबंध में कुछ अधिकसे अधिक उन्नति की चेष्टा करने वाला और भोग सुख प्राप्त करने वाला और भूमि स्थान की गुप्त शक्ति की ताकत को मस्तक में धारण करने वाला होता है।

नं० ८३३

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य माता के सुख में हानि पाने वाला व मातृस्थान की कमी पाने वाला और भाई से विरोध या वैमनस्य पाने वाला और छिपी ताकत से बहुत पुरुषार्थ करने वाला तथा गर्म हिम्मत वाला तथा ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला व किसी रोग में कुछ बंधन या शक्ति की

नं० ८३४



क्षीणता का कुछ अनुभव करने वाला और किसी प्रकार से कुछ शत्रु पक्ष में कभी कभी क्लेश का अनुभव करने वाला और जीवन में कुछ शक्ति व सुख के योग से दिनचर्या व्यतीत करने वाला और अधिक खर्च करने वाला व अन्य स्थान के संबंध में कुछ शक्ति और सुख हासिल करने वाला तथा आहिस्ता आहिस्ता शक्ति संपन्न बनने वाला एवं पेचीदा व गलत योजनाओं से कामयाबी पाते रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य गृहस्थ जीवन में बहुत सुख उठाने वाला व घर की जायदाद वाली स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान से बहुत सुख प्राप्त करने वाला व शक्ति हासिल करने वाला और स्त्री व मातृ संबंध से गृहस्थ सुख का उदय पाने वाला भाई बंधुओं की परवाह न रखने वाला और भाग्य की उन्नति पर जोर लगाने वाला तथा रोजगार में मजबूती व स्थिरता के योग से सुख शक्ति का संचय करने वाला और भोग में आसक्ति रखने वाला देह में कुछ थकान पाने वाला और रोजगार की उन्नति के लिये पूरा जोर लगाने वाला और रोजगार में बड़े भारी उत्साह से काम करने वाला तथा दूसरों को सुख पहुंचाने का भी काम करने वाला होता है।

नं० ८३५

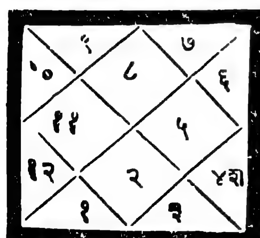
| | | |
|---|---|---|
| ९ | ७ | |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २श | ४ |
| १ | | ३ |

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से आठवें
नं० ८३६ स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृ पक्ष के सुख में हानि पाने वाला व भाई की और बहन की तरफ से अशांति का योग पाने वाला और मातृस्थान व भूमि योग की कुछ कमी पाने वाला तथा पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला




व आयु म वृद्धि पाने वाला व पिता स्थान में अशांति व कुछ क्लेश पाने वाला और बुद्धि स्थान में व बोल चाल मे अधिक शक्ति के प्रयोग से सुख प्राप्त करने वाला व वाचाल कहलाने वाला तथा संतान पक्ष मे कुछ विरोध शक्ति के साथ २ वृद्धि पाने वाला विदेश आदि म जाने वाला और पुरातत्त्व शक्ति का फायदा उठाने वाला तथा अधिक परिश्रम से सुख प्राप्त करन वाला तथा धन वृद्धि के लिये बडी २ प्रयत्न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से नवम स्थान
नं० ८३७ में हो तो वह मनुष्य बड़ा पुरुषार्थी बहुत सुन्दर सुखद कार्य करने वाला भाग्यशाली समझा जाने वाला और बहुत लाभ पाने वाला धन कमाने में बड़ा सामर्थ्य रखने वाला भाई का सहयोग पाने वाला और भाई की व मां




का सहायक शक्ति पाने वाला और मेहनत से सुख सराहना व यश लाभ और हिम्मत प्राप्त करन वाला और विपक्षियों को कुछ अनुचित तरीके से दवाने वाला और सुख सामर्थ्य

के लिहाज से प्रभाव में कुछ कमजोरी पाने वाला और ननसाल पक्ष की कमजोरी में कुछ दुःख देखने वाला व धर्म और ईश्वर भक्ति में सुख मानने वाला और अधिक परिश्रम से घबड़ाने वाला तथा मकान भूमि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने कटु पुरुषार्थ से प्रभाव जमाने वाला व पिता व भाई को कुछ दिक्कतों से मान देने वाला बहुत खर्च करने वाला अन्य स्थानों का संपर्क सुख कुछ मजबूती से पाने वाला व मातृस्थान का प्रभाव पाने वाला और

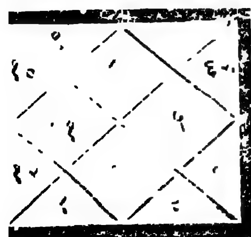
नं० ८३८




खूब मजबूती से रोजगार करने वाला और घर की जायदाद व मकान रखने वाला और अपनी मान उन्नति के लिये कुछ कठिनाइयां सहने वाला किन्तु कठिनाइयों की परवाह न करके हठ योग से काम निकालने वाला और सुख पूर्वक काम करने वाला व तामसी कर्म से वृद्धि पाने वाला भोग और स्त्री स्थान से सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ से सुख पूर्वक बहुत आमदनी पाने वाला और बहुत भाइयों के संपर्क का लाभ पाने वाला और मातृस्थान का लाभ पाने वाला तथा परिश्रम के कारणों से व लाभ के कारणों से सुख के संबंध

नं० ८३९



में देह और आत्मा के बीच में कुछ अशांति का योग पाने वाला और बुद्धि में व वाणी में बहुत चंचलता या अधिकता से काम लेने वाला और दिनचर्या में सुख शक्ति का योग पाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला व मकान इत्यादि भूमि का लाभ पाने वाला और आमदनी की वृद्धि में पूरी ताकत लगाने वाला व सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से बारहवें

नं० ८४०

९ ७श १० ८ ६ ११ ५ १ २ ४ १

स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी शक्ति से बल पूर्वक विशेष खर्च करने वाला तथा अधिक खर्च के कारण से ही अधिक सुख मानने वाला एवं अन्य स्थानों में ही विशेष शक्ति व सुख प्राप्त करने वाला तथा बहन भाइयों की व मातृस्थान का विशेष हानि होने के बाद देर से सुख प्राप्त करने वाला तथा धन की कमजोरी होने पर भी धन वृद्धि के लिये अन्य स्थान की संपर्क शक्ति के द्वारा भी उन्नति में बराबर लगा रहने वाला तथा ननसाल में कमजोरी पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करने वाला धर्म तथा ईश्वर में आसक्ति रखने वाला व शत्रु पक्ष में कुछ कमजोरी मानने वाला एवं शत्रु पक्ष के लिये कोई छिपी हुई चाल चलने वाला व दूसरे स्थान की हिम्मत रखने वाला होता है।

## वृश्चिकलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न के पहिले स्थान

नं० ८४१

में हो तो वह मनुष्य देह में दुर्बलता पाने वाला और देह में बहुत वार आघात सहने वाला और देह में किसी भी प्रकार से चिंतत रह कर कष्ट महसूस करने वाला और कठिन व कठोर नीति को गुप्त रूप से व्यवहार में लाने वाला और शीघ्र स्वभाव का पालन न कर सकने वाला तथा कुछ महान् शक्ति को प्राप्त करने को बड़ी जबरदस्त चाल चलने वाला और अनधिकार सफलता पाने की पेचीदा युक्ति निकालने वाला तथा मुसीबत पा २ करके भी निराश या निष्फल पूर्ण रूपेण न होने वाला बड़ा साहसी चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से दूसरे स्थान

नं० ८४२

में हो तो वह मनुष्य धन और जन व कुटुम्ब का क्लेश सहने वाला अर्थात् धन की कमी व धन की हानि बहुत वार सहने वाला और कुटुम्ब में भी हानि व कमी तथा क्लेश सहने वाला और धन के संबंध में कर्ज लेकर भी काम निकालने वाला और धन के संबंध से क्षोभ व

अपमान भी सहने वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़ा कष्ट साध्य और क्षुद्र कर्म भी करने वाला किन्तु धन की मजबूत शक्ति को पाने के लिये बड़ा ही प्रयत्नशील रहकर और महान् निराशाओं के बाद कुछ तत्त्व शक्ति को पाने वाला गरीब युक्ति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा पराक्रमी और बडा पुरुषार्थी तथा बड़ा हिम्मत वाला और काम काज करने में बड़ी फुर्ती करने वाला और अपनी मेहनत व परिश्रम से कुछ कठिनाइयों के बाद किसी महान् शक्ति को पाने वाला और निराशाओं में न घबराने वाला बड़ी जबरदस्त युक्तियों से उन्नति के मार्ग पर चलते रह कर सफलता पाने वाला और भाई का विरोध करने वाला और कभी कभी हिम्मत हारने व कमजोरी पाने का अवसर पाकर भी धैर्य से काम लेने वाला विजयी तथा बहादुर प्रकृति वाला होता है।

नं० ८४३

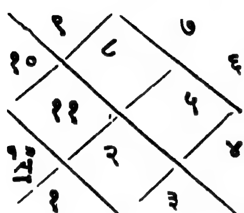
जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला तथा सुख स्थान में कुछ कमी व क्लेश सहने वाला और भूमि स्थान में कुछ विघ्न पाने वाला तथा कुछ झंझट युक्त घरेलू वातावरण के कारण कुछ अशांतप्रद रहने

नं० ८४४

वाला एवं सुख के साधनों को पाने के लिये जरूरत से ज्यादा कोशिश करने वाला तथा सुख शक्ति को बहुत मजबत तरीके से पा लेने पर मानने वाला चाहे वह कुछ अधूरी ही क्यों न हो और सुख अधिक पाने के लिये बड़ी २ युक्तियों से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत बड़ी बुद्धि वाला और स्वार्थ की बातों को बड़े बुजुर्गों के ढंग से कहने वाला और सत्य असत्य की परवाह न करने वाला और संतान का कुछ कष्ट सहने वाला और विद्या ग्रहण करने के समय कुछ कठिनाइया सहने वाला एवं बुद्धि में कुछ फिकरमंद रह कर काम करने वाला और बात चीत करने में मीठा न बोल सकने वाला और बुद्धि व विद्या की गहराई और तत्त्व की खोज करके विशेष मतलब की बात को ग्रहण करने वाला और दिमाग में एक प्रकार की लापरवाही रखने वाला अर्थात् अपने ध्यान को ठीक मानने वाला होता है।

नं० ८४५




जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से छठ स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली और शत्रु पर विजय पाने वाला और ननसाल पक्ष की हानि पाने वाला तथा स्वार्थ सिद्धि की योजनाओं को बड़े मजबूत ढंग से व्यवहार में लाने वाला और बड़ी हिम्मत व हेकड़ी से काम

नं० ८४६



निकालने वाला शील संतोष, का पालन न कर सकने वाला तथा विजयी होने के लिये गहरी से गहरी चाल चलने वाला और अपना प्रभाव कायम रखने के लिये चाहे कितनी ही मसीबत क्यों न सहनी पड़े किन्तु किसी न किसी मजबूत युक्ति को पाकर ही संतोष मानने वाला बड़ा सतर्क बड़ा होशियार और मुसीबत या रोग की परवाह न करके बड़े धैर्य से काम निकालने वाला बड़ा चतुर कूटनीति वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वष का राहु लग्न से सातवें स्थान

नं० ८४७

में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार के संबंध में बड़ी २ होशियारी व चतुराइयों से काम निकालने वाला और अधिक परिश्रम से व भेदीली युक्तियों से रोजगार को पार पटकने वाला और स्त्री स्थान में कुछ क्लेश सहने वाला और स्त्री पक्ष से संबंधित हर एक मामले में कुछ भेद-नीति व युक्तियों से काम निकालने वाला और गृहस्थ सम्बन्ध में कुछ अड़चनें महसूस करते रहने पर भी बड़ी सावधानी और चतराइयों के द्वारा अपनी कमजोरी को जाहिर न होने देने वाला और लौकिक प्रणाली में अच्छी सफलता पाने के लिये भरपूर चेष्टा करके हमेशा उन्नति की तरफ दौड़ने वाला कुछ परेशान होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से आठवें

नं० ८४८

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ९ | ७ | |
| १० | ८ | | ६ |
| ११ | | ५ | |
| १२ | २ | | ४ |
| | १ | ३रा | |

स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में बड़ो भ.री शान गुमान समझने वाला तथा बडी हेकडी और अदा दिखाने वाला एवं पुरातत्त्व का गूढ फायदा पाने वाला और गहराई के छिपे हुये विषय में बहुत ही ज्यादा गहरा विचार सोचने वाला और बहुत ही गहरी चाल चलने वाला और आय में तरक्की पाने वाला किन्तु जीवन की दिनचर्या में कुछ दिखावटी शान के मुकाबिले में अंदरूनी कुछ कमी महसूस करने वाला और पुरातत्त्व शक्ति का किसी भी तरीके से अनधिकार या विशेष फायदा पाने वाला तथा बड़ा मैदान नापने वाला फिकरमंद होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से नवम स्थान

नं० ८४९

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ९ | ७ | |
| १० | ८ | | ६ |
| ११ | | ५ | |
| १२ | २ | | ४रा |
| | १ | ३ | |

में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में बड़ी चिन्तायें पाने वाला और भाग्य में अफसोस मानने वाला और धर्म तथा ईश्वर के सम्बन्ध में वास्तविक कमी पाने वाला और शील सतोगुण का पालन ठीक तौर से न कर सकने वाला और मानसिक कष्ट सहने वाला और अपयश पाने वाला और भाग्य उन्नति की बडी बडी फिकरमंदियों के बाद बहुत लम्बे समय में भाग्य वृद्धि का पाने वाला किन्तु फिर भी भाग्य स्थान में कोई न कोई विघ्न या अशांति का वातावरण पाने वाला और भाग्य के सम्बन्ध में बहुत

से मानसिक आघात सहते रहने पर भी, किसी गहरे तत्त्व की खोज करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से दसवें स्थान

नं० ८५०

९ ७ १० ८ ११ ५रा १२ २ ४ १ ३

में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में हानि व क्लेश सहने वाला और राज समाज से भी एवं राज योग में भी कटक पाने वाला और मान उन्नति या पद उन्नति में विफल होने वाला और व्यापारादि कारबार मे बड़े झंझट सहने वाला और उन्नति के मार्ग में रुकावटें पाने वाला किन्तु तरक्की प्राप्त करने के लिये बड़े से बड़े परिश्रम सहने वाला और परेशानियों से न घबड़ा कर कटु से कटु तीक्ष्ण युक्तियों को व्यवहार में लाने वाला और धर्म कर्म के कोई सुन्दर नियम का पालन न कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ८५१

९ ७ १० ८ ६रा ११ ५ १२ २ ४ १ ३

में हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला और बहुत आमदनी पाने वाला और आमदनी के सम्बन्ध में किसी न किसी युक्तियों के कारण से एक मजबूत तह पर पहुंचने वाला और कुछ मुफ्त का सा माल पाने का भी संयोग पाने वाला और आमदनी या किसी भी प्रकार की प्राप्ति के संबंध में बड़ी मुस्तैदी से मुकाबिला करने वाला किन्तु

फिर भी कुछ कमी महसूस करने वाला और धन प्राप्ति के संबंध में सत्य असत्य के न्याय की परवाह न कर के स्वार्थ सिद्धि की तरफ ही रहने वाला बड़ा सतर्क होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और खर्च के संबंध में कुछ बाहरी संपर्क पाने वाला और खर्च के लिये बड़ी भारी युक्तियों से काम निकालने वाला और खर्च के संबध में परेशानियां भी सहने वाला किन्तु खर्च शक्ति को मजबूत रीति से प्राप्त करने के लिये मुसीबतों की परवाह न करने वाला और अन्य स्थान के संपर्क मे बड़ी बड़ी भेद युक्तियों से काम निकालेने वाला और खर्च के मामले में कुछ मुफ्त की सी योजनाओं का भी फायदा पाने वाला और खर्च की लाइन को कुछ फिकरमंदी से सदैव पार उतारने वाला होता है।

नं० ८५२

९ रा
१० ८ ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३

# बृश्चिकलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न के पहिले स्थान

नं० ८५३ में हो तो वह मनष्य देह के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और देह में कुछ घाव जख्म इत्यादि का योग भी पाने वाला और अन्दरूनी हृदय में बड़ी धीरता रखने वाला और अपनी अन्धा धुन्ध शक्ति के सामने किसी भी दूसरे की परवाह न करने वाला और वीर भेष या बीर स्वभाव रखने वाला और हृदय में ज्ञान की कमी महसूस करने वाला और कुछ छिपाव युक्तियों से गहरा लाभ सोच कर फायदा उठाने वाला व काम शक्ति अधिक रखने वाला और अधिक परिश्रम सहने वाला और कभी कभी अधिक मुसीबत व अधिक परेशानी सहने वाला चिन्तित व गम्भीर होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से दूसरे स्थान

नं० ८५४ में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में बड़ी बड़ी जबरदस्त युक्तियों से धन वृद्धि की कोशिश करने वाला और धन के संबंध में बड़ा भारी जचाव दिखाने वाला और कुटुम्ब वृद्धि का एक बड़ा बखेड़ा सा पाने वाला और अमीरात

का एक बहुत आडम्बर सा पाने वाला और धन की वास्तविक परिस्थिति में एक बडी कमजोरी महसूस करने वाला और धन समूह की प्राप्ति के लिये एक उची योजना बना कर बड़ा उंचा दाव चलाने वाला और धन की विशेष प्राप्ति करने के सबंध में किसी गहरी मुसीबत का भी कभी सामना पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से तीसरे

नं० ८५५ स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा वहादुर प्रकृति वाला तथा लम्बी भुजाओं वाला और बड़ी मेहनत करने वाला कुछ विछोह पाने वाला और किसी कार्य सिद्धि की तह तक पहुचने मे चाहे कितनी ही असफलताओं का सामना क्यो न आवे किन्तु उत्साह युक्त होकर ही आगे बढ़ते रहने वाला और अन्त मे किसी मजबूत शक्ति को प्राप्त करने वाला और स्थिर रहने वाले कार्य को ही करना पसन्द करने वाला स्वार्थ युक्त युक्तियों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से चौथे स्थान

नं० ८५६ में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान मे कुछ कमी पाने वाला और भूमि स्थान और मकान जायदाद की भी कुछ कमी पाने वाला और सुख के साधनो मे भी कमी पाने वाला और जन्म स्थान से भी कुछ अलहदी पाने वाला तथा सुख

के साधनों की प्राप्ति के लिये कोई मजबूत मार्ग प्राप्त करने वाला और जब तक सुख की मंजबूती न मिल जाये तब तक अनेक युक्ति बल व परिश्रम के द्वारा सुख प्राप्ति के साधनों में लगा रहने वाला और घर के अन्दर के वातावरण में कुछ अशांति का कारण पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि में चिंता पाने वाला तथा विद्या में कमजोरी पाने वाला और विद्या अध्ययन में बड़ी २ अड़चनें व रुकावटें पाने वाला किन्तु विद्या को ग्रहण करने के सम्बन्ध में बड़ी धैर्यता से काम लेनें वाला और संतान पक्ष में कष्ठ का अनुभव करने वाला और अपने मतव्य को अपनी वाणी द्वारा दूसरों को ठीक तौर से समझानें में दिक्कत महसूस करने वाला और बोल चाल में कुछ हेंकड़ी से काम लेने वाला और अपनी बुद्धि में कुछ कमी महसूस करने वाला और कुछ छिपी युक्तियों से बात चीत करने वाला तथा शील का उल्लंघन करने वाला जिद्दी स्वभाव का होता है।

नं० ८५७

| | | |
|---|---|---|
| ९ | | |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | | ५ |
| के | २ | ४ |
| १ | | ३ |

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा बहादुर बीर स्वभाव वाला और शत्रु पक्ष में बिजय पाने वाला और अपने ऊपर आने वाली मुसीबतों की परवाह न करने वाला और रोग दिक्कतों को बड़ी सावधानता व मुस्तैदी से हटा देने वाला तथा

नं० ८५८

| | | |
|---|---|---|
| ९ | | ७ |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २ | ४ |
| १ के | | ३ |

ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला और अपने बचाव और हिफाजत का बड़ा गहरा उपाय व साधन हमेशा तैयार रखने वाला व बड़ी गहरी युक्तियों से काम निकालने वाला और अपने स्वार्थ सिद्धि का पूरा ख्याल रखने वाला और शील संतोष की जरा भी परवाह न करने वाला और कुछ कमजोरी के अन्दर सोचने वाला बड़ा निडर होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं० ८५९

| | | |
|---|---|---|
| ९ | | ७ |
| १० | ८ | ६ |
| ११ | | ५ |
| १२ | २के | ४ |
| १ | | ३ |

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कुछ कष्ट सहन करने वाला और दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ परेशानियां सहन वाला और रोजगार के पक्ष में परिश्रम और धैर्य से काम लेने वाला और रोजगार में कभी २ महान् संकट आ जाने पर भी निराश व निश्चेष्ट न होने वाला और गृहस्थ के संबंध में महान् मुश्किलातों का सामना करने वाला और बडी २ युक्तियों मे व हिम्मतों से काम चलाने वाला और अधिक मैथुन प्राप्त करने वाला और रोजगार की लाइन में किसी भी परिस्थिति में रह कर भी कुछ न कुछ मजबूती पा लेने वाला और लौकिक कार्यों में अन्दरूनी कमजोरी के बावजूद भी अंधाधुंद शक्ति का प्रयोग करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से आठवें

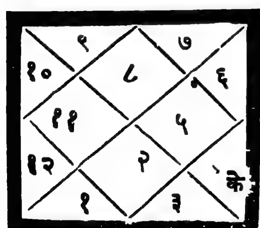
नं० ८६०




स्थान में हो तो वह मनष्य अपने जीवन काल में बहुत दुःख का अनुभव करने वाला व अशांत प्रद रहने वाला और बहुत गढ से गढ युक्तियों में से भी गढ़ और संकीर्ण युक्तियों को काम मे लाने वाला तथा पुरातत्व धन के फायदो में ह॰ का योग पाने वाला और आयु में कुछ कमजोरी का ख्याल ोचने वाला और दिनचर्या का कुछ बेढंगा तरीका पाने वाला और साधारण रहन सहन वाला और गुदा या पेट में ३ खराबी व कब्ज की शिकायत पाने वाला तथा जीव के समय का कुछ दुरुपयोग पाने वाला बहुत भीतर की ुम्मत वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का केत लग्न से नवम स्थान

नं० ८६१




में हो तो वह मनष्य अपने भाग्य में बड़ी अशांतियों का सामना पाने वाला तथा भाग्योन्नति के पूर्ण विकाश के लिये बहुत समय तक इंतजार करने वाला और धर्म के सम्बन्ध में कमजोरी पाने वाला तथा अपने भाग्य में अफसोस करने वाला एवं भाग्य पर कभी कभी बडे बड आघात सहने वाला एवं भाग्य उन्नति के लिये बडी गहरी फायदे की योजना पाने वाला और भाग्योन्नति के लिये बड़ी जबरदस्त फायदे की चाल चलने वाला और अन्त में किसी मजबूत शक्ति पर पहुचने वाला तथा ईश्वर भक्ति का

पूरा साधन न पाने वाला तथा किसी कमजोर धर्म का पालन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से दसवें स्थान

नं० ८६२

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कुछ हानि व कमजोरी पाने वाला एवं राज समाज में बाधा पाने वाला तथा पद उन्नति या मान उन्नति में रुकावटें पाने वाला एव तरक्की व व्यापारादि में बड़े बड़ झंझट तथा मुसीबतें सहने वाला और तरक्की के लिये बहुत परिश्रम करते रहने के बाद सफलता के नजदीक देर से पहुंचने वाला तथा अपनी इज्जत आबरू में कुछ कमी महसूस करने वाला किन्तु अन्दरूनी हृदय में कुछ मजबूती रखने वाला व हिम्मत वाला तथा धैर्य से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से ग्यारहवें

नं० ८६३

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत आमदनी पाने वाला और आमदनी के दायरे में एक खास किस्म की मजबूती पाने वाला और लाभ प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़ी मरतंदी व दृढ़ता से काम लेने वाला तथा धन शक्ति को पाने के लिये अपनी अंधाधुंद शक्ति का प्रयोग करने वाला और भविष्य में अच्छे बुरे की परवाह न करके स्वार्थ सिद्धि का ध्यान

रखने वाला तथा कुछ मुफ्त की सी प्राप्ति पाने वाला एवं कभी कभी आमदनी पर कोई गहरा आघात सहने वाला किन्तु बहादुरी से हमेशा काम का फायदा पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से बारहवें स्थान नं० ८६४ में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला तथा खर्च के सम्बन्ध में बड़ी युक्तियों से व धैर्यता से काम चलाने वाला और खर्च की शैली को मजबूती से चलाने वाला और खर्च की शक्ति में कोई मजबूती की लाइन भी पाने वाला और खर्च के सम्बन्ध में कभी २ कोई गहरा आघात पाकर खर्च चलाने में अपने को बहुत ही असमर्थ पाने वाला तथा खर्च के संबंध मे कुछ परेशानियों से युक्त दूसरे स्थान का सहयोग सम्बन्ध का कारण भी पाने वाला और खर्च शक्ति की मजबूती की रक्षा के लिये अपनी अधाधुंद शक्ति का प्रयोग करने वाला होता है ।

९ ७के. ८ १० ६ ११ ५ १ २ ४ १ ३

# धनलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न के पहिले स्थान

नं० ८६५

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली तथा सुन्दर देह वाला और भाग्यवान् जचने वाला और दया धर्म को मानने वाला ईश्वर में श्रद्धा रखने वाला और भाग्य शक्ति का बडा २ चमत्कार रखने वाला और प्रभाव पाने वाला तथा दैवयोग से सदा सहायक वस्तुओं को प्राप्त करने वाला और देह से हर स्थान में मान पाने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला और अपनी भाग्यवानी का गौरव अपने अन्दर रखने वाला और रोजगार में सफलता पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ में भी गौरव और सफलता पाने वाला बड़ा प्रभावशाली तेजस्वी पुरुष होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० | | ८ | |
| ११ | ९सू. | | ७ |
| १२ | | ६ | |
| १ | ३ | | ५ |
| २ | | ४ | |

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान

नं० ८६६

में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से बडे असमंजस के साथ धन की प्राप्ति पाने वाला और भाग्य के सम्बन्ध में कुछ बंधन सा पाने वाला और कुटुम्ब मे कुछ रूखापन पाने वाला और धन सग्रह के पक्ष में कुछ कठिनाइयां पाने

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० सू. | | ८ | |
| ११ | ९ | | ७ |
| १२ | | ६ | |
| १ | ३ | | ५ |
| २ | | ४ | |

वाला और पुरातत्त्व स्थान से फ़ायदा, उठाने वाला, तथा आयु में वृद्धि पाने वाला तथा धर्म के पक्ष में कुछ हानि पाने वाला और भाग्य की उन्नति के सम्बन्ध में कुछ रुकावट पाने वाला तथा देरी में भाग्योदय पाने वाला और धर्म से धन को अधिक महत्त्व देने वाला तथा जीवन में समय को सभ्य सुचारु तथा अच्छे ढंग से व्यतीत करने वाला भाग्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

नं० ८६७

१० ८ सू ९ ७ १२ ६ ११ ३ ५ २ ४

में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ से कुछ कठिनाइयों के द्वारा भाग्य वृद्धि को पाने वाला और मेहनत में सफलतायें पाने वाला और धर्म का पालन करने वाला तथा बड़ी हिम्मत और उत्साह से काम करने वाला किन्तु परिश्रम के अन्दर कुछ अलकसाहट का योग पाने वाला और भाई बहिन का अच्छा सहयोग पाकर भी उन से कुछ कमी महसूस करने वाला और भाग्योदय काल में कुछ देरी पाने वाला और प्रभावशाली तथा पराक्रमी और ईश्वर में श्रद्धा रखने वाला तथा भाग्य और पुरुषार्थ दोनों को बराबर महत्त्व देने वाला भाग्यवान् यशस्वी तथा तत्त्व खोजी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से चौथे स्थान

नं० ८६८ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और ज़मीन जायदाद वाला तथा माता का व मातृस्थान का सुख उठाने वाला और पिता से भी फायदा पाने वाला और सुख उठाने के साधन स्वयमेव ही प्राप्त करने वाला और धर्म कर्म का पालन सुख पूवक करने वाला और सुखपूर्वक ही यश प्राप्त करने वाला तथा भाग्य की ताकत से ही मान प्राप्त करने वाला राजस्थान से फायदा उठाने वाला तथा व्यापार में फायदा उठाने वाला और ईश्वर का भरोसा मानने वाला तथा तत्त्वग्राही प्रभावशाली तथा सुन्दर कर्मेष्ठी होता है।

| | | |
|---|---|---|
| १० | | ८ |
| ११ | ९ | ७ |
| १२सू | | ६ |
| १ | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान

नं० ८६९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान् तथा बहुत विद्यावान् और बहुत धर्म का ज्ञान रखन वाला तथा बुद्धि योग से भाग्य की उन्नति पाने वाला और संतान पक्ष में भाग्यवानी प्राप्त करने वाला और बड़े प्रभाव के साथ बोलने वाला तथा अपने अन्दर भाग्यवानी की दिमाग में गर्मी रखने वाला और आमदनी के स्थान में कमजोरी समझने वाला और लाभ प्राप्त के लिये उदारता को छोड़ देने वाला तथा बातों में पूरी उदारता रखने वाला तथा बड़ा दूरदर्शी तथा बड़ा ज्ञानी तथा चतुर एवं भाग्य की उन्नति

| | | |
|---|---|---|
| १० | | ८ |
| ११ | ९ | ७ |
| १२ | | ६ |
| १सू | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

के लिये बड़ी बड़ी ऊंची तरकीबें निकालने वाला बड़ा भाग्यवान् होता है।

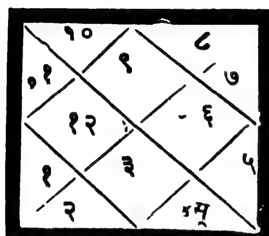
जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से छठे स्थान
नं० ८७० में हो तो वह मनुष्य भाग्य के सम्बन्ध में बडी २ दिक्कतें व घिराव झंझट आदि का योग पाने वाला और धर्म का सही पालन न कर सकने वाला एवं शत्रु आदि विपक्षियों के स्थान में प्रभाव पाने वाला और विपत्तियों को दबा देने वाला तथा रोग पर काबू पाने वाला तथा झगड़े और झंझट तलब मामलों से परिश्रम के द्वारा भाग्योदय पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा अन्य स्थान के सपर्क से कुछ फायदा पाने वाला ईश्वर में कम विश्वास रखने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव पाने वाला तामसी धर्म वाला और प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से सातवें
नं० ८७१ स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से रोजगार में वृद्धि पाने वाला तथा सुन्दर प्रभावशाली स्त्री प्राप्त करने वाला और शादी के बाद भाग्य वृद्धि पाने वाला अर्थात् भाग्यवान् स्त्री वाला एवं रोजगार की तरक्की करने वाला और गृहस्थ धर्म का बहुत सुन्दर प्रभावशाली ढग से पालन करने वाला तथा रोजगार की लाइन से प्रभाव और इज्जत व यश कमाने वाला और भाग्यवानी का

लौकिक आनन्द भोगने वाला और रोजगार के दायरे में ईमानदारी का बड़ा पालन करने वाला और रोजगार में कुदरती फायदे की लाइनें अनायास पाने वाला सुन्दर उद्योगी होता है।

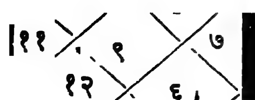
जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य के संबंध में हानि पाने वाला और भाग्य उदय की चिन्ता पाने वाला तथा भाग्य का विकाश देरी से तथा महान दिक्कतों मे विदेश आदि में प्राप्त करने वाला और पुरातत्व शक्ति का बड़ा लाभ उठाने वाला और जीवन में निर्वाहक शक्ति की मजबूती पाने वाला तथा जीवन का समय बड़े सुन्दर प्रभावशाली ढंग से व्यतीत करने वाला और धर्म स्थान में बहुत कमजोरी पाने वाला तथा आयु की वृद्धि पाने वाला और यश व प्रशंशा की कमी पाने वाला और भाग्योदय के लिये बड़ी बड़ी गहरी तरकीबों को काम में लेने वाला तथा धन और स्वार्थ को चलाने वाला और मृतक धर्म का पालन करने वाला होता है।

नं० ८७२




जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रखर भाग्यशाली तथा तेजस्वी और तीव्र धर्म का पालन करने वाला धर्मात्मा न्यायकारी और यश प्राप्त करने वाला तथा स्वयमेव ही भाग्य वृद्धि के कारण पाने वाला और ईश्वर में महान् श्रद्धा

नं० ८७३



रखने वाला तथा पुरुषार्थ को कुछ /कम महत्त्व देने वाला और बहिन भाइयों में कम श्रद्धा रखने वाला तथा चौड़े मस्तक वाला और पारलौकिक का बहुत ध्यान रखने वाला तथा शील रहित परोपकार करने वाला और होनहार का बड़ा मानने वाला समदर्शी स्वभाव का होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् तथा भाग्य की शक्ति से बहुत मान सम्मान पाने वाला तथा व्योहार में सफलता व यश प्राप्त करने वाला एव पिता के स्थान से बहुत फायदा उन्नति पाने वाला तथा पिता की उन्नति करने वाला तथा राज समाज मे फ़ायदे के कारण उन्नति के कारण प्राप्त करने वाला और धर्म कर्म का बड़ा पालन करने वाला तथा मातृस्थान में सफलता पाने वाला तथा बड़ा प्रभावशाली और प्रतापी प्रतिष्ठित एवं उत्तम कर्म करने वाला और न्याय चाहने वाला हुकूमत वाला होता है।

नं० ८७४

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६सू १ ३ ५ २ ४

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धर्म सम्बन्ध से और भाग्य सम्बन्ध से साधारण लाभ पाने वाला और लाभ के स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और धर्म की यथार्थ पालन करने में कुछ कमजोरी पाने वाला किंतु धर्म के सम्बन्ध में

नं० ८७५

१० ८ ११ ९ ७सू १२ ६ १ ३ ५ २ ४

तथा बुद्धि में बहुत ज्ञान रखने वाला और विद्या में प्रकाश पाने वाला और संतान शक्ति पाने वाला एवं धार्मिक विषय पर अच्छा बोलने वाला और भाग्य की कुछ कमजोरी के कारण भाग्य के पूर्ण उदय होने में देरी पाने वाला और आमदनी के सम्बन्ध में कुछ परतन्त्रता पाने वाला या कुछ परेशानी बन्धन सा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान

नं० ८७६

१० ८सू
११ ९ ७
१२ ६
१ ३ ५
२ ४

में हो तो वह मनुष्य भाग्य संबंध में हानि पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान में भाग्योदय पाने वाला और भाग्य के उदय के लिये बड़ी परेशानी व देर अवेर व चक्कर काटने वाला और बहुत खर्च करने वाला तथा धर्म की हानि पाने वाला और यश की कमी पाने वाला और तीर्थ आदि में धर्म करने वाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव जमाने वाला और ईश्वर में कम श्रद्धा रखने वाला और अपने भाग्य पर अफसोस मानने वाला और खर्च के संचालन मार्ग में भाग्य का अच्छा सहयोग पाने वाला व अन्य स्थान में आसाइसें पाने वाला लौकिक बुद्धि होता है।

## धनलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ८७७



में हो तो वह मनुष्य बहुत आयु पाने वाला तथा पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला और पुरातत्त्व के सम्बन्ध में बड़ा ऊचा ज्ञान मनोयोग द्वारा प्राप्त करने वाला और बहुत गहरी युक्तियों को व गूढ़ रहस्यो को आदर्श बनाकर स्तेमाल करने वाला एव देह मे शीतल व गुप्त चिन्ताऐं पाने वाला और देह में कुछ कमजोरी व यथार्थ सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला और रोजगार में कुछ परेशानियां पाने वाला तथा स्त्री स्थान में कुछ परेशानी सहने वाला और मन के अन्दर शक्ति और चिन्ता का समावेश पाने वाला और जीवन में दिनचर्या के अन्दर एक रौनक पाने वाला मस्त जीवन का होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से दूसरे

नं० ८७८



स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन के समय व दिनचर्या को एक अमीरी ढंग से व्यतीत करने वाला और धन संग्रह के स्थान में हानि व कमी का योग पाने वाला तथा पुरातत्त्व शक्तियों का फायदा पाने वाला एवं

जीवन की रौनक अच्छी और सुन्दर होते हुये भी कुछ अखरने वाली कमी का योग भी साथ में पाने वाला और कौटुम्बिक हानि का योग भी पाने वाला तथा बहुत गूढ़ व गहरी समस्याओं के सम्बन्ध में मनोयोग की महान् शक्ति से फायदा उठाने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला और धन प्राप्ति के लिये बहुत आडम्बर व मुश्किलातों से काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान नं० ८७९ में हो तो वह मनुष्य भाई बहिन के स्थान में हानि पाने वाला और शीतल व कठिन पुरुषार्थ करने वाला तथा आयु में जान पाने वाला पुरातत्त्व के सम्बन्ध में मनोबल से तरक्की पाने वाला और गूढ़ व गुप्त विषय की शक्ति का भरोसा रखने वाला और धर्म के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और भाग्य के स्थान में वर्तमान के लिये कुछ परेशानी और भूतकाल के लिये अच्छाई का योग पाने वाला और बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला और कठिन मेहनत की दौड़ धूप करने वाला और अपने पुरुषार्थ स्थान में कुछ परेशानी व बंधन सा महसूस करने वाला बड़ी युक्तियों वाला तथा मस्ती मानने वाला होता है।

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ ४

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ८८०

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० | | ८ | |
| ११ | ९ | | ७ |
| १२चं | | ६ | |
| १ | ३ | | ५ |
| | २ | ४ | |

में हो तो वह, मनुष्य मातृस्थान में कुछ हानि पाने वाला व पुरातत्त्व शक्ति का बहुत सुख उठाने वाला तथा आयु का अच्छा योग पाने वाला और घरेलू सुख के संबंधित वातावरण में कुछ हानि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या को सुख से व्यतीत करने वाला और व्यापारादि मान व उन्नति के सम्बन्ध में कुछ कष्ट साध्य योग पाने वाला और पिता स्थान से भी कुछ परेशानी का योग पाने वाला और गूढ़ युक्तियों के द्वारा मन के जरिय से सुख के साधन पैदा करने वाला और उदर विकारों से मुक्ति पाने वाला और मस्ती व लापरवाही से समय को निकालने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० ८८१

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० | | ८ | |
| ११ | ९ | | ७ |
| १२ | | ६ | |
| १च | ३ | | ५ |
| | २ | ४ | |

में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में कष्ट व हानि सहने वाला और विद्या ग्रहण करते समय भी दिक्कतें और विद्या संग्रह करने में भी कमी का योग पाने वाला और अच्छी आयु पाने वाला व पुरातत्त्व व पैतृक ज्ञान और शक्ति को प्राप्त करने वाला व गहरे विचारों को मनोयोग बल से काम में लेने वाला और अधिक लाभ पाने के लिये गहरी युक्तियों को गहरे विचारों में परिणत करने वाला व लाभ वृद्धि के लिये मन और बुद्धि में चिन्तित रहने

वाला और अपने जीवन के समय को बड़ी समझदारी व शानदारी से व्यतीत करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से छठे स्थान

नं० ८८२

१० ८ ७ ११ ९ १२ ६ १ ३ ५ २चं ४

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में प्रभाव रखने वाला और खर्च के सबंध में कमजोरी पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सपर्क में कमजोरी महसूस करने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव पाने वाला और जीवन के समय में कुछ घिराव महसूस करने वाला और गूढ़ व गहरी छिपाव की युक्तियो को बड़ी शान के साथ इस्तेमाल करने वाला और मन के अन्दर कुछ पुरातत्त्व सबंधित झंझटों की चालो की शक्ति रखने वाला और आयु के संबंध में मजबूती पाने वाला और मस्ती व निर्भयता से काम निकालने वाला कुछ शील रहित होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ८८३

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३चं २ ४

में हो तो वह मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में कठिनाइयां सहने वाला और अच्छी आयु पाने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ गुप्त वेदना सहने वाला और कुछ रोजगार के सम्बन्ध में परेशानियां सहने वाला और पुरातत्व शक्ति का लाभ पाने वाला और गहराई व गूढ़ ज्ञान

के मनोबल से रोजगार में फायदा पैदा करने वाला और देह में कुछ परेशानी पाने वाला और जीवन में मस्ती व रौनक पाने वाला और रोजगार की लाइन में दूर या दूसरे स्थान का सम्बन्ध पाने वाला और रोजगार व स्त्री के पक्ष में कुछ मानसिक कड़ाई से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान

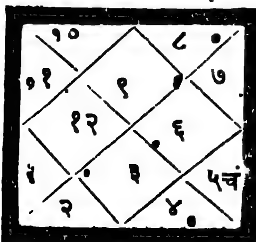
नं० ८८४




में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन काल में बड़ी रौनक व शानदारी से समय को व्यतीत करने वाला और सुन्दर आयु पाने वाला तथा कुछ प्रसिद्धता पाने वाला और मनोयोग शक्ति का बड़ा गहरा ज्ञान रखने वाला और जीवन मे पूर्ण चमत्कार पैदा करने वाली युक्तियों को काम में लाने वाला और पुरातत्त्व सम्बन्धित विषय का पूर्ण ज्ञान रखने वाला और इसके अतिरिक्त पैतृक लाभ भी सुन्दर पाने वाला और धन के कोष में कुछ हानि का योग पाने वाला और संचित विभूतियों के व अदृश्य व गुप्त वस्तुओं के लाभ पाने वाला मस्त जीवन का होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से नवम स्थान

नं० ८८५




में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व की संचित विभूति का आनन्द लाभ करने वाला और आयु में वृद्धि पाने वाला और धर्म के स्थान में हानि पाने वाला और मनोयोग के प्रपंच बल से भाग्य वृद्धि की योजना बढ़ाने वाला और

ईश्वर पर कम भरोसा रखने वाला और यश में निर्वाह के लिये अच्छा साधन पाने वाला तथा भाग्य के स्थान में कमजोरी व कंटक पानें वाला और भाग्य की उन्नति व विकाश के लिये दुःख व देर पानें वाला और भाई बहिन से कुछ कंटक का योग पाने वाला और दिखावटी शील संतोष वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से दमवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कंटक पाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला एवं जीवन का समय शानदार ढंग से व्यतीत करने वाला और पद उन्नति व मान उन्नति के सबंध में कंटक व झंझट का योग पाने वाला और बड़े ऊंचे प्रपंच को मनोयोग द्वारा उन्नति के लिये काम में लाने वाला और पुरातत्त्व शक्ति का विकाश करके अच्छाई पाने वाला और व्योपार स्थान व राजस्थान में बहुत प्रकार के झंझट व दिक्कतें सहने वाला और कुछ मातृस्थान में सुख की कमी पाने वाला बड़ी गहरी चाल वाला होता है।

नं० ८८६

जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ पाने वाला और अच्छी आयु का लाभ पाने वाला और जीवन में रौनक व आनन्द लाभ का योग पाने वाला और आमदनी व लाभ के स्थान में कुछ दिक्कतें व परिश्रम सहने

नं० ८८७

वाला और मनोयोग की गहराई की युक्तियों मे खूब फायदा उठाने वाला और संतान पक्ष में कुछ क्लेश सहने वाला और विद्या के स्थान में कुछ रुकावटें पाने वाला और पुरातत्त्व के सम्बन्ध में मन तथा बुद्धि पर बहुत जोश पाने वाला एवं बड़ी लापरवाही दिखाने वाला तथा फायदे की लाइन में शील संतोष को न चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से बारहवें

नं० ८८८

स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में क्लेश का महान् अशांतियों का योग पाने वाला तथा आयु में कमजोरी पाने वाला एवं खर्च की लाइन में बड़ी परेशानी सहने वाला और दूसरे स्थान में अशांति का योग अनुभव करने वाला और जीवन की मस्ती में कमी पाने वाला तथा पुरातत्त्व की हानि पाने वाला और मन के अन्दर दुःख व कमजोरी अनुभव करने वाला और शत्रुस्थान में अथवा विपक्षियों में प्रभाव पाने वाला तथा अपने जीवन को कस कर भी प्रभाव वृद्धि का बड़ा ख्याल रख कर बड़ी गुप्त युक्तियों को काम में लाने वाला भ्रमण युक्त चिन्तित छोटे मन वाला होता है।

## धनलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न के पहिले स्थान

नं० ८८९

में हो तो वह मनुष्य भ्रमण करने वाला देह में कमजोरी पाने वाला और बुद्धि की विशेष उलट पैंलट के जरिये ऊंचा काम सोचकर करने वाला और बात चीत करते समय दूसरों के साथ बड़े जबरदस्त चक्कर की बातों से काम निकालने वाला और दूसरों को चक्कर में डाल देने वाला और मातृस्थान में हानि पाने वाला और स्त्री स्थान में भी हानि व क्लेश का योग पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ी अशांति अनुभव करने वाला और पुरातत्त्व शक्ति की हानि पाने वाला और ऊंचा खर्च करने वाला विद्या और संतान पक्ष में कुछ कमी का योग पाने वाला और दूसरे अन्य स्थानों का बड़ा आदर्श सम्पर्क बुद्धि द्वारा प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से दूसरे स्थान

नं० ८९०

में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में बहुत हानि लाभ का विचित्र योग पाने वाला और दूसरे अन्य स्थान के सम्पर्क से या बुद्धि योग के द्वारा बहुत धन प्राप्त करने वाला और मौजूदा धन में अधिक खर्च करने वाला और बहुत

ऊंची व गहरी बुद्धि वाला और, बुद्धि व वाणी के जबरदस्त उलट फेर. से धन कमाने की गहरी तरकीबें पास में रखने वाला और संतान शक्ति पाने वाला किन्तु सन्तान सम्बन्ध में कुछ बंधन व कुछ हानि का योग पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी व क्लेश का योग पाने वाला और भाग्य व धर्म स्थान में भी उन्नति के लिये बहुत उलट फेर करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई के स्थान मे हानि का योग पाने वाला और खर्च शक्ति के योग से कुछ बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला एवं बुद्धि योग से बहुत पुरुषार्थ करने वाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव जमाये रखने वाला तथा संतान सम्बन्ध में कुछ कमी का योग पाने वाला और पिता स्थान में हानि का योग पाने वाला एवं पिता व व्योपार स्थान में उलट फेर का योग पाने वाला और अन्य स्थान के संबधित कार्यों में बुद्धि और बातों की बड़ी उलट फेर करके प्रभाव पाने वाला और मान में कमी पाने वाला हेकड़ बुद्धि से काम निकालने वाला और धर्म सम्बन्ध में भी बहुत बातों की उलट फेर करने वाला बड़ा हिम्मत वाला होता है।

नं० ८९१

| | | | |
|---|---|---|---|
| | १० | | ८ |
| ११ | | ९ | ७ |
| | १२ | | ६ |
| १ | | ३ | ५ |
| | २ | | ४ |

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से चौथे स्थान

न० ८९२

में हो तो वह मनुष्य अपनी माता की हानि पाने वाला व मातृस्थान में हानि या क्लेश पाने वाला तथा मकान जायदाद की भी हानि पाने वाला और स्त्री स्थान में हानि पाने वाला और रोजगार व लाभ के सम्बन्ध में बहुत उलट फेर करके बुद्धि से काम निकालने वाला किन्तु रोजगार मे कुछ हानि पाने वाला तथा अन्य स्थान के सम्पर्क से बुद्धि द्वारा लाभ पाने वाला और संतान सम्बन्ध में कुछ कमज़ोर सुख प्राप्त करने वाला और विद्या में भी कुछ कमी पाने वाला तथा खर्च शक्ति को सुख से चलाने वाला और स्थानों में भी रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

न० ८९३

में हो तो वह मनुष्य बड़ा बुद्धि की व बातों की बड़ी भारी काट छांट से काम निकाल कर खूब खर्च शक्ति को पाने वाला तथा खूब खर्च करने वाला और संतान कष्ट सहने वाला और बड़ी उलट फेर की बातों से दूसरों को चक्कर में डालने वाला और स्वयं भी बुद्धि व विचारों में चक्कर खाने वाला किन्तु साथ ही साथ बातों की मजबूती से काम करने वाला और जीवन में चिन्तित रहने वाला व लाभ भी करने वाला और पुरातत्त्व शक्ति की हानि पाने वाला और विद्या में कमी पाने वाला और

अपनी बुद्धि से अन्य दूसरे स्थान का मजबूत सम्पर्क रखने वाला और अपनी कमजोरी को ढक कर हेकड़ी से बातें करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से छठे स्थान

नं० ८९४

में हो तो वह मनुष्य संतान कष्ट सहने वाला और विद्या में कमी पाने वाला और खर्च के स्थान में खरखसा पाते रहने पर भी खर्च अधिक करने वाला और खर्च के मामले में कुछ परतंत्रता व अन्य स्थान का संपर्क पाने वाला और शत्रु को दमन करने वाला देह में कुछ कमजोरी व गर्मी पाने वाला और धर्म स्थान में कुछ हानि पहुंचाने वाला और भाग्य में कुछ कमजोरी पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पहुंचाने वाला और बुद्धि द्वारा बात चीतों में जबरदस्त उलट फेर व छिपाव से काम लेने वाला और मिजाज में बड़ी गरमी रखने वाला सहन शीलता का उल्लंघन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से सातवें

नं० ८९५

स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में हानि का योग पाने वाला और अन्य स्थान के सम्पर्क से बुद्धि के द्वारा रोजगार करने वाला किन्तु रोजगार के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला एवं धन बृद्धि के लिये विशेष

साधन पैदा करने वाला तथा संतान सम्बन्ध में कुछ हानि व परेशानी पाने वाला और पिता के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला तथा राजस्थान में भी कभी कुछ हानि का योग पाने वाला और मान सनमान के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी पाने वाला किन्तु अन्य स्थान के सम्पर्क में अच्छा मान पाने वाला और विद्या में भी कुछ कमी व देह में भी कुछ कमजोरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में विशेष कष्ट अनुभव करने वाला तथा विद्या में कमी पाने वाला एवं खर्च के मामलातों में भी बड़ा कष्ट मालूम करने वाला और जीवन में अशांति महसूस करने वाला और धन जन की वृद्धि के लिये बड़ी कठिन से कठिन चेष्टाऐं करने वाला पुरातत्त्व की हानि पाने वाला आयु में कुछ कमी का योग पाने वाला और बुद्धि के हेर फेर व गूढ़ युक्तियों के संबंध में बड़ी गहरी खतरनाक चालें चलने वाला और गहरे छिपाव से काम लेने वाला और भाई के स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और लाभ स्थान में बड़ी कोशिश करने वाला तथा कुछ गुदा में विकार पाने वाला होता है।

नं० ८९६

| | | | |
|---|---|---|---|
| | १० | | ८ |
| ११ | | ९ | ७ |
| | १२ | | ६ |
| १ | | ३ | ५ |
| | २ | | ४ मं |

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० ८९७ में हो तो वह मनुष्य बुद्धि और भाग्य की ताकत से बहुत खर्च करने वाला और भाग्य स्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और अन्य स्थान का गहरा व उत्तम संपर्क पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ हानि व कुछ लाभ पाने वाला तथा मातृस्थान में कुछ हानि पाने वाला तथा माता से व भूमि के पक्ष से कुछ कमी पाने वाला एवं विद्या में कुछ कमी पाने वाला और सुख शांति में कुछ हानि पाने वाला और भाई के स्थान में कुछ कमी पाने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये बड़े भारी हेर फेर से बुद्धि द्वारा काम निकालने वाला तथा भाग्योदय देरी से व दूर से पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से दसवें स्थान

न० ८९८ में हो तो वह मनुष्य पढ़ा लिखा बुद्धिमान् तथा राजभाषा का जानकार और तेज बुद्धि से काम लेने वाला तथा संतान शक्ति को कुछ कमजोरी के साथ पाने वाला और पिता को हानि पहुंचाने वाला अधिक शानदार खर्च करने वाला तथा अपनी मान उन्नति व पद उन्नति में रुकावटें तथा बाधाएं व हानियां पाने वाला किन्तु फिर भी मान पाने वाला और हेर फेर व दौड़ धूप में के मुन्तजिमी काम करने वाला व देह में कुछ कमजोरी पाने वाला और

अन्य दूसरे स्थान के संपर्क से अच्छाई पाने वाला और अपने कार्य में कटुता व कठोरता के योग से कर्म कर के यश अपयश पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से ग्यारहवें

नं० ८९९

स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्य दूसरे स्थान के योग से फायदा पाने वाला और धन वृद्धि की बड़ी भारी कोशिश करने वाला और बुद्धि से बहुत लाभ पाने वाला विद्या में कुछ कमी के साथ फल प्राप्ति पाने वाला और संतान संबंध में भी कुछ कमी के साथ फल प्राप्ति पाने वाला और दुश्मन को हानि पहुंचाने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला तथा लाभ खर्च का बड़ा भारी योग पाकर हिसाब से चलने वाला और आमदनी के लिये कटू व तीक्ष्ण बद्धि से काम लेने वाला और धन व कुटुम्ब का बडा आडम्बर सा पाने वाला और बुद्धि द्वारा हेर फेर कर के अधिक फायदा पाने की सदैव चेष्टा करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से बारहवें

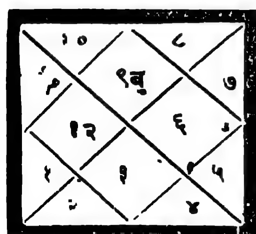
नं० ९००

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला तथा संतान पक्ष में बहुत भारी हानियां सहने वाला तथा स्त्री स्थान में हानि पाने वाला तथा भाई के पक्ष में भी हानि का योग पाने वाला एवं रोजगार में नुक-

सान सहने वाला तथा पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला तथा बुद्धि व विद्या में बहुत कमजोरी पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान का संबंध हमेशा बुद्धि से मजबूत कायम रखने वाला तथा बुद्धि से बड़ी भारी हेर फेर की बातें करने वाला भ्रमित बुद्धि वाला तथा बहुत दूर की बातें सोचने वाला शत्रुस्थान में कुछ प्रभाव जमाने वाला तथा गलत तरीके से बहस करने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला होता है ।

## धनलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न के पहिले स्थान नं० ९०१ में हो तो वह मनुष्य शोभा तथा




सुघडाई का बहुत ऊंचा रोजगार व्यापार करने वाला तथा बडा ऊचा कार्य कुशल कर्मेष्ठी तथा लौकिक व्यवहार का अच्छा ज्ञान रखने वाला व लौकिक कार्यों में अच्छी सफलता पाने वाला और गृहस्थ सम्बन्ध में बहुत मान और आदर्शता को पाने वाला और बहुत प्रभावशाली स्त्री वाला और पिता

स्थान से बहुत ईज्जत पाने वाला किन्तु पिता के सम्बन्ध में कुछ न्यूनता पाने वाला और बहुत भोग विलास प्राप्त करने वाला सौम्य स्वभाव के अन्दर अहंभाव रखने वाला बड़ा भारी चतुर मेहनती और ईज्जतदार परमविवेकी बड़ा मुन्तजिम होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से दूसरे स्थान
नं० ९०२ में हो तो वह मनुष्य रोजगार तथा व्योपार के जरिये बहुत धन कमाने वाला और धन की ताकत से बहुत व्यापार में तरक्की पाने वाला व पिता स्थान की बहुत बड़ी धनराशी पाने वाला और बहुत कुटुम्ब पाने वाला तथा लौकिक प्रणाली में बहुत इज्जत तथा तरक्की पाने वाला पुरातत्त्व शक्ति का फायदा पाने वाला और स्त्री व गृहस्थ में कुछ बंधन पाने वाला और बहुत भोग विलास चाहने वाला तथा धन संग्रह करने वाला तथा राजस्थान से फायदा उठाने वाला तथा बडे २ कीमती कार्य करने वाला बड़ा विवेकी परम चतुर होता है।

| | |
|---|---|
| १० बु | ८ |
| ११ | ७ |
| ९ | |
| १२ | ६ |
| ३ | |
| १ | ५ |
| २ | ४ |

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से तीसरे स्थान
नं० ९०३ में हो तो वह मनुष्य अपने कर्म बल से महान् पुरुषार्थ करने वाला और पुरुषार्थ से महान तरक्की पाने वाला और पिता व भाई बहिन की शक्ति का सहयोग पाने वाला तथा स्त्री व गृहस्थ में भी वृद्धि शक्ति का योग पाने

| | |
|---|---|
| १० | ८ |
| बु | ७ |
| ९ | |
| १२ | ६ |
| ३ | |
| १ | ५ |
| २ | ४ |

वाला और कार व्यापार में बड़ी सफलता पाने वाला बड़ा उत्साही कार्य कुशल.कर्मठी तथा धर्म कर्म का पालन करने वाला और राजसी ठाट रखने वाला और बड़ा मान पाने वाला और सुन्दर कद पाने वाला और महान् परिश्रम व महान् चतुराइयों से कार्य करने वाला और सौम्य शक्ति वाला तथा स्वाभिमानी भाग्यवान् परम विवेकी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से चौथे स्थान

नं० ९०४ में हो तो वह मनुष्य मानस्थान में हानि व कमजोरी पाने वाला और घर गृहस्थ में अशांति का योग पाने वाला तथा पिता स्थान से कुछ क्लेश व वृद्धि पाने वाला जमीन जायदाद की कमी पाने वाला और घर के अन्दर चाहे कष्ट सहले किन्तु बाहरी दिखावे में शान व इज्जत रखने वाला और रोजगार में कुछ दैनिक कमी अर्थात् नित्य प्रति के रोजगार में कुछ कमजोरी व कुछ बड़े ढंग के व्यापार में वृद्धि पाने वाला और कुछ आलसी व कुछ उत्साही तथा आहिस्ते आहिस्ते कर्म वृद्धि की तरफ जाने वाला और स्त्री स्थान की तरफ से भी कुछ कमजोरी पाने वाला गुप्त विवेकी होता है।




जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से पांचवें स्थान

नं० ९०५ में हो तो वह मनुष्य विद्या व बुद्धि के द्वारा बड़े २ महान् कार्य करने वाला तथा महान् चतुराई के योगों से बड़ा रोजगार व्यापार करने वाला परम विवेकी तथा बहुत लाभ पाने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ बु ३ ५ २ ४

और राज समाज का अच्छा व्यावहारिक ज्ञान रखने वाला और स्त्री स्थान से लाभ व योग्यता पाने वाला तथा पिता स्थान से भी तरक्की के साधन पाने वाला एवं बुद्धि में बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा प्राप्ति व भोग वैभव की बड़ी इच्छा रखने वाला तथा लौकिक कार्यों मे विशेष दखल रखने वाला तथा मान व ईज्जत का बड़ा ख्याल रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से छठे स्थान नं० ९०६ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान से व पिता स्थान से वैमनस्य व खिलाफत का योग पाने वाला और रोजगार व्यापार में बड़ी २ दिक्कतें सहने वाला और कुछ परतंत्रता युक्त कर्म करके रोजगार चलाने वाला तथा अधिक

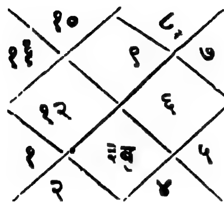
१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ बु ४

खर्च करने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ सहारा या मदद पाने वाला और शत्रु स्थान मे कुछ नम्रता से काम लेने वाला किन्तु नरमाई में भी कुछ गरमाई रखने वाला एवं मान सन्मान मे कुछ कमी पाने वाला और भोग विलास

में भी कमी पाने वाला और कुछ आलसी स्वभाव वाला गृहस्थ जीवन में कुछ हवाब पाने वाला तथा गुप्त चतुराईयों वाला होता है।"

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से सातवें स्थान

नं० ९०७




में हो तो वह मनुष्य बहुत बढ़ियां शानदार रोजगार करने वाला और गृहस्थ का उत्तम आनन्द पाने वाला और सुन्दर प्रभावशाली चतुर स्त्री वाला और अपने कर्म कार्य से बहुत मान पाने वाला और सुन्दर वेषभूषा रखने वाला और बहुत विवेक युक्त चतुराइयों के लौकिक कर्म को करने वाला और कार रोजगार को मध्य स्थल में करने वाला और कार बार की तारीफ व शौहरत पाने वाला और खूब भोग विलाश पाने वाला एवं पिता की रोजगारिक सहायता पाने वाला और उत्तम ससुराल पाने वाला तथा रोजगार की प्रणाली में शोभा का और सुघड़ता का पूरा ध्यान रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से आठवें स्थान

नं० ९०८




में हो तो वह मनुष्य रोजगार व्यापार में परेशानियां व हानियां सहने वाला और पिता स्थान की कमी पाने वाला और स्त्री स्थान में हानि पाने वाला और पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला तथा बहुत गूढ़ में गुप्त चतुराइयों के

योग से रोजगार करने वाला और रोजगार करनें में बड़ी परेशनियों का सामना करने वाला और विदेश आदि में काम का योग पाने वाला और धन वृद्धि की पूर्ण चेष्टा करने वाला और भोग विलास में बहुत कमी पाने वाला और गृहस्थ सम्बन्ध में क्लेश व मान हानि भी सहने वाला और कुछ आलसी व अकर्म्मण्य व व्यावहारिक प्रणाली में गलत चलने वाला व अपने जीवन में कुछ ज्ञान समझने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से नवम स्थान

नं० ६०९

११ ९ ७
१२
१ ५बु
२ ४

में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति के बल से बहुत रोजगार करने वाला और कार व्योहार में धर्म का बहुत ध्यान रखने वाला और गृहस्थ धर्म का बहुत सुन्दर सुचारु रूप से न्यायोक्त पालन करने वाला और सुन्दर कर्त्तव्य परायण स्त्री पाने वाला और पिता व बहिन भाइयों का सुन्दर सहयोग पाने वाला और धर्म कर्म में श्रद्धा व सुन्दर विवेक रखने वाला बड़ा उत्तम पुरुषार्थ करने वाला और रोजगार व कारबार में बड़ी योग्यता व सुघडाई से परम विवेक के साथ काम चलाने वाला और धर्म के स्थान में स्वार्थ का भी बहुत ध्यान रखने वाला संयमी भाग्यवान् तथा माननीय और राज समाज से लाभ युक्त रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से दसवें स्थान

नं० ९१०

में हो तो वह मनुष्य बहुत जबरदस्त व्यापार को करने वाला और पिता स्थान की बड़ी शक्ति प्राप्त करने वाला और राज समाज में बहुत इज्जत पाने वाला और स्त्री बहुत सुन्दर तथा प्रभावशाली पाने वाला और बहुत ऊंची ससुराल पाने वाला और लौकिक व्यवहार में बहुत उन्नति पर पहुंचने वाला और बहुत सुन्दर सुन्दर चतुराइयों के काम से उन्नति पाने वाला और माता के पक्ष में कमजोरी पाने वाला तथा सुख शान्ति में बाधा पाने वाला भूमि स्थान में कुछ कमी पाने वाला और बड़ा प्रभावशाली कर्म करने वाला और अधिक भोग विलास पाने वाला तथा अधिक से अधिक उन्नति पर पहुंचने के लिये सदैव प्रयत्न शील रहने वाला बड़ा भारी चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से ग्यारहवें

नं० ९११

स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार व्यापार से बहुत लाभ पाने वाला और बड़ी २ चतुराइयों से व विवेक बुद्धि के कर्म से बहुत २ प्रकार के लाभ पाने वाला सुन्दर स्त्री का लाभ पाने वाला व पिता स्थान का बहुत लाभ पाने वाला और विद्या के अन्दर बड़ा ऊंचा, ज्ञान प्राप्त करने वाला और संतान शक्ति प्राप्त करने वाला और भोग विलास का बहुत लाभ पाने वाला और ससुराल से इज्जत पाने

वाला और राज समाज से सम्बंधित कार्य में फायदा पाने वाला और सुन्दर २ पदार्थों को प्राप्त करने व चाहने वाला और अधिक से अधिक लाभ पाने के लिये महान् प्रयत्न करने वाला माननीय चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से बारहवें

नं० ९१२

स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार व्यापार में हानि पाने वाला और पिता स्थान में भी हानि पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान से रोजगार का सम्बन्ध पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और स्त्री स्थान में हानि पाने वाला तथा रोजगार के लिये परेशानियां व दौड़ धूप करने वाला तथा राज समाज के कार्यों में कमजोरी पाने वाला तथा उन्नति के कार्यों में बाधा पाने वाला और मान के स्थान में कमी सहने वाला और लौकिक कार्यों के सम्बन्ध में अधूरा ज्ञान रखने वाला और कुछ आलसी स्वभाव वाला कुछ दिक्कतें सहने और गृहस्थ में कमजोरी पाने वाला और दूसरे स्थान की चतुराई रखने वाला होता है।

## धनलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का धन राशि का गुरु लग्न के पहिले

नं० ९१३

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत सुख भोगने वाला और बहुत मान पाने वाला और मातृ-स्थान का स्वयं सिद्ध अधिकार पाने वाला और मातृभूमि व माता के हृदय में महान् श्रद्धा रखने वाला और भूमि पर सर्वत्र जहां चला जाय वहां भो मान् स्वत: प्राप्त करनें वाला और स्थूल एवं सुडोल देह आदरणीय तथा शान्तिप्रिय और सुन्दर भोजन मिष्टान्न युक्त चाहने वाला और स्त्री का सुख तथा मान प्राप्त करने वाला और सुखपूर्वक रोजगार करके इज्जत पाने वाला और अपने स्थान पर ही रहने वाला और विद्या तथा धर्म का सुख प्राप्त करने वाला और संतान पाने वाला भाग्यवान् गुणी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से दूसरे स्थान

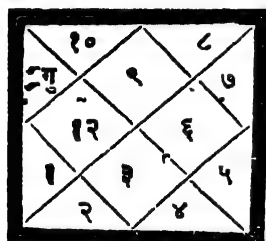
नं० ९१४

में हो तो वह मनुष्य धन प्राप्ति के संबंध में जान लड़ा देने वाला और जान से ज्यादा धन को महत्त्व देने वाला और धन के पक्ष में दु:ख अनुभव करने वाला अर्थात् धन संग्रह में कम-जोरी पाने वाला और धन की प्राप्ति

के लिये सुख को खो देने वाला व धन की कमी से सुख में कमी पाने वाला और मातृस्थान की हानि पानें वाला व जमीन जायदाद की कमी पाने वाला और देह में कमजोरी पाने वाला कुटुम्ब का क्लेश सहने वाला और जीवन की दिनचर्या में रौनक पाने वाला और पुरातत्त्व का फायदा उठाने वाला और शत्रु पर प्रभाव दिखाने वाला पितास्थान का सुख प्राप्त करने वाला और कारबार से सुखी होने वाला मान युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से तीसरे स्थान

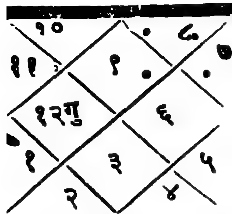
नं० ९१५




में हो तो वह मनुष्य पुरुषार्थ से सुख प्राप्त करने वाला और धन लाभ पाने वाला और भाग्य शक्ति का भी सुख उठाने वाला तथा रोजगार से भी सुख प्राप्त करने वाला और स्त्री स्थान से बहुत सुख का योग पाने वाला तथा माता व भाई के पक्ष में सुख की कमी का योग पाने वाला तथा धर्म के सम्बन्ध में हृदय से धर्म का पालन कर के सुख अनुभव करने वाला तथा ईश्वर में निष्ठा करने से सुख अनुभव करने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये बहुत परि-श्रम करने वाला एवं परिश्रम में थकान अनुभव करने वाला और गृहस्थ सुख का लौकिक आनन्द पाने वाला उद्यमी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से चौथे स्थान

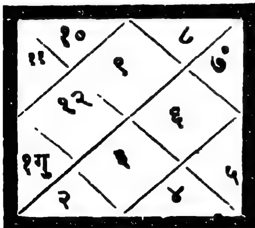
नं० ९१६




में हो तो वह , मनुष्य सुख पूर्वक रहने वाला मातृस्थान का व माता का सुख प्राप्त करने वाला बुजुर्गों तथा जमीन जायदाद वाला और सुख के बहुत साधन पाने वाला और देह व हृदय में परम सुख शांति का अनुभव करने वाला एवं जीवन में व दिनचर्या में महान् आनन्द व गौरव प्राप्त करने वाला अच्छी आयु पाने वाला और पुरातत्त्व का विशेष सुख प्राप्त करने वाला और मान पाने वाला तथा पिता से सुख प्राप्त करने वाला और अधिक खर्च करने वाला और बाहरी स्थान के सम्पर्क में बहुत सुख प्राप्त करने वाला तथा अपने स्थान में रहने वाला कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से पांचवें स्थान

नं० ९१७




में हो तो वह मनुष्य बहुत बुद्धिमान् तथा बहुत स्वाभिमानी और बड़ा गौरव वाला और सुन्दर देह वाला तथा प्रतापी संतान वाला और संतान से तथा बुद्धि विद्या के सम्पर्क से उन्नति व ख्याति पाने वाला और बुद्धि व संतान के कारणों ही से हृदय में सुख शांति को प्राप्त करने वाला और मातृस्थान की शक्ति से उत्थान पाने वाला तथा अन्दर ज्ञानी और बड़ा नीतिज्ञ एवं शांति-प्रिय और धर्म को मानने वाला तथा खूब लाभ पावे

वाले शास्त्रीय ज्ञान रखने वाला परम विवेकी और बहुत मान प्राप्त करने वाला बड़ा भाग्यवान् जायदाद वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से छठे स्थान

नं० ९१८

में हो तो वह मनुष्य सुख शांति में बाधा पाने वाला तथा देह में कमजोरी पाने वाला और कुछ परतंत्रता का योग पाने वाला तथा कुछ बधन सा महसूस करने वाला अथवा कुछ रोग युक्त रहने वाला और माता की व मातृस्थान की कुछ कमजोरी पाने वाला और ननसाल पक्ष का कुछ सहयाग पाने वाला और कौटुम्विक क्लेश सहने वाला और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला पिता स्थान की उन्नति चाहने वाला और परिश्रम व कर्म बल के योग से प्रभाव पाने वाला और धन जन की कमजोरी अनुभव करने वाला तथा खूब खर्च करने वाला दाना दुश्मन होशियार तथा गुप्त नीतिज्ञ और अन्य का सम्पर्क पाने वाला बड़ा सावधान होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से सातवें

नं० ९१९

स्थान में हो तो वह मनुष्य सुखपूर्वक बहुत रोजगार करने वाला और देह से रोजगार में गौरव पाने वाला तथा गृहस्थ जीवन में एक प्रकार की महानता और सुख का योग पाने वाला तथा सुन्दर प्रभावशाली स्त्री वाला

और माता का अधिक कर्म योग प्राप्त करने वाला और खूब लाभ पाने वाला और अधिक मेहनत करने वाला तथा देह में सुन्दरता पाने वाला और भाई बहिन के पक्ष में वैमनस्यता पाने वाला और घर की कुछ जायदाद जमीन का योग पाने वाला एवं लौकिक कर्म करने में कुछ कला व बड़प्पन पाने वाला स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य गुप्त व गूढ़ युक्तियों के बल से अपने अन्दर एक अपूर्व शक्ति का मजा लेने वाला और अपने जीवन व दिनचर्या में एक बड़ी रौनक व उल्लास प्राप्त करने वाला और धन जन की तरफ से कमजोरी अनुभव करने वाला तथा खूब खर्च करने वाला तथा बड़ी शानदारी की रहन सहन से रहने वाला किन्तु अपनी स्थान स्थिति में व अपनी आत्मस्थिति में अपने अन्दर कमजोरी मानने वाला और जमीन जायदाद वाला मातृ-स्थान की शक्ति पाने वाला और सुख के साधन प्राप्त करने वाला होता है।

न० ६२०




जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् गुणवान् और शास्त्रीय ज्ञान रखने वाला और धर्म आचरण करने वाला और ईश्वर में श्रद्धा रखने वाला और बहुत विद्या व बुद्धि पर अधिकार रखने वाला और सुन्दर देह वाला जमीन

नं० ६२१

१० ८ ११ ७ ९ १२ ६ १ ३ ५ गु २ ४

ज़ायदाद वाला व मातृस्थान की सहायता पाने वाला और ख्याति पाने वाला और प्रभाव पाने वाला और सुख के बहुत से साधन भाग्य की सहायता से ही प्राप्त करने वाला और संतान शक्ति का सुख प्राप्त करने वाला भाई बहिन और पुरुषार्थ के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता रखने वाला भाग्य को बड़ा मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख पूर्वक बड़ा व्यापार करने वाला और कार बार में तरक्की करने वाला और जमीन जायदाद का बड़ा प्रभाव पाने वाला सुख के बहुत बड़े साधन पाने वाला तथा माता पिता की इज्जत करने वाला और राज समाज मे मान पाने वाला और धन जन की तरफ से कमी या झंझट महसूस करने वाला और बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा प्रभावशाली कर्म करने वाला एवं अपने अन्दर बड़ा भारी बड़प्पन रखने वाला और पिता स्थान में कुछ दुविधा पाने वाला और सदैव राजसी उन्नति की तरफ प्रयत्नशील रहने वाला तथा नम्र व गुमानी कर्मनिष्ठी होता है।

नं० ६२२

१० ८ ९ ११ ७ १२ ६ गु १ ३ ५ २ ४

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से ग्यारहवें

नं० ९२३ स्थान में हो तो वह मनुष्य सुख के साधनों के द्वारा लाभ पाने वाला किन्तु लाभ करने में कुछ वैमनस्य या अलकसाहट पाने वाला और स्वयं देह से लाभ पाने का साधन पैदा करने वाला और मातृस्थान की शक्ति का कुछ सहारा पाने वाला और भाई के व बहिन के स्थान में कुछ विषमयता व वैमनस्य पाने वाला और विद्या एवं बुद्धि पर अच्छा अधिकार पाने वाला और संतान सुख प्राप्त करने वाला और अपने गृहस्थी का स्त्री सम्बन्धित अच्छा सुख प्राप्त करने वाला और रोजगार में बरक्कत पाने वाला व रोजगार से सुख प्राप्त करने वाला और मेहनत से बचाव चाहने वाला उद्योगी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से बारहवें

नं० ९२४ स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ सुन्दरता की कमी व कुछ कमजोरी का योग पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और खर्च की ताकत से बहुत सुख प्राप्त करने वाला और अन्य स्थान के अच्छे सम्पर्क से सुख का अनुभव करने वाला और अन्य स्थान में ही अपनी आत्मस्थिति पाने वाला और अपने जीवन की दिनचर्या में बहुत ही उल्लास अनुभव करने वाला तथा पुरातत्त्व का गहरा ज्ञान

व अधिक सुख प्राप्त करने वाला तथा हृदय में दुःख अनुभव करने वाला एवं शत्रुस्थान में प्रभाव व शांति से काम लेने वाला तथा मातस्थान की ताकत में कुछ कमजोरी प्राप्त करने वाला भ्रमण कारी होता है ।

## धनलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न के पहिले स्थान

नं० ९२५

में हो तो वह मनुष्य देह के परिश्रम से आमद व लाभ पाने वाला और देह में कुछ रोग भी पाने वाला और बड़ी भारी ऊंचे दर्जे की चतुराइयों से मतलब सिद्ध करने वाला और अपने अन्दर बहुत काम वासना रखने वाला और रोजगार का बड़ा ख्याल रखने वाला और स्त्री स्थान में कुछ झगड़ा व लाभ और प्रभाव पाने वाला और बड़ी होशियारी से बहुत कमाई करने वाला और धन प्राप्ति के लिये मेहनत व परिश्रम की परवाह न करने वाला और झगड़े तलब मामलों में फायदा उठाने

की तरकीब पैदा करने वाला और मान पाने वाला व शत्रु को दबाने वाला शृंगार रसादिक को चाहने वाला प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० १२६




में हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला तथा धन जोड़ने वाला और बड़ी २ युक्तियों से व परिश्रम से धन की वृद्धि करने वाला और धन की वृद्धि करने के कार्य में न्याय या अन्याय का परवाह न करने वाला और जीवन में आमद के प्रभाव से बडा प्रोत्साहन पाने वाला और पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला और धनराशि पर अधिकार पाने के लिये पहिलें कुछ अड़चनों का सामना पाने वाला और धनिक ननसाल वाला और धन वृद्धि के लिये बहुत गहरी से गहरी चालों का प्रयोग करने वाला तथा धन संचय शक्ति के बल से बडा प्रभाव पाने वाला और धन सम्बन्ध में कभी २ कुछ झगडा झंझट भी पाने वाला व कुछ थोड़ी बहुत हानियां भी पाने वाला इज्जतदार होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान

नं० १२७




में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ से व युक्तियों से बहुत लाभ और आमदनी पाने वाला तथा सुन्दर शक्ति वाला बड़ा बल शाली व प्रभाव शाली तथा बहुत चतुराइयों से बहुत परिश्रम करने वाला तथा भाई के सम्बन्ध

में कुछ सहयोग व कुछ मन मुटाव पाने वाला एवं परिश्रम की सफलताओं का आनन्द प्राप्त करने वाला तथा पुरुषार्थ और हिम्मत व दौड़ धूप से बड़ी लाभ की शक्ति को पाने वाला तथा भाग्य को कम महत्त्व देने वाला तथा धर्म के सम्बन्ध में कुछ अरुचि रखने वाला तथा बड़ा पेचीदा व कलापूर्ण शक्ति का भरोसा करते रहने से बेफिकरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से चौथे स्थान

नं० ९२८




में हो तो वह मनुष्य बहुत सुख प्राप्त करने वाला तथा बहुत आमदनी पाने वाला और बहुत जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला माता का विशेष लाभ व विशेष बल प्राप्त करने वाला तथा अपने मातृस्थान में बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में सुख उठाने वाला और आमदनी की शक्ति से बेफिकरी पाने वाला तथा सुख के साधनों में बड़े बड़े सुन्दर पदार्थ व सुन्दर सुन्दर वस्तुओं का भोग पाने वाला और बड़े बड़े दिव्य भोजन समयानुसार पाते रहने वाला अर्थात् सुख प्राप्ति के अनेक साधन चतुराइयों के द्वारा प्राप्त करने वाला और पिता व मान के स्थान में कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० ९२९

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि की महान् होशियारी व चतुराईयों का बहुत लाभ पानेवाला तथा बुद्धि योग से आमदनी का पक्का रास्ता पाने वाला और बातचीतों से तथा आमदनी की सम्बन्ध में पेचीदा युक्तियों का बड़ा सुन्दर व्यवहार करने वाला और पेचीदा तथा झंझट युक्त कार्यों में से बड़ी सुन्दर लाभ की योजनाएं बना लेने वाला और विद्या तथा बुद्धि में भी चतुराइयों की प्रधानता पाने वाला और संतान लाभ पाने वाला किन्तु सन्तान सम्बन्ध में कुछ कमी व दिक्कत का योग पाने वाला और शत्रु पक्ष को केवल बुद्धि योग से हरा देने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से छठे स्थान

नं० ९३०

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभाव रखने वाला और झगड़े व झंझट तलब मामलों में से फायदा व आमदनी का योग पाने वाला तथा आमदनी के सम्बन्ध में कुछ परिश्रम व कुछ दिक्कतों से व प्रभाव से प्राप्ति पाने वाला और साथ ही साथ इस बात का बड़ा ख्याल रखने वाला कि आमदनी में चाहे कमी या रुकावटें पड़ जाय किन्तु प्रभाव में कमी न आने पावे एवं खर्च अधिक करने वाला और कुछ परतंत्रता के योग से आमदनी पाने वाला तथा कुछ परिश्रम व ननसाल पक्ष से लाभ का

योग रखनें वाला और लाभ के सम्बन्ध में कुछ कमी व अन्य स्थान का सम्पर्क पाने वाला गहरी चतुराइयों वाला बड़ी भारी पेचीदा चाल चलने वाला तथा बड़ा गुस्सेवाज होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ९३१

१० ८
११ ९ ७
१२ ६
१ ३शु ५
२ ४

में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी चतुराइयों से रोजगार में फायदा पाने वाला और रोजगार में कुछ परिश्रम व कुछ कलाओं से कार्य करने वाला एव स्त्री स्थान में अच्छा सहयोग पाने वाला और स्त्री पक्ष में कुछ झगड़ा या थोड़ा वैमनस्य पाने वाला और स्त्री में कुछ कला व सुन्दरता एवं थोड़ा सा नखड़ा पाने वाला और विशेष भोग की इच्छा रखने वाला तथा सुन्दरता को चाहने वाला और स्त्री में कुछ रोग व कुछ कमजोरी पाने वाला और रोजगार व गार्हस्थ्य जीवन में बड़ा प्रभाव व फायदा पाने वाला तथा मान पाने वाला बड़ा होशियार तथा लौकिक कार्य कुशल होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ९३२

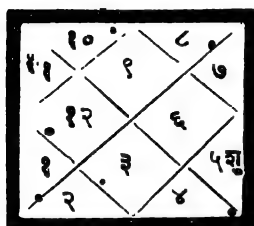
१० ८
११ ९ ७
१२ ६
१ ३ ५
२ ४शु

में हो तो वह मनुष्य लाभ व आमदनी के लिये बहुत परेशानियां सहने वाला और प्रभाव में कमी पाने वाला तथा लाभ प्राप्ति के लिये गूढ़ से गूढ़ व कठिन से कठिन युक्तियों के कार्य करने वाला और पुरातत्त्व का लाभ

पाने वाला एवं धन वृद्धि के लिये महान् प्रयत्न करते रहने वाला और लाभ में बहुत कमी महसूस करने वाला तथा लाभ के लिये दूसरे स्थानों में भी प्रयत्न करने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ हानि का योग पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ रौनक पाने वाला व बड़ा कूट नीतिज्ञ और शत्रु को दबाने के लिये बड़ी भारी गहरी चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से नवम स्थान

नं० ६३३




में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से लाभ पाने वाला किन्तु लाभ के सम्बन्ध में व भाग्य के सम्बन्ध में कुछ खरखशा पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें व रुकावटें और कुछ अलकसाहट का योग पाने वाला तथा लाभ व भाग्य के लिये बड़ी बड़ी तरकीबें हमेशा लगाने वाला किन्तु भाग्योदय के सम्बन्ध में कुछ निराशाएं व देरी का योग पाने वाला तथा धर्म के सम्बन्ध में कुछ अरुचि के साथ धर्म का पालन करने वाला पुरुषार्थ की वृद्धि से लाभ पाने वाला और भाई के पक्ष में कुछ अच्छा संपर्क पाने वाला बड़ा हिम्मत वाला चतुर होशियार तथा कुछ धर्म की आड़ में फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में क्लेश व कमी का योग पाने वाला तथा व्यापारादि में व उन्नति के पक्ष में

नं० ९३४

कमजोरियां पाने वाला और आमदनी के पक्ष में कमजोरी पाने वाला और मातृस्थान की वृद्धि व ननसाल पक्ष की कमजोरी पाने वाला भूमि स्थान की शक्ति व लाभ पाने वाला सुख की वृद्धि पाने वाला और बड़े पेचीदा छोटे बड़े कर्म को बड़ी युक्तियों से कर के मतलब सिद्ध करने वाला और प्रभाव व मान के सम्बन्ध में भी कमजोरियां पाने वाला तथा कुछ पूर्व संचित पाप के फल को भोगने से दुःख व मान हानि पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से ग्यारहवें

नं० ९३५

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत बहुत सुन्दर लाभ पाने वाला और आमदनी बहुत पाने वाला तथा बड़े प्रभाव के साथ व बड़ी बड़ी ऊंची तरकीबों का चतुराइयों के साथ विशेष लाभ की योजना पाने वाला और कुछ परिश्रम का योग भी लाभ के सम्बन्ध में पाने वाला किन्तु लाभ प्राप्ति की बड़ी मजबूती पाने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ फायदा पाने वाला और बुद्धि व विद्या में भी बड़ी युक्तियों से लाभ की तरकीबें पैदा करने वाला और संतान पक्ष में कुछ अड़चनों के साथ लाभ पाने वाला और द्रव्य प्राप्ति के लिये पाप पुण्य का ख्याल न करने वाला व शत्रु से भी लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और अन्य दूसरे स्थान से परिश्रम के द्वारा लाभ पाने वाला और सम्पूर्ण लाभ को खर्च कर देने के कारण से लाभ की कमी पाने वाला तथा बहुत परेशानियों के सबंध में खर्च करने वाला और बहुत प्रकार की चतुराइयों से व परेशानियों से हेर फेर के कारणों द्वारा काम चलाने वाला और कुछ कमजोरी के साथ शत्रु पर प्रभाव जमाने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ हानि पाने वाला और लाभ के लिये कुछ अन्याय से भी काम लेने वाला और खर्च की कुछ दिक्कतों को पेचीदा युक्तियों से हल करने वाला होशियार होता है।

नं० ९३६

| | | |
|---|---|---|
| १० | | ८शु |
| ११ | ९ | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

## धनलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थी तथा मेहनती और दौड़ धूप कर के धन वृद्धि करने वाला और भाई बहिन की शक्ति पाने वाला देह में कुछ अशांति या कुछ कमी महसूस करने वाला किन्तु देह बल से बड़े बड़े

नं० ९३७

| | | |
|---|---|---|
| १० | | ८ |
| ११ | ९श | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

कीमती कार्य करने वाला और मान उन्नति प्राप्त करने वाला बड़ा कारबार करने वाला बड़ी हिम्मत से काम करने वाला उत्साह युक्त रहने वाला और स्त्री व पिता की शक्ति से सम्पर्क पाने वाला और देह में बल वृद्धि के लिये बहुत से कारण पैदा करने वाला और धन व कुटुम्ब की शक्ति का मजा कुछ वैमनस्यता के साथ प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धनवान् तथा पुरुषार्थ से धन वृद्धि करने का साधन पाने वाला और मकान जमीन की वृद्धि करने वाला किन्तु मातृस्थान में कुछ हानि का योग पाने वाला और बहुत ऊंची आमदनी पाने वाला तथा धन लाभ पाने के लिये बहुत ज्यादा शक्ति का प्रयोग करने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति पाने वाला तथा सुख के साधनों में वास्तविक रूप से कमी पाने वाला किन्तु दिखावे में सुख की वृद्धि करने वाला और भाई के स्थान में कमी और कौटुम्बिक वृद्धि पाने वाला और पुरातत्व की हानि पाने वाला होता है।

नं० ९३८

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ कर के धन कमाने वाला और धन शक्ति के सम्बन्ध वाले कार्य में ओछी बुद्धि

नं०. ९३९

से काम करने वाला एवं कड़ुवा व रूखा बोलने वाला और विद्या में कमी पाने वाला और संतान पक्ष में भी कुछ कमी व क्लेश का योग पाने वाला तथा खर्च के सम्बन्ध में कुछ अलकसाहट के साथ अधिक खर्च करने वाला और भाग्य में यश की कुछ कमी पाने वाला और धर्म में कुछ अश्रद्धा रखने वाला तथा भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ वृद्धि व कुछ बंधन पाने वाला और बड़ी कीमती मेहनत व पुरुषार्थ करने वाला हिम्मतवर होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से चौथे स्थान

नं० ९४०

में हो तो वह मनुष्य धन के सम्बन्ध में एक प्रकार का अजीब सुख दुःख का अनुभव करने वाला और मातृ-स्थान में कुछ विमाता का योग पाने वाला तथा मकान जायदाद की प्रथम हानि के पीछे वृद्धि का योग पाने वाला तथा धन के सम्बन्ध में अधिक परिश्रम या थकान से या भाई से कुछ अशांति का योग पाने वाला और शत्रु स्थान पर मीठा प्रभाव रखने वाला और पिता स्थान से कुछ अच्छाई या फायदे का योग पाने वाला और रोग झगडे या दिक्कतों के सम्बन्ध में अपने धन व प्रभाव शक्ति से सुन्दर काम निकालने वाला देह से कुछ अशांतप्रद होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से पांचवें स्थान

नं० ९४१

में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि के कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि पानें वाला और धन के संचित वृद्धि के सम्बन्ध में चिन्तित रहने वाला और धन वृद्धि के कारण कुछ कड़ुवा बोलने वाला और कुछ छिपाव बुद्धि से काम लेने वाला और सन्तान पक्ष में कुछ कमी व क्लेश का योग पाने वाला और विद्या में कमी पाने वाला और बोल चाल की शब्द शैली में भी अपने अन्दर कुछ कमी महसूस करने वाला और रोजगार में वृद्धि करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ विशेष शक्ति पाने वाला और बुद्धि के कठिन परिश्रम से बहुत ज्यादा मुनाफा खाने वाला बड़ा पैदागीर होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० ९४२

में हो तो वह मनुष्य धन की तरफ से कुछ कमजोरी पाने वाला और भाई से विरोध करने वाला किन्तु भाई की शक्ति का सहयोग भी पाने वाला तथा धन की तरफ से प्रभाव रखने वाला और कुछ छिपाव की युक्तियों से पुरुषार्थ द्वारा धन प्राप्त करने वाला तथा धन की ताकत का सहारा लेकर जबरदस्त बल पुरुषार्थ प्राप्त करने वाला बड़ा भारी प्रभावशाली और शत्रु का दमन करनें

वाला और ननसाल पक्ष की कुछ शक्ति पाने वाला रोग और दिक्कतों को दबाने वाला और खर्च में कुछ कमजोरी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी पाने वाला और गूढ़ युक्तियों वाला बड़ा बहादुर दमंग हेकड़ होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार में तरक्की करने वाला मेहनत से धन कमाने वाला तथा भाग्य स्थान में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और देह में कुछ कमी का योग पाने वाला तथा माता के स्थान में कुछ हानि या अशांति पाने वाला और सुख के साधनों में कुछ कमी पाने वाला और सुख व जमीन की वृद्धि के लिये बहुत पैदा करने वाला तथा धर्म में सहयोग न देने वाला यश की कमी पाने वाला स्त्री स्थान में शक्ति पाने वाला और तामसी धर्म को इस्तेमाल करने वाला और रोजगार की वृद्धि के लिये मेहनत और धन की पूरी शक्ति से काम लेने वाला भोग विलासी होता है।

नं० ९४३

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३श ५ २ ४

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धन जन की कमी पाने वाला तथा धन की तरफ से बहुत हानियां पाते रहने से भी दुःखी होने वाला और कौटुम्बिक क्लेश सहने वाला तथा पुरातत्त्व धन व शक्ति का फायदा पाने वाला और

नं० ९४४

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ ४श

बुद्धि व विद्या में कमी पाने वाला और धन वृद्धि के लिये कुछ छोटे ख्यालातों से बातें करके काम निकालने वाला और संतान पक्ष में कुछ चिन्ताओं का कारण पाने वाला और उन्नति पर पहुंचने के लिये कुछ विशेष कर्म व विशेष परिश्रम करने वाला एवं भाई सम्बन्ध में कुछ परेशानी व कुछ धन बुद्धि के सहयोग का कारण पाने वाला तथा आयु में वृद्धि पाने वाला तथा छिपाव बुद्धि व गूढ़ युक्तियों वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से नवम स्थान

नं० ९४५




में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति के बल से और पुरुषार्थ के सहयोग से धन की वृद्धि करने वाला और बहुत आमदनी पाने वाला और भाई का सहयोग कुछ अलकसाहट के साथ सुन्दर लाभ प्रद पाने वाला और धर्म के संबंध में कुछ अरुचि के साथ सहयोग संबंध रखने वाला और भाग्य को मानते रहने पर भी पुरुषार्थ की प्राधनता कहने वाला और धन व मेहनत के योग से प्रभाव शक्ति को स्वतः प्राप्त कर लेने वाला और शत्रु स्थान में भी प्रभाव जमाने वाला रोग और दिक्कतों पर फ़तह पाने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ सहयोग संबंध पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न के दसम स्थान

नं० ९४६

में हो तो वह मनुष्य अपनी शक्ति से राज्य सत्ता का गौरव प्राप्त करने वाला और अपने पुरुषार्थ से बहुत उन्नति करने वाला तथा धन पैदा करने वाला बड़े शान गुमान से काम करने वाला और बहुत खर्च करने वाला और प्रभावशाली रोजगार वाला अन्य स्थान की शक्ति में वैमनस्यता का सम्पर्क पाने वाला भाई का कोई खास सम्बन्ध न पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ महानता व बंधन पाने वाला और पिता स्थान में अपनी पुरुषार्थ शक्ति का आनन्द लेने वाला और कार बार की तरक्की के लिये पूर्ण शक्ति का प्रयोग करने वाला हठी होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से ग्यारहवें

नं० ९४७

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा धन कमाने वाला तथा बहुत लाभ पाने वाला और अधिक प्राप्ति करने के हेतु बोल चाल में कुछ तुर्श तथा कड़वा बोलने वाला व बुद्धि एवं विद्या में कमी पाने वाला और देह में कुछ कमी या परेशानी व कुछ बंधन सा प्राप्त करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में भी कुछ बंधन या परेशानी पाने वाला तथा भाई का अच्छा योग पाने वाला सन्तान पक्ष में कुछ कमी या क्लेश पाने वाला तथा कौटुम्बिक शक्ति

का लाभ ऊंचे दरज़े का पाने वाला बड़ा धनवान् व अधिक मुनाफा खोर और बड़ी हिम्मत वाला तथा धन जन तथा पुरुषार्थ बल से बहुत फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से बारहवें

नं० ६४८

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करने वाला तथा खर्च शक्ति से कुछ खरखसे के साथ धन पाने वाला तथा धन प्राप्ति के सम्बन्ध में अन्य स्थान का सम्पर्क भी पाने वाला तथा जन धन की अधूरी ताकत पाने वाला किन्तु धनियों का दिखावा रखने वाला तथा भाग्य में कमजोरी पाने वाला और धर्म का पालन ठीक तौर से न कर सकने वाला तथा धन की व पुरुषार्थ की भाग्य में कुछ चिन्तायें पाने वाला तथा यश की कमी पाने वाला शील सन्तोष का पालन न कर सकने वाला तथा शत्रु स्थान में प्रभाव जमाने की कोशिश करते रहने वाला भाई का विरोधी होता है।

## धनलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में कष्ट व परेशानी सहने वाला और देह में सुन्दरता की कमी सहनें वाला और कभी २ देह में आघात सहने वाला अर्थात् देह में जोखम पाने वाला और अपने अन्दर छिपाव शक्ति से बहुत काम निकालने वाला और अपनी उन्नति व मान रक्षा के लिये बड़े कष्ट साध्य कर्म करने वाला और बड़ी २ युक्तियों व तरकीबों से काम निकालने वाला और अनधिकार फायदा के लिये बड़ी २ जोखम उठाने वाला और मान सन्मान में कुछ कमी पाने वाला और कभी २ परतंत्रता का योग पाने वाला होता है।

नं० ९४९

| | | |
|---|---|---|
| १० | | ८ |
| ११ | १रा | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कुछ हानि पाने वाला और कुटुम्ब स्थान में कुछ क्लेश सहने वाला एवं धन वृद्धि के लिये बडी २ गहरी युक्तियां लगाने वाला और बड़ी हिम्मत व दृढ़ता के जरिये धन की पूर्ती करने वाला और धन के कारणों से कभी २ बहुत संताप सहनें

नं० ९५०

| | | |
|---|---|---|
| १०रा | | ८ |
| ११ | ९ | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ | ३ | ५ |
| २ | | ४ |

वाला और धन की वृद्धि के लिये कभी २ बड़ी जोखम उठाने वाला तथा धन की पूर्ण मजबूती प्राप्त करने में बराबर लगा रहने वाला और अन्त में किसी न किसी तरीके से कुछ मजबूती पाँही लेने वाला धन के लिये गुप्त शक्ति का प्रयोग करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थ करने वाला और बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला और बड़ी दौड़ धूप करने वाला और बड़े से बड़े काम के लिये चाहे वह महान् मुश्किल ही न क्यों हो उसे भी पूरा करने के लिये तुरन्त तत्पर हो जाने वाला और बड़ी बड़ी जबरदस्त युक्तियों को इस्तेमाल कर के सफलता को पा लेने वाला और भाई के स्थान में कुछ खरखशा पाने वाला और बल पौरुष के अन्दर कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और पुरुषार्थ की उन्नति के सम्बन्ध में अन्त में किसी मजबूत तह तक पहुंचने वाला होता है।

नं० ९५१

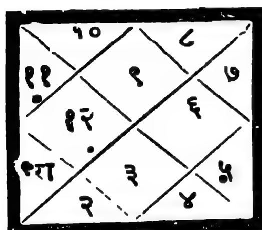
जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में हानि व क्लेश सहने वाला तथा सुख स्थान में बहुत बाधा पाने वाला और भूमि व मकानादि के सम्बन्ध में कुछ क्लेश व कमी का योग पाने वाला और सुख की मजबूती को पाने के लिये

नं० ९५२

बड़े बड़े प्रयत्न करने वाला तथा अन्त में बड़ी बड़ी अशान्तियों के बाद किसी सुख की तह को पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों को पाने के लिये बड़ी बड़ी विचित्र युक्तियों का प्रयोग चिन्तित रह कर करते रहने वाला और कुछ दूसरों का सहारा लेकर सुख की कमी को पूरा करने वाला और माता से या जन्म-भूमि से कुछ विछोह भी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्या में कमी पाने वाला और सन्तान पक्ष में कमी या कष्ट सहने वाला और बुद्धि के स्थान में कटुता व छिपाव शक्ति से काम लेने वाला और शील का उल्लंघन करने वाला और शब्द की सत्यता दर्शा कर काम निकालने वाला वास्तव में सत्य असत्य की परवाह न करने वाला और बुद्धि से व वाणी से बहुत गहराइयों की चाल चलने वाला और बुद्धि में हमेशा गहरे स्वार्थ का विचार करने वाला और विद्या व बुद्धि एवं सन्तान पक्ष के ठोस फायदे का अन्त तक कुछ न कुछ सफल प्रयास करने वाला होता है।

नं० ९५३




जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली तथा शत्रु का दमन करने वाला तथा ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला और

नं० ९५४

१० ९ ८ ११ ७ १२ ६ १ ३ ५ २रा ४

दिक्कतों व मुसीबतों की परवाह न करने वाला और विपक्षियों के मुकाबले में बड़ी बड़ी पेचबन्दी की चालों से काम लेने वाला और बड़ी २ गहरी युक्तियों के बल से व हिम्मत के बल से बड़ा स्वार्थ सिद्ध करने वाला और शील का उल्लंघन करने वाला और महान् साहस व धैर्य से काम लेने वाला तथा कभी कभी बड़ी मुसीबतों का सामना करने वाला और अन्दर शक्ति युक्त कुछ कमजोरी महसूस करने वाला कूट नीतिज्ञ लापरवाह होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार में बड़ी २ महान् युक्तियों से काम करने वाला और रोजगार की तरक्की के लिये बड़ी भारी दौड़ धूप की लम्बी चौड़ी योजनाएं बनाने वाला और लम्बा चौड़ा काम फैलाकर करने वाला तथा बड़ी सचाई व सभ्यता दरसा कर काम करने वाला और बड़ी भारी हिम्मत से रोजगार चलाने वाला और स्त्री के संबंध में कुछ अधिकता व वृद्धि तथा लावण्यता का योग पाने वाला और अधिक भोग प्राप्त करने वाला और लौकिक प्रणाली में बडा होशियार व चलता पुर्जा व दिलचस्पी रखने वाला होता है।

नं० ९५५

१० ९ ८ ११ ७ १२ ६ १ ३रा ५ २ ४

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से आठवें स्थान

नं० ९५६ में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में बड़ी २ परेशानियां सहने वाला और पेट व गुदा के सम्बन्ध में कुछ शिकायतें सहने वाला अर्थात् कुछ बीमारियां व कब्ज इत्यादि का योग पाने वाला एवं पुरातत्त्व की संचित शक्तियों की हानि पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में खरखसा पाने वाला तथा गूढ़ व गुप्त युक्तियों को पुरातत्त्व के सम्बन्ध में व्योहार या इस्तेमाल करने में परेशानियां पाने वाला और गुप्त चिन्ताओं का सामना पाने वाला और विदेश आदि आने जाने के सफर सम्बन्ध में भी दुःख महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से नवम स्थान

नं० ९५७ में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य में बड़ी चिन्ता मानने वाला और भाग्योदय के सम्बन्ध में बड़ी बड़ी रुकावटें व दिक्कतें और हानियां पाने वाला और धर्म के सम्बन्ध में बहुत-सी कमजोरियां पाने वाला और यथार्थ धर्म का पालन न कर सकने वाला तथा धर्म को हानि पहुंचाने वाला और धर्म के वास्तविक ज्ञान को न समझ सकने वाला और धर्म के आडम्बर को मानने समझने वाला और बहुत सी कशमकश व हेर फर और देर में

भाग्य, की तह पर पहुंचने वाला और यश की कमी पाने वाला तथा बरक्कत की कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से दसवें स्थान

नं० ६५८

में हो तो वह मनुष्य अपनी उन्नति प्राप्त करने के लिये बड़ी बड़ी जबरदस्त युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला और बड़ी से बड़ी जोखम में कूद कर बड़ी धैर्य के साथ अपनी ईज्जत व काम की मजबूती को पकड़ने वाला तथा पिता के सम्बन्ध में कुछ अधूरी सुख शक्ति प्राप्त करने वाला और कार व्योहार में बड़ी बड़ी पोशादों तरकीबों से काम करने वाला और बड़ी बड़ी चतुराइयों से मान उन्नति पाने वाला तथा राज काज में भी अपनी होशियारी से सत्यता दर्शा कर लाभ उठाने वाला और समाज से सम्बन्धित कर्म योग में सफलता व परेशानी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से ग्यारहवें

नं० ६५९

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला तथा आमदनी के सम्बन्ध में बहुत दृढ़ता से काम लेने वाला तथा अधिक लाभ पाने के लिये बहुत २ प्रकार से गुप्त व पेचीदा युक्तियो को इस्तेमाल करने वाला

और लाभ प्राप्ति के लिये कठिन से कठिन कार्य को करके लाभ के साधन की नीब मजबूत करने वाला और लाभ के लिये बड़ी से बडी जोखम व मुसीबत उठाने में भी न हिचकिचाने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये सत्य असत्य की परवाह न करने वाला और लाभ के सम्बन्ध में पूर्ण स्वार्थ युक्त रहने वाला तथा तत्परता रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से बारहवें स्थान

नं० ९६०

में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और खर्च के कारणों से कष्ट व क्लेश सहने वाला और खर्च के सम्बन्ध में परेशानियों से बचने के लिये बड़ी २ तरकीबें लगाने वाला एवं फिर भी कठिनाइयों से काम चलाने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सम्बन्ध में परेशानी सहने वाला और खर्च के दायरे में बहुत सी युक्तियां लगाकर तथा हिम्मत से काम लेकर पार पटकने वाला और खर्च संचालन के स्थान में पूर्ण मजबूती पाने के लिये बड़ी भारी कोशिश करने वाला तथा खर्च के लिये सत्य असत्य मेहनत व आराम कुछ भी न सोच सकने वाला होता है।

## धनलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न के पहिले स्थान में हो तो वह मनुष्य लम्बे कद वाला और बहादुरी रखने वाला और बड़ी दौड़ धूप करने वाला और हेकड़ी व हठ धर्मी से रहने वाला और अन्ध विश्वास व लापरवाही अपने अंदर रखने वाला तथा देह में अन्दरूनी बड़ी मजबूती पाने वाला किन्तु देह की सुन्दरता में कमी पाने वाला तथा अपने को बड़ा बनाने व मानने वाला और गहरी युक्तियों का बड़ा लम्बा इस्तेमाल करने वाला और छिपाव शक्ति का बड़ा भारी दावा रखने वाला और बहादुरी का भी दावा रखने वाला तथा स्वार्थ युक्त कम बोलने वाला तथा देह में कभी कभी आघात व महान् संकट सहने वाला होता है।

नं० ९६१

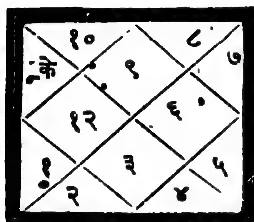
जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन के सम्बन्ध में संकट सहने वाला और कुटुम्ब स्थान में हानि पाने वाला और धन के पक्ष में बड़े भारी धैर्य और साहस से काम लेने वाला तथा धन वृद्धि के लिये अन्धा धुन्ध शक्ति का प्रयोग

नं० ९६२

करने वाला तथा धन की संचित शक्ति में अधूरापन पाने वाला और धन की अमर, शक्ति पाने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला अन्त में मुसीबतों के बाद किसी मजबूत शक्ति का सम्बन्ध पाने वाला और धन के लिये बड़ी बड़ी गहरी युक्तियों से चलने वाला तथा धन संचय करने के लिये सदैव प्रयत्न करते रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य भाई के स्थान में कुछ हानि पाने वाला और पुरुषार्थ की बड़ी भारी वृद्धि करने वाला तथा लम्बी भुजाओं वाला और अपनी उन्नति के लिये बड़ी भारी दौड़ धूप व परिश्रम सहने वाला और बड़ी २ कोशिशें व हिम्मतों से उन्नति की तरफ दौड़ने वाला और अपनी शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी के होते हुये भी कमजोरी की जरा भी परवाह न करने वाला तथा बड़े भारी प्रभाव से रहने वाला और बड़ी भारी शक्ति का संचार अपने अन्दर अनुभव करने वाला विजयीहोता है।

नं० ९६३




जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में क्लेश पाने वाला और माता की हानि या वियोग पाने वाला और जन्मभूमि से कुछ वियोग या दूरवासा पाने वाला होता है और सुख के सम्बन्ध में कुछ कमी व अशांति का योग पानें वाला

नं० ९६४



और मकानादि जमीन इत्यादि की कमी पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के लिये अनेक गुप्त साधन व कठिन परिश्रम करने वाला और सुख के संबंध में मजबूती को पाने के लिये बड़ी से बड़ी जोखम उठाने वाला अन्त में कुछ मजबूत सुख की तह पर पहुंचने वाला और सुख के संबंध में हठधर्मी से काम लेने वाला धैर्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के अन्दर परेशानी सहने वाला और संतान पक्ष में कष्ट सहन करने वाला तथा विद्या को ग्रहण करने में बड़ी बड़ी मुसीबतें सहने वाला किन्तु उसकी गहराई तक पहुंचने में लगा रहने वाला तथा विद्या स्थान में बड़ी बड़ी निराशाओं का सामना पाने वाला तथा ठीक तौर से अपनी बात को न समझा सकने वाला तथा कुछ कटु बोलने वाला तथा दिमाग के अन्दर बड़ी तेजी रखने वाला तथा शील सत्य का उल्लंघन करने वाला तथा गहरा स्वार्थ सोचने वाला तथा जिद्दी स्वभाव वाला होता है।

नं० ९६५

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० / ९ / ८ | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ के | २ / ३ / ४ | ५ |

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी बहादुर प्रकृति वाला तथा शत्रु को दमन करने वाला और बड़ी हेकड़ी से काम लेने वाला और ननसाल पक्ष में हानि का योग पाने वाला तथा विपक्षियों पर विजय पाने के लिये महान्

नं० ९६६

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० / ९ / ८ | ७ |
| १२ | | ६ |
| १ | २ के / ३ / ४ | ५ |

परिश्रम करने वाला तथा बड़ी भारी कूटनीति से दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने वाला तथा रोग व विपक्षियों पर काबू पाने वाला तथा बड़ी भारी उन्नति की गुप्त व गहरी योजनायें बनाने वाला और अपने अन्दर भविष्य की मजबूती की अमर आशा रखकर वृद्धि की तरफ दौड़ते रहने वाला तथा विजयी रहने वाला और शील की परवाह करके स्वार्थ युक्त कर्म करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं० ९६७

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० | ९ | ८ | ७ |
| ११ | १२ | ६ | |
| २ | ३ के | ४ | ५ |

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में महान् संकट सहने वाला और गृहस्थ के अन्दर क्लेशित रह कर बहुत कमी महसूस करने वाला और रोजगार में परतंत्रता का योग पाने वाला तथा रोजगार में कमी व महान् परिश्रम पाने वाला और थकान महसूस करने वाला तथा गुजर बशर भी बड़ी दिक्कतों से व युक्तियों से करने वाला और भोगादि पक्ष में बड़ी भारी कमी पाने वाला और कुछ अधिकार चेष्टा के द्वारा रोजगार व गृहस्थ के सुख प्राप्ति की योजना बनाने वाला और लौकिक उन्नति के लिये गुप्त से गुप्त चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में महान् कष्ट अनुभव करने वाला और पेट के अन्दर निचले हिस्से में

नं० ९६८ या गुदा में शिकायत पाने वाला और समय की दिनचर्या में बड़ी २ परेशानियां सहने वाला और जीवन की यथार्थता को सार्थक करने के लिये बड़ी गहरी व जबरदस्त योजना तैयार करने वाला और आयु में कभी २ हताश होने की सी संभावना पाने वाला और पुरातत्त्व की शक्ति की हानि पाने वाला और जीवन के मूल्य में बड़ी कमी व वेदना के होते हुये भी अन्दर एक मजबूत शक्ति का संचार पाने वाला तथा कुछ हेकड़ी रखने वाला व धैर्य से काम लेने वाला होता है।




जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी भाग्य में परेशानी मानने वाला और भाग्य के सम्बन्ध में बड़े बड़े झंझट सहने वाला और भाग्योदय की चिन्ता मानने वाला तथा यश की कमी पाने वाला और धर्म में हानि पाने वाला तथा धर्म में ठीक तौर से श्रद्धा न रखने वाला और न धर्म का ज्ञान ही पाने वाला और न्याय व सत्य और अहिंसा का पालन न कर सकने वाला और ईश्वर में विश्वास की कमी पाने वाला और परलोक के सम्बन्ध की परवाह न करने वाला तथा भाग्य की उन्नति के लिये बड़े धैर्य और मुश्किलातों का गुप्त रूप से बराबर सामना करने वाला होता है।

नं० ९६९



जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से दसम स्थान

नं० ९७०

में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कुछ कमी पाने वाला और व्यापार आदि में कुछ परेशानियां सहने वाला और कारबार की तरक्की करने के सम्बन्ध में बड़ी भारी दृढ़ता व धैर्य से काम लेने वाला और मान उन्नति व पद उन्नति के पथ पर डटा रहने वाला और स्फूर्ति व अन्ध विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहने वाला तथा गुप्त ज्ञान के कर्म योग व हिम्मत से काम करने वाला और स्वार्थ युक्त कर्म करने वाला और अन्त तक उन्नति की मजबूती को पा लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से ग्यारहवें

नं० ९७१

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला तथा द्रव्य प्राप्ति के लिये महान् हठ धर्मी से व महान् गुप्त युक्तियों से काम करने वाला और अधिक से अधिक लाभ पाने के लिये बड़ा, गहरा प्रयत्न करते रहने वाला और लाभ प्राप्ति के सम्बन्ध में स्थिर व स्थाई योजना बनाने वाला और लाभ के सम्बन्ध में मुफ्त का साधन पाने की चेष्टा करने वाला और लेन देन के व्योहार के अन्दर अपने स्वार्थ सिद्धि का बड़ा ध्यान रखने वाला

और लाभ के सम्बन्ध में हृदय के अन्दर छिपी हुई स्थिर भावनाओं को सदैव स्थान देते रहने से फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से बारहवें

नं० ९७२

स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने का योग पाने वाला तथा स्थिर खर्च करने वाला और अन्य स्थान के सम्बन्ध में बड़ा भारी परिश्रम व परेशानियां सह कर मजबूत लाइन बनाने वाला और खर्च के सम्बन्ध में स्थिर शक्ति का पाने के लिये बड़ा कठिन से कठिन प्रयास करते करते एक मजबूत तह तक पहुंचने वाला और खर्च के संम्बन्ध में बड़ी लापरवाही से अन्धा धुन्ध शक्ति का प्रयोग करने वाला और अधिक खर्च के संबंध में बड़े बड़े संकट को सहने वाला किन्तु गुप्त धारणाओं में बड़ी मजबूती रखने वाला तथा साहस से काम लेने वाला होता है।

## मकरलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न के पहिले

नं० ९७३

स्थान में हो तो वह मनुष्य देह में परेशानी सहने वाला तथा देह से कुछ कठिन सा कार्य करने वाला और देह में कुछ सुडौलता की कमी व कुछ विकार पाने वाला और कुछ गर्मी चेचक आदि की बीमारी पाने वाला आयु में कुछ वृद्धि पाने वाला व जीवन में कुछ अशांति का योग पाने वाला और पुरातत्त्व का कुछ फायदा पाने वाला स्त्री के स्थान में कुछ क्लेश का योग पाने वाला और रोजगार के स्थान में कुछ परेशानियों से काम निकालने वाला और सुन्दरता के सम्बन्ध में रंग रूप की कुछ कमी पाने वाला तथा देह में गुस्सा व क्रोध रखने वाला और कुछ छिपाव शक्ति रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान

नं० ९७४

में हो तो वह मनुष्य धन के संग्रह स्थान में हानि व कमी पाने वाला एवं कुटुम्ब में वियोग पाने वाला और धन का कष्ट अनुभव करने वाला किन्तु पुरातत्त्व धन का फायदा उठाने वाला और जीवन की दिनचर्या को बड़े रौनक व अमीरी के साथ व्यतीत करने वाला तथा गुप्त

शक्ति बल से धन का नाजायज फायदा उठाने वाला और प्रभावशाली जीवन के अन्दर कुछ अखरने वाली कमी का योग पाने वाला और आयु में कुछ वृद्धि पाने वाला और धन संग्रह के लिये बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ सहन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

नं० ६७५

११ १० १२सू १

में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन काल में प्रभाव से समय व्यतीत करने वाला और आयु में वृद्धि पाने वाला व पुरातत्त्व शक्ति का फायदा उठाने वाला और भाग्य के उदय स्थान में कुछ हानि पहुंचाने वाला और धर्म के स्थान में भी कुछ हानि पहुंचाने वाला तथा भाई के स्थान में कुछ हानि का या क्लेश का योग पाने वाला और बल पुरुषार्थ में अन्दरूनी कुछ कमजोरी तथा बाहरी कुछ तेजी व मजबूती का योग पाने वाला और गुप्त शक्ति की हिम्मत से तमोगुणी मार्ग का अनुसरण करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से चौथे स्थान

नं० ६७६

११ ९ १२ १० ८ १सू ७ २ ४ ६ ३ ५

में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व की संचित शक्ति का बहुत फायदा पाने वाला अर्थात् गुप्त धन की प्राप्ति पाने वाला और मातृस्थान में कुछ विशेषता व कुछ हानि पाने वाला और आयु की वृद्धि पाने वाला पिता स्थान में हानि

या क्लेश पाने वाला और मान प्रतिष्ठा के स्थान में कमी पाने वाला राज समाज में कमजोरी पाने वाला गुप्त शक्ति का भंडार रखने वाला तथा जीवन की दिनचर्या को बड़ी भारी मस्ती से व्यतीत करने वाला तथा कुछ अकर्मण्य ओछे कर्म वाला व तेजी रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान नं० ९७७ में हो तो वह मनुष्य संतान पक्ष में हानि व क्लेश सहने वाला और विद्या स्थान में कमजोरी पाने वाला बोल चाल में कड़ुवाहट से बातें करने वाला बुद्धि में छिपाव शक्ति व परेशानियों के द्वारा विचार करके काम करने वाला तथा रुआब से बातें करके शान दिखाने वाला लाभ प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये बहुत युक्ति बल लगाने वाला और चिन्ता पाने वाला पुरातत्त्व की कुछ कठिन जानकारी हासिल करने वाला और आयु के संबंध में कुछ अच्छाई पाने वाला तथा शील की कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से छठे स्थान नं० ९७८ में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभाव रखने वाला बड़ा क्रोध रखने वाला और जीवन की दिनचर्या में गौरव समझने वाला अच्छी आयु वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला शत्रु को नष्ट करने वाला और पुरातत्त्व

का कुछ सामान्य लाभ प्रभाव के जरिये प्राप्त करने वाला और रोगादि झंझटों से जीवनाधार शक्ति को प्राप्त करने वाला और गूढ़ से भी गूढ़ युक्तियों को भी सुलझा कर पेचीदा प्रभाव शक्ति कायम कर रखने वाला और खर्च अधिक करने वाला और जीवन में कुछ घिराव महसूस करने वाला किन्तु हिम्मत व साहस से काम लेने वाला धैर्यवान् होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य दीर्घ आयु पाने वाला स्त्री पक्ष में कुछ क्लेश पाने वाला और गृहस्थ में परेशानियां अनुभव करने वाला और रोजगार के सम्बन्ध में कठिनाइयां व परेशानियां सहने वाला और रोजगार की लाइन में पुरातत्त्व का प्रभावशाली कार्य करने वाला और रोजगार के संबंध में गुप्त व गहरी कटु युक्तियों को काम में लाने वाला और देह में थकान व परेशानी अनुभव करने वाला तथा इंद्रियादिक भोग सम्बन्धी मामलों में कुछ कमी व क्लेश सहने वाला और स्त्री व गृहस्थ के संबंध में कुछ प्रभाव और कटुता से काम लेने वाला और रोजगार में विदेश का सम्बन्ध पाने वाला तथा कुछ अजीब भयानक कार्य करने वाला होता है।

नं० ९७९

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | १० | ९ | ८ |
| १२ | १ | ७ | ६ |
| २ | ४सू | ५ | |
| ३ | | | |

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से आठवें स्थान

नं० ९८०

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ ५सू

में हो तो वह मनुष्य दीर्घ आयु पाने वाला तथा बड़ा प्रभावशाली जीवन व्यतीत करने वाला और पुरातत्त्व का प्रभावशाली फायदा पाने वाला और अपनी दिनचर्या के सम्बन्ध से दूसरों को कुछ तपान पहुंचाने वाला और धन संग्रह स्थान में बहुत साधन उपाय वृद्धि के लिये करने पर भी धन की कमी या हानि का योग पाने वाला व कौटुम्बिक क्लेश पाने वाला और बड़ी भारी जबरदस्त भेद शक्ति की ताकत रखने वाला और अपनी रहन सहन का समय में अपने अन्दर गौरव मानने वाला और अपने भविष्य की कुछ भी परवाह न करने वाला तेज तर्रांक होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से नवम स्थान

नं० ९८१

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६सू ३ ५

में हो तो वह मनुष्य आयु में वृद्धि पाने वाला और भाग्य स्थान में हानि पाने वाला व यश में कमी पाने वाला और धर्म स्थान में हानि पाने वाला और संचित पुरातत्त्व शक्ति का फायदा भाग्यबल से प्राप्त करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या भाग्यवानी से व्यतीत करने वाला एवं भाग्योन्नति के लिये बड़े २ प्रभाव शाली प्रपंच करने वाला किन्तु भाग्योन्नति में रुकावटें तथा परेशानियों का योग पाने वाला तथा भाई के स्थान में कमी

या क्लेश पाने वाला और स्वार्थयुक्त धर्म का पालन करने वाला तथा सज्जनों के ढंग से रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में हानि का व क्लेश का योग पाने वाला और आयु के संबंध में कुछ कमजोरी पाने वाला और व्यापार आदि में महान् परिश्रम व परेशानियां सहने वाला और कुछ ओछा कर्म करने वाला मान प्रतिष्ठा में कमी का योग पाने वाला तथा कभी कभी मान प्रतिष्ठा पर पूरा आघात सहने वाला और राजस्थान में कभी कभी क्लेश व अशांति सहने वाला और मकान जमीन का कुछ पैतृक फायदा पाने वाला तथा सुख के साधनों में कुछ गुप्त युक्तियों से वृद्धि पाने वाला तथा दिनचर्या में अशांति महसूस करने वाला होता है।

नं० ९८२

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य आयु का सुन्दर लाभ पाने वाला तथा दिनचर्या को बड़े प्रभाव व लाभ के साथ व्यतीत करने वाला और पुरातत्त्व लाभ व पैतृक लाभ भी खूब शानदारी के साथ प्राप्त करने वाला और आमदनी के मार्ग में कुछ गूढ़ योजनाओं से प्रभाव के साथ काम

नं० ९८३

लेने वाला तथा कटु युक्तियों से फायदा उठाने वाला और सन्तान पक्ष में कुछ हानि का योग व क्लेश का योग पाने वाला और विद्या के स्थान में भी कुछ कमी व परेशानी पाने वाला और बातचीत बोल चाल में कुछ छिपाव व कुछ कटुता से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान नं० ९८४ में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व शक्ति की कुछ हानि पाने वाला और जीवन के प्रभाव में कुछ कमी पाने वाला और आयु के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और छिपाव शक्तियों को कम इस्तेमाल करने वाला शत्रु पर प्रभाव रखने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला दिनचर्या व रहन सहन में कुछ अशांति पाने वाला और खर्च के स्थान में कुछ कठिनाइयां अनुभव करने वाला किन्तु प्रभाव युक्त तरीके से खर्च संचालन करते रहने वाला और नाभि के नीचे पेट के अन्दर कुछ विकार पाने वाला होता है।

११ ९सू
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

## मकरलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से पहिले स्थान

नं० ९८५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | | | ९ |
| १२ | १०चं | | ८ |
| | १ | ७ | |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ | | ५ | |

में हो तो वह मनुष्य मनोयोग के ऊँचे तरीके से खूब रोजगार करने वाला और स्त्री पक्ष में सुख व सुन्दरता के साथ २ कुछ कमी महसूस करनें वाला एवं बहुत भोग चाहने वाला तथा प्राप्त करने वाला और मन के अन्दर व तन के अन्दर बहुत काम वासना रखने वाला देह के अन्दर कुछ गोरा रंग पाने वाला तथा ससुराल से इज्जत पानें वाला और अपने मन में बड़प्पन मानने वाला और रोजगार की व मान की तरक्की का बड़ा ख्याल रखने वाला और मन की शांति के अन्दर कुछ छिपी अशांति का योग पाने वाला बड़ा कामीदा होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान

नं० ९८६

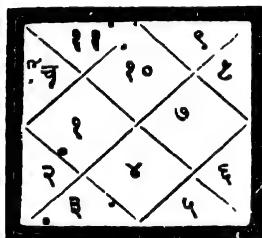
| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | ११चं | | ९ |
| | १० | | ८ |
| | १ | ७ | |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ | | ५ | |

में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन से धन जमा करने वाला और खूब रोजगार करने वाला कुछ ससुराल से फायदा पाने वाला और मन की गति व मन के कर्म से धन कमाने का व धन संग्रह करने का योग पाने वाला

और स्त्री के सुख में कमी व बंधन पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में रौनक पाने वाला पुरात्त्व सम्बन्ध का फायदा पाने वाला और मानसिक शक्ति के द्वारा लौकिक उन्नति का पूरा ध्यान रखकर कार्य करने वाला और कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ मन मुटाव पाने वाला और मन में कुछ अशांति का हमेशा योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार की उन्नति के लिये बड़ा परिश्रम करने वाला और मनो बल से तरक्की करने वाला तथा बड़े उत्साह और हिम्मत से कार्य करने वाला और प्रभावशाली सुन्दर स्त्री पाने वाला व भोग-प्राप्ति की विशेष इच्छा रखने वाला तथा भाग्य उन्नति का बड़ा ध्यान रखकर कार्य करने वाला भाग्यवान् समझा जाने वाला और धर्म का भी ध्यान रखने वाला मन में प्रसन्नता व लापरवाही रखने वाला और स्त्री व ससुराल से हिम्मत का कुछ योग पाने वाला तथा बहनों व भाइयों का योग पाने वाला होता है।

नं० ९८७




जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने घर में गृहस्थी का अच्छा सुख उठाने वाला सुन्दर स्त्री प्राप्त करने वाला माता का सुख उठाने वाला मकान जायदाद पाने वाला और ससुराल से सुख उठाने वाला सुन्दर भोग विलाश पाने वाला

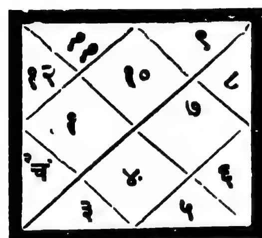
नं० ९८८




और रोजगार का खूब सुख उठाने वाला सुख पूर्वक रोजगार करके मनोबल के जरिये तरक्की व मान प्राप्त करने वाला पिता स्थान से तरक्की व रोज-गार की लाइन पाने वाला और लौकिक व सामाजिक कार्यों में चतुरता व कुशलता पाने वाला तथा राज समाज में मान पाने वाला तथा मगन मन रहने वाला आनन्दी जीव होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान

नं० ९८९




में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन का बड़ा ऊँचा ज्ञान रखने वाला और बडी मजबूत बुद्धि और मजबूत मन से रोजगार का कार्य करने वाला और सुन्दर व बुद्धिमान् स्त्री पाने वाला बुद्धि और मन में बड़ी काम वासना रखने वाला और लौकिक व्यवहारों में बड़ी भारी दक्षता व अनुभव रखने वाला संतान शक्ति से सहारा पाने वाला और खूब जोरदारी से बात चीत करने वाला और आमदनी के स्थान में कमी व लापरवाही का योग पाने वाला और स्त्री की बुद्धि में बड़ी तेजी पाने वाला बड़ा कार्य कुशल भोगी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से छठे स्थान

नं० ९९० में हो तो वह मनुष्य रोजगार में



दिक्कतें पाने वाला तथा मानसिक परेशानियां व परिश्रम सहने वाला और किसी प्रकार परतंत्रता का योग पाने वाला और स्त्री स्थान में परेशानियां सहने वाला भोग विलास की कमी पाने वाला और ससुराल की कमजोरी पाने वाला अधिक खर्च करने वाला और मनोयोग से रोग और शत्रुओं से बचाव पाने का कार्य करने वाला तथा ननसाल पक्ष से कुछ कार्य सहायक सहयोग की कमी व्यवस्था पाने वाला तथा स्त्री पक्ष में मानसिक विरोध तथा कुछ झगड़ा झंझट भी सहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान

नं० ९९१ में हो तो वह मनुष्य बहुत सुन्दर



स्त्री पाने वाला और उत्तम ससुराल पाने वाला तथा खूब भोग विलास प्राप्त करने वाला और बड़ा सुन्दर और मजबूत रोजगार करने वाला तथा रोजगार में प्रशंसा और प्रशन्नता पाने वाला तथा रोजगार को मनोयोग की पूर्ण दृढ़ता के साथ चलाने वाला और रोजगार की सफलता पर बड़ा गौरव महसूस करने वाला और गृहस्थ के सुन्दर आनन्द से हृदय में शांति का योग प्राप्त करने वाला और स्त्री की प्रशंसा तथा

प्रभाव से मुग्ध होने वाला और लौकिक कार्यों को बड़ी चतुरता व तत्परता से करने वाला सौंदर्य प्रेमी होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ९९२

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में हानि का योग पाने वाला तथा गृहस्थ के कारणों से मानसिक क्लेश सहने वाला और इन्द्रिय भोगादि पक्ष में कमी पाने वाला रोजगार की लाइन में बड़ी २ परेशानियां व कष्ट इत्यादि परिश्रम सहने वाला और मनोयोग के बड़े गूढ़ ज्ञान से रोजगार का कार्य करने वाला और रोजगार में कुछ परतंत्रता व कुछ विदेश आदि का सम्पर्क पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बडा ध्यान व बड़ा प्रयत्न करने वाला पुरातत्त्व संबंधित कार्य से काम चलाने वाला और दिनचर्या में कुछ रौनक पाने वाला गुप्त ज्ञानी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से नवम स्थान

नं० ९९३

में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् स्त्री पाने वाला तथा इन्द्रिय भोगादिक में सात्विकता का योग पाने वाला और सौम्य सुन्दर स्त्री पाने वाला और मनोयोग के द्वारा इन्द्रिय संयम करने वाला मन में भोगादिक भावनाओं के होते हुए भी धर्म मार्ग में मन को लगाने वाला किन्तु धर्म के वास्तविक कार्यों में कमी पाने वाला और धर्म के

गहराई के समय मन में विकार पाने वाला और भाग्य शक्ति से रोजगार की सफलता व संचालन शक्ति प्राप्त करने वाला तथा रोजगार में भाग्यवान् समझा जाने वाला बहिन व भाई वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से दसवें स्थान

नं० १९४

में हो तो वह मनुष्य बहुत ऊंचा शानदार रोजगार करने वाला तथा रोजगार के कार्य क्रम मे बहुत मान पाने वाला और मनोयोग से कार्य करके उन्नति पाने वाला इन्द्रिय योग और राज समाज के लौकिक तथा व्यापारिक कार्य करने से मन में बडप्पन तथा गौरव प्राप्त करने वाला और राज समाज व गृहस्थ में इज्जत पाने वाला माता पिता का सहारा भी प्राप्त करने वाला स्त्री स्थान से गौरव पाने वाला स्त्री में प्रभाव पाने वाला स्त्री से सुख प्राप्त करने वाला और व्यावहारिक कार्य क्रम को बड़ी योग्यता व मन की कुशलता से पार लगाने वाला तथा इज्जतदारी की उच्च भावनाओं व आशाओं के मुकाबले में कुछ कसर पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें

नं० १९५

स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में साधारण लाभ और कुछ मन को थोडी अशांति पाने वाला और गृहस्थ का कुछ दुःख और कुछ सुख मिश्रित अनुभव करने वाला तथा इन्द्रियादिक का सामान्य भोग प्राप्त

करने वाला और रोजगार में थोड़ा फायदा पाने वाला आमदनी की कमी के कारण से मन में दुःख अनुभव करने वाला और बुद्धि विद्या में तेजी पाने वाला तथा बोल चाल में तेजी दिखाने वाला और रोजगार की उन्नति के सम्बन्ध में मन के अन्दर आलस्य पाने वाला तथा सन्तान सम्बन्ध में तरक्की पाने वाला तथा कुछ परतंत्रता की सी हालत से लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में हानि पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में कमी पाने वाला और रोजगार की लाइन में कमी व कमजोरियां पाने वाला तथा रोजगार में नुकसान भी उठाने वाला और रोजगार में बाहरी सम्बन्ध से शक्ति पाने वाला अधिक खर्च करने वाला और गृहस्थ के सम्बन्ध में परेशानियां सहने वाला और शत्रु स्थान में कुछ शीतलता से काम लेने वाला और मन में कुछ अशांति व अकेलापन महसूस करने वाला और गृहस्थ व रोजगार और खर्च के सम्बन्ध में मानसिक बल से तथा दूसरों के सम्बन्ध सहारे से पार लगाने वाला होता है।

नं० ६९६

११ ९ चं
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

## मकरलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न के प

नं० ९९७ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत सुख प्राप्त करने वाला तथा बहुत जायदाद वाला व बहुत लाभ पाने वाला और मातृस्थान में कुछ विशेषता पाने वाला सुन्दर गौर सुडौल देह वाला मस्ती और लापरवाही रखने वाला एवं मुफ्त का साधन लाभ प्राप्त करने वाला व रोजगार में कमी पाने वाला स्त्री पक्ष में सुख का घाटा अनुभव करने वाला और अधिक स्वार्थ का ध्यान रखने वाला इन्द्रिय भोगादि में कुछ कमी का योग पाने वाला और रोजगार व भोगादि के पक्ष में कुछ छिपाव युक्तियों से सुख का साधन भी बनाने वाला हेकड़ गुमान वाला होता है।

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ११ / १० मं / ९ | ८ |
| | १ / ७ | |
| २ | ३ / ४ / ५ | ६ |

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न से दूसरे स्थान

नं० ९९८ में हो तो वह मनुष्य धन लाभ पाने वाला और कुछ मकान जमीन पाने वाला धन संग्रह करने के लिये आमदनी को जोड़ने की कोशिश करते रहने वाला और इसी कारण से सुख प्राप्ति के साधन वस्तुओं की कमी पाने वाला और धन संग्रह में फिर भी कमी महसूस करने वाला तथा

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ११ मं / १० / ९ | ८ |
| | १ / ७ | |
| २ | ३ / ४ / ५ | ६ |

संतान व विद्या के स्थान में कुछ लाभ और सुख का अनुभव कुछ त्रुटि के साथ प्राप्त करने वाला और कुछ भाग्यवानी की ताकत पाने वाला और दिनचर्या में कुछ सुख का अनुभव करने वाला और धन में ही सुख देखने वाला तथा मातृ सुख में बंधन पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ में वृद्धि पाने वाला और भाई की शक्ति पाने वाला तथा मातृ स्थान का व भूमि का लाभ पाने वाला और अपने सुखद परिश्रम से खूब लाभ पाने वाला और लाभ व मेहनत के जरिये से खूब सुख का अनुभव करने वाला और हिम्मत के साथ बड़ी कीमती मेहनत करने वाला तथा शत्रु पक्ष में प्रभाव जमाने वाला और व्यापार में कार बार से फायदा उठाने वाला राज समाज से लाभ सुख पाने वाला मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला बड़ा लापरवाह होता है।

नं० ९९९

११ ९ १२मं १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ ५

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत जमीन जायदाद से आमदनी पाने वाला बहुत सुख प्राप्त करने वाला और रोजगार के सम्बन्ध में आलस्य व कमजोरी पाने वाला स्त्री स्थान में कमी व सुख का घाटा तथा ससुराल से कम

नं० १०००

११ ९ १२ १० ८ १मं ७ २ ४ ६ ३ ५

फायदा उठाने वाला इन्द्रिय भोगादि में भी कमी, पाने वाला मातृ पक्ष से बहुत फायदा पाने वाला और आमदनी व आवश्यक पदार्थों को बड़ी सरलता पूर्वक बेफिकरी से पाने वाला और मान व इज्जत पाने वाला राज समाज में भी सुख उठाने वाला तथा अपना सुख व अपने फायदे के सामने किसी और कर्म को महत्त्व न देने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से पांचवें स्थान

नं० १००१

में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि से खूब फायदा उठाने वाला तथा बुद्धि और पुत्र के अन्दर सुख देखने वाला और विद्या तथा संतान आसानी से प्राप्त करने वाला और पुरातत्त्व के सम्बन्ध में सुख व लाभ की प्राप्ति करने वाला गूढ़ व परेशानी के मार्ग से भी सुख व लाभ पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सम्बन्ध से भी सुख लाभ पाने वाला और मातृ-पक्ष में कुछ कमी करने वाला और अधिक खर्च करने वाला व विद्या के बल से सुखी होने वाला तथा स्थिर विचारों वाला सदैव लाभ की योजनायें बनाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से छठे स्थान

नं० १००२

में हो तो वह मनुष्य कुछ परतंत्रता के प्रभाव शाली कर्म से लाभ व आमदनी पाने वाला और मातृ स्थान के सुख साधनों में कमी पाने वाला और रोग व विपत्तियों को हटा कर सुख का साधन पैदा करने वाला तथा

लाभ पानेवाला और शत्रु पक्ष में फायदा पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला और देह में सुन्दरता व गौरव लाभ पाने वाला तथा सफलता पाने वाला धर्म में कुछ श्रद्धा रखने वाला आत्मा में सुख अनुभव करने वाला और हेकड़ी से काम निकालने वाला तथा शील का उल्लंघन करने वाला स्वार्थ सिद्धि का ध्यान रखने वाला और कुछ पेचीदा युक्तियों से कश्दन फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से सातवें स्थान में

नं० १००३

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४म ६ ३ ५

हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में हानि पाने वाला व भ्रातृस्थान से कमी पाने वाला और रोजगार के सम्बन्ध में कमजोरी पाने वाला आमदनी के स्थान में अशांति पाने वाला और गृहस्थ सुख में घाटा महसूस करने वाला और देह में बड़प्पन पाने वाला देह की वृद्धि के लिये साधन बनाने वाला और उन्नति व मान वृद्धि के लिये साधन सुख पाने वाला और धन वृद्धि के लिये बहुत कोशिश करने पर भी असफलताओं का सामना पाने वाला किन्तु फिर धन का कुछ न कुछ सुख उठाने वाला और इन्द्रिय सुखों में कमी व कुछ छिपाव पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत परिश्रम के उपायों से बहुत लाभ पाने वाला और अधिक धन लाभ पाने के लिये

नं० १००४

बड़ी कूट युक्तियों से काम लेने वाला और धन की प्राप्ति के लिये बड़े २ सुखों को छोड़ देने वाला तथा अशांति सहने वाला और मातृस्थान का वियोग सहने वाला तथा माता व भूमि सुख में कमी पाने वाला पुरातत्त्व सम्बन्ध से खूब लाभ पाने वाला तथा आयु में व जीवन की दिनचर्या में सुख प्राप्त करने वाला किन्तु घरेलू सुख के साधनों में वास्तविकता का घाटा पाने वाला और मेहनत व कठिनाइयां तथा हिम्मत से खूब काम लेने वाला होता है

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० १००५

में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान तथा भाग्य शक्ति के ही द्वारा बड़ा भारी सुख भोगने वाला जमीन जायदाद पाने वाला माता के सुख लाभ का आनन्द लेने वाला और अनेक प्रकार के लाभ भाग्य शक्ति से ही पाने वाला और खूब खर्च करने वाला और अन्य स्थान के सम्पर्क से भी सुख लाभ पाने वाला और स्वार्थ युक्त होकर धर्म का पालन करने वाला तथा धर्मात्मा माता को पाने वाला और दैवी सहायताओं से भी सुख शान्ति व फायदा उठाने वाला मस्त बे फिकर पुरुषार्थी तथा भाई वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से दसवें

नं० १००६ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत शानदार कार बार के जरिये से इंतजाम के साथ आमदनी पाने वाला और राज्यस्थान से फायदा पाने वाला तथा पिता स्थान से फायदा पानेवाला खूब सुख उठाने वाला तथा अपनी इज्जतदारी के फायदे के कारणों से आत्मा के अन्दर महान् गौरव का अनुभव करने वाला देह में सुन्दरता व सुख का विशेष संचार पाने वाला और भूमि व पुत्र लाभ पाने वाला विद्या लाभ पाने वाला और सुख के लिये व धन लाभ के लिये बुद्धि पर भरपूर जोर देने वाला मातृशक्ति पाने वाला समाज में सुख व प्रभाव पाने वाला प्रभाव से बोलने वाला व प्रभावशाली कर्म वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से ग्यारहवें नं० १००७ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत सुखद साधनों के द्वारा बहुत लाभ पाने वाला आमदनी में तरक्की करने वाला मातृस्थान का लाभ पाने वाला और धन संग्रह के लिये कठिनाइयां सहने वाला कुटुम्ब में वैमनस्यता पाने वाला और कुछ विद्या ग्रहण करने वाला संतान लाभ पाने वाला और शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव जमाने से खुशी मानने वाला और रोग व विपत्तियों पर विजय पाने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ सुख लाभ पाने वाला और झगड़े तथा

झंझट तलब मामलों से फायदा उठाने वाला और अनेक प्रकार के लाभ व सुख के साधन तथा भूमि लाभ स्वतः पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से बारहवें स्थान नं० १००८ में हो तो वह मनुष्य माता की व मातृ भूमि की हानि पाने वाला और आमदनी में कमजोरी पाने वाला एवं सुख के साधनों में कमी पाने वाला और अन्य स्थान के सम्पर्क से लाभ व सुख प्राप्त करने वाला और स्त्री व गृहस्थ सुख में घाटा पाने वाला रोजगार में कमी पाने वाला भाई के स्थान में कुछ अच्छा संपर्क पाने वाला और मेहनत व पुरुषार्थ से फायदा उठाने वाला अधिक खर्च करने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला खर्च के स्थान मार्ग से सुख व लाभ का योग पाने वाला किन्तु इन्द्रिय भोगादि सुखों में कमी पाने वाला होता है।

## मकरलग्नान्तरबुधफलम्.

जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न के पहिले स्थान नं० १००९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा चतुर भाग्यवान् तथा सौम्य प्रभावशाली और धर्म को मानने वाला और कुछ स्वार्थ युक्त होकर धर्म का पालन करने वाला प्रतिष्ठा पाने वाला और बड़ा ऊंचा विवेक रखनें वाला शत्रुओं पर स्वतः विजय पाने वाला और देह में कुछ साधारण रोग पाने वाला ननमाल पक्ष का अच्छा योग सम्बन्ध पाने वाला और गृहस्थ का पालन करने वाला रोजगार का कार्य भी करने वाला भोग विलाश में सामान्य रुचि रखने वाला और पारलौकिक तथा यह लौकिक दोनों का बराबर ध्यान रखने वाला तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाला भाग्य से व कुछ परिश्रम से मान पाने वाला होता है।

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ११ | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५ |

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न से दूसरे स्थान नं० १०१० में हो तो वह मनुष्य बड़ा धनवान् तथा भाग्यवान् अर्थात् भाग्य और परिश्रम के द्वारा धन प्राप्त करने वाला और सफलता पाने वाला और धर्म को धन के मुकाबिले छोटा समझने वाला ईश्वर में थोड़ी निष्ठा

| | | |
|---|---|---|
| १२ | बु | ९ |
| | १० | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५ |

रखने वाला और कुटुम्ब का साधारण तथा अच्छा सुख प्राप्त करने वाला किन्तु कुटुम्ब में कुछ थोड़ा सा निग्रह पाने वाला और कभी २ धन की कुछ अशांति मामूली तौर से पाने वाला और युक्ति तथा बुद्धि से दैव संयोग द्वारा तरक्की पाने वाला और महान् विवेक और सतोगुण की लाइन का सहारा लेकर अच्छी स्वार्थ सिद्धि करने वाला तथा ननसाल से फायदा पाने वाला तथा पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से तीसरे स्थान नं० १०११ में हो तो वह मनुष्य थोड़ा पुरुषार्थ करने वाला अर्थात् आलस्य करने वाला और थोड़ा शक्ति बल रखने वाला ननसाल की थोड़ी शक्ति वाला और भाग्य को बड़ा मानने वाला और भाग्य की कमजोर शक्ति से भी ज्यादा फायदा उठाने वाला ईश्वर पर भरोसा रखने वाला और यथा शक्ति धर्म का पालन करने वाला मेहनत और परिश्रम के कार्यों में दिक्कतें सहने वाला और शत्रु पक्ष से परेशानी मानने वाला किन्तु भाग्य शक्ति से बचाव पाने वाला और प्रभाव में कुछ कमी पाने वाला तथा भाई से क्लेश का योग पाने वाला तथा भाग्योदय में कुछ देरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से चौथे स्थान

नं० १०१२ में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति




धैं व कुछ परिश्रम के द्वारा सुख उठाने वाला और कुछ ननसाल से व विवेक शक्ति और युक्तियों से अपने स्थान में ही भाग्य का विकाश पाने वाला तथा सुख व भाग्य के सम्बन्ध मे कुछ साधारण अड़चनों के बाद वृद्धि पाने वाला माता की शक्ति पाने वाला तथा माता से कुछ वैमनस्य तथा उत्साह प्राप्त करने वाला और कुछ मकान जमीन का सुख प्राप्त करने वाला पिता स्थान से भी फायदा उठाने वाला व मान प्रतिष्ठा पाने वाला और सुखद धर्म का पालन करने वाला और शत्रु स्थान में समभाव पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से पांचवें स्थान नं० १०१३ में हो तो वह मनुष्य बहुत विवेक




तथा महान् चतुराइयों से काम लेने वाला धर्म का अच्छा ज्ञान रखने वाला तथा धार्मिक विषय पर बड़ी जचावदार बातें कहने वाला और धर्म के पालन करने में कुछ रजोगुण का मार्ग पकड़ने वाला और बड़ी चतुर संतान पाने वाला तथा विद्या का लौकिक तथा अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने वाला और समयानुसार भाग्य की सहायक बुद्धि को सदैव पाने वाला और बुद्धि तथा संतान के योग से

भाग्य वृद्धि को पाने वाला और बहुत लाभ तथा धन पैदा करने वाला और बुद्धि के योग से शत्रु पर प्रभाव जमाने वाला तथा संतान पक्ष में कुछ झंझट पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से छठे स्थान नं० १०१४ में हो तो वह मनुष्य भाग्य में



कमजोरी पाने वाला तथा भाग्योन्नति के मार्ग में हमेशा कुछ न कुछ रुकावटें तथा परेशानियां पाने वाला और ननसाल पक्ष में वृद्धि का योग पाने वाली अर्थात् प्रभावशाली ननसाल वाला और धर्म के मार्ग में बड़ी कमजोरी पाने वाला तथा कुछ पेचीदा धर्म का पालन करने वाला और विवेक शक्ति तथा भाग्य शक्ति से प्रभाव पाने वाला और विवेक तथा भाग्य शक्ति से ही रोग, शत्रु और विपत्तियों पर काबू पाने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला तथा शांति युक्त क्रोध को रखने वाला दाना दुश्मन होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से सातवें स्थान नं० १०१५ में हो तो वह मनुष्य भाग्य की



शक्ति और परिश्रम के जरिये रोजगार में तरक्की पाने वाला और रोजगार की दैनिक व्यवस्था में भाग्यवानी पाने वाला तथा भाग्यवान् समझा जाने वाला और गृहस्थ के अन्दर कुछ मामूली

अड़चनों के साथ साथ खूब आनन्द व सफलता प्राप्त करने वाला और स्त्री के पक्ष में भाग्यवानी तथा कुछ सामान्य सा झंझट पाने वाला और स्त्री के द्वारा कुछ धार्मिक व्यवस्था पाने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ पेचीदा लौकिक व अलौकिक विवेक शक्ति से काम करने वाला और सामान्य धर्म का पालन करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से आठवें स्थान नं १०१६ में हो तो वह मनुष्य भाग्य में कमजोरी पाने वाला तथा भाग्य उन्नति के लिये बड़ी बड़ी परेशानियां सहन करने वाला और धर्म के पक्ष में बड़ी भारी कमजोरियां पाने वाला तथा सुयश और प्रभाव में कमजोरी पाने वाला पुरातत्त्व अर्थात् पूर्व संचित धरोहर का फायदा उठाने वाला और अनुचित मार्ग से भाग्य वृद्धि का साधन पैदा करने वाला ननसाल पक्ष की कमजोरी पाने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये बड़ी बड़ी युक्तियों का साधन विवेक शक्ति और परिश्रम से करने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला स्वार्थी होता है।

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० | ९ |
| १२ | | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५बु |

जिस व्यक्ति की कन्या का बुध लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और विवेक की

नं० १०१७ पेचीदा युक्तियों से महान् लाभ उठाने वाला धर्म के बाहरी अंग का बड़ा उत्तम पालन करने वाला और सतोगुणी कर्म की आड़ में रजोगुणी कर्म से भाग्य की वृद्धि पाने वाला अर्थात् छिपाव शक्ति के द्वारा बड़ी सज्जनता के ढंग से नाजायज फायदा उठाने वाला बड़ा मान व सत्कार पाने वाला और बड़ा प्रभाव पाने वाला बल पुरुषार्थ में कमज़ोरी पाने वाला भाई से विरोध पाने वाला और विवेक के उच्चतम ज्ञान व परिश्रम से भाग्यशक्ति के द्वारा लौकिक उन्नति पर पहुँचने वाला महान् चतुर होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | | ९ | |
| १२ | १० | | ८ |
| १ | | ७ | |
| २ | ४ | | ६ बु |
| ३ | | ५ | |

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से दशम स्थान में

नं० १०१८ हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और धर्म का स्वार्थ युक्त पालन करने वाला विवेक और परिश्रम से उत्तम कर्म द्वारा व्योपार आदि में तरक्की करने वाला महान् चतुरता के योग से मान वृद्धि पाने वाला और भाग्यशक्ति से उन्नति का साधन मार्ग स्वतः प्राप्त करने वाला तथा मातृ पक्ष से व ननसाल पक्ष से भी शक्ति का साधन पाने वाला और पिता की शक्ति का लाभ उठाने वाला किन्तु पिता के स्थान में कुछ कमी का योग पाने वाला और उन्नति के लिये कुछ गुप्त युक्तियों से भी काम लेने वाला राज सम्बन्ध से फायदा उठाने वाला माननीय भाग्यशाली होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | | ९ | |
| १२ | १० | | ८ |
| १ | | ७ बु | |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ | | ५ | |

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से ग्यारहवें नं० १०१९ स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की शक्ति से व विवेक युक्त परिश्रम से खूब लाभ उठाने वाला और धार्मिक लाभ का योग भी प्राप्त करने वाला और चतुराई के परिश्रमी लाभ प्राप्ति के कारणों से भाग्यवानी प्राप्त करने वाला और आमदनी के स्थान में अधिकांश बेफिकरी पाने वाला विद्या व वुद्धि का अच्छा योग पाने वाला और धर्म के स्थान में स्वार्थ का अधिक ध्यान रखने वाला और ननसाल पक्ष से कुछ फायदा उठाने वाला और उत्ताम विवेक के अन्तरगत कुछ पेचीदा चालों से भी थोड़ा फायदा उठाने वाला शत्रु पक्ष से लाभ युक्त रहने वाला व प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से बारहवें स्थान नं० १०२० में हो तो वह मनुष्य धर्म स्थान में हानि पाने वाला तथा भाग्य स्थान में हानि पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला सुयश की कमी पाने वाला और प्रभाव की कमी पाने वाला तथा ननसाल की कमजोरी पाने वाला और विवेक की कमजोर शक्ति के द्वारा अन्य स्थान के सम्पर्क से भाग्य का सहारा पाने वाला तथा

भाग्योन्नति के लिये बड़ी परेशानियां और देर अवेर का साधन पाने वाला और तकदीर की कमजोरी के कारण से रंज तथा झगड़े झंझटों का योग पाने वाला और छिपी चतुराइयों के योग से प्रभाव को कायम रखने का बड़ा प्रयत्न करने वाला होता है।

## मकरलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का 'गुरु' लग्न के पहिले स्थान नं० १०२१ में हो तो वह मनुष्य देह में दुर्बलता व कष्ट सहन करने वाला और खर्च की कमी व कष्ट अनुभव करने वाला भाई बहिन के पक्ष में कमजोरी पाने वाला देह की सुन्दरता में कमी पाने वाला तथा देह का छोटा कद पाने वाला और दूसरे स्थान का गलत व नाजाइज दबाव पाने वाला और किसी प्रकार परतंत्रता का सा योग पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ रौनक पाने वाला रोजगार में वृद्धि करने वाला बुद्धि में कुछ शक्ति पाने वाला भाग्य में कुछ वृद्धि पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ शक्ति व कुछ कमी पाने वाला होता है

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | १० गु | ९ | ८ |
| १२ | १ | ७ | ६ |
| २ | ४ | ३ | ५ |

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न से दूसरे स्थान

नं० १०२२ में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कुछ हानि व कमी पाने वाला तथा बाहरी दूसरे स्थान से कुछ धन प्राप्त करने वाला भाई के पक्ष में कुछ बंधन व कमी पाने वाला तथा बल पुरुषार्थ में कुछ कमी व कुछ परतंत्रता पाने वाला और प्रभाव पाने वाला और मान उन्नति के लिये बहुत बहुत कर्म करने वाला पिता स्थान में कुछ हानि लाभ का योग पाने वाला तथा धन वृद्धि के लिये बहुत बहुत कोशिश व दौड़ धूप करते रहने पर भी उतनी सफलता न पाने वाला तथा जीवन में कुछ शान पाने वाला कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी पाने वाला होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ गु | | ९ | |
| १२ | १० | | ८ |
| १ | | | ७ |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ | | ५ | |

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से तीसरे स्थान

नं० १०२३ में हो तो वह मनुष्य दूसरे स्थान का सहारा पाकर बहुत काम करने वाला और बहुत खर्च करने तथा खर्च बल से शक्ति पाने वाला और बल पुरुषार्थ में जोरदारी व कमजोरी दोनों का सम्मिश्रण योग पाने वाला और अन्य स्थान के सम्पर्क से शक्ति पाने पर भी कुछ स्वतन्त्रता में कमी महसूस करने वाला और पुरुषार्थ मेहनत से बहुत लाभ पाने वाला गृहस्थ व रोजगार के सम्बन्ध में बड़ा

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | | ९ | |
| गु १२ | १० | | ८ |
| १ | | | ७ |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ | | ५ | |

उत्साह व तरक्की पानें वाला भोग प्राप्त करंने की विशेष इच्छा रखंने वाला और भाई के सम्बन्ध में कमजोरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से चौथे स्थान नं० १०२४ में हो तो वह मनुष्य बहुत शानदार खर्च करने वाला और सुखपूर्वक खर्च संचालन शक्ति पाने वाला और जमीन जायदाद की शक्ति पाने पर जमीन जायदाद की कुछ हानि या कमजोरी पाने वाला तथा माता की हानि पाने वाला कुछ भाई की हानि वाला अन्य दूसरे के जरिये से घर बैठे फायदा उठाने वाला और पुरातत्त्व की कुछ शक्ति पाने वाला पिता स्थान में कुछ विरोध वैमनस्य व कमजोरियों के साथ शक्ति पाने वाला और सुख शांति में कुछ बाधा पाने वाला और खर्च की अधिकता को न रोक सकने वाला और इसी कारण से कुछ अशांति महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से पांचवें स्थान नं० १०२५ में हो तो वह मनुष्य बुद्धि और विवेक के द्वारा मेहनत करके खर्च चलाने वाला और विद्या में कमी पाने वाला सन्तान पक्ष में हानि पाने वाला तथा कुछ शक्ति पाने वाला और भाई के पक्ष में कुछ अधूरी शक्ति पाने

वाला और अन्य स्थान के सम्पर्क व बुद्धि के द्वारा परिश्रम करके भाग्य की वृद्धि के लिये बराबर प्रयत्न करनें वाला और देह में कमजोरी तथा सुन्दरता की कमी पाने वाला और खर्च शक्ति के कारणों से हृदय में अशांति अनुभव करने वाला और बड़प्पन की बातें कहने वाला चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य खर्च के सम्बन्ध में परेशानी व परतंत्रता का योग पाने वाला और भाई के सम्बन्ध में कमी व विरोध पाने वाला तथा प्रभाव में कमी पाने वाला और पिता स्थान में कुछ विरोध भावनाओं के द्वारा हानि लाभ का योग पाने वाला और विशेष उन्नति के लिये तथा मान प्राप्ति करने के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला और धन संग्रह के पक्ष में कमी महसूस करने वाला स्वतंत्रता में बाधा पाने वाला और प्रभाव में कुछ कमी महसूस करने वाला और दानाई से दुश्मनी करने वाला और गुप्त युक्तियों से काम करने वाला कुछ आलसी स्वभाव होता है।

नं० १०२६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | | ९ | |
| १२ | १० | | ८ |
| | १ | ७ | |
| २ | ४ | | ६ |
| ३ गु | | ५ | |

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन में महान् पुरुषार्थ से काम करने वाला और रोजगार से महान् शक्ति पाने

नं० १०२७ वाला तथा अन्य स्थान के सम्पर्क से खूब रोजगार करने वाला और खूब खर्च करने वाला स्त्री सम्बन्धित विशेष भोग सुख प्राप्त करने वाला लौकिक कार्यों में विशेष हवस रखने वाला देह में कमजोरी व अशांति पाने वाला और खूब लाभ पाने वाला अधिक मेहनत के कारण देह से थकान पाने वाला और नित्य प्रगति के रोजगार में महान् उत्तेजना व स्फूर्ति से कार्य संचालन रखने वाला तथा बहिन भाई का सम्पर्क पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से आठवें स्थान

नं० १०२८ में हो तो वह मनुष्य अपने बल पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला और खर्च के सम्बन्ध दिक्कतें सहने पर अधिक खर्च करने वाला तथा खर्च शक्ति को कुछ विदेश आदि के योग से परिश्रम व युक्तियों के द्वारा प्राप्त करने वाला और भाई बहिन के सम्बन्ध में कमजोरी पाने वाला और सुख की वृद्धि करने के लिये विशेष प्रयत्न करने वाला धन संग्रह के स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और पुरातत्त्व के सम्बन्ध में अन्य स्थान से शक्ति प्राप्त करने वाला और जीवन की दिनचर्या को कुछ प्रभाव व बड़प्पन के ढंग से व्यतीत करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से नवम स्थान नं० १०२६ में हो तो वह मनुष्य कुछ भाग्य में




कमजोरी पाने वाला कुछ धर्म में कमजोरी पाने वाला और भाई का सहयोग कुछ कमजोरी से प्राप्त करने वाला और पुरुषार्थ से धर्म व भाग्य की कुछ वृद्धि करने वाला अपने हृदय में कमजोरी के होते हुये भी हिम्मत से व लापरवाही से काम लेने वाला और देह में सुन्दरता की व तन्दुरुस्ती की कुछ कमी पाने वाला और सन्तान पक्ष में कुछ हानि पाने वाला लौकिक विद्या में कुछ कमजोरी पाने वाला और हृदय बल के द्वारा कुछ धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाला देह बल की वृद्धि का साधन रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से दशम स्थान नं० १०३० में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान




में हानि पाने वाला और कारबार व मान प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में कुछ कमी व हानि पाने वाला और उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करते रहने पर भी सफलता में कमी पाने वाला भाई के सम्बन्ध में कुछ नीरसता पाने वाला और खर्च अधिक करने वाला प्रभाव वृद्धि के लिये हृदय से कोशिश करने वाला अन्य स्थान की सम्पर्क शक्ति का साधारण तथा अच्छा लाभ पाने वाला और सुख प्राप्ति के लिये

खर्च और मेहनत की ताकत से काम लेने वाला धन की कुछ कमी व कुछ हानि पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से ग्यारहवें

नं० १०३१ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ से व खर्च के योग से मेहनत करके खूब लाभ पाने वाला और अपने आमदनी के जरिये पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि करने वाला किन्तु बल वृद्धि और लाभ के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी का भी योग अन्दरूनी महसूस करने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सम्बन्ध से बड़प्पन के साथ फायदा उठाने वाला कुछ कमी के साथ भाई बहिन का लाभ पाने वाला और सुन्दर स्त्री पाने वाला तथा स्त्री जाति की सुन्दरता में हृदय के अन्दर बड़ा ध्यान रखने वाला और रोजगार में बडी तरक्की व दौड़ धूप कर के चमत्कार पैदा करने वाला विद्या तथा सन्तान पक्ष के किसी भी हिस्से में नीरसता पाने वाला तथा बाहरी सम्बन्ध से स्फूर्ति पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से बारहवें स्थान

नं० १०३२ में हो तो वह मनुष्य अधिक खर्च करने वाला और कुछ परतंत्रता पाने वाला मातृ पक्ष में व पुरुषार्थ में कमजोरी पाने वाला भाई के स्थान में कमी पाने वाला और सुख प्राप्त करने का बड़ा ध्यान व साधन रखने वाला

तथा प्रभाव वृद्धि का भी ध्यान रखने वाला और हमेशा दूसरे के सहारे से शक्ति पाने वाला अपनी दिनचर्या को शानदार बनाने के लिये बड़ा खर्च व उपाय करने वाला और गूढ़ युक्तियों को व्यवहार में लाने वाला और खर्च की शक्ति को उपाय करने पर भी कम न कर सकने वाला और खूब डोलने फिरने वाला अशांत हृदय होता है।

## मकरलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न के पहिले

नं० १०३३ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत प्रतिष्ठित, बहुत चतुर बुद्धिमान तथा ऊंचा व उत्तम कार्य करने वाला और बड़ा व्योपार करने वाला तथा बुद्धि विद्या का बहुत बड़ा काम करने वाला और बहुत मान पाने वाला, और पिता की शक्ति का लाभ पाने वाला तथा राजकाज से फायदा उठाने वाला, जन समाज में इज्जत व बड़प्पन पाने वाला, बहुत रोजगार, बहुत प्रकारों से बड़ी भारी चतुराइयों के साथ करने वाला और स्त्री सुख भोगने वाला, संतान सुख

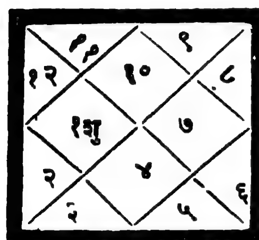
प्राप्त करने वाला और सुन्दरता व कला को बहुत पसन्द करने वाला तथा ज्योतिष में प्रेम संपर्क रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान नं० १०३४ में हो तो वह मनुष्य बहुत धन जमा करने वाला, पिता स्थान से धन शक्ति का सहारा पाने वाला और बुद्धि विद्या से बड़ी चतुराइयों के साथ खूब धन कमाने वाला तथा बड़ा कारबार करने वाला और संतान के पक्ष में कुछ बंधन व कुछ भाग्यवानी महसूस करने वाला और कुटुम्ब का वैभव पाने वाला और राज समाज से फायदा उठाने वाला और धन वृद्धि के लिये और युक्तियों के महान् कार्य करने वाला कुछ पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला और जीवन की दिन चर्य्या में कुछ रौनक व मान प्रतिष्ठा पाकर भी कुछ कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान नं० १०३५ में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली तथा सुन्दर डील डौल वाला बहिन भाइयों वाला, संतान शक्ति पाने वाला बहुत बुद्धि व विद्या वाला तथा रुआब से बातें कहने वाला और बड़ा प्रभावशाली कार्य करने वाला और

पिता के स्थान में कुछ अधिकता व कुछ कमी का योग पाने वाला राजकाज से फायदा व मान पाने वाला और धर्म में हानि पाने वाला तथा भाग्य की वृद्धि में कमी पाने वाला और यश में भी कमी पाने वाला अपनी मस्ती में चूर रहने वाला और लोगों में अपना प्रभाव जमाने वाला बड़ा पुरुषार्थी बड़ा मुन्तजिम कलाधारी होता है।

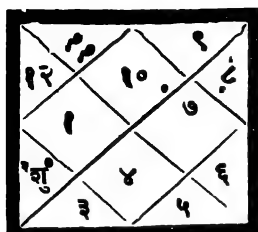
जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से ग्यारहवें नं० १०३६ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत




सुख उठाने वाला बडा कार बार करने वाला तथा माता पिता का सुख ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला व संतान सुख प्राप्त करने वाला तथा विद्या प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद वाला राज समाज से सुख उठाने वाला मान सम्मान में वृद्धि पाने वाला राजसी विद्या के ज्ञान से तरक्की पाने वाला और महान् चतुराइयों से सरलता पूर्वक फायदा उठाने वाला सुन्दरता तथा कला को चाहने वाला प्रभाव से काम करने वाला शांति और गौरव को प्राप्त करने वाला प्रतिष्ठित शोभा युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करने वाला राजनैतिक ज्ञान की अधिक शक्ति पाने वाला और सन्तान शक्ति का अधिक सहारा पाने वाला बुद्धि

नं० १०३७ से बड़ी इज्जत पाने वाला तथा



तरक्की पाने वाला पिता की शक्ति पाने वाला धन पैदा करने वाला बड़ी शान गुमान से बोलने वाला इज्जत व मान प्राप्त करने वाला राज समाज से फायदा उठाने वाला बुद्धि की शक्ति के बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और शृंगार सुन्दरता तथा मादकता पसन्द करने वाला हाजिर जबाव होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से छठे स्थान

नं० १०३८ में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान



से वैमनस्यता पाने वाला तथा संतान में कुछ कष्ट अनुभव करने वाला विद्या का प्रभाव पाने वाला और कुछ परतंत्रता पाने वाला अधिक खर्च करने वाला और बड़ी पेचीदा तौर से बातें करने वाला बड़ा भारी पेचीदा चालों का गहरा ज्ञान रखने वाला और बुद्धि की छिपी युक्तियों से दुश्मन को नीचा दिखाने वाला और रोग व दिक्कतों पर काबू पाने वाला और परेशानियों के कर्म से प्रभाव पाने वाला ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति पाने वाला और राज समाज से कुछ विरोध भावना रखने वाला तंत्र विद्या की शक्ति वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से सातवें स्थान

नं० १०३९ में हो तो वह मनुष्य बड़ी शक्ति का रोजगार करने वाला रोजगार में रौनक पाने वाला और राजनैतिक रोजगार में सफलता पाने वाला व्यवसाइक बुद्धि की योग्यता का कार्य बड़ी भारी चतुराइयों से विद्या के द्वारा पूर्ण करने वाला और सन्तान शक्ति पाने वाला तथा पिता की शक्ति पाने वाला गृहस्थ की रौनक का आनन्द अनुभव करने वाला और बड़ा मान सनमान पाने वाला लौकिक कार्यों में बड़ी दक्षता रखने वाला राज समाज के कार्य बडी बुद्धिमानी व दैनिक परिश्रम से करने वाला और स्त्री तथा भोगादिक सुखों को प्राप्त करने वाला बड़ा कार्य प्रवीण होता है।

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० | ९ |
| १२ | | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ शु | ६ |
| ३ | | ५ |

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से आठवें स्थान नं १०४० में हो तो वह मनुष्य पिता की हानि पाने वाला और पुत्र का कष्ट पाने वाला और विद्या में कमी पाने वाला और गूढ़ ज्ञान का पालन करने वाला तथा भद बुद्धि से कार्य करने वाला छिपाव से बातें करने वाला राज समाज में मान प्रतिष्ठा पाने के लिये बुद्धि और चतुराई के थकान पाने वाले कर्म को करने वाला तथा व्यापारादि उन्नति के मार्ग में कुछ कमियों का कारण महसूस करने वाला किन्तु धन की वृद्धि का बड़ा भारी ध्यान रखने वाला

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० | ९ |
| १२ | | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५ शु |

पुरातत्त्व की कुछ शक्ति पाने वाला और अति कूट नीति का पालन करने वाला तथा बुद्धि में परेशान रहने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से नवम स्थान नं० १०४१ में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी पाने वाला और पिता पुत्र की तरफ से भी कुछ कमजोरी पाने वाला किन्तु फिर भी पिता पुत्र की कुछ शक्ति पाने वाला तथा कुछ भाग्यवान् समझा जाने वाला कुछ अधूरी विद्या की शक्ति पाने वाला और राज समाज में कुछ मान पाने वाला बहिन भाइयों वाला तथा धर्म के कार्यों में कुछ कमजोर श्रद्धा से काम लेने वाला और बल पुरुषार्थ की वृद्धि करने वाला व्यापारादि में कुछ कमजोरी के साथ सफलता पाने वाला तथा कुछ अकर्मण्यता पाने वाला और कुछ धार्मिक संबोधित युक्तियों से बातें करके उन्नति का मार्ग बनाने वाला होता है ।

| | |
|---|---|
| ११ | ९ |
| १२ | ८ |
| १० | ७ |
| १ | ६ शु |
| २ | ४ |
| ३ | ५ |

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से दशम स्थान नं० १०४२ में हो तो वह मनुष्य राज शक्ति व शासन शक्ति प्राप्त करने वाला तथा न्यायाधीश कहलाने और ऊँचे दर्जे की विद्या प्राप्त करने वाला और पिता पुत्र की महान् शक्ति को पाने वाला बड़ा सुख भोगने वाला मातृस्थान की

| | |
|---|---|
| ११ | ९ |
| १२ | ८ |
| १० | ७ शु |
| १ | ६ |
| २ | ४ |
| ३ | ५ |

शक्ति माने वाला तथा जायदाद रखने वाला और बड़ा ऐश्वर्य तथा प्रभुत्व पाने वाला तथा बड़ा कारबार करने वाला और सुन्दरता तथा कला को पसन्द करने वाला गौरव व प्रभाव से बातें करने वाला और बड़प्पन व योग्यता एवं चातुर्य का दावा रखने वाला बड़ा स्वाभिमानी प्रतिष्ठित तथा बड़ा विद्वान् कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य व्यापारादि से बहुत लाभ पाने वाला राजनैतिक उत्तम विद्या प्राप्त करने वाला व पिता का लाभ पाने वाला पुत्र का लाभ पाने वाला और विद्या से लाभ पाने वाला और बातों से बड़ा लाभ पाने वाला राज काज का खूब लाभ पाने वाला तथा बुद्धि और कर्म की उत्तमता से उत्तम लाभ पाने वाला और शृंगार तथा कला को बहुत पसन्द करने वाला और उन्नति के लिये तथा लाभ वृद्धि के लिये बुद्धि पर बहुत जोर देने वाला और भोग विलास व ऐश्वर्य के सुगम साधन पाने वाला और प्रभाव व गौरव से बातें करने वाला इज्जतदार माननीय बड़ा चतुर कर्मेष्ठी होता है।

नं० १०४३

११ ९
१२ १० ८ शु
१ ७
२ ४ ६
३ ५

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला पिता की हानि पाने वाला तथा पुत्र की हानि पाने वाला और

नं० १०४४ विद्या की कमी पाने वाला और कुछ परतंत्रता का कार्य करने वाला मान प्रतिष्ठा में कुछ कमी पाने वाला अन्य स्थान की शक्ति का सम्बन्ध पाने वाला और कुछ घुमाव फिराव व कार्य को घुमाव फिराव की बातें करने वाला और व्यापारादि में हानि पाने वाला तथा राज समाज में हानि या परेशानी पाने वाला और बुद्धि में कमजोरी महसूस करने वाला और खर्च शक्ति को बड़ी चतुराइयों से संचालित रखने वाला कुछ अकर्मण्य सा आलसी होता है।

## मकरलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न के पहिले स्थान

नं० १०४५ में हो तो वह मनुष्य बड़ा धनाढ्य तथा धनवान् समझा जाने वाला और अमीरात के ढंग से रहने वाला और कीमती पोशाक पहनने वाला और पिता स्थान से तरक्की पाने वाला व पिता स्थान को तरक्की देने वाला और बड़े

प्रभावशाली पिता वाला बड़ा कारबार करने वाला और भाई के स्थान में कमी व खरखशा पाने वाला और दूसरे तरीके से मातृस्थान में वृद्धि पाने वाला और उन्नति के लिये बड़ी २ तरकीबें लगाने वाला और दैनिक रोजगार में कुछ दिक्कत महसूस करने वाला व गृहस्थ में वैमनस्यता पाने वाला माननीय होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न से दूसरे स्थान में

नं० १०४६

| | | |
|---|---|---|
| १२ ११ श | १० | ९ ८ |
| १ | | ७ |
| २ ३ | ४ | ६ ५ |

हो तो वह मनुष्य बड़ा धनवान् तथा धन को संग्रह करने वाला और धन के लिये जान लड़ाने वाला कुटुम्ब की वृद्धि करने वाला और माता के पक्ष में कमज़ोरी पाने वाला व भूमि स्थान की कमी पाने वाला और सुख स्थान में घाटा पाने वाला और अधिक लाभ पाने के लिये कठिन प्रयत्न करने वाला और जीवन की दिनचर्या में अशांति महसूस करने वाला और पुरातत्त्व के स्थान में वैमनस्यता पाने वाला और आवश्यक पदार्थों को अरुचिकर पाने वाला और देह में कुछ बंधन व घिराव पाने वाला तथा धन ही को परमतत्त्व मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से तीसरे स्थान

नं० १०४७

| | | |
|---|---|---|
| ११ १२ श | १० | ९ ८ |
| १ | | ७ |
| २ ३ | ४ | ६ ५ |

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली तथा बड़ा पुरुषार्थी और बहुत कठिन परिश्रम करने वाला और वहिन भाइयों वाला होने पर भी वहिन भाइयों से सुख की कमी पाने वाला और बुद्धि पर बहुत जोर देने

वाला और सन्तान के लिये उन्नति के सम्बन्ध में बहुत शक्ति का प्रयोग करने वाला और बुद्धि से व वाणी से आत्मचिन्तन करने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा खर्च में कमी व क्लेश पाने वाला और पुरुषार्थ से धन पाने वाला एवं धन की शक्ति पाने के लिये बड़ी मेहनत करने वाला और धर्म का ध्यान रखने वाला और भाग्य की वृद्धि करने व पाने वाला ईश्वर वादी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से चौथे स्थान नं० १०४८ में हो तो वह मनुष्य सुख स्थान में




कमी व अशांति पाने वाला और माता के सम्बन्ध में भी कुछ क्लेश व कमी का योग पाने वाला और देह में साधारण सुन्दरता पाने वाला और आत्मा के अन्दर कुछ कमजोरी के साथ आत्मबल पाने वाला और शत्रुस्थान में प्रभाव जमाने वाला और बड़ा कार बार करने वाला पिता स्थान में बड़प्पन पाने वाला और जन्म काल से पिता को वृद्धि पहुंचाने वाला और उन्नति के लिये बहुत प्रकार से कर्म करने वाला और जमीन जायदाद व मातृभूमि स्थान में कमी पाने वाला तथा उत्तम धारणा वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से पांचवें स्थान

नं० १०४९

में हो तो वह मनुष्य सुन्दरता पाने वाला बड़ा बुद्धिमान् बड़ा चतुर और विद्या को प्राप्त करने वाला तथा बुद्धि से बहुत धन कमाने वाला और अपनी देह व बुद्धि के प्रभाव से बड़े २ कीमती लाभ पाने वाला किन्तु रोजगार व आमदनी के स्थान में कुछ आत्मशक्ति या धन शक्ति से काम लेने वाला व बड़ी वजनदार कीमती बातें करने वाला स्त्री स्थान में कुछ वैमनस्यता के साथ २ विशेष सम्पर्क रखने वाला और अधिक भोग चाहने वाला रोजगार की तरक्की का बड़ा भारी ख्याल रखने वाला और संतान शक्ति का कीमती लाभ पाने वाला बड़ा मुन्तजिम दिमाग होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से छठे स्थान

नं० १०५०

में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला और किसी प्रकार कुछ प्रभाव युक्त परतन्त्रता पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में भी कुछ प्रभाव जमाने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ खरखशा व परेशानी महसूस करने वाला तथा खर्च में कुछ दिक्कत महसूस करने वाला और भाई के स्थान में वैमनस्यता पाने वाला तथा अधिक परिश्रम करने वाला और प्रभाव उन्नति के लिये बड़ा जबरदस्त प्रयत्न करने वाला तथा धन संग्रह

के स्थान में कुछ कमी पाने वाला और देह की सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला बड़ा होशियार व सतर्क होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से सातवें स्थान

नं० १०५१ में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन में बहुत मेहनत करने वाला स्त्री स्थान में बहुत आसक्ति रखने वाला किन्तु गृहस्थी में कुछ वैमनस्यता पाने वाला और रोजगार में कुछ खरखशा पाने वाला और लौकिक

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० | ९ |
| १२ | | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४श | ६ |
| ३ | | ५ |

कार्यों में बड़ी मुस्तैदी से काम करने वाला तथा भाग्य वृद्धि के लिये बहुत प्रयत्न करने वाला धर्म में बहुत श्रद्धा रखने वाला और माता पक्ष में बहुत कमी का योग पाने वाला तथा सुख शांति में बाधा पाने वाला भूमि व मकानादि की कमी पाने वाला और देह में सुन्दरता व कोमलता पाने वाला व धन कमाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से आठवें स्थान

नं० १०५२ में हो तो वह मनुष्य विदेश आदि में रहने वाला तथा देह में कष्ट सहने वाला और पिता की वृद्धि करने वाला धन की हानि करने वाला और गूढ़ युक्तियों से बड़ा काम करने वाला उन्नति के लिये बड़े बड़े प्रयत्न

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १० | ९ |
| १२ | | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५श |

व परिश्रम करने वाला और बुद्धि पर बहुत ज़ोर देने वाला "सन्तान शक्ति" पाने वाला विद्या ग्रहण करने वाला और बहुत पेचीदा काट छांट की बातें करने वाला कुछ परतंत्रता पाने वाला सदैव कर्म युक्त तरक्की का जबर-दस्त ध्यान रखने वाला अच्छी आयु पाने वाला धन के संग्रह में दिक्कतें पाने वाला बड़ा मेहनती मान प्राप्त कर लेने वाला और पीठ पीछे कुछ बुराई भलाई पाने वाला गूढ़ चाल चलने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् तथा धर्मवान् पुण्यात्मा और सुन्दर देह पाने वाला और अधिक लाभ पाने के लिये अधिक ध्यान लगाने वाला बड़ा भाग्यवान् जचने वाला और आमदनी के स्थान में कुछ वैमनस्यता पाने वाला और शत्रुओं व विपक्षियों में बड़ा सुन्दर प्रभाव जमाने वाला बड़ा प्रभाव शाली और रोग दोष पर काबू रखने वाला ईश्वर में विश्वास रखने वाला भाई बहिन के स्थान में कुछ कटुता पाने वाला पुरुषार्थ में कुछ कमी पाने वाला और धर्म व भाग्य की ताकत से धन प्राप्त करने वाला कुटुम्ब वाला सज्जन स्वभाव होता है।

नं० १०५३




जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से दशम स्थान

नं० १०५४ में हो तो वह मनुष्य बहुत बड़ा कार-बार धन की शक्ति से करने वाला और दिव्य देह वाला बड़ा प्रभावशाली तथा राजस्थान में मान पाने वाला व पिता स्थान में तरक्की पाने वाला और मातृस्थान में कमी पाने वाला सुख के साधनों में भी कमी पाने वाला और स्त्रीपक्ष में कुछ वैमनस्यता व संयोग पाने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ दैनिक घिराव सा कुछ परेशानी पाने वाला और भोग वैभव पाने वाला और खर्च में कुछ खरखशा व अधिकता का योग पाने वाला और ऊँची भावना व ऊँचे कर्म वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से ग्यारहवें नं० १०५५ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन कमाने वाला और बहुत नाम पैदा करने वाला और धन लाभ की तरक्की के ही कामों में लगा रहने वाला तथा आत्मबल व देह बल की शक्ति पाने वाला सुन्दर देह वाला धन और देह की ताकत से आमदनी में मजबूती पाने वाला और बुद्धि व विद्या में तरक्की पाने वाला एवं सन्तान शक्ति पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में अशांति महसूस करने वाला और बड़ी वजनदार बात कहने वाला स्वार्थ युक्त रहने वाला और पुरातत्त्व

के सम्बन्ध में कुछ खिलाफत पाने वाला ऊंचे ख्याल वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से बारहवें स्थान नं० १०५६ में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला व दूसरे स्थानों में रहने वाला तथा हृदय में अशांति पाने वाला देह में दुर्बलता पाने वाला और अन्य स्थानों के योग से धन प्राप्ति करने वाला तथा धन वृद्धि के लिये कठिन से कठिन कठिनाइयों को सहने वाला और भाग्य की वृद्धि करने वाला धर्म को मानने वाला व यश प्राप्त करने वाला शत्रु स्थान में मित्रता का प्रभाव रखने वाला और भ्रमण कारी आदत पाने वाला और खर्च की अधिकता से दुख अनुभव करने वाला खिन्न हृदय होता है।

## मकरलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न के पहिले स्थान नं० १०५७ में हो तो वह मनुष्य कुछ नशा व देह में कुछ परेशानी सहने वाला तथा देह में कुछ कमी महसूस करने वाला और बड़ी भारी चतुराई व छिपाव शक्तियों से उन्नति का मार्ग पकड़ने वाला तथा अपने अन्दर महान् शक्ति को प्राप्त

करने की चेष्टा करने वाला और सदा के लिये निर्भय होने का मार्ग ढूंढने वाला किन्तु फिर भी अपने अन्दर कुछ अधूरा पन पाने वाला और कुछ परेशानियां सहने के बाद कुछ मजबूती प्राप्त कर लेने वाला और स्वार्थ सिद्ध करने के लिये सत्य असत्य की परवाह न करके बड़े सज्जनता के ढंग से काम बनाने वाला, बड़ा होशियार होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न से दूसरे स्थान

नं० १०५८

११ रा ९
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में कुछ हानियां पाने वाला और धन की वृद्धि करने के लिये हमेशा चिंतित रहने वाला तथा धन संग्रह के लिये बड़े बड़े कठिन से कठिन कार्य करने वाला और धन के हेतु कभी कभी बड़ी भारी आपत्ति का सामना करने वाला और कुटुम्ब में विग्रह पाने वाला तथा कुटुम्ब में कुछ कमी पाने वाला और धन की प्राप्ति के लिये कुछ गुप्त शक्ति का प्रयोग करने वाला और बड़ी भारी चतुराइयों से सीधे बन कर दृढ़ता के साथ व हिम्मत के साथ मतलब सिद्ध करने वाला अन्त में कुछ मजबूत शक्ति को पा लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न के तीसरे

नं० १०५९

११ ९
रा १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली तथा बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला भाई के स्थान में कुछ हानि व क्लेश का योग पाने वाला और अपने पुरुषार्थ बल से नाजायज फायदा उठाने वाला और हमेशा

अपने को जीत में रखने का मार्ग बनाने वाला और अपनी हिम्मत शक्ति पर कभी २ आघात सहने वाला और अपनी प्रभाव वृद्धि करने के लिये बड़ी भारी गुप्त युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला और अपने पुरुषार्थ कार्य में भलमनसाहत दिखा कर चतुराइयों से मतलब सिद्ध करने वाला बड़ा भारी होशियार व सावधान शक्ति वाला तेज तर्रार होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से चौथे स्थान

नं० १०६०

में हो तो वह मनुष्य माता का कष्ट सहने वाला और मातृस्थान का वियोग सहने वाला भूमि स्थान में अर्थात् रहने के स्थान में कुछ कमी पाने वाला और सुख के साधनों में भी कमी पाने वाला आमोद प्रमोद का भी अभाव पाने वाला और सुख शांति पर कभी कभी गहरा आघात सहने वाला किन्तु सुख की मजबूती को पाने के लिये बड़ा बड़ा युक्ति पूर्ण कर्म करने वाला छिपी शक्ति का सहारा पाने वाला और सुख के अधूरे वातावरण में भी कुछ विशेष मजबूती पाने वाला और दूसरों के सुख से भी सुख का फायदा थोड़े एवं जाने में उठाने वाला तथा सुख की पूर्ण मजबूती चाहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से पांचवें स्थान

नं० १०६१ में हो तो वह मनुष्य सन्तान पक्ष में कष्ट उठाने वाला विद्या में कुछ कमी पाने वाला और विद्या के आन्तरिक तत्त्व को ग्रहण करने वाला जिस विद्या के बल से परम शांति को प्राप्त कर सके उसे प्राप्त करने वाला किन्तु विद्या बुद्धि की शक्ति में कुछ अधरे पन का योग पाने से कभी कभी बड़े दुःख का अनुभव करने वाला और कुछ थोड़ा नशा चाहने वाला और बात चीतों के अन्दर व बोल चाल में बड़ी सफाई दिखाने वाला और कुछ रूखे-पन से बड़ी चतुराई से बोलने वाला और झूठ सत्य का विचार न रख कर स्वार्थसिद्ध करने की तथा अपनी बात बड़ी करने की बातें कहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से छठे स्थान नं० १०६२ में हो तो वह मनुष्य बड़ा जबरदस्त प्रभाव शाली शत्रु का दमन करने वाला और महान् विजय को प्राप्त करने वाला और महान् विवेक व चतुराई से कूट नीति के द्वारा उन्नति को पहुंचने वाला और बड़ी हेंकड़ी व लापरवाही से काम कर निकालने वाला और बड़ी से बड़ी दिक्कतों की परवाह न करने वाला रोग को दबाने वाला और ननसाल पक्ष में प्रभाव पाने वाला और महान् स्वार्थ सिद्ध करने के लिये बड़ी भारी दृढ़ता से

काम लेने वाला और शील सन्तोष का उलंघन करने वाला और निर्भय रहने वाला तेज तर्राक होता है ।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से सातवें स्थान नं० १०६३ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में बड़ी भारी हानि का योग पाने वाला अथवा स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट व क्लेश पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में भी कमी व क्लेश पाने वाला और रोजगार के दायरे में बडा कंटक उठाने वाला रोजगार में हानि पाने वाला और कुछ अधिक फायदा रोजगार के सीमित दायरे से उठाने की कोशिश करने वाला गृहस्थ के सम्बन्ध में मानसिक चिन्ताओं का बड़ा सामना करने वाला और भोगादिक पक्ष में कुछ अव्यवस्थित होकर कुछ अनधिकार फायदा उठाने की चेष्टा करने वाला चंचल चित्त होता है ।

जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से आठवें स्थान नं १०६४ में हो तो वह मनुष्य नाभी के नीचे पेट के अन्दर बीमारी व परेशानी पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में क्लेश अनुभव करने वाला आयु के ऊपर बड़े बड़े आघात सहने वाला और आयु में कमजोरी महसूस करने वाला और पैत्रिक धन व पुरातत्त्व की हानि करने वाला

और गुप्त व गहरी चालों को कठिन रीत से प्रयोग करने वाला आने जाने के विदेश आदि के सम्बन्ध में क्लेश सहने वाला और धन की वृद्धि के लिये बड़ी बड़ी युक्तियां लगाने वाला और जीवन के निर्वाहक संबंध के लिये कुछ न कुछ शक्ति महान् परिश्रम से प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से नवम स्थान नं० १०६५ में हो तो वह मनुष्य अपने भाग्य के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता पाने वाला एवं भाग्य की उन्नति के लिये बड़ी बड़ी युक्तियों से काम करने वाला और भाग्य के ऊपर कभी २ कोई बड़ा धक्का भी सहने वाला तथा भाग्य की उन्नति के लिये बड़ी हिम्मत से जोखम उठाकर व परिश्रम सहकर काम करने वाला और धर्म की यथार्थता में कुछ कमी पाने वाला तथा बाहरी धर्म का अच्छा पालन करने वाला और भाग्य की मजबूती को किसी न किसी तरीके से कुछ न कुछ प्राप्त ही कर लेने वाला बड़ा चतुर चालाक होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से दसवें स्थान नं० १०६६ में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ अशांति व कमी का योग पाने वाला तथा व्यापार आदि उन्नति के स्थान में कुछ बाधायें पाने वाला किन्तु व्यापार कार्य में बड़ी भारी गुप्त योजनाओं को बड़ी होशियारी के साथ

इस्तेमाल करने वाला और बड़े परिश्रमी मार्ग से जोखमों के साथ उन्नति को प्राप्त करने वाला और राज्यस्थान से सम्बधित कार्यों में कुछ परेशानियां सहकर काम निकालने वाला और अपना प्रभाव कायम रखने के लिये बड़ी २ चतुराइयों से व होशियारिओं से काम करने वाला तथा अपनी इज्जत की मजबूती का बड़ा ख्याल व उपाय रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से ग्यारहवें नं० १०६७ स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत




लाभ पाने वाला तथा अधिक से अधिक प्राप्ति करने के लिये अधिक प्रयत्न करने वाला और धन की प्राप्ति में संतोष न मानने वाला बल्कि धन प्राप्ति के सम्बन्ध में अनधिकार चेष्टा करने वाला और मुफ्त का धन चाहने वाला तथा पाने वाला और धन की स्थिर आमदनी को पाने के लिये बड़ा गूढ़ प्रयत्न करके कुछ न कुछ मजबूती को प्राप्त कर लेने वाला और आमदनी के स्थान मार्ग में कभी २ बड़ी परेशानियों का सामना पाने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि में बड़ी मजबूती से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से बारहवें स्थान

नं० १०६८ में हो तो वह मनुष्य खर्च के संबंध में बड़ी दिक्कतें व परेशानियाँ सहने वाला और ओछे खर्च से काम चलाने वाला और खर्च संचालन शक्ति को कुछ छिपी हुई गुप्त कमजोर क्रियाओं द्वारा प्राप्त करने वाला और दूसरे स्थान के सम्बन्ध में कुछ क्लेशित होने वाला और गलत व अप्रशंशनीय मार्ग से भी खर्च करने वाला और खर्च स्थान की योजनाओं में कुछ कंजूसी भी प्राप्त करने वाला और खर्च स्थान में कुछ बदनामी व संकटों का सामना करते हुये बड़ी पेचीदा युक्तियों से काम निकालने वाला होता है ।

| | | |
|---|---|---|
| ११ | | रा ९ |
| १२ | १० | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५ |

## मकरलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न के पहिले स्थान नं० १०६९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी हठीला अर्थात् सहयोग से काम करने वाला और निर्भयता प्राप्त करने वाला और देह में कुछ कमी व घाव इत्यादि का योग पाने वाला और देह में कुछ परेशानियां भी सहने वाला किन्तु देह में कुछ आन्तरिक मजबूती पाने वाला और अपने को नामवर करने के लिये बदनामियों की परवाह न करने

| | | |
|---|---|---|
| ११ | | ९ |
| १२ | १० के | ८ |
| १ | | ७ |
| २ | ४ | ६ |
| ३ | | ५ |

वाला और मुसीबतों की भी परवाह न करने वाला देह में वासना रखने वाला और लौकिक उन्नति के लिये गुप्त शक्ति से काम निकालने वाला और चेहरे की कुछ सुन्दरता की कमी का दुःख महसूस करने वाला स्वार्थ युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न से दूसरे स्थान नं० १०७० में हो तो वह मनुष्य धन के पक्ष में कुछ कमी पाने वाला तथा धन वृद्धि के लिये बड़ी भारी हठधर्मी से काम लेने वाला और धन की आन्तरिक मजबूती को स्थाई रूप में पाने के लिये बड़ा कठिन प्रयत्न करने वाला तथा बड़ी भारी जोखम सहने वाला और धन स्थान में कभी २ बड़े संकट का सामना पाने पर भी हिम्मत व गुप्त शक्ति के बल से पार होने वाला और धन की कुछ न कुछ स्थाई शक्ति को पा लेने वाला और कुटुम्ब में क्लेश व कमजोरी का योग पाने वाला और अप्रत्यक्ष रूप से फायदा उठाने के बाद प्रत्यक्ष होने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से तीसरे स्थान नं० १०७१ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी पुरुषार्थी तथा बड़ा भारी मेहनत करने वाला और बड़ी भारी हिम्मत से काम करने वाला बहिन भाइयों की हानि व कमी पाने वाला तथा महान् कठिन से कठिन कार्य को सफल करने

के लिये बहादुरी के साथ आगे बढ़ने वाला और बड़ी २ असफलताओं का सामना पाने वाला किन्तु आन्तरिक धैर्य की मजबूती पाने वाला और बड़ी पेचीदा चालों के द्वारा कुछ न कुछ स्थिर शक्ति को पाने वाला और अपनी भुजाओं के बल पर भरोसा करने वाला किन्तु अपनी शक्ति के अन्दर कुछ कमी महसूस करने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से चौथे स्थान नं० १०७२ में हो तो वह मनुष्य मातृपक्ष में अर्थात् माता के सुख में कमी पाने वाला और मातृभूमि व जन्म-भूमि से अलहदगी का योग पाने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों की कमी व अशांति पाने वाला तथा बहुत प्रकार के दुःखों का सामना पाने वाला किन्तु दुःखों के मार्ग में बड़े धैर्य से काम लेने वाला और मकानादि व रहने के स्थानों में भी कुछ कमी व कंटक का योग पाने वाला और सुख के सम्बन्ध में स्थाई व स्थिर शक्ति को प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी हिम्मत व गुप्त चतुराइयों से काम लेकर कुछ मजबूत सफलता को पाने वाला होता है।

११ ९ १२ १० ८ १के ७ २ ४ ६ ३ ५

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से पांचवें स्थान नं० १०७३ में हो तो वह मनुष्य बड़ी स्थिर बुद्धि से तथा आन्तरिक ज्ञान से काम लेने वाला और विद्या ग्रहण करने में कठिनाईयाँ पाने वाला किन्तु बड़े धैर्य के साथ विद्या ग्रहण करने वाला और विद्या के सम्बन्ध में कुछ कमी

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २के ४ ६ ३ ५

व असफलताओं का सामना पाने पर भी कुछ मजबूती को प्राप्त कर लेने वाला और बोल चाल व बात चीतों में कुछ सफाई व सुन्दरता की कमी पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ कष्ट सहन करने वाला दिमाग के अन्दर कुछ अशांति का योग पाने वाला और सत्य असत्य की परवाह न कर के गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला और शत्रु पक्ष से क्लेशित होकर शत्रु को भेद युक्ति से छिपाव के साथ हानि पहुंचाने वाला और गुप्त से भी गुप्त पेचीदा तरकीबों से प्रभाव पाने वाला और अपनी युक्त बल को तथा शक्ति को नाजायज तौर से इस्तेमाल करने के कारण से कुछ निन्दा भी प्राप्त करने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के लिये किसी भी बुराई भलाई की परवाह न करने वाला और ओछी चाल से रोग तथा मुसीबतों को शिकिस्त देने वाला बहुत गुप्त शक्ति वाला निडर होता है।

नं० १०७४

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३के ५

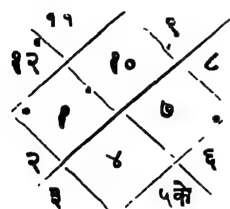
जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में बड़ा कंटक व हानियां पाने वाला और गृहस्थ के झंझटों से बड़ी परेशानी महसूस करने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी बड़ी विफलतायें व हानियां पाने वाला और इन्द्रियों के

नं० १०७५

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४के ६ ३ ५

व भोगादिक पक्ष में बड़ी खराबियां पाने वाला अर्थात् झंझटें सहने वाला और फिर भी बड़ी मजबूती व हिसाब से काम लेने वाला और रोजगार की बड़ी बड़ी मुसीबतों को सहते रहने पर भी निराशाओं में आशा को पकड़ने वाला तथा गुप्त हिम्मत की शक्ति से काम करने वाला और मानसिक आघात सहते हुए किसी मजबूत लाइन का आन्तरिक फायदा पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से आठवें स्थान नं० १०७६ में हो तो वह मनुष्य नाभी के नीचे पेट के अन्दर खराबी या दिक्कतें सहने वाला और जीवन की दिनचर्या में परेशानियां सहने वाला और आयु के ऊपर बड़े बड़े आघात सहने वाला पुरातत्त्व की संचित शक्ति की हानि पाने वाला और आयु के भविष्य सम्बन्धित विचारों के कारणों से चिन्ता का योग पाने वाला और गुप्त से गुप्त खतरनाक शक्ति को धारण करने वाला और जीवन काल में कुछ स्थाई सहारा पाने के लिये बड़े बड़े कठिन परिश्रम सह कर किसी प्रभावशाली कठिन शक्ति को प्राप्त करने वाला और आनें जाने व मुसाफिरी के सम्बन्ध में कष्ट अनुभव कर सकने वाला होता है।




जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से नवम स्थान

नं० १०७७ में हो तो वह मनुष्य भाग्य के स्थान में कुछ परेशानियां सहने वाला और धर्म के पालन करने में कुछ आन्तरिक कमजोरी पाने वाला तथा धर्म के बाहरी अंग में कुछ मजबूती रखने वाला और भाग्य की मजबूती के लिये कठिन से कठिन प्रयत्न करने वाला तथा भाग्योदय काल में देरी पाने वाला और बड़ी भोले पन के ढंग से व गुप्त शक्ति के बल से धैर्य के साथ भाग्य की मजबूती का स्थिर साधन पाने वाला और कुछ वास्तविक सुयश में कमी पाने वाला धर्म के स्थान में स्वार्थ युक्त होकर पालन करने में श्रद्धा रखने वाला अर्थात् पूर्ण धर्म का पालन न कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का केतु लग्न से सातवें स्थान नं० १०७८ में हो तो वह मनुष्य पिता के स्थान में कुछ कंटक पाने वाला और पिता का अधूरा सुख प्राप्त करने वाला व्यापार आदि कार बार में परेशानियां सहने वाला और व्यापार की उन्नति के लिये बड़े २ कठिन प्रयास व परिश्रम करने वाला और बड़ी गुप्त युक्तियों को महान् चतुराइयों से कार्य रूप में परिणत करके उन्नति पाने वाला और उन्नति के मार्ग में बड़ी २ असफलताओं का सामना होने पर भी बड़ी भारी हिम्मत से काम

लेने वाला और अंधविश्वास और धैर्य की शक्ति से आगे बढ़ने वाला और राज सम्बन्ध में कुछ परेशानी व शक्ति से काम लेने वाला स्वार्थ युक्त कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत लाभ पाने वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़े बड़े कठिन कार्य बड़ी दिलेरी के साथ में करने वाला और मुफ्त का साधन भी प्राप्त करने वाला तथा मुफ्त का धन प्राप्त करने के लिये बड़ा भारी उद्योग भी करते रहने वाला और हर एक मामले में वित्त से ज्यादा मुनाफा पाने की चेष्टा करने वाला और अधिक धन प्राप्त करने के लिये गुप्त युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला और आवश्यक आमदनी से भी सन्तुष्ट न रहने वाला और आमदनी की स्थिर मजबूती को कुछ न कुछ पा लेने वाला तथा स्वार्थ युक्त रहने वाला होता है।

नं० १०७९

११   ९
१२   १०   ८के
१   ७
२   ४   ६
३   ५

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अन्धा धुन्दी से बड़ा भारी खर्च करने वाला और बाहरी स्थान से सम्बन्धित महान् शक्ति को प्राप्त करने वाला और खर्च की बड़ी भारी मजबूत शक्ति को पाने वाला और बड़ी भारी दिलेरी व

नं० १०८०

११   ९के
१२   १०   ८
१   ७
२   ४   ६
३   ५

जोरदारी से खर्च की संचालन क्रिया को करते रहने वाला और खर्च के महान् वेग को न रोक सकने वाला और बाहरी लोगों के सम्पर्क में बड़ी भारी साहस और अन्ध विश्वास से काम लेने वाला तथा प्रभाव रखने वाला और बड़ी भारी गुप्त शक्ति के बल से और युक्तियों से खर्च की शक्ति और बाहरी सम्पर्क की शक्ति की स्थिरता को प्राप्त करने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का सूर्य लग्न के पहिले स्थान नं० १०८१ में हो तो वह मनुष्य प्रभावशाली

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ११ सू | १० |
| १ | | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

स्त्री पाने वाला और प्रभाव का रोजगार करने वाला तथा देह में कुछ कमजोरी पाने वाला और भोग विलास की शक्ति पाने वाला तथा रोजगार की लाइनों में भरपूर शक्ति से काम करने वाला और स्त्री को कुछ थोड़ी सी वैमनस्यता के साथ बहुत महानता देने वाला और स्त्री का प्रभाव व हवाव महसूस करने वाला तथा लौकिक व दैनिक कार्यों को

बड़ी महानता और प्रभाव के साथ पूरा करने वाला, तथा मान प्राप्त करने वाला और बड़ी तेज़ी रखने वाला और बड़े २ काम करते रहने पर भी कुछ अलकसाहट मानने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान

नं० १०८२  में हो तो वह मनुष्य रोजगार की लाइन से धन पैदा करने वाला और धन की शक्ति से खूब रोजगार करने वाला और प्रभाव शक्ति से रोजगार तथा धन की वृद्धि करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ बन्धन पाने वाला

१२सू १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

तथा भोगादिक पक्ष में भी कुछ बन्धन व अधिकता का योग पाने वाला और अपने दैनिक कार्यक्रम की शक्ति से जीवन की दिनचर्या में कुछ प्रभाव और प्रकाश पाने वाला और गूढ़ युक्तियों के सम्बन्ध में तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी प्रकाश मार्ग पाने वाला और कीमती कार्य करने वाला कुटुम्बी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान

नं० १०८३  में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी रोजगार करने वाला तथा दैनिक कार्य बड़े भारी प्रभाव के साथ करने वाला और बड़े भारी प्रभाव की स्त्री पाने वाला और गृहस्थ की व भाई की शक्ति की महानता पाने वाला तथा

१२ १० १सू ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

बड़ी भारी पुरुषार्थ शक्ति रखने वाला और स्त्री भोगादिक

की अधिकता पाने वाला और बड़ी भारी दौड़ धूप करने वाला तथा भाग्य में कमज़ोरी पाने वाला और धर्म में कमी पाने वाला व यश में भी कमी पाने वाला और पुरुषार्थ के मुकाबिले भाग्य की शक्ति को कमजोर मानने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से चौथे स्थान

नं० १०८४

में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान की तरफ से कुछ सुख उठाने वाला और रोजगार की तरफ से भी कुछ सुख साधन पाने वाला और स्त्री की तरफ से मातृ स्थान के सम्पर्क में कुछ वैमनस्यता पाने वाला एवं स्त्री के प्रभाव के कारणों से सुख स्थान में कुछ कमी महसूस करने वाला और रोजगार की लाइन से प्रभाव तथा मान सन्मान प्राप्त करने वाला तथा ससुराल पक्ष में मान पाने वाला और पिता स्थान से सहायक सम्पर्क रखने वाला और दैनिक रोजगार की तरफ से राज समाज से फायदा पाने वाला और उन्नति के लिये बराबर कर्म करने का ध्यान रखने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान

नं० १०८५

में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के प्रभाव से रोजगार करने वाला तथा बुद्धिमान् स्त्री पाने वाला तथा प्रभावशाली चतुर संतान पाने वाला और रोजगारिक प्रभावशाली विद्या प्राप्त करने वाला और बड़े काम को प्रभाव से

बातें करने वाला तथा बुद्धि योग के द्वारा खूब लाभ पाने वाला और दिमाग के अन्दर काम वासनाएं रखने वाला तथा ससुराल से व स्त्री से बुद्धि के परामर्श का लाभ पाने वाला व तेजी से बोलने वाला और लाभ प्राप्ति के लिये बराबर ध्यान व चिन्तन करने वाला और लौकिक व दैनिक कार्यों की योग्यता का बड़ा अनुभव रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से छठे स्थान नं० १०८६ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान से बड़ी प्रभाव शक्ति पाने व रखने वाला एवं स्त्री से कुछ झगड़ा भी पाने वाला और स्त्री व ससुराल के योग से दिक्कतों व परेशानियों को हटाने में सहायता पाने वाला तथा रोजगार में कुछ दिक्कतें सहने वाला तथा रोजगार की लाइन से प्रभाव पाने वाला और बिपत्ति नाशक प्रभावशाली प्रकाश देने वाला रोजगार करने वाला और शत्रु तथा मुसीबतों पर विजय पाने वाला और शादी के सम्बन्ध में कुछ ननसाल का भी सहयोग पाने वाला और अधिक खर्च करने में कडत्रास पाने वाला और लौकिक व दैनिक कार्यों में चालू रिवाज की परवाह न करके गहराई के महत्त्व को पकड़ने वाला होता है।




जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से सातवें

नं० १०८७ स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली रोजगार करने वाला तथा प्रभावशाली स्त्रीं पाने वाला और रोजगार से बड़ी प्रभावशक्ति पाने वाला और देह में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और भोगादिक पक्ष में बड़े प्रभाव और ठाट से काम लेने वाला तथा लौकिक व दैनिक कार्यों को बड़ी भारी मुस्तैदी व प्रभाव के साथ पूरा करने वाला और गृहस्थ के अन्दर बड़ी भारी प्रभाव शक्ति रखने वाला और ससुराल की बड़ी शक्ति पानें वाला और समाज के अन्दर चामत्कारिक कार्य करने वाला और भोगादिक सम्बन्ध से कुछ अशांति पाने वाला होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११ | | ९ |
| २ | | ८ | |
| ३ | ५ सू | | ७ |
| ४ | | ६ | |

जिस व्यक्ति का कन्या का सूर्य लग्न से आठवें स्थान

नं० १०८८ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में अशांति व क्लेश का योग पाने वाला और भोगादिक पक्ष में कमी पाने वाला ससुराल की कमजोरी पाने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी बड़ी परेशानियां व परिश्रम सहने वाला और विदेश आदि का सम्बन्ध भी रोजगार में सहने वाला और गृहस्थ के सम्बन्ध में कुछ विछोह व कुछ कष्ट अनभव करने वाला और रोजगार के सम्बन्ध में कुछ गूढ़ व प्रभावशाली योजनाओं से काम लेने वाला तथा धन वृद्धि के लिये बड़ा भारी परिश्रम व ख्याल करने वाला कुछ गूढ़ इन्द्रिय विकार वाला होता है

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११ | | ९ |
| | | ८ | |
| ३ | ५ | | ७ |
| ४ | | ६ सू० | |

जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से नवम स्थान
नं० १०८९ में हो तो वह मनुष्य स्त्री पक्ष से भाग्य



में कमजोरी महसूस करने वाला तथा रोजगार की तरफ से भी भाग्य में कमजोरी अनुभव करने वाला और धर्म के पालन में भी कमजोरी का योग पाने वाला और भाग्य की दुर्बलता से अशांति पाने वाला और भाग्य की उन्नति में गृहस्थी के दैनिक कार्यों से रुकावटें पाने वाला और पुरुषार्थ की उन्नति करने वाला तथा भाग्य के मुकाबले पुरुषार्थ को महत्त्व देने वाला बहिन भाई की शक्ति पाने वाला और भोगादिक पक्ष में कमी पाने वाला और लौकिक व धार्मिक कार्यों में एक साथ चलने से दोनों में से एक का भी पूरा पालन न कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का सूर्य लग्न से दसवें
नं० १०९० स्थान में हो तो वह मनुष्य दैनिक



रोजगार को बहुत बड़े ढंग से बड़े प्रभाव के साथ करने वाला और रोजगार की लाइन से बड़ा प्रभाव व मान पाने वाला और स्त्री व ससुराल की शक्ति से भी मान पाने वाला तथा प्रभावशाली स्त्री व भोग पाने वाला और पिता स्थान से रोजगार तथा प्रभाव पाने वाला और राज स्थान में मान पाने वाला तथा बड़ा भारी इन्तजामी काम करने वाला और लौकिक व सामाजिक कार्यों की बड़ी शान-

दारी व प्रभाव के साथ करने वाला और गृहस्थी के अन्दर बड़ा भारी गौरव व प्रभाव रखने वाला तथा मातृस्थान में व सुख स्थान में कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का सूर्य लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० १०९१ में हो तो वह मनुष्य दैनिक रोजगार से खूब धन कमाने वाला और रोजगार में प्रभाव पाने वाला और स्त्री स्थान की बड़ी भारी शोभा पाने वाला तथा स्त्री व ससुराल के कारणों से बड़े प्रभाव के साथ धन लाभ भी पाने वाला और भोगादिक पक्ष में बहुत लाभ व प्रभाव पाने वाला और सन्तान का लाभ पाने वाला विद्या का लाभ पाने वाला और बहुत लाभ प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़े प्रभाव से बात-चीत कर के लाभ पाने वाला और गृहस्थ का अनुपम लाभ पाने वाला तथा लौकिक कार्यों में बड़ी प्रवीणता व प्रभाव रखने वाला और दिमाग में तेजी रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का सूर्य लग्न से बारहवें स्थान

नं० १०९२ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में हानि पाने वाला और रोजगार में हानि पाने वाला तथा भोगादिक पक्ष में बड़ी कमी पाने वाला गृहस्थ में बड़ी हानि व अशांति पाने वाला और प्रभाव में कमी पाने वाला और रोजगार के

सम्बन्ध में अन्य स्थान का कुछ कटु सम्बन्ध पाने वाला और खर्च स्थान में कुछ कड़वास पाने वाला तथा भोगादिक पक्ष में कुछ अन्य स्थान का सहारा पाने वाला और शत्रु स्थान पर प्रभाव रखने वाला विपत्तियों तथा रोगादिक परेशानियों पर विजय पाने वाला और लौकिक कार्यों में चतुराई की कमी पाने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरचन्द्रफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का चन्द्र लग्न के पहिले स्थान नं० १०६३ में हो तो वह मनुष्य पक्ष में मनोयोग

| | | |
|---|---|---|
| १ | १२ | १० |
| | ११चं | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

की शक्ति से मान पाने वाला तथा देह में कुछ परेशानियां व सर्द रोग और मन में कुछ विकार तथा शक्ति पाने वाला और ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति पाने वाला मनोयोग की पेचीदा व आदर्श शक्ति का बल अपने अन्दर रखने वाला और कुछ घिराव से रहने वाला तथा स्त्री से कुछ मानसिक झगड़े का कुछ परेशानी का योग पाने वाला और रोजगार की लाइन में कुछ मनोयोग की गुप्त चतुराइयों से व परिश्रम से काम लेने वाला कुछ झंझट युक्त प्रभावशाली गुप्त गुस्से वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान नं० १०९४ में हो तो वह मनुष्य मनोयोग की महान् शक्ति के बल से धन प्राप्त करन वाला और धन संग्रह करने वाला और बड़ी युक्तियों से व परिश्रम से इज्जत बनाने वाला और धन स्थान में कभी २ कुछ नुक्सान का भी योग पाने वाला और मालदार ननसाल पक्ष वाला तथा कुटुम्ब में कुछ विग्रह पाने वाला और धन के प्रभाव से अर्थात् अमीरी के ढंग से शत्रु पर प्रभाव रखने वाला और मन के ऊपर कुछ बधन व परेशानी का योग पाने वाला और आयु के समय को शानदारी से व्यतीत करने वाला तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में मनोयोग की गूढ़ शक्ति से काम लेने वाला और झंझटों से फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान नं० १०९५ में हो तो वह मनुष्य मनोयोग के बल से महान् पुरुषार्थ करने वाला तथा बड़े उत्साही परिश्रम के द्वारा बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला और प्रभाव की शक्ति से शत्रु को दबा लेने वाला तथा बड़ी भारी हिम्मत और पेचीदा तरकीबों से उन्नति पर चढ़ने वाला और भाई के पक्ष में वैमनस्य पाने वाला तथा भाग्य की उन्नति

के लिये बड़े भारी परिश्रम और प्रभाव से काम लेने वाला तथा धर्म के सम्बन्ध में बड़ा ध्यान रखने वाला और मन के अन्दर उन्नति का महान् उत्साह रखने वाला तथा बड़ी दौड़ धूप करने वाला शक्तिवान् होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का चन्द्र लग्न से चौथे स्थान नं० १०९६ में हो तो वह मनुष्य शत्रु पक्ष की जरा भी परवाह न करने वाला और सुख शांति में कुछ बाधायें पाने वाला और मातृस्थान में कुछ मनोयोग का विशेष झंझट पाने वाला तथा कुछ भूमि स्थान से प्रभाव पाने वाला




और ननसाल पक्ष की सुख शक्ति का अनुभव करने वाला और मान तथा उन्नति के सम्बन्ध में मन से कमजोरी महसूस करने वाला और व्यापार आदि राज सम्बन्ध में भी कुछ परेशानी या कमजोरी महसूस करने वाला और मनोयोग शक्ति के महान् प्रपंच से सुख अनुभव करने वाला बड़ा लापरवाह होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का चन्द्र लग्न से पांचवें स्थान न० १०९७ में हो तो वह मनुष्य सन्तान पक्ष में कुछ झंझट अनुभव करने वाला और विद्या में कमी पाने वाला तथा बुद्धि में कुछ परेशानी अनुभव करने वाला और दिमाग के अन्दर मनोयोग की गूढ़ शक्ति से फायदा उठाने वाला




तथा कुछ पेचीदा चालों से प्रभाव की रक्षा तथा शत्रु से

बचाव पाने वाला और मन के अन्दर गुप्त डर व आशंकाएं पाने वाला और हर एक किस्म की मुसीबतों से बचने के लिये मन के अन्दर बड़े गहरे सोच विचार करने वाला और धन के लाभ के लिये बड़ी बड़ी तरकीबें सोचने वाला और अशांत युक्त भ्रमित बुद्धि वाला और हेर फेर से बातें रने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का चन्द्र लग्न से छठे स्थान नं० १०९८ में हो तो वह मनुष्य मनोयोग की स्थिर शक्ति से बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा शत्रु पक्ष में चौकस सावधान तथा विजयी रहने वाला और नन-साल पक्ष की शक्ति का सौंदर्य देखने वाला और मन में कुछ घिराव व निर्भयता पाने वाला मुसीबतों को परवाह न करने वाला तथा अधिक खर्च करने वाला और मन के अन्दर गूढ़ युक्तियों की महान् शक्ति से प्रसन्न तथा बे फिकर रहने वाला और बड़ी आग से काम लेने वाला और अन्य स्थान के सम्बन्ध में प्रभाव पाने वाला तथा खर्च में प्रभाव से काम लेने वाला बड़ा दाना दुश्मन होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११ | | ९ |
| २ | | ८ | |
| ३ | ५ | | ७ |
| ४चं | | ६ | |

जिस व्यक्ति का सिंह का चन्द्र लग्न से सातवें स्थान नं १०९९ में हो तो वह मनुष्य मनोयोग की परेशानियों से व परिश्रमों से रोजगार करने वाला और स्त्री स्थान में कुछ झगड़ा वैमनस्य तथा कुछ परेशानियां पाने वाला और स्त्री भोगादिक पक्ष में कुछ कमी पाने वाला

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११ | | ९ |
| २ | | ८ | |
| ३ | ५च | | ७ |
| ४ | | ६ | |

किन्तु मनोयोग से भोग का अधिक चिन्तन करने वाला और भोग के सम्बन्ध में कुछ युक्तियों से भी काम लेने वाला तथा देह में कुछ बन्धन या परेशानी भी महसूस करने वाला और स्त्री पक्ष में शीतला रोग की शिकायत पाने वाला और रोजगार के स्थान में कुछ परतंत्रता या कुछ कमजोरी के साथ २ तरकीबों से काम करने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का कन्या का चन्द्र लग्न से आठवें स्थान

नं० ११००. में हो तो वह मनुष्य शत्रु पक्ष में कुछ परेशानियां सहने वाला और प्रभाव में कुछ कमजोरी होने पर भी जीवन के समय को कुछ दुःख सहते रह कर भी प्रभावशाली बनाये रखने वाला और कुछ थोड़ा सा उदर विकार पाने वाला तथा पुरातत्त्व पैत्रिक विभूति में कुछ कमी व क्लेश पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बड़ी २ कोशिशें करने वाला और मनोबल के जरिये गूढ़ से भी गूढ़ युक्तियों को जानने वाला तथा गुप्त शक्ति का मन के अन्दर बल रखने वाला और ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला तथा अशांत मन वाला होता है ।

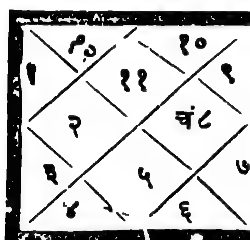
जिस व्यक्ति का तुला का चन्द्र लग्न से नवम स्थान

नं० ११०१ में हो तो वह मनुष्य भाग्य के स्थान में कुछ फिकर मन्दी का योग पाने वाला और मनोबल तथा भाग्य की शक्ति से शत्रु पर प्रभाव रखने वाला और धार्मिक प्रपञ्च का कुछ कार्य करने वाला तथा धर्म की यथार्थता में कुछ कमी या

दिक्कतें पाने वाला और मनोयोग के उत्तम तथा पेचीदा तरकीबों से उन्नति का मार्ग पाने वाला और पुरुषार्थ व परिश्रम से कार्य करने वाला बहिन तथा भाई के पक्ष में कुछ वैमनस्य पाने वाला और ननसाल पक्ष की कुछ भाग्यवानी पाने वाला तथा शत्रुओं से मित्र सम्बन्ध रखने वाला क्षमा शान्ति युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का चन्द्र लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान से बड़ी अशांति अनुभव करने वाला और उन्नति के मार्ग में बड़ी बड़ी दिक्कतें व हानियां तथा परेशानियां पाने वाला और राज्य मान प्रतिष्ठा आदि के स्थान में बड़े बड़े धक्के और आघात

नं० ११०२




सहने वाला तथा मातृस्थान में तथा भूमि के सम्बन्ध में कुछ बहुत प्रपञ्च तथा युक्ति बल से बुद्धि को प्राप्त करने वाला और बहुत प्रकार के सुख के साधनों को परम मुश्किलातों से प्राप्त करने वाला और मनोयोग के महान् परिश्रम से युक्तियों द्वारा बहुत हेर फेर के बाद तरक्की पर पहुंचने वाला और शत्रु से अशांति अनुभव करने वाला तथा पूर्व संचित पापों का प्रायश्चित करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का चन्द्र लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० ११०३ में हो तो वह मनुष्य मनोयोग के सुन्दर परिश्रम से बहुत लाभ पाने वाला और मनोयोग की सुन्दर नीति तथा चालों से शत्रु को दबाकर फायदा उठाने वाला और ननसाल पक्ष से फायदा उठाने वाला और लाभ तथा प्राप्ति के स्थान में कुछ मानसिक झंझट तथा कुछ परेशानियां महसूस करने वाला तथा कुछ मुफ्त का सा धन चाहने वाला और संतान पक्ष में कुछ परेशानी महसूस करने वाला विद्या स्थान में कुछ कमी पाने वाला किन्तु बुद्धि में चतुराइयों से काम लेने वाला तथा गुप्त चालों से मगन रहने वाला रोग दोष की परवाह न करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का चन्द्र लग्न से बारहवें स्थान नं० ११०४ में हो तो वह मनुष्य शत्रु स्थान में कमजोरी पाने वाला और प्रभाव में कमजोरी पाने वाला और शत्र पक्ष में अशांति की प्राप्ति के डर से छिपी युक्तियों से काम लेने वाला तथा अधिक खर्च से परेशानी पाने वाला किन्तु फिर भी खर्च स्थान से प्रभाव रखने वाला और अन्य दूसरे स्थान से व मनोयोग से प्रभाव की रक्षा करते रहने वाला और ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला तथा

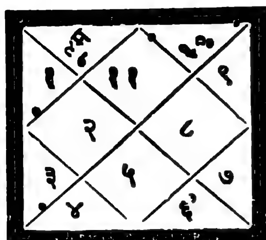
बाहरी स्थान में कुछ परेशानियां महसूस करने वाला तथा मन के अन्दर अशांति व दुर्बलता का योग पाने वाला और कुछ झगड़े आदि बीमारियों में खर्च करने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरभौमफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का मंगल लग्न के पहिले स्थान नं० ११०५ में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के पुरुषार्थ बल से उन्नति करने वाला और बड़ी भारी कर्म शक्ति व हिम्मत से काम लेने वाला भाई व पिता का सम्बन्ध कुछ सामान्य रूप से प्राप्त करने वाला और माता के पक्ष में भी सामान्य शक्ति को कुछ अलकसाहट से पाने वाला और कुछ भूमि की शक्ति पाने वाला रोजगार में तरक्की करने वाला और देह में कुछ गर्मी का विकार पाने वाला राज समाज से सम्बन्धित कुछ अच्छाई व मान पाने वाला स्त्री पक्ष में कुछ क्लेश व कुछ सहायक शक्ति को प्राप्त करने वाला और कुछ वीर्य दोष पाने वाला और जीवन की दिनचर्या को बड़े रौब के साथ व्यतीत करने वाला तथा मान पाने वाला व कुछ पुरातत्त्व की शक्ति पाने वाला होता है।

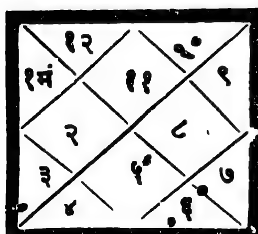
१२ १० १ ११म ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का मीन का मंगल लग्न से दूसरे स्थान नं० ११०६ में हो तो वह मनुष्य इज्जत प्राप्त




करने वाला पिता की कुछ शक्ति का सहारा पाने वाला और भाई का कुछ बंधन सा पाने वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़े बड़े शक्ति शाली कर्म व मेहनत करने वाला और धर्म कर्म का कुछ ध्यान रखने वाला जीवन की दिनचर्या में मान प्रतिष्ठा आदि का ख्याल रखने वाला और विद्या शक्ति प्राप्त करने वाला तथा कुछ सन्तान शक्ति पाने वाला और बुद्धि व वाणी के द्वारा उन्नति के लिये बड़े प्रभाव व शान्ति से काम लेने वाला और भाग्य की उन्नति के लिये भरपूर प्रयत्न व कोशिश सदैव करते रहने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मेष का मंगल लग्न से तीसरे स्थान नं० ११०७ में हो तो वह मनुष्य अपने पिता की




महान् शक्ति को पाने वाला और राज समाज में बड़ी भारी हुकूमत व प्रभाव रखने वाला और उन्नति पाने के लिये स्थिर परिश्रम के द्वारा महान् कर्म करने वाला और राज्य की शक्ति को अपने हाथों से संचालन करने वाला ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला और गुप्त शक्ति से शत्रु को हराने वाला राजसी धर्म कर्म का पालन करने वाला तथा भाई की शक्ति पाने वाला बल पुरुषार्थ की वृद्धि पाने वाला

और लम्बी भुजाओं वाला तथा तीव्र और तीक्ष्ण गति से कार्य करने वाला धर्म और भाग्य को थोड़ा मानने वाला बड़ा प्रतापी पुरुषार्थ वादी होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का मंगल लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनें पिता की सहायता शक्ति पाने वाला और माता व भाई का थोड़ा सामान्य सुख प्राप्त करने वाला और अपने पुरुषार्थ कर्म से धीरे धीरे घर बैठे तरक्की करने वाला राज समाज में बड़ा मान प्रतिष्ठा पाने वाला और मकान जायदाद रखने वाला और सुख देने वाला कार्य व व्यौहार करने वाला तथा प्रभावशाली रोजगार करने वाला और स्त्री के पक्ष में प्रभाव रखने वाला तथा स्त्री से प्रभाव पाने वाला और अपने उत्तम व सुखद कर्म के जरिये आमदनी में वृद्धि करने वाला बड़ा प्रभावशाली होता है।

नं० ११०८

| | |
|---|---|
| १२ | १० |
| १ | ११ |
| ९ | २म |
| ८ | ३ |
| ५ | ७ |
| ४ | ६ |

जिस व्यक्ति का मिथुन का मंगल लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य राजसी विद्या का ज्ञान रखने वाला और पिता व भाई का थोड़ा सहरा पाने वाला और खर्च बहुत ज्यादा करने वाला दिमाग़ के अन्दर तेजी व हुकूमत रखने वाला सामान्य तथा अच्छा लाभ पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में बड़ा गौरव व प्रभाव मानने वाला और सन्तान की कुछ शक्ति पाने वाला और कानून

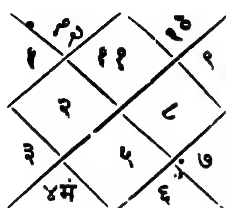
नं० ११०९

| | |
|---|---|
| १२ | १० |
| १ | ११ |
| ९ | २ |
| ८ | ३मं |
| ५ | ७ |
| ४ | ६ |

की बातें करने वाला दूसरे स्थान के सम्पर्क में बड़ी रौनक व मान और प्रभाव पाने वाला और पुरातत्त्व से सम्बन्धित कुछ फायदा उठाने वाला तथा शील का पालन न कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का मंगल लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य पिता और भाई के सम्बन्ध में विरोध व अशांति का योग पाने वाला और कुछ परतंत्रता पूर्वक कर्म करने वाला तथा छिपी हुई कमजोर शक्ति का बल रखने वाला और दुश्मन को धोखे से मारने वाला ननसाल म कमजोरी पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा मान व पद उन्नति में रुकावटें व दिक्कतें पाने वाला और देह में कुछ थकान व मान पाने वाला भाग्य की उन्नति का बड़ा भारी ख्याल व उपाय करने वाला और बाहरी स्थान में कुछ इज्जत पाने वाला और उत्साह में कुछ कमी व आलस्य का योग पाने वाला और महान् पेचीदा युक्तियों को इस्तेमाल करने वाला होता है।

नं० १११०




जिस व्यक्ति का सिंह का मंगल लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत भारी मान प्राप्ति का रोजगार व्यवसाय करने वाला और कारबार के अन्दर स्थाई इज्जत प्राप्त करते रहने वाला तथा राज व समाज की शक्ति व बहिन भाई का योग पाने वाला तथा

नं० ११११



बड़ा इन्तजामी काम करने वाला और कार्य प्रणाली के अन्दर हुकूमत से काम लेने वाला देह में थकान और मान पाने वाला और पिता की सहायक शक्ति का सम्बन्ध पाने वाला धन वृद्धि के लिये बड़ी भारी शक्ति का उपयोग करने वाला और स्त्री स्थान में प्रभाव रखने वाला व स्त्री से प्रभाव पाने वाला और रोजगार की लाइन में नित्य रूप से मेहनत करके महान् कार्य को संभालने वाला बड़ा मुन्तजिम होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का मंगल लग्न से आठवें स्थान

नं० १११२ में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में हानि पाने वाला और बहिन भाई की क्षीण शक्ति पाने वाला और महान् परिश्रम का कार्य करने वाला और विदेश आदि के योग से बड़ी परेशानियों से अपनी शक्ति को पाने वाला और बड़े भारी परिश्रम के योग से आमदनी की वृद्धि करने वाला तथा गुप्त गूढ़ युक्ति बल से तरक्की करने वाला व हिम्मत पाने वाला तथा धन की शक्ति पाने वाला और मान प्रतिष्ठा में कमी पाने वाला और देह में बल वृद्धि के लिये भी साधना करते रहने वाला तथा मेहनत के काम में बराबर लग रहने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव रखने वाला और रहन सहन की पोशाक आदि में कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का मंगल लग्न से नवम स्थान

नं० ११११३ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली तथा भाग्य शक्ति से व पुरुषार्थ शक्ति से उन्नति का योग पाने वाला तथा भाग्य व पुरुषार्थ से ही कार व्यापार में तरक्की करने वाला और धर्म कर्म का भी पालन करने वाला तथा बहुत खर्च करने वाला और बाहरी दूसरे स्थानों के सम्पर्क से मान उन्नति व व्यापार उन्नति का योग पाने वाला और सुख व मकानादि की शक्ति पाने वाला भाई बहिन का योग पाने वाला और पिता स्थान की शक्ति से बड़ा सहारा पाने वाला बल पुरुषार्थ की वृद्धि का खूब ध्यान रखने वाला तथा राज समाज में मान पाने वाला और दैवी शक्ति का सहारा पाने वाला प्रभावशाली होता है।




जिस व्यक्ति का वृश्चिक का मंगल लग्न से दसवें

नं० ११११४ स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी तथा स्वतंत्र कार-बार करने वाला और राज समाज में बड़ा भारी मान पाने वाला पिता की महान् शक्ति पाने वाला और राज समाज का बड़ा भारी काम करने वाला देह में थकान व मान पाने वाला और पुत्र शक्ति की महानता पाने वाला सुख प्राप्ति करने वाला और मकानादि भूमि का योग पाने वाला तथा बड़े भारी प्रभाव और हुकूमत



से काम लेने वाला बाहन भाई की परवाह न रखने वाला और बड़ी २ कीमती पोशाकें पहिनने वाला तथा राज सम्बन्धी विद्या ग्रहण करने वाला दिमाग में व बोल चाल में बड़ी गर्मी रखने वाला बड़ा कानूनबाज होता है ।

जिस व्यक्ति का धन का मंगल लग्न से ग्यारहवें स्थान

नं० १११५ में हो तो वह मनुष्य कार व्यापार से बड़ी भारी आमदनी पाने वाला पिता से बड़ा फायदा पाने वाला और राज समाज से खूब फायदा उठाने वाला भाई की शक्ति पाने वाला और पुरुषार्थ कर्म के प्रभाव से बड़े बड़े उत्तम लाभ पाने वाला और धन संग्रह करने के लिये बड़ी बड़ी भरपूर शक्ति का प्रयोग करने वाला और बुद्धि में तेजी रखने वाला व सन्तान प्राप्त करने वाला और ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला और शत्रु स्थान में गुप्त शक्ति से कामयाबी पाने वाला और वस्त्र आभूषण आदि की शोभा पाने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला प्रभाव शाली होता है ।

| | | |
|---|---|---|
| | १२ | १० |
| १ | ११ | ९ मं |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

जिस व्यक्ति का मकर का मंगल लग्न से बारहवें स्थान

नं० १११६ में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा खर्च करने वाला और पिता स्थान में हानि का योग पाने वाला और भाई का कुछ अजीब सम्बन्ध पाने वाला कार बार में नुकसान करने वाला और अन्य दूसरे स्थान में सफ-

| | | |
|---|---|---|
| | १२ | १० मं |
| १ | ११ | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

लता पाने वाला और खर्च की महान् शक्ति से व दूसरों के सम्बन्ध से मान पाने वाला, और शत्रु स्थान में गुप्त शक्ति से काम लेने वाला और ननसाल पक्ष में कमजोरी पाने वाला तथा खर्च की ताकत से बल स्फूर्ति पाने वाला और स्त्री स्थान में प्रभाव रखने वाला तथा स्त्री से प्रभाव पाने वाला और दैनिक रोजगार में शक्ति पाने वाला तथा प्रभाव वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरबुधफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का बुध लग्न के पहिले स्थान नं० ११३७ में हो तो वह मनुष्य उत्तम आयु पाने

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११बु | | ९ |
| | २ | ८ | |
| ३ | ५ | | ७ |
| | ४ | ६ | |

वाला और आयु का समय अर्थात् दिनचर्या को शान से व्यतीत करने वाला तथा पुरातत्त्व की संचित शक्ति का फायदा पाने वाला विद्या व बुद्धि का विकाश पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ २ अच्छा लाभ पाने वाला और विवेक शक्ति की गूढ़ युक्तियों से महान् बुद्धिमानी का काम करने वाला तथा बड़ी गहरी और गुप्त चालों

को भी आदर्श बना कर काम में लाने वाला देह में कुछ परेशानी सहने वाला और स्त्री से कुछ थोड़ी परेशानी व मित्रता पाने वाला और रोजगार में बड़ी भारी चतुराई से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का बुध लग्न से दूसरे स्थान नं० १११८ में हो तो वह मनुष्य विद्या में कमी पाने वाला संतान पक्ष में बंधन व कमी पाने वाला और धन के कोष में बहुत कमजोरी पाने वाला कुटुम्ब में क्लेश व हानि पाने वाला और बुद्धि व विवेक की कमजोरी के साथ २ पुरातत्त्व के गूढ़ ज्ञान की शक्ति का बड़ा दावा करने वाला और पूर्व संचित धन की हानि करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में बंधनों के होते हुये भी ज़ाहिरा में मस्ती से समय निकालने वाला और आयु में वृद्धि व सामान्यता पाने वाला और बुद्धि विद्या के संकीर्ण मार्ग से जीवन निर्वाह करने वाला तथा बुद्धि की हठयोग, शक्ति से बातें करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का बुध लग्न से तीसरे स्थान नं० १११९ में हो तो वह मनुष्य बुद्धि विद्या में बल प्राप्त करने वाला संतान पाने वाला किन्तु संतान पक्ष में कुछ क्लेश पाने वाला और बहिन भाई से भी कुछ क्लेश और शक्ति पाने वाला तथा आयु में वृद्धि पाने वाला और पैत्रिक

व पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पाने वाला और विवेक शक्ति के महागूढ़ ज्ञान से भाग्य का लाभ व उन्नति पाने वाला और धर्म का बड़ा दिखाकर करने वाला तथा विवेक शक्ति के बल से लौकिक व पारलौकिक विषय परे जोरदारी से बोलने वाला और कहीं भी आने जाने के मार्ग सम्बन्धी मुशाफिरी के मामले में बड़ी हिम्मत व बुद्धि से काम लेने वाला बड़ा लापरवाह होता है।

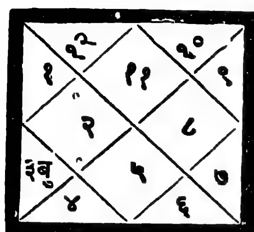
जिस व्यक्ति का वृष का बुध लग्न से चौथे स्थान नं० ११२० में हो तो वह मनुष्य आयु की वृद्धि पाने वाला, जीवन का समय विवेक और आराम के जरिये व्यतीत करने वाला और मातृस्थान में कुछ खर-खसा पाने वाला संतान के सुख में कुछ थोड़ी सी कमी महसूस करने वाला

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ | | १० | |
| १ | ११ | | ९ |
| २ बु | | ८ | |
| ३ | ५ | | ७ |
| ४ | | ६ | |

मकानादि भूमि स्थान में कुछ हानि पाने वाला और पुरातत्त्व शक्ति का पूर्व संचित फायदा उठाने वाला और विद्या ग्रहण करने वाला तथा बुद्धि के अन्दर गूढ़ विवेक की शक्ति से सुख प्राप्त करने वाला जीवन में मनो-रंजन चाहने वाला और पिता स्थान में व मान और व्यापार आदि उन्नति के स्थान में कुछ कष्ट साध्य योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का बुध लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्या बुद्धि रखने वाला

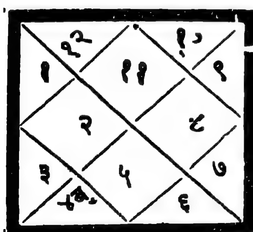
नं० ११२१ सन्तान पक्ष में कुछ खरखसा व शक्ति



प्राप्त करने वाला और सुन्दर आयु वाला तथा बुद्धि की स्थिर शक्ति और गूढ़ विवेक के द्वारा बहुते धन लाभ पाने वाला तथा पाश्चात्य सभ्यता की शक्ति से बातें करने वाला और कायदे की बातों के अन्दर छिपाव शक्ति से काम लेने वाला तथा दूसरों पर बातों का प्रभाव डालने वाला और पुरातत्त्व से फायदा पाने वाला और जीवन की दिनचर्या को बड़ी बुद्धिमानी से व्यतीत करने वाला तथा दिमाग के अन्दर कुछ झंझट सहते रहने वाला कुछ परेशान सा होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का बुध लग्न से छठे स्थान

नं० ११२२ में हो तो वह मनुष्य सन्तान पक्ष



में हानि और क्लेश तथा झंझट सहने वाला और विद्या में कमी पाने वाला तथा बुद्धि में परेशान रहने वाला और जीवन की दिनचर्या में शील और विवेक से काम लेने वाला और आयु के ऊपर बड़े बड़े प्रहार सहने वाला तथा जीवन में अनेक विघ्न बाधायें सहने वाला और अपने जीवन के समय का बन्धन सह कर दूसरों को मित्रवर मान कर जीवन में ढाढ़स देने वाला और बुद्धि के अन्दर बड़ी गूढ़ातिगूढ़ विवेक की शक्ति रखने वाला तथा कुछ उदर विकार की शिकायत पाने वाला और पुरातत्त्व व पूर्वसंचित शक्ति की कमी पाने वाला बड़ा खर्चीला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का बुध लग्न से सातवें स्थान नं ११२३ में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने वाला तथा संतान प्राप्त करने वाला और रोजगार की लाइन में बुद्धि विवेक व परिश्रम तथा गूढ़ युक्तियों से काम करने वाला और पुरातत्त्व का फायदा पाने वाला व स्त्री स्थान में कुछ परेशानी एवं आसक्ति पाने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या को लौकिक व्यवहार व गृहस्थिक कार्यों में व्यतीत करने वाला तथा मान पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में कुछ कमी व कसर महसूस करने वाला और दैनिक कार्य-प्रणाली को महान् चतुराइयों से पूरा करने वाला तथा रोजगार में कभी २ हानियां व दिक्कतें सहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का बुध लग्न से आठवें स्थान नं० ११२४ में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व संबंधी ज्ञान तथा पूर्व संचित धन का लाभ पाने वाला और सुन्दर आयु वाला एवं जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी पाने वाला और विद्या के जरिये धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा बुद्धि के अन्दर लौकिक और अलौकिक विवेक की महान् शक्ति को प्राप्त करने वाला और दूरदर्शिता पाने वाला और धर्म पालने के स्थान में कुछ कमी पाने वाला और

भाग्य के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता पाने वाला और बहिन भाइयों के सम्पर्क में कुछ परेशानी महसूस करने वाला तथा बोल चाल में सज्जनता रखने वाला तथा संतान वाला बड़ा चतुर होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का बुध लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य पुरातत्त्व संबंधी ज्ञान तथा पूर्व संचित धन का लाभ पाने वाला तथा सुन्दर आयु वाला और जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी पाने वाला तथा विद्या के जरिये धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाला तथा बुद्धि के अन्दर लौकिक तथा अलौकिक विवेक की महान् शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा दूरदर्शिता पाने वाला तथा धर्म पालन के स्थान में कुछ कमी पाने वाला तथा भाग्य के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता पाने वाला और बहिन भाइयों के सम्पर्क में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और बोल चाल में सज्जनता रखने वाला तथा सन्तान वाला बड़ा चतुर होता है।

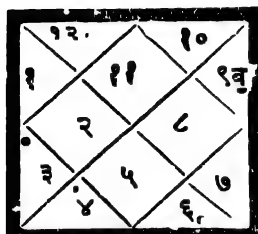
नं० ११२५

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का बुध लग्न से दसम स्थान में हो तो वह मनुष्य लौकिक विद्या की शक्ति पाने वाला तथा सन्तान-शक्ति प्राप्त करने वाला तथा अच्छी आयु पाने वाला तथा जीवन की दिन-चर्या को बड़े प्रभाव के साथ व्यतीत करने वाला तथा पिता स्थान में हानि

नं० ११२६

पाने वाला तथा व्यापार-कार में कुछ दिक्कतें सहने वाला और राज स्थान में कुछ परेशानी का थोड़ा योग पाने वाला तथा मातृस्थान में कुछ थोड़ी सी परेशानी महसूस करने वाला और बुद्धि के महान् विवेक की शक्ति तथा गुप्त युक्तियों से कुछ परिश्रम के द्वारा मान उन्नति व समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का धन का बुध लग्न से ग्यारहवें स्थान नं० ११२७ में हो तो वह मनुष्य विद्या ग्रहण करने वाला संतान का लाभ पाने वाला और पूर्व संचित धन का लाभ पाने वाला और पुरातत्त्व की गूढ़ युक्तियों से तथा विवेक बुद्धि की योग्यता से बड़ा लाभ पाने वाला और आयु का सुन्दर लाभ पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में लाभ व मनोरंजन का आनन्द विवेक शक्ति से प्राप्त करने वाला और बड़ी चतुराइयों से बात चीत करने वाला तथा बात २ में मतलब सिद्ध करने वाला और अपने यथार्थ लाभ के सम्बन्ध में कुछ कमी महसूस करने वाला किन्तु जीवन निर्वाह शक्ति की तरफ से बे फिकरी पाने वाला प्रतिष्ठित होता है।




जिस व्यक्ति का मकर का बुध लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य संतान की हानि पाने वाला तथा विद्या की कमजोरी पाने वाला और आयु में कुछ कमजोरी

नं० ११२८ का सा योग पाने वाला तथा पूर्व संचित पुरातत्त्व की कमज़ोरी पाने वाला और अधिक खर्च करने वाला तथा जीवन की दिनचर्या मे अशान्ति महसूस करने वाला और बातचीत बोलचाल के अन्दर कुछ गुप्त विवेक की कमजोर शक्ति से काम लेने वाला और प्रभाव में कुछ कमजोरी महसूस करने वाला तथा खर्च के और अन्य स्थान के सम्पर्क में कुछ दिक्कतें व कुछ सहायता पाने वाला तथा शत्रु पक्ष में समभाव रखने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरगुरुफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का गुरु लग्न के पहिले स्थान नं० ११२९ में हो तो वह मनुष्य देह के योग और परिश्रम से धन की शक्ति व आमदनी प्राप्त करने वाला और देह का सनमान व इज्जत प्राप्त करने वाला और सन्तान का लाभ पाने वाला विद्या प्राप्त करने वाला और बोल चाल के अन्दर बड़प्पन के साथ बड़े मतलब की बातें कहने वाला और बुद्धि से फायदा उठाने वाला तथा

धर्म के सम्बन्ध में ज्ञान व लाभ पाने वाला और भाग्य की तरक्की करने वाला रोजगार से फायदा उठाने वाला और स्त्री स्थान में लाभ पाने वाला और मुसीबत की परिस्थितियों में भी आवश्यकताओं की पूर्ति प्राप्त कर लेने वाला कुछ बंधन युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का गुरु लग्न से दूसरे स्थान नं० ११३० में हो तो वह मनुष्य बहुत धनवान् तथा बहुत लाभ पाने वाला और आमदनी को जोड़ने की हृदय से चेष्टा करने वाला और धनवान् ननसाल का योग पाने वाला शत्रुस्थान में बड़ा प्रभाव रखने वाला और धन प्राप्ति के लिये बड़ा कार बार और बड़ा प्रपञ्च व परिश्रम करने वाला और पिता स्थान से बहुत फायदा उठाने वाला राज काज व समाज में लाभ और इज्जत पाने वाला और आयु स्थान में बड़ी शानदारी से समय व्यतीत करने वाला और पुरातत्त्व का भी धन लाभ पाने वाला तथा प्रभाव शाली कुटुम्ब वाला प्रतिष्ठित होता है।

१२गु १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का मेष का गुरु लग्न से तीसरे स्थान नं० ११३१ में हो तो वह मनुष्य पुरुषार्थ से धन कमाने वाला और बड़ी जोरदारी से रोजगार करने वाला और रोजगार में खूब नफा खाने वाला ससुराल से भी धन की कुछ सहायता पाने वाला और स्त्री में सुन्दरता व स्त्री से बहुत

१२ १० १गु ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

सहायता पाने वाला और भाई की सहायता पाने वाला बड़ी कीमती मेहनत करने वाला धर्म का भी पालन करने वाला और बहुत प्रकार के लाभ वस्त्र आभूषण धन इत्यादि का प्राप्त करने वाला और भाग्य की तरक्की पाने वाला स्त्री के भोग सम्बन्धित मामलों में हृदय की कुछ आसक्ति रखने वाला सौन्दर्य प्रेमी होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का गुरु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह करने वाला और धन से इज्जत पाने वाला और जीवन की दिनचर्या में धन शक्ति के कारण से आमोद प्रमोद प्राप्त करने वाला और खर्च को बहुत कम करने की चेष्टा करने वाला पुरातत्त्व से सम्बन्धित फायदा उठाने वाला और राज समाज से फायदा व इज्जत पाने वाला धन के कारणों से सुख प्राप्त करने वाला और मकान जायदाद की शक्ति से बड़ा फायदा उठाने वाला मातृपक्ष में कुछ बंधन व कुछ लाभ पाने वाला और सुख पूर्वक धन व लाभ की वृद्धि करने वाला होता है।

नं० ११३२

| | | |
|---|---|---|
| १२ | | १० |
| १ | ११ | ९ |
| २ गु | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

जिस व्यक्ति का मिथुन का गुरु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी बुद्धिमान् तथा विद्या संग्रह करने वाला एवं संतान शक्ति पाने वाला और विद्या से धन शक्ति प्राप्त करने वाला बुद्धि और वाणी से बड़ी कीमती बातें करने वाला भाग्य की तरक्की पाने वाला

नं० ११३३

| | | |
|---|---|---|
| १२ | | १० |
| १ | ११ | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ गु | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

व खूब लाभ पाने वाला और देह की इज्जत प्राप्त करने वाला और धर्म को इज्जत देने वाला बड़ा बड़प्पन रखने वाला और संतान से धन की सहायता पाने वाला और हृदय व धन की शक्ति से विद्या के अन्दर कुछ विशेष कला या चतुराई हासिल करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का गुरु लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन शक्ति पाने वाला व ननसाल का प्रभाव पाने वाला और खर्च में कमी का योग पाने वाला धन का दुरुपयोग पाने वाला और धन शक्ति से बड़ा प्रभाव कमाने वाला और अचानक कभी मुफ्त का धन प्राप्त करन वाला और धन प्राप्ति के सम्बन्ध में प्रभावशाली अधिक परिश्रम करने वाला और गलत व संकीर्ण तरीके से खर्च करने वाला और उन्नति के लिये व मान वृद्धि के लिय धन और परिश्रम की ताकत से काम करने वाला राज और समाज से कुछ फायदा उठाने वाला और दूसरे स्थानों से संकीर्ण सम्बध रखने वाला तथा बड़े प्रपंच से फायदा उठाने वाला होता है।

नं० ११३४




जिस व्यक्ति का सिंह का गुरु लग्न से सातवें स्थान में हो तो वह मनुष्य धन की ताकत से बड़ा भारी रोजगार करने वाला और रोजगार से खूब धन कमाने वाला और ससुराल से व शादी के बाद से धन की वृद्धि पाने वाला और भोग विलास से सम्बंधित बहुत प्रकार के

नं० ११३५



लाभ व अनेक पदार्थ प्राप्त करने वाला तथा गृहस्थी की रौनक के अन्दर खूब धन का आनन्द भोगने वाला व बहिन भाइयों की शक्ति पाने वाला और बंधी आमदनी पर्याप्त रूप में प्राप्त करने वाला और बड़प्पन के ढंग से व दैनिक कर्म के योग से आमदनी पाने वाला तथा धन कमाने में बड़ा चतुर पुरुषार्थी होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का गुरु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य जन धन की हानि पाने वाला और आमदनी के लिये बड़ा परिश्रम व परदेश गमन आदि का योग पाने वाला और फिर भी पर्याप्त आमदनी न पाने वाला किन्तु पुरातत्त्व से सम्बंधित गूढ़ धन शक्ति प्राप्त करने वाला और खर्च में कमी का योग और कुछ गुप्त खर्च का योग पाने वाला और धन की व परिश्रम की ताकत से सुख की वृद्धि करने की हृदय से चेष्टा करने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के सम्पर्क में कमजोरी व संकीर्णता पाने वाला तथा आयु में कुछ वृद्धि व बड़प्पन पाने वाला और धन की सहायता समय समय पर प्राप्त कर लेने वाला होता है।

नं० ११३६

जिस व्यक्ति का तुला का गुरु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की ताकत से धन प्राप्त करने वाला व आमदनी भी भाग्य और धर्म की सहायता से पाने वाला और हृदय में धर्म का ध्यान रखने वाला भाई की शक्ति पाने वाला संतान लाभ पाने वाला एवं

नं० ११३७

विद्या बुद्धि व चतुराई प्राप्त करने वाला और लोक परलोक दोनों का ध्यान रखने वाला बल पुरुषार्थ की शक्ति पाने वाला और हृदय के अन्दर भाग्य शक्ति की कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और धन लाभ के कारणों से व भाग्य बल से काम प्राप्त करने वाला और धन के ही कारणों से देह में कुछ बंधन महसूस करने वाला स्वाभिमानी होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का गुरु लग्न से दसवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी कार व्यापार करने वाला बहुत भारी धन पैदा करने वाला और बड़ी भारी इज्जत पाने वाला तथा महान् इज्जत के साथ ही आमदनी पाने वाला और राज समाज से बहुत फायदा व मान प्राप्त करने वाला तथा पिता की महान् शक्ति पाने वाला तथा मातृस्थान का कुछ सहारा पाने वाला और शत्रु स्थान में व दिक्कतों के हटाने में बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला तथा ननसाल पक्ष में बड़ा प्रभाव पाने वाला और विशेष धन प्राप्त करने के लिये हृदय शक्ति से महान् कर्म करने वाला एवं हृदय के अन्दर बड़ा भारी गौरव अनुभव करने वाला होता है।

नं० ११३८




जिस व्यक्ति का धन का गुरु लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी भारी आमदनी स्वतः पाने वाला और संचित धन की शक्ति भी स्वतः पाने वाला और

नं० ११३९ हृदय की महान् स्थिरता से सिद्धि प्राप्त करने वाला और हृदय में महान् सन्तोष पाने वाला सन्तान लाभ पाने वाला और बड़ा भारी कीमती परिश्रम करने वाला और बल व पुरुषार्थ पाने वाला बहिन भाइयों वाला और बड़ा कीमती उज्ज्वल रोजगार करने वाला ससुराल व स्त्री से धन की सहायक शक्ति पाने वाला और रोजगार व स्त्री से हृदय से चिन्तन करके धन की ताकत से उन्नति पाने वाला और स्थिर हृदय की ताकत से बुद्धि विद्या में कला पाने वाला इज्जत दार मौजी होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का गुरु लग्न से बारहवें स्थान

नं० ११४० में हो तो वह मनुष्य धन की कमी व हानि पाने वाला और धन व लाभ प्राप्ति के लिये अन्य दूसरे स्थान का संकीर्ण सम्पर्क पाने वाला और खर्च में कमी का योग पाने वाला तथा गुप्त और नाजायज तौर से भी धन खर्च करने वाला और गुप्त रीति को खर्च शक्ति से अर्थात् दूसरों को प्रलोभन देकर भी धन प्राप्त करने वाला और शत्रु स्थान में व विपक्षियों में धन का प्रभाव जमाने वाला कुटुम्ब में कमी व क्लेश पाने वाला और सुख प्राप्ति के साधन बहुत रीति से पैदा करने वाला मकानादि भूमि

से फायदा पाने वाला पेचीदा तरकीबों व ननसाल से फायदा पाने वाला जीवन की दिनचर्या में अमीरी व वस्त्र आभूषणों से गरीबी का योग पाने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरशुक्रफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शुक्र लग्न के पहिले स्थान नं० ११४१ में हो तो वह मनुष्य भाग्य शक्ति से बड़ा सुख भोगने वाला माता का उत्तम व आदर्श सुख प्राप्त करने वाला और जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला खान पान व वस्त्र इत्यादि सुखद पदार्थों की हमेशा स्वतः समय समय पर प्राप्त कर लेने वाला और धर्म का उत्तम पालन करने वाला दैवी सहायता तथा यश प्राप्त करनें वाला और देह में सम्मान सज्जनता तथा सुन्दरता चतुरता कला आदि विभूतियां पाने वाला और दैवी गुणों को जानने वाला दूरदर्शिता रखने वाला और गृहस्थी के सम्बन्ध में स्त्री सुख व रोजगार की शक्ति को कुछ वैमनस्यता से पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शुक्र लग्न से दूसरे स्थान
नं० ११४२ में हो तो वह मनुष्य बहुत धन प्राप्त करने वाला और धन की वृद्धि में ही सुख सौभाग्य का महान अनुभव करने वाला बहुत कुटुम्ब वाला जमीन जायदाद वाला भाग्य की महानता पाने वाला और धर्म संचय करने वाला और भाग्य की सहायता से कोष की वृद्धि पाने वाला तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी अनुभव करने वाला और धन वृद्धि के लिये महान् चतुराइयों से काम लेने वाला सुख शान्ति के सम्बन्ध में कुछ बन्धन व कुछ वृद्धि का योग पाने वाला और पुरातत्त्व शक्ति के सम्बन्ध में व आयु के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी समझने वाला माननीय होता है।

| | | |
|---|---|---|
| १२ शु | ११ | १० |
| १ | | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

जिस व्यक्ति का मेष का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान
नं० ११४३ में हो तो वह मनुष्य पुरुषार्थ शक्ति से सुख पूर्वक भाग्य की उन्नति करने वाला और धर्म का पालन करने वाला मकान जायदाद पाने वाला बहिन भाइयों वाला तथा मातृस्थान की शक्ति पाने वाला सुन्दर कद वाला और बड़ी भारी चतुराइयों व दूरदर्शिता रखने वाला यश प्राप्त करने वाला तथा दैवी शक्ति का सहयोग पाने वाला और भाग्य बल को समझने वाला व प्रभाव शक्ति रखने

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ११ | १० |
| १ शु | | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

वाला और न्याय शक्ति से काम लेने वाला लोक और परलोक दोनों का पालन करने वाला तथा बरक्कत पाने वाला शांतप्रिय होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का शुक्र लग्न से चौथे स्थान नं० ११४४ में हो तो वह मनुष्य धर्म कर्म का पालन करने वाला मकान भूमि का योग पाने वाला मातृस्थान की शक्ति पाने वाला भाग्य शक्ति से सुख प्राप्त करने वाला और दैविक कला से सुख शक्ति की सामर्थ्य का संचार करने वाला तथा व्यापार करने वाला पिता स्थान से फ़ायदा पाने वाला मान सम्मान प्राप्त करने वाला और धार्मिक कार्यों से व बड़ी चतुराइयों से उन्नति एवं प्रतिष्ठा पाने वाला और सुख के साधनों में स्थिरता से अन्न वस्त्र एवं आवश्यक पदार्थों को पाने वाला तथा राज समाज से सुख प्राप्त करने वाला बड़ा चतुर होता है।

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ७ ४ शु ५ ६

जिस व्यक्ति का मिथुन का शुक्र लग्न से पांचवें स्थान नं० ११४५ में हो तो वह मनुष्य विद्या बुद्धि के योग से भाग्योदय प्राप्त करने वाला तथा धार्मिक व दैविक ज्ञान प्राप्त करने वाला और उत्तम सन्तान सुख प्राप्त करने वाला विद्या के अन्दर महान् कला तथा बुद्धि में भाग्य के सम्बन्ध

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ७ ४ ५ शु ६

का ज्ञान प्राप्त करने वाला मातृस्थान की सहायक शक्ति पाने वाला मकान जायदाद का सुख प्राप्त करने वाला और बुद्धि तथा वाणी से परमार्थ धन का पालन करने वाला और भाग्य सम्बन्धी दैवी गुणों को महान् रूप से लेखों में प्रकाशित करके सुख पहुँचाने वाला तथा सुयश प्राप्त करने वाला और बहुत लाभ व सुख और अनेक आवश्यक पदार्थ तथा शील संतोष पानेवाला सत्यवादी दूरदर्शी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शुक्र लग्न से छठे स्थान

नं० ११४६

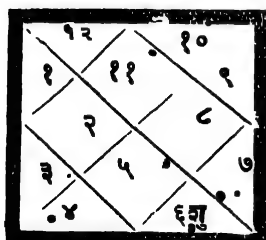
में हो तो वह मनुष्य धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाला भाग्य में कमज़ोरी पानेवाला और मातृस्थान में विरोध पाने वाला, सुखशान्ति में बाधा पाने वाला और भाग्योन्नति के लिये बड़ा भारी पेचीदा युक्तियों से व परिश्रम और अशांति से लाभ पाने वाला और बड़े भारी कला-धारी रचनात्मक उपायों से सफलता पाने वाला और न्याय अन्याय की परवाह न करके स्वार्थ सिद्धि करने वाला और बहुत खर्च करने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में सफलता पाने वाला और गुप्त युक्तियों की महान् तरकीबों से शत्रु को दबाने वाला तथा प्रभाव पाने वाला और बड़ा चतुर कूटनीतिज्ञ तथा कुछ बीमारी या रोग की दवा धर्मार्थ देने वाला और कुछ दूसरों की परेशानी हटाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शुक्र लग्न से सातवें स्थान नं ११४७ में हो तो वह मनुष्य, गृहस्थी का सुख




सौभाग्य प्राप्त करने वाला किन्तु फिर भी गृहस्थी में कुछ मिठास की कमी पाने वाला और माता व स्त्री के पक्ष में सुख की प्राप्ति होने पर भी कुछ अलकसाहट का योग पाने वाला और रोजगार में कुछ परिश्रम करके भाग्य वृद्धि पाने वाला लौकिक भोग सुख प्राप्त करने वाला और मकान भूमि आदि की शक्ति पाने वाला व देह में सुख तथा भाग्यवानी पाने वाला और मान व यश पाने वाला विलक्षण चतुराइयों से काम करने वाला और गृहस्थी के कार्यों में कुछ परमार्थ धर्म का पालन करने वाला और रोजगार में कुछ सन्तोष व सत्यता से काम करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का शुक्र लग्न से आठवें स्थान नं० ११४८ में हो तो वह मनुष्य धर्म के सम्बन्ध




में महान् कमजोरी पाने वाला और मातृस्थान की हानि पाने वाला सुख के सम्बन्ध में घाय पाने वाला मकान जायदाद भूमि आदि की कमजोरी व दुःख पाने वाला भाग्य की दुर्बलता महसूस करने वाला और भाग्योन्नति के लिये बड़ी बड़ी अशांति व विदेश आदि के योग से देर अबेर में कुछ फल प्राप्ति पा सकने वाला किन्तु धन अधिक प्राप्त करने की चेष्टा करने वाला और अधिक धन के सम्पर्क में ही सुख

मानने वाला धन को ही ईश्वर समझने वाला और भाग्य वृद्धि के लिये बड़ी भारी गुप्त चालें चलने वाला तथा जीवन में अशांति का योग पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शुक्र लग्न से नवम स्थान नं० ११४९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी भाग्यवान् तथा महान् धर्म का पालन करने वाला और बड़ा भारी यश प्राप्त करने वाला मातृस्थान की बड़ी भारी शक्ति पाने वाला और मकान जायदाद भूमि आदि की महानता पाने वाला तथा सुख पूर्वक भाग्य की वृद्धि स्वतः पाने वाला और भाग्य बल से खूब सुख शक्ति प्राप्त करने वाला तथा धर्मवान् माता को प्राप्त करने वाला और दैवी शक्ति की महान् सहायता पाने वाला ईश्वर में बड़ी भारी निष्ठा रखने वाला भाई बहिन का सुन्दर योग पाने वाला और पुरुषार्थ बल का सुख उठाने वाला और धर्म की व भाग्य की महान् कला को प्राप्त करने वाला बड़ा दूरदर्शी परम ज्ञानी परम चतुर होता है।

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७शु ४ ६

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शुक्र लग्न से दसवें स्थान नं० ११५० में हो तो वह मनुष्य भाग्य के बल से बहुत बड़ी पदवी पाने वाला राज समाज से फायदा प्रभुत्व पाने वाला और माता पिता की परम शक्ति का सौभाग्य पाने वाला और मकान जमीन जायदाद की शक्ति पाने वाला और राजसी सुख भोगने वाला धर्म कर्म का पालन करने

१२ १० १ ११ ९ २ ८शु ३ ५ ७ ४ ६

वाला अपने व्यापार कार्य में व उन्नति के मार्ग में बड़ी भारी महान् चतुराइयों से व योग्यता से काम लेने वाला तथा न्याय व शांति चाहने वाला और कोई कला पूर्ण महान् कार्य भी करने वाला स्वार्थ और परमार्थ का बराबर ध्यान रखने वाला और दैवी शक्ति का सहारा पाने वाला इज्जतदार यशस्वी होता है।

जिस व्यक्ति का धन का शुक्र लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की

नं० ११५१

१२ १० १ ११ शु९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

ताकत से बड़ा भारी लाभ पाने वाला तथा मातृस्थान की सहायक शक्ति पाने वाला भूमि का लाभ पाने वाला बहुत सुख प्राप्त करने वाला तथा धर्म का लाभ पाने वाला और आमदनी के मार्ग से कुछ धर्म कार्य करने वाला और अन्न वस्त्र आभूषण इत्यादि अनेक आवश्यक पदार्थ स्वतः सुख पूर्वक चतुराइयों से प्राप्त करने वाला तथा विद्या ग्रहण करने वाला और बोल चाल के अन्दर बड़ी सज्जनता व शीलता से काम लेने वाला बड़ा दूरदर्शी परम विवेकी स्वार्थ परमार्थ से युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्य की

नं० ११५२

१२ शु१० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

ताकत से व मातृस्थान की ताकत से बड़ा भारी खर्च करने वाला और भाग्य में कमजोरी पाने वाला मातृस्थान की हानि पाने वाला तथा मकान भूमि आदि रहने के स्थान में

भी कमजोरी पाने वाला अर्थात् सुख में घाटा पाने वाला और धर्म के सम्बन्ध में कमजोरी पाने वाला और खर्च स्थान से कुछ परमार्थ भी करने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सहयोग से भाग्य की उन्नति पाने वाला किन्तु भाग्य के लिये देर अबेर और हेर-फेर से बड़ी चतुराई और सज्जनता से फायदा उठाने वाला तथा खर्च और दूसरे स्थान के सम्पर्क से सुख उठाने वाला तथा यश में कमी पाने वाला और शत्रु पक्ष में नरमाई से काम लेने वाला होता है।

## कुम्भलग्नान्तरशनिफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का शनि लग्न के पहिले स्थान नं० ११५३ में हो तो वह मनुष्य देह के अन्दर कुछ कमजोरी का योग पाकर भी मजबूती रखने वाला तथा कुछ सुन्दरता पाने वाला तथा अपने अन्दर आत्म बल तथा स्वाभिमान रखने वाला और कुछ ख्याति पाने वाला कुछ भ्रमण करने वाला और दूसरे स्थानों में बड़ा भारी आदर व मान प्राप्त करने वाला और खूब शानदार खर्च करने वाला और भाई के स्थान में हानि व कमी पाने वाला

पुरुषार्थ बल में व मेहनत के स्थान में कमी पाने वाला और स्त्री व पिता के स्थान में कमी व क्लेश पाने वाला तथा रोजगार व व्यापार एवं प्रतिष्ठा आदि में कमजोरी पाने वाला और राज समाज में कमजोरी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का शनि लग्न से दूसरे स्थान

नं० ११५४ में हो तो वह मनुष्य अपनी देह के द्वारा सदैव धन वृद्धि की चेष्टा में लगा रहने वाला और धन के स्थान में कभी २ हानियां भी पाने वाला तथा अन्य स्थान के सम्पर्क से व खर्च के सम्बन्ध से धन स्थान में हानि तथा वृद्धि का योग पाने वाला और देह में कुछ बंधन व परेशानी भी महसूस करने वाला और माता व भूमि के सम्पर्क में कुछ फायदा पाने वाला और सुख प्राप्ति का बहुत ध्यान रखने वाला तथा अधिक लाभ प्राप्ति के लिये बहुत प्रकार के साधन पैदा करने वाला जीवन की दिनचर्या में कुछ गौरव मानने वाला खर्च को रोकने की चेष्टा करने वाला पुरातत्त्व खोजी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का शनि लग्न से तीसरे स्थान

नं० ११५५ में हो तो वह मनुष्य बहुत ही थकान पाने वाला तथा गुप्त रीति से परिश्रम करने वाला और देह में कमजोरी पाने वाला तथा देह में छोटा कद पाने वाला और सुन्दरता की कमी पाने वाला बहुत खर्च करने वाला और खर्च

को रोकने की या कम करने की पूरी चेष्टा करते रहने पर भी खर्च में वृद्धि का योग पाने वाला भाई की हानि पाने वाला और कुछ गलत व संकीर्ण मार्ग का अनुसरण व गलत रीति का खर्च भी करने वाला और संतान पक्ष में व विद्या के पक्ष में कुछ हानि व शक्ति प्राप्त करने वाला भाग्य की वृद्धि पाने वाला कुछ धर्म की शक्ति पाने वाला और गुप्त हिम्मत रखने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का वृष का शनि लग्न से चौथे स्थान नं० ११५६ में हो तो वह मनुष्य प्रभाव वाला आत्म ज्ञानी तथा सुन्दर देह वाला और सुख से देह को रखने वाला और मातृस्थान में कुछ हानि पाने वाला किन्तु कुछ अन्य स्त्रियों का समय समय पर मातृवत् सहारा पाने वाला और सुख के वातावरण में कुछ कमजोरी पाने वाला मकान भूमि आदि के स्थान में भी कुछ कमी पाने वाला आत्मबल और स्वतंत्रता पाने वाला और दिक्कतों पर व शत्रुस्थान पर बड़ा प्रभाव रखने वाला और स्वाभिमान की बड़ी भारी रक्षा करते रहने वाला खर्च की अधिकता व बाहरी कारणों से देह में कुछ परेशानी व कुछ कमजोरी पाने वाला और दूसरे अन्य स्थानों के सम्पर्क से मान व ख्याति पाने वाला होता है ।

जिस व्यक्ति का मिथुन का शनि लग्न से पांचवें स्थान

नं० ११५७ में हो तो वह मनुष्य विद्या पर अधिकार रखने वाला किन्तु विद्या में कुछ कमी पाने वाला और बुद्धि में आत्मज्ञान की शक्ति पाने वाला और संतान पक्ष में कुछ कमजोरी के साथ २ बड़ी शक्ति तथा गौरव प्राप्त करने वाला और स्त्री व धन के पक्ष में कुछ वैमनस्यता का संयोग पाने वाला रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के होते हुये भी संलग्नता से काम करने वाला और बात चीतों के अन्दर कुछ जरा सा हेर फेर और आत्मबल के साथ बोलने वाला और खर्च के कारणों से कुछ धन हानि का योग पाने वाला और बुद्धि से शक्ति पाने वाला बुद्धिमान् होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का शनि लग्न से छठे स्थान नं० ११५८ में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभाव शाली कार्य करने वाला और कुछ परतंत्रता के अन्तरगत महानता को प्राप्त करने वाला सुन्दरता की कुछ कमी पाने वाला और घिराव व परेशानियों के अन्दर बड़े धैर्य और साहस से काम करने वाला भाई के स्थान में कमजोरी पाने वाला और शत्रुओं की परवाह न करने वाला जीवन की दिनचर्या में प्रभाव शक्ति व गौरव पाने वाला और खर्च के स्थान में कमी की कोशिश करते रहने पर भी खर्च अधिक करने वाला और बड़ी भारी पेचीदा युक्तियों को आत्म

बल की शक्ति से इस्तेमाल करके प्रभाव की वृद्धि करने वाला तथा स्वार्थ युक्त दया से काम न लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का शनि लग्न से सातवें स्थान नं० ११५९ में हो तो वह मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन में परेशानी अनुभव करने वाला और स्त्री स्थान में अशक्ति व कमी तथा वैमनस्यता का योग पाने वाला और रोजगार के अन्दर घुसकर काम करते रहने पर भी कुछ हानियां व परेशानियां पाने वाला और भाग्यवान् कहलाने वाला एवं धर्म का उत्तम ध्यान रखने वाला तथा लोक व परलोक दोनों का कर्त्तव्य पालन करने वाला और अपने दैनिक कार्यस्थान से व्यक्तितत्व का प्रभाव पाने वाला और खर्च के कारण से कुछ परेशानी महसूस करने वाला और आत्मबल की ताकत से सुख का बड़ा भारी अनुभव करने वाला तथा रसिक प्रवृत्ति मार्ग वाला ठिगने कद वाला होता है।

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५श ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का कन्या का शनि लग्न से आठवें स्थान नं० ११६० में हो तो वह मनुष्य बड़ा गुप्त शक्ति रखने वाला खतरनाक काम करने वाला और बड़ी आयु पाने वाला और देह में कुछ परेशानी व सुन्दरता में कुछ कमी पाने वाला और अपनी उन्नति व मान प्राप्ति के लिये

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६श

बड़े २ कठिन कार्य करने वाला और पिता स्थान में वैमनस्यता का सम्बन्ध पाने वाला व संतान पक्ष में कुछ शक्ति हासिल करने वाला और बुद्धिस्थान में बड़े आत्मबल से काम लेने वाला विद्या ग्रहण करने वाला और कूट युक्तियों को बुद्धि व वाणी और कर्म से प्रयोग करने वाला तथा खर्च में कमी पाने वाला तथा पुरातत्त्व का लाभ पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का तुला का शनि लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य सुन्दर सुडौल देह वाला और भाग्यवानी प्राप्त करने वाला तथा भाग्यवान जचने वाला और धन लाभ प्राप्ति के लिये बड़ा कठिन परिश्रम खूब करने वाला और धार्मिक आचरण करने वाला बड़ी सज्जनता से रहने वाला किन्तु शत्रुस्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और भाई के स्थान में कुछ कमी पाने वाला पुरुषार्थ बल में भी कुछ कमी पाने वाला और खूब खर्च करने वाला और अन्य दूसरे स्थानों का बड़ा संपर्क पाने वाला और कुछ पेचीदा मार्ग पर आत्मशक्ति लगा कर प्रभाव की वृद्धि पाने वाला बड़ा मस्त निडर होता है।

नं० ११६१

जिस व्यक्ति का वृश्चिक का शनि लग्न से दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभाव शाली कर्म करने वाला तथा प्रभाव पाने वाला और अन्य दूसरे

नं० ११६२ स्थान की महान् शक्ति को पाकर बड़ी कठिनाई और आत्मबल से देह के द्वारा इज्जत पाने वाला और बहुत खर्च करने वाला पिता के स्थान में कुछ हानि व कुछ प्रभाव पाने वाला और स्त्री स्थान में कुछ कमी पाने वाला तथा कुछ वैमनस्यता पाने वाला और मातृस्थान में मित्रता व कुछ कमजोरी पाने वाला और देह में कमजोरी व हुकूमत रखने वाला और दैनिक रोजगार व मान व्यापार आदि में कुछ नुकसान व कुछ परेशानियां पाने वाला बड़ा उग्र कर्मेष्ठी होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १२ ११ | १० ९ | |
| ३ | २ | ८श | ७ |
| ४ | ५ | ६ | |

जिस व्यक्ति का धन का शनि लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुत धन पैदा करने वाला और बहुत नाम पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सम्बन्ध से व देह के योग और परिश्रम से बड़ी उन्नति करने वाला बड़ा खर्च करने वाला और खर्च को रोककर कम करने की चेष्टा करने वाला वृद्धिस्थान पर बड़ा जोर देने वाला तथा पुरातत्त्व की गहरी चाल से फायदा उठाने वाला और खर्च शक्ति के बल से आमदनी में वृद्धि पाने वाला तथा आत्मबल की शक्ति से भी धन की वृद्धि पाने वाला और संतान व आयु में भी

नं० ११६३

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १२ ११ | १० ९श | |
| ३ | २ | ८ | ७ |
| ४ | ५ | ६ | |

तरक्की व कुछ थोड़ी कमी पाने वाला और अपनी देह के लिये यथार्थ लाभ में कुछ कमी पाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मकर का शनि लग्न से बारहवें स्थान नं० ११६४ में हो तो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला और देह के अन्दर दुर्बलता पाने वाला और अन्य स्थान में आत्मस्थिति होने के कारण आत्मबल में कमजोरी पाने वाला तथा धन वृद्धि की अधिक चेष्टा करते रहने वाला एवं भाग्य में वृद्धि पाने वाला धर्म का पालन व ध्यान रखने वाला और बाहरी स्थानों में मान पाने वाला और अन्य स्थानों के सम्पर्क से व खर्च की शक्ति से कुछ अच्छी उन्नति पाने वाला तथा शत्रु स्थान पर प्रभाव पाने वाला और धन स्थान में कुछ हानियां भी पाने वाला और कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ हानि व कुछ वृद्धि का योग पाने वाला अशांत हृदय होता है।

## कुम्भलग्नान्तरराहुफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का राहु लग्न के पहिले स्थान नं० ११६५ में हो तो वह मनुष्य देह में कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा कुछ मुसीबतों का सामना पाने वाला और बड़ी भारी होशियारी व गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला और अपनी जानकारी व नामवरी को प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी प्रयत्न करने वाला तथा अपना अमर नाम चाहने वाला और इसी कारण से घोर से घोर संकट काल में भी बड़े धैर्य को रखने वाला और कभी कभी सज्जनता व कठोरता से सम्मिलित काम लेने वाला और सदैव अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के प्रयत्न में लगा रहने वाला तथा अपनी मजबूती के अन्दर कुछ कमजोरी व कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का राहु लग्न से दूसरे स्थान नं० ११६६ में हो तो वह मनुष्य धन स्थान में हानि व कमी पाने वाला तथा कुटुम्ब में क्लेश व कमी पाने वाला और धन के सम्बन्ध में बड़ी २ मुसीबतें सहने वाला तथा धन के पक्ष में दूसरों से सहारा व कर्ज इत्यादि से काम चलाने वाला और धन स्थान पर अचानक कभी २ गहरा आघात सहने

वाला और धन की कमी को पूरा करने के लिये बड़े २ प्रयत्न व परिश्रम करने वाला और धन के पक्ष में बड़े बड़प्पन व गौरव और सज्जनता से काम लेने वाला और धन के सम्बन्ध में बाहरी दिखावे के मुकाबिले में अन्दर की कमजोरी से कुछ गुप्त वेदना सहने वाला अशान्त होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का राहु लग्न से तीसरे स्थान नं० ११६७ में हो तो वह मनुष्य बड़ा तीक्ष्ण पुरुषार्थ करने वाला और भाई के स्थान में कष्ट या क्लेश सहने वाला और बड़ी भारी उन्नति की प्राप्ति के लिये बड़ी बड़ी दौड़ धूप करने वाला और अपने स्वार्थ के लिये बड़ी बड़ी गुप्त तरकीबों से काम लेने वाला और अपनी शक्ति के ऊपर बड़े बड़े आघात होने पर भी बड़ी हिम्मत व होशियारी से काम लेने वाला और गुप्त रूप में सदैव बड़ी शक्ति के संचय करने में लगा रहने वाला और बड़े ऊंचे फायदे की प्राप्ति के लिये असंभव सामर्थ्य से भी काम लेने वाला बड़ा प्रभावशाली पुरुषार्थी होता है।

१२ १० १रा ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का वृष का राहु लग्न से चौथे स्थान नं० ११६८ में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में कुछ हानि व क्लेश या कुछ अलहदगी पाने वाला और सुख के साधनों में कुछ कमी पाने वाला और सुख की स्थाई ताकत को प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी युक्तियों को गुप्त रूप से इस्तेमाल

१२ १० १ ११ ९ २रा ८ ३ ५ ७ ४ ६

करने वाला और बहुत सी दिक्कतों के बाद सुख प्राप्ति क मजबूत साधन को पा लेने वाला और मकान भूमि आदि की व्यवस्था में कुछ कमजोरी पा लेने वाला और कभी कभी सुख शांति के अन्दर घोर संकट का सामना पाने वाला और विशेष सुख प्राप्त करने के लिये अनधिकार चेष्टा भी करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का राहु लग्न से पांचवें स्थान

न० ११६९

| | | |
|---|---|---|
| १२ | १० | |
| १ | ११ | ९ |
| २ | | ८ |
| रा | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

में हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादा बोलने वाला तथा अपने दिमाग के अन्दर बड़ी भारी तेजी व होशियारी रखने वाला और दूसरों को मूर्ख बनाने की हमेशा चेष्टा करने वाला और विद्या ग्रहण करने वाला तथा गुप्त युक्तियों की शक्ति का ही बड़ा भारी भरोसा रखने वाला तथा बुद्धि की यथार्थता में कुछ कमी पाने वाला और मतलब की बातें करते रहने के कारण से सत्य असत्य की परवाह न करने वाला और अपने को महान् विद्वान समझने वाला कुछ सन्तान कष्टी होता है।

जिस व्यक्ति का कर्क का राहु लग्न से छठे स्थान

न० ११७०

| | | |
|---|---|---|
| १२ | १० | |
| १ | ११ | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| रा | | ६ |

में हो तो वह मनुष्य ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला और शत्रुस्थान में बड़ा प्रभाव जमाने वाला तथा शत्रु का दमन करने वाला किन्तु शत्रुपक्ष से कुछ चिन्तायें पाने वाला और गुप्त युक्तियों से व बड़ी पेचीदा चतुराइयों

के साथ बड़ी बड़ी कामयाबी हासिल करने वाला और बड़ी बड़ी दिक्कतों व मुसीबतों की परवाह न करके अपने बचाव का साधन प्राप्त कर लेने वाला और मनोयोग की बड़ी भारी गहरी व गूढ़ चालों को चलने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि के सामने दूसरे के फायदे का ख्याल न करने वाला बड़ा सावधान होशियार होता है।

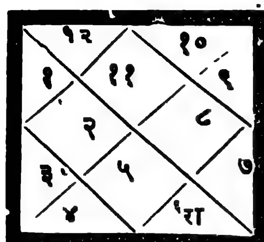
जिस व्यक्ति का सिंह का राहु लग्न से सातवें नं० ११७१ स्थान में हो तो वह मनुष्य स्त्री




स्थान में हानि पाने वाला और स्त्री पक्ष से क्लेश सहने वाला और स्त्री के साथ सम्बन्ध में गुप्त युक्तियों से व कठिन नीति से काम लेने वाला और ससुराल पक्ष में व भोगादिक पक्ष में कमजोरी पाने वाला और रोजगार की लाइन में बड़े २ संकट सहने वाला और रोजगार में हानियां सहने वाला और रोजगार की लाइन में बड़ी २ गुप्त व कठिन युक्तियों से काम निकालने वाला और अधिक परिश्रम का कार्य करने वाला तथा कार्य के अन्दर झंझटों का समावेश पाने वाला और गृहस्थी व रोजगार में कुछ नाजायज फायदा उठाने वाला होता है।

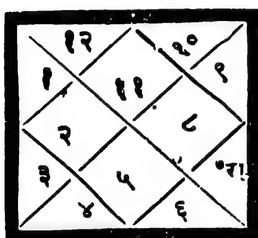
जिस व्यक्ति का कन्या का राहु लग्न से आठवें स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में कुछ कठिनाइयों के साथ २ कुछ गौरव भी महसूस करने वाला और महान् गहरी युक्तियों को इस्तेमाल करके गूढ़ से गूढ़ फायदा उठाने वाला और जीवन निर्वाह की शक्ति

नं० ११७२ को चतुराइयों से प्राप्त कर लेने वाला और पैत्रिक संपत्ति में कुछ खरखशा पाने वाला और पेट के अन्दर व नीचे के हिस्से में कुछ उदर विकार की थोड़ी सी शिकायत पाने वाला और गुप्त शक्ति की हिम्मत का बड़ा भरोसा रखने वाला तथा बड़ी लम्बी चौड़ी बातें सोचने वाला होता है।




जिस व्यक्ति का तुला का राहु लग्न से नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ी बड़ी युक्तियों से भाग्य की वृद्धि करने वाला और भाग्य के स्थान में कुछ दिक्कतें व मुसीबतें भी सहने वाला तथा सुयश प्राप्ति के स्थान में कुछ कमी पाने वाला तथा दैवी सहायता का भरोसा न करके दुनियादारी की लाइन को बड़ा मानने वाला तथा धर्म संग्रह करने के संबंध में कमजोरी पाने वाला किन्तु किसी भी स्वार्थ की पूर्ति करने के लिये चाहे जैसे धर्म का पालन कर सकने वाला तथा धर्म का बड़ा दिखावा हमेशा कर सकने वाला और भाग्य की कमजोरियों को सदैव के लिये दूर करने का प्रयत्न करते रहने वाला होता है।

नं० ११७३




जिस व्यक्ति का वृश्चिक का राहु लग्न से दसवें स्थान

नं० ११७४ में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान में कष्ट सहने वाला और व्योपार आदि कार बार में बड़ी २ परेशानियां सहने वाला तथा बड़े बड़े झंझटों में से गुजर कर काम चलाने वाला राज समाज के कामों में भी बड़ी बड़ी दिक्कतें सहने वाला तथा मान सनमान व पदोन्नति में रुकावटें व कमी पाने वाला और हर तरफ की उन्नति के लिये बड़ी भारी २ पोशीदा युक्तियों से महान् कठिन कर्म योग से कार्य करने वाला और अपनी इज्जत व बात की रक्षा करने के लिये बहुत किस्म की हानियां भी सहने वाला तथा ऊँचा दाव चलने वाला होता है।

१२ १० १ ११ ९ २ ८ रा० ३ ५ ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का धन का राहु लग्न से ग्यारहवें स्थान नं० ११७५ में हो तो वह मनुष्य गुप्त चालों से तथा गुप्त योजनाओं से थोड़ा धन प्राप्त करने वाला और जाहिरा आमदनी में कमी व असंतोष पाने वाला और कुछ अनुचित व अनधिकार थोड़ा लाभ पाने का बहुत गुप्त रूप से भी प्रयत्न करने वाला और अपने फायदे के दृष्टिकोण के सामने दूसरे के नुकसान या तकलीफ की जरा भी परवाह न करने वाला सदैव अपने फायदे का गुप्त चिन्तन करने वाला और अपने इस्तेमाल की चीजों में आवश्यक पदार्थों में कमियां महसूस करने वाला तथा आमदनी के लिये परेशानियों का काम करने वाला होता है।

१२ १० १ ११ रा० २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

जिस व्यक्ति का मकर का राहु लग्न से बारहवें स्थान नं० ११७६ में हो तो वह मनुष्य कुछ वेजा खर्च की योजनाएँ पाने वाला और खर्च के कारणों से कुछ दुःख महसूस करने वाला खर्च की लाइन में बड़ी बड़ी युक्तियों से दृढ़ता के साथ काम करने वाला और खर्च के लिये बहुत २ प्रकार के विचारों से गुप्त रूप से काम लेने वाला और अन्य दूसरे स्थानों के सम्पर्क में झंझटों और दिक्कतों का योग पाने वाला और दूसरों के बाहरी वातावरण के सम्बन्ध में बड़ी २ युक्तियों से व तरकीबों से काम निकालने वाला और दूसरों के दिखावे के मुकाबिले में अपने अंदर कमी महसूस करने वाला होता है।

१२ | १० रा | ११ | ९ | १ | २ | ८ | ३ | ५ | ७ | ४ | ६

## कुम्भलग्नान्तरकेतुफलम्

जिस व्यक्ति का कुम्भ का केतु लग्न के पहिले स्थान नं० ११७७ में हो तो वह मनुष्य, देह के अन्दर दृढ़ता शक्ति का योग पाने वाला और देह में कुछ कमी भी महसूस करने वाला और बहादुरी का बाना रखने वाला आंतरिक शक्ति का बल रखने वाला और अपने मार्ग में

१२ | १० | ११ के | ९ | १ | २ | ८ | ३ | ५ | ७ | ४ | ६

निःसंकोच चलने वाला अपने सिद्धांत के सामने दूसरे की भलाई बुराई की परवाह न करने वाला और बड़े २ संकट सह कर भी शक्ति हासिल करने वाला तथा देह में कभी २ आघात व गहरी मुसीबत का सामना पाने वाला और अपनी देह की कुछ शोहरत पाने वाला दृढ़ संकल्पी होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से दूसरे स्थान नं० ११७८ में हो तो वह मनुष्य धन संग्रह की कमी पाने वाला और धन स्थान में हानियां पाने वाला और कुटुम्ब में विग्रह व अशांति पाने वाला धन की प्राप्ति के लिये बड़े बड़े संकट सहने वाला और धन के अभाव से बड़ा कष्ट अनुभव करने वाला तथा धन प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़ी चनाई व साहस से काम लेने वाला और गुप्त शक्ति बल के योगों से फायदा उठाने वाला तथा किसी बड़प्पन की लाइन में अन्धविश्वास और दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा भी धन प्राप्त करने वाला और धन संग्रह के लये महान् परिश्रम करते रहने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का केतु लग्न से तीसरे स्थान नं० ११७९ में हो तो वह मनुष्य महान् पुरुषार्थ करने वाला तथा बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला और भाई के स्थान में कुछ अशांति व क्लेश सहने वाला तथा अपने में बाहु बल व दौड़ धूप की शक्ति रखने वाला बड़े २ कठिन कार्यों को

अन्धविश्वास व साहस की शक्ति से पूरा करने में लगा रहने वाला और अपने कार्यों में गुप्त योजनाओं की महानता रखने वाला तथा छिपी हुई ताकत से बड़े २ असंभव कार्य भी पूरे करने वाला तथा अपनी शक्ति के अन्दर कुछ कमी महसूस करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का केतु लग्न से चौथे स्थान में हो तो वह मनुष्य मातृस्थान में कुछ हानि व कुछ झंझट पाने वाला और भूमि व मकानादि की कुछ कमजोरी पाने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों में भी कुछ कमी व झंझट महसूस करने वाला और सुख प्राप्ति की वृद्धि करने के लिये बड़े २ झंझट सहने वाला तथा गुप्त रूप की बड़ी २ चतुराइयों से व योग्यताओं से सुख की वृद्धि करने वाला और सुख प्राप्ति की उन्नति व मजबूती को पाने के लिये संकल्पों की दृढ़ता के द्वारा बराबर परिश्रम करते रहने वाला और किसी दूसरे स्थान का जन्म भूमि से परिवर्तन पाने वाला और दुःख के अन्दर धैर्य से काम लेने वाला होता है।

नं० ११८०

| | | |
|---|---|---|
| १२ | | १० |
| १ | ११ | ९ |
| २ के | | ८ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

जिस व्यक्ति का मिथुन का केतु लग्न से पांचवें स्थान में हो तो वह मनुष्य असत्य की शक्ति से काम निकालने वाला तथा विचारों के अन्दर गुप्त से गुप्त योजनायें बनाने वाला और विद्या में कमजोरी पाने वाला और बुद्धि के अन्दर डर मानने वाला तथा सन्तान पक्ष

नं० ११८१

| | | |
|---|---|---|
| १२ | | १० |
| १ | ११ | ९ |
| २ | | ८ |
| ३ के | ५ | ७ |
| ४ | | ६ |

से कष्ट अनुभव करने वाला और विद्या ग्रहण करने के समय बड़ी बड़ी कठिनाइयों को सहने वाला और छिपाव से बातें करने वाला और संकीर्ण विचार रखने वाला तथा जरूरत से ज्यादा आशंकायें दिमाग के अन्दर पैदा करने वाला और दिमाग में परेशानी व थकान पाने वाला तथा याददाश्त में कमजोरी पाने वाला आर्त गुप्त बुद्धि वाला होता है।"

जिस व्यक्ति का कर्क का केतु लग्न से छठे स्थान नं० ११८२ में हो तो वह मनुष्य ननसाल पक्ष में हानि पाने वाला तथा शत्रुस्थान में विजय पाने वाला और शत्रुस्थान से कुछ परेशानी भी महसूस करने वाला रोग और हर एक प्रकार की दिक्कतों को दबाने की शक्ति रखने वाला किन्तु कुछ दिक्कतों के कारणों से घिराव व झंझट महसूस करने वाला और शत्रु की परवाह न करके मुकाबले में बहादुरी का परिचय देने वाला तथा शत्रु को परास्त करने के लिये गुप्त शक्ति से भी काम लेने वाला और शील रहित स्वार्थ युक्त परिश्रम से कार्य सिद्ध करने वाला और झगड़े, झंझट के अन्दर ठीक निर्णय तक न पहुंच कर ही क्रोध के अन्दर अपना वार शुरू कर देने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का केतु लग्न से सातवें स्थान

नं० ११८३ में हो तो वह मनुष्य स्त्री स्थान में कष्ट उठाने वाला तथा स्त्री व गृहस्थ के सम्बन्ध में बड़े बड़े झंझट व परेशानियां सह कर काम चलाने वाला और रोजगार की लाइन में महान् परिश्रम व महान् परेशानियों से दैनिक कार्य करने वाला और रोजगार के दायरे में सांघातिक हानियां भी सहने वाला तथा गुप्त हिम्मत व प्रभाव शक्ति से कामयाबी पाने वाला और इन्द्रिय भोगादिक के सम्बन्ध में बड़ी कमी व खरखशा पाने वाला किन्तु भोगादिक की उग्र शक्ति रखने वाला और लौकिक कार्य क्रम की कम जानकारी के होते हुवे भी हिम्मत व हेकड़ी से काम लेने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का कन्या का केतु लग्न से आठवें स्थान नं० ११८४ में हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी महसूस करने वाला और पुरातत्त्व की प्रकट शक्ति में कुछ हानि पाने वाला और गुप्त शक्ति का बल प्राप्त करने वाला और गूढ़ातिगूढ़ विषय का आन्तरिक ध्यान करने वाला तथा जीवन में बड़ी बड़ी कठिनाइयां सह करके किसी चिरस्थाई शक्ति को प्राप्त करके मानने वाला और आयु स्थान में बड़े बड़े आघात सहने वाला तथा जीवन के किसी भी अन्धकार मयी दुनियां में भी

किसी गुप्त शक्ति के संचार से मुक्त रहने वाला तथा भय युक्त अवस्था में भी निर्भयता से काम ले सकने वाला प्रभावशाली होता है।

जिस व्यक्ति का मीन का केतु लग्न से नवम स्थान नं० ११८५ में हो तो वह मनुष्य यश में कुछ




कमी और भाग्य स्थान में कुछ परेशानियां सहने वाला तथा भाग्य की वृद्धि के लिये बड़ी भारी गुप्त शक्ति को गुप्त चतुराइयों के द्वारा काम में लाने वाला तथा भाग्योन्नति के सम्बन्ध में बगैर ज्यादा सोचा बिचारी करे ही फुरती और हिम्मत से काम लेने वाला तथा भाग्य की स्थाई मजबूती को पाने के लिये बड़ी से बड़ी मुसीबत की परवाह न करके बड़े धैर्य से कामयाबी हासिल करने वाला और धर्म के सम्बन्ध में यथार्थ रूप को न पाकर कुछ तामसी धर्म का पालन स्वार्थ युक्त होकर करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृश्चिकका केतु लग्न से दसवें स्थान नं० ११८६ में हो तो वह मनुष्य पिता स्थान




में कुछ कष्ट सहन करने वाला तथा पिता को हानि पहुंचाने वाला तथा व्यापार कार में मुसीबतें व झंझटें सहने वाला एवं राज समाज में परेशानी अनुभव करने वाला और मान सनमान तथा पदोन्नति में रुकावटें व दिक्कतें सहने वाला

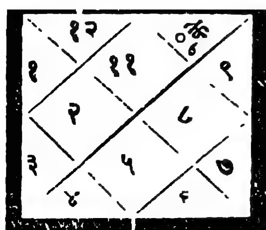
और अपनी उन्नति व इज्जत को बनाने और प्राप्त करने के लिये बड़ी से बड़ी परेशानियां बरदाश्त कर सकने वाला और गुप्त शक्ति के बल से बड़े धैर्य के साथ काम करने वाला तथा बड़ा परिश्रमी कर्म करने वाला और छिपी हिम्मत वाला उग्र कर्मेष्ठी होता है।

जिस व्यक्ति का धन का केतु लग्न से ग्यारहवें स्थान नं० ११८७ में हो तो वह मनुष्य अपनी गुप्त महान् शक्ति के बल से खूब धन लाभ पाने वाला और विशेष लाभ प्राप्ति के स्थान में अधिकार व अनधिकार की कुछ भी परवाह न करने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि के सामने किसी




भी बात का सोच विचार तथा डर न मानने वाला और मुफ्त का बहुत लाभ प्राप्त करने वाला और दूसरे के नफा नुकसान का ख्याल न कर सकने वाला और लाभ के स्थान में अन्धा धुन्ध हाथ मारने वाला तथा प्रभाव शक्ति के योग से भी फायदा उठाने वाला और आमदनी में मस्ती पाने वाला होता है।

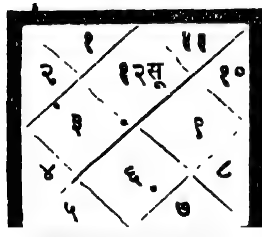
जिस व्यक्ति का मकर का केतु लग्न से बारहवें स्थान नं० ११८८ में हो तो वह मनुष्य खर्च की अधिकता पाने वाला तथा खर्च शक्ति का गुप्त बल रखने वाला और कभी खर्च की अधिकता के कारणों से कुछ झंझट व परेशानी व कुछ कष्ट, महसूस करने वाला और बाहरी सम्बन्ध के मामलों



में कुछ परेशानी का योग पाने वाला तथा बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क में बड़ी गुप्त व स्थिर शक्ति से काम लेने वाला तथा बाहरी सम्बन्ध में ज्यादा सोचा विचारी न करके अन्धा धुन्ध शक्ति का प्रयोग करके खर्च की शक्ति को पाते रहने वाला तथा खर्च के सम्बन्ध में खर्च की तेजी को न रोक सकने वाला होता है।

## मीनलग्नान्तरसूर्यफलम्

जिस व्यक्ति का मीन का सूर्य लग्न के पहिले स्थान नं० ११८९ में हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी




प्रभाव रखने वाला तथा शत्रुस्थान में आदर्श युक्तियों और दैहिक तेज बल के द्वारा विजय पाने वाला ननसाल की महानता पाने वाला तथा देह में कुछ रोग व कुछ झंझट व अशांति पाने वाला और कुछ घिराव व कुछ बंधन महसूस करनेवाला बड़ी भारी गुस्सा व क्रोध रखने वाला और किसी भी प्रकार की दिक्कत क्यों न हो उसे दमन करने की शक्ति रखने वाला और हठयोग की शक्ति रखने वाला स्त्री स्थान में झगड़ा पाने वाला और भोगादिक पक्ष में कुछ कमी पाने वाला और रोजगार में कुछ दिक्कतें सहने वाला प्रतापी होता है।

जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य लग्न से दूसरे स्थान नं०.११९० में हो तो वह मनुष्य बड़े महान्

| | | |
|---|---|---|
| २ सू० | १२ | १० |
| | ११ | |
| ३ | | ९ |
| ४ | ६ | ८ |
| ५ | | ७ |

परिश्रम से बहुत धन प्राप्त करने वाला और धन की ताकत से बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला और अमीरात के ढंग का योग पाने वाला तथा कुटुम्ब स्थान में प्रभाव व कुछ विग्रह पाने वाला और शत्रु पक्ष को बस में रखने के लिये बड़ी भारी युक्तियों का खजाना रखने वाला और जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति पाने वाला पुरातत्त्व शक्ति की कुछ हानि पाने वाला और धन की वृद्धि के लिये बड़ी भारी युक्तियों के भंडार से काम लेने वाला तथा झगड़े झंझटों तथा दिक्कतों के सम्बन्ध से फायदा उठाने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का वृष का सूर्य लग्न से तीसरे स्थान नं० ११९१ में हो तो वह मनुष्य अपने पुरुषार्थ

| | | |
|---|---|---|
| २ सू | १२ | १० |
| १ | ११ | |
| ३ | | ९ |
| ४ | ६ | ८ |
| ५ | | ७ |

से बड़ी मेहनत करने वाला बड़ी भारी दौड़ धूप करने वाला और भाग्य की वृद्धि करने वाला धर्म की इज्जत करने वाला तथा भाई बहिन से विरोध का योग पाने वाला मेहनत से कुछ थकान व कुछ कमजोरी महसूस करने वाला और जबरदस्त हिम्मत से काम लेने वाला शत्रुपक्ष में प्रभाव जमाने वाला तथा प्रभावशाली पेचीदा युक्तियों से कामयाबी पाने वाला और मेहनत से यश प्राप्त करने वाला तथा ननसाल पक्ष का प्रभाव पाने वाला बड़ा चतुर प्रतापी होता है।

जिस व्यक्ति का मिथुन का सूर्य लग्न से चौथे स्थान नं० ११९२ में हो तो वह मनुष्य पिता व मातृ स्थान में कुछ झंझट व झगड़ा पाने वाला रहन सहन व भूमि मकानादि की कुछ गड़बड़ी पाने वाला तथा सुख और आराम की कुछ कमी पाने वाला और शत्रु पक्ष में बड़ी शांति पूर्वक कामयाबी पा लेने वाला तथा सुख के दिखाने का प्रभाव रखने वाला ननसाल पक्ष से सुख उठाने वाला और बड़े परिश्रम से सुख की वृद्धि करने वाला और प्रभाव शाली शांत युक्तियों के बल से मेहनत के जरिये से मान प्रतिष्ठा की वृद्धि करने वाला तथा राज समाज में मान व इज्जत पाने वाला तथा उग्र कर्म करने वाला प्रभाव शाली होता है।

१ १२ ११ २ १० ३सू ९ ४ ६ ८ ५ ७

जिस व्यक्ति का कर्क का सूर्य लग्न से पांचवें स्थान नं० ११९३ में हो तो वह मनुष्य बुद्धि के अन्दर बड़े प्रभाव से काम लेने वाला तथा बड़ी पेचीदा चतुराइयों से हेकड़ी के साथ बातें करने वाला और विद्या में कुछ कमी पाने वाला संतान पक्ष में कुछ दिक्कतें व परेशानी महसूस करने वाला दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी का योग पाने वाला आमदनी के लिये खूब परिश्रम बुद्धि द्वारा करने वाला

१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४सू ६ ८ ५ ७

और शत्रु पक्ष में बुद्धि की चालों से जीतने वाला और दिक्कतों व परेशानियों को हटाने का साधन प्रकाश बुद्धि में प्राप्त करने वाला और हेकड़ी से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का सिंह का सूर्य लग्न से छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पास

नं० ११९४

१ ११
२ १२ १०
३ ९
४ ६ ८
५सू ७

बड़ी भारी महान् प्रभाव शक्ति रखने वाला तथा संकल्प मात्र से शत्रु का दमन करने वाला संसार की किसी भी ताकत से डर न मानने वाला ननसाल पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव पाने वाला खर्च के स्थान में कुछ अरुचि या नीरसता का योग पाने वाला और अन्य दूसरे स्थान के सम्पर्क में वैमनस्य पाने वाला और दिक्कतों व मुसीबतों को हटाने की महान् शक्ति रखने वाला और विपक्षियों पर अपना प्रभाव सदैव कायम रखने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न और बड़ा भारी ख्याल हमेशा रखने वाला होता है।